श्री सद्गुरुभ्योनमः

॥ रत्नसमुच्चय ॥

तथा

॥ शमविलाश ॥

संग्रहकर्त्ता श्रीसाधुजीमहाराजके

पोत्र

उपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः

श्रीरामलालजी रुद्धिसारजीगणिः

छपायके प्रगट कर्त्ता

शिष्य पं। क्षेमचंद चि। पेमचंद चि। अमरचंद

पुस्तक मिलणेका ठिकाणा

वीकानेर वडा उपासरे पास प। क्षेमचंद मुनि.

चि। पेमचंद अमरचंद विद्याशाला

मुंबई बिचले भोईवाडे श्रीचिंतामणजीके

मंदिर मेहता पास

संवत् १९६० मिति आसो शुदी ९-सने १९०३

शांति सुधाकर प्रेस-मुंबई.

मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें
चीमनलाल सांकळचद मारफतीयाने
मुद्रित कीया

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥ तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥ गीर्वाणींहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंभव्यजीवानां, तत्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णय ॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वाणि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनरम्य, स्वाध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चय ॥ जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्रसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलक-तद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः सुधर्मगणभृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सुविहितेपक्षेसदाचारवान्, सेव्यशोभनधीमता सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥ आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानाभिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वराख्यगणभृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्नभसिद्धिपंक्तिसरदि । १०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुदंरुत्तीखरतरे त्याख्यं नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाभिधः ॥ दादाविरुदविख्यातः, पूज्यपादगुरुर्वर. ॥ ७ ॥ क्षेमकीर्त्तिउपाध्यायः, जातोसौसकलाग्रणी. ॥ शाखाविस्तारितायेन, क्षेमधाटी चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविख्यात, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठकानेकभव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमालीढा, निधानकुशलाभिधः ॥ धर्ममग्नसमाविस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥ उपाध्यायसदाचारा, वादीनामानभंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, संपदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकऋद्धिसारेण, कृतोयंग्रंथसग्रहः ॥ स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यक्षेमचद्रेण, प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृत्सहायेन, मुबय्याशोसकाकरै. ॥ १३ ॥

यत्रेमुद्रापितसम्यग्, यत्राध्यक्षेणशोधित ॥ पठक'पाठकेन्योवै, नित्यश्रेयश्रमगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरम्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृहदोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाभ शुभ हमारे पोपपुत्र शिष्य प। श्रीक्षेमचद चि। पेमचद चि। अमरचदका है हमने हमारा सर्व स्वहपासरा पुस्तक धन्नमालका मालक इन तीनोकों किया है, दूसरा किसीका दावा हजर नहीं ॥ शुभ ॥

दसक्त। उ०। श्रीरामलालगणि का खुद ॥



॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रजवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजवसूरि॰, तत्पट्टे ६ श्रीयशोजद्रसूरि॰, तत्पट्टे ७ श्रीसजूतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीजद्रबाहुस्वामी, तत्पट्टे ए श्रीथूलजद्रस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिसूरजी जये सो वीरजगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकू प्रतिबोधके धर्मका पहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोम सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगछ प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर वमे प्रजावीक विद्यासिद्ध जये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसेंइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोंसें चंद्रकुल प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसें ३८ में श्रीउद्योतनसूरि॰ जये सो एक तो निजशिष्य अर दुसरा साधुनके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योंकों आचार्यपद दिया तबसें ८४ गछ जया, यह ८४ गछोंके आचार्य वमे प्रजावीक धर्मोद्योतक जए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३ए पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः जये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरि॰ जये सो अणहलपुरपट्टणमें दुर्लजराजाकी सजामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर बिरुद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके फलकलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसयुक्त जिसमे खर कहीये वमे कगेर इस वास्ते खरतर बिरुद पाया,

कोटिकगछ वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद एसें ४ भेद नवदी क्षित शिष्यकू कहणा सरू भया, इनोंके ४१ में पट्ट दिल्लीके वाद साह प्रतिबोधक जीवहिंसा छुडाणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र प्रतिबोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, फेर इनोंके पट्ट ४२ में इनोंके लघुभ्राता श्रीस्थंभणातीर्थ और नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअभयदेव सूरि भये, तत्पट्टे ४३ में अगारे हजार वागमीश्रावक प्रतिबोधक श्रीजिनवल्लभसूरि. युगप्रधान भये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रभावीक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरि भये जिनोंनें चितोड और उज्जयणी वज्रखंभसे साढीतीन कोटी विद्याम्नायकी पुस्तक निकालके साध कर बावनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्य वशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस वखत तीनसें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा सावणसुखा ढाजेड इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह आज तक बडे दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५ में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दिखलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंद्रसूरिः भये जिनों का दिल्लीके भरबजारमें दाग भया बडा चमत्कार देख बादसाहादिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी भये, अनुक्रमे ५० में पट्टपर महाप्रभावीक कुशलसूरि जी भये, सो आचार्यपद पायके बावनवीर चोसठयोगणीकू वसकर सघमें बडे२ उपगार किये, गूजरमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पखीरूप उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण अमावशकों स्वर्गवाश भये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्रदोष प्रथम दरशण दिया, तिसपीछे भक्तलोकोंका उपगार,

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपणे आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्त्ति स्थूंभ स्थापन कर दादा जीके नामसें वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात भया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी भये, इनोंके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि भये, जिनोंने अकबर बादशाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उद्घोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंको टाटा गच्छकी व्यवस्था करमचंद बछावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोंके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरिः इनोके समयमें आचार्य गच्छ सागरचंद्रसूरिसें भया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोके समय रंगविजयसूरिःसें रंगविजय गच्छ भया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनभक्तिसूरजी भये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाभसूरजी भये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचद्रसूरिजी भये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी भये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी भये, इनोके समयमे महेंद्रसूरिजीसे मण्डोवरागच्छ भया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनहंससूरिजी भये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि भये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्त्तिसूरिःजी वर्त्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य महोपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिगणि.जीने जं । यु । प्र । भ । श्रीजिनपद्मसूरिजीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें बहोत थोड़े रहे और बहुत क्रियावंतोकों और जगे चतुः

मास करणे भेजेगये, थोडे वहोत रहेथे सो भी गोचरी थंडिल्ल भूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी ही वैठेथे, श्रीजीका थंडिलभूमीका हाथ धुलाणेकूं उठे, अपणे विद्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका वडा अपरबलीपणा है सो गछमें साधू वहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिवके वखत कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसे२ पंडित विद्यमान थे, अव यह गछ किसदशाकू पोहचा है, थोडा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो वहोतही थोडे हैं, तव उपाध्यायजीने कहा महाराज यह वृहद्गछ खरतरमें किसी वातकी कमी नही रहेगी अभी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजायगें, एसा कह दादासाहिवका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके वाहिर जा वैठे, गुरुके ध्यानमें लीन भये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह करणेकु जारहीथी, साधूमुनिराजकू वैठे देख पाशमें आके वंदन नमस्कार कर गुरुके सन्मुख वैठ गये, श्रीउपाध्यायजीनें ज्ञातरशका भरा वेराग्यमई उपदेश दिया सो उन पाचसें राजपूतोंनें विवाहकी वाछा छोड दीक्षा ली, दादासाहिवनें देवशक्तीसें सवोंकों धर्मोपगरण वेष दीया, इन सवोंकों लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिश्वरनें कहा, क्षेमाजी, धाडकीधाड लेआये, उपाध्यायजीने कहा तथास्तु, मेरे शंतानी क्षेमधाड नामहीसें प्रसिद्ध रहे, उस दिनसें वृहत्साखा क्षेमधाड विस्तारभावकू प्राप्त भई.

साखाकी उत्पत्ती सवत् विक्रम तेरेमेंमें लीवाणची भई, जो अव जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध, साखामें वडे२ विद्वान होते चलेआये जिनोंके वनाये प्रकरण काव्य न्याय टीका वगेरह वियमान है, उस शाखा

में उपाध्याय श्रीनेममूर्त्तिजीगणिः तत् शिष्य उ। श्रीक्षेममाणिकजीगणि. तत् शिष्य। पंडित प्रवर श्रीविनयचन्द्रजिगणिः तत् शिष्य श्रीपं। प्र। लब्धिहर्षजिगणि तत् शिष्य पं। प्र। श्रीधर्मशीलजिगणिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं। प्र। श्रीकुशलनिधानजिगणिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीऋद्धिसारगणिजित्संगृहीत रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलाश तच्छिष्य पं। क्षमामोक्षाग्यमुनिः चि। पेमचंद चि। अमरचदकी तरफमें यह ग्रंथ सब जीवोंके उपगारार्थ पढणेकूं छपाया। श्रीबीकानेरमें सं। १९५९ की ज्येष्ट वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पढनार्थ स्थापन करी है इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकानेरमें दिया ॥

४१ रु। श्रीनथमलजी चांदमलजी ढढा.
११ रु। श्रीमगनमलजी मगलचदजी भावक.
११ रु। श्रीसदारामजी गोलछा.
११ रु। मानमलजी केसरीचंदजी सांड.
११ रु। श्रीचूनीलालजी गोलछा.
१० रु। श्रीराजरूपजी देवचदजी नाहटा.
७ रु। श्रीआसकरणजी बरढिया.
११ रु। श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.
११ रु। श्रीसिरदारमलजी तातेड.
२५ रु। श्रीलालचंद कनीराम आन्नद मुनईवाला.
३ रु। श्रीचगराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देंगे तो ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपंडित तत्वज्ञानी बण जायगें, जैनउपदेशक वधेगें, उर जो नही पं०

हते हे इनोंकों दरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकु उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके भेषधारी उर भेषधारणीया अनेक कुकर्मोंके वश नरकके पात्र उर धर्मकू लजाते हे, क्यों की दशवैकालक सूत्रमे लिखा हे (॥ सूत्र पढम नाण तउ दया ॥) पहली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछै दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजे गृहस्थ एसा कहते हें हमारे क्याव बिगडे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो मानरहित कगलोंकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह समझसें तो जैनधर्म अभावदशा चढताकुं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्ममें प्रनमचढता केसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भ्रष्टभये धर्माचार्यकू फेर जिनधर्ममें थिर करे तो वदला उतरे, दस वीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें बिगाडका सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जड विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अछी क्रिया चोथा पाचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोंका हे सो विचारणा.

प्रश्न । हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ अपणे पितासे पिताभाव न रक्खे तो उसका क्या कोइ कर हे लेकिन् संसारमें वह लायकवहतो नही गिणाजाता, एश्रोसवाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य री हे, जतियोंमें पढते हें, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पडिक्कमणा करते हे, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे यह तो चलता उपगार हे, ओर जतियोंके वडेरोंनें तुमारे वडेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबसें वडा हे ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन् सुणाणे पढाणेवाले तो कम ओर धर्म लजाणेवाले वहोत जिनोंकों केसे माने? ॥ उत्तर ॥ सच हे, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वाचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करतें हें इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्रऋषभनाराच संहणन विछेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें भी उत्सर्ग ओर 'अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वाचणे योग्य रहगया, आपसमें कषायकी चोकडीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरम्भत्यागकी हमेशा बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधु हे, जतियोंके चेला वणाणेमें इतना फायदा हे–मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे वाद आपसेंही छोडदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पाचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस भव परभव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाभ परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता हे, थोडेमें विचारणा ॥ प्रश्न–जिनोंकुं पढाया नही ओर गुरु मरे वाद गुरूके कमाये धनसें पापारम्भ करे तो वह पाप चेलेका गुरूकुं जरूर लगे या नही? उत्तर–जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोंकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारम्भ सो करणेवालेकू लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

मर्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते है संतान वेसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नहीं इस वास्ते करै करावै अनुमोदे उसकू पाप लगे ॥

विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत अर विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेंही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राभ्यासी होणा, वहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गच्छकी सारसंभालसें जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसें यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभरूके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन अर थापनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष अर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्ताणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाबही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अछे सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य अर पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख अर अयोग्य अर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्टायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसें धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिवलसें संघमें परोपकारी अष्ट महा प्रभावोक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोके पढने अर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकू सुविदित मार्गमें चलाणा, गच्छ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधुओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके भंडार नही हे उहा पुस्तक लिखवाके भंडार करवाणा, अपणी निश्रायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधुभका धर्म नही, फकत अपणेसें बने उर नित्य पडिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वाचनेकु चहीये तो ज्ञानभंडारसें लेकर पीछा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस२ वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहा उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावच्च कराणी नही, व्रती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंडितोंहींसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीठी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही हे क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हें, फेर इन जतीयोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पडते समयमेंभी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके शतानमें बुंटेरायजी उर आत्मारामजी वगेरे भये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी क्षमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे भये हें उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहनलालजी किरपाचंदजी भायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनूंकी जरू इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोंकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीभी प्रमादी छठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे ओर आजकलके साधूभी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो छांने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोंमें भाव करके पंचम गुणठाणी हे केइयक चतुर्थ गुणठाणी, इसी तरे सायुडके मुजबही शुभ भावसंयुक्त जतियोंके भाव आश्री गुणठाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीभगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायक्लेश तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूउमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गछ्छवालोंसें आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोंके भी देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केसें सधेगा बलीहारी उनहीकी हे जिनोंनें कषायकी चोकरी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोंका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरात ऊमरवाला पढता नही ओर वहोत छोटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी पालणेट करणेकूं तब वहोतसे कमजात अपणी एबकूं छिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन् न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूमेंसें वात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसें सोना पीतल नही वणता, दुष्टोंका स्वभा-

यही होता है सो गुणमें अगुण निकालते हे, भर्तृहर लिखता है-सूरवीरकुं निर्दइ कहते हे गमखाणेवालेकूं डरपोक केते हे ब्रह्मचारीकू नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत हे, खैर एसे चेलेकूं मुखपाठ जैनधर्मका अवस्य कर्तव्य गुणाना नित्त फेर अक्षर वाचने सिखाणा अक्षर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्याकरण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जीवविचारादि षट् प्रकर्ण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोलपट्टा मुहपत्ती उंघा मात्रा चेद्दर पागरणी स्वेत हमेसां रखणा, मस्तकके वाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंडाणा, पादत्राण स्वेत वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण काटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर देश आश्री पहरणे दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहा एसा उपसर्ग नही देश विरुधके कारण त्याज्य हे, प्रवचनसारोध्धार ग्रंथमें कारणविशेष साधूंको पादत्राण पहरणेकी आज्ञा हे, पुस्तक लिखणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूथणा तिरपणीके मोरे वणाणे माला वणाणी छोकरे पढाणा मंत्रविद्यामे कुशलाता रखणी सो भी जिनधर्मके अन्यके नही, रातकू चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख यथाशक्ति तप करणा, दोनु वखत पडिक्कमणा करणा, वत्ती शक्ते सचित्त त्यागणा, राजदंडे लोकदंडे एसे रस्ते नही चलणा, कुलमर्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखिलापनसा पीणेवालेकी संगत नही वेठणा, कुविसनीयोंकें संगतसे लछन लगता हे, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थयात्रा चेला लेणा उनोकू खिलाणा पिलाणा पन्डतोकों रुजगार देके चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय पापोंकी गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सत्र वोसराके परभव साधणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुजनबोधी श्रावकोंके इकीस गुण सिद्धांतोमें लिखा है, उस गुणोकूं धारणा चाहिये. ठाणांगसूत्रमें साधूउंकी प्रतिपाल क-रणेंसें श्रावकोंकू मातापिता तुल्य भगवंतनें कहा है, बालक कसूर भी करे तोभी मातापिता अपणे बालकपर अंतरंगसे कभी द्वेष नही करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसें वर्त्तणा चाहिये, भेषधारीसाधूउमें कोइ तरेकी एब दीखजावे तो एकांतमें हितशिक्षा देके छुडाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककू धमकावे जेसें धम-काणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोंकी विचित्र-ता समझके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावे, एसी एब कोइ नही होय उर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल भाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, उर जिनध-र्मकू लजावे एसा होयतो उहांसें रुकसत करादेणा. जिनमंदिर उर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंभाल जरूर करे, विनासंभाल किये बहोतसे मंदिर उपासरोंकी तजवीजें बिगड रही हे, भंडार लोक खागये हे, वती शके इस बातका खयाल हरतरेसें करे, अ-पणा लडका लडकीयोकू संसारविद्या उर धर्मकी मजबूती कर-णेकू पडिक्कमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार उर जैनन्यायशा-स्त्री अक्षर बचपणेसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु उर वडेर अक-लवंतोंकी संगत करवाणी चहिये, बिरादरीमें सनातन कुलमरजा-दसें जो विपरीत आचारणा करे उनकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक उणोंको भी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इल्म लडकों-कू सिखलावे तो पहली जैन न्यायसे हुसियार कर पीछे सिखलाणा क्योंकी इस अंग्रेजी इल्मकी ज्यादा किताबोंके पढणेसें पीछे उस-

कू सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बाधणा और अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमे ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हैं इस वर्जे वेलासक पढे और पढावे, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती और तारीफ़ जिसने समझा है वोही जाणता है और उसनकूं मुसककी खसबो कब लग सकती है, जिनोंको संसारमें अभी बहोत भवभ्रमण करणा बाकी रहा है उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पथ न्यारे२ है मानेभी तो कोन सच्चा और कोण झूठा ? (उत्तर) हे भव्य हमने पेस्तरही लिखा है न्याय जो जैनका सात भगरूप है उसकूं समझ और वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता है (प्रश्न) इतनी वुद्धि और परिश्रम तो करणेवाले थोडे हैं सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय ? (उत्तर) जो इतना नही समझो तो जो ऋषभदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा है बीच२ में अल्पज्ञोंने अहकारके वस मनोकल्पित फदसे एक नय पकडके अपने२ मत खडे किये है, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार भगवान भद्रबाहुस्वामी उमास्वाती भाष्यकार जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पचागीकार जो समुद्र सरीषे वुद्धीके धणी उनोंने जिस वातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समझणा, श्रावगधर्मवालों पर बडा उपगार रत्नप्रभसूरि और दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया है सो केइयक पापारंभ की वातें तो इस जातीके कायदेसेंही बंध होगई है, जैसें मद्यका पीणा और मासादि अभक्ष खाणा लेकिन् आजकल कर्मके वस धीरे२ एसे उत्तम कुलमें निरवुद्धीयोंनें अधोगतीकी सडक बा-

घणे पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरभाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेकते हो पीछे पछतावा होगा थोडे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें बावन उगुण हे एसेंह मालमें देखो जैनतत्वादर्श भाषाग्रंथ, यही चीज अछी होती तो तुमारे वडेरे लाखों राजपूत इस चीजोंकों क्यों छोडते उर मुसलमीनोकों भी धर्मकायदेसें इस वातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना॥ जैनपाठशालाउं स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसे सत्कार करणा चाहियै, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पंडित तो दुस्मन भी अछा होता है मूर्ख हितकारी भी कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके विनाकारण द्वेष उर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंनें कहा हे– दुहा॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास॥ जणनी जणके क्या किया, भार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपभोगमे लेना हे सो सब उतम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मातरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता भोग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकू पुन्य वोलावरूप हे, अन्न वस्त्र उपधी सज्या पात्रादिक साधुउंकों देवे, देवके निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे ऊजमणें दान करे, साधर्मी तथा जैनपंडितोकूं नगदद्रव्य वस्त्र भोजनादिक यथायोग्य दान करै, तीर्थंकर भगवान भी संवत्सरी दान देते हे, दानधर्म मुख्य हे भगवतीजीमें ग्रहस्थका अभंगद्वार कहा हे, भगवतीसूत्रमें तीन गुरु कहे हे सिल्पगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, कलागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामायक पडिक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेश दे के मुक्ति पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य भक्ती करे ॥ अब चउभगी लिखते हैं ॥ सम्यगज्ञानवत देसेंविराधक । १ । कष्टरूप क्रिया करणेवाला देशआराधक । २ । ज्ञान और क्रियारहित सर्वविराधक । ३ । ज्ञान और सतक्रियावंत सर्वआराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णय ॥ विशेष श्रावकोंके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा होय तो हमारा छपाया श्रावक व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाडमें प्रायें जैनमंदिर भोजगही पूजते हैं उनोंमें इस वखत प्रायें मिथ्यात्वी बहोत सम्यक्ती बहोतही कम हे, गुजरातमें जो भोजक जैनमदिर पूजते हैं सो सब जैन हे जिनोंकों अन्य देशमें गधर्व कहते हैं (प्रश्न) पूर्वोक्त भोजकोंने जैनधर्म कबसें छोडा हे? (उत्तर) पहले श्रीऋषभदेवजीनें भोगवश स्थापन करके अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे भरतजीनें ब्राह्मणवंश स्थापन करा, राजा सूर्ययशनें भोगवशीयोंकों पूज्य जाण जिनमदिरोंकी सारसभाल सौंपी लेकिन जिनमदिरका चढापा मदिरके दृष्टपर धेरायाजाताथा जैनधर्मी होणेसें बलिदान भोगवशी नही खातेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोकों अनेक तरेसें पर्व महोछवे पर द्रव्य वस्त्र भोजनादिकसें राजा और प्रजा सब सत्कार करतेथे वो सब नवमें दशमे भगवानके अतरमे गिरगयाधर्मी होगये बाद कभी कोइ जैन कभी मिथ्यात्वी एसे होते चले आये, जब २४ से वर्ष पहले उसीयामें जैनधर्म फेला तब राजाके पुरोहित राजपूतोंके सग भोगवशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव पमार वगेरेनें भक्ती और बहुमानता के सग जिनमदिरका पूजारीपणा नाधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारेसेमें रामानुज माधवाचारी वगेरोंने विष्णु संप्रदाय निकाली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंको दादा दत्तसूरजीने लाखों उसवाल फेर बणायें, तब राजवीयोंने गुरुसें अरज की इस दयाधर्मके प्रज्ञावसें निर्दयीपणा हम लोकोंमें होगा नही राज्य तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा, गुरुने कहा जो जिनमंदिरोंकी नक्ती उर जतीगुरुकी सेवा अन्नक्ष त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां तक पाटका मालक राजा उर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे तथास्तु वरदान एसाइ नया, राजाउने अपणे नाई स्वजनवर्गी उसवालोंकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथायोग्य सुप्रत किया, तवसें २२ सौ रनवासोंमें उसवालोंका राज्याधिकार वणा तवसें उसवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शिवालयादिकोका पूजारीपणा नी नोजकोंकों सौंपा वह नोगवंशी फेर पीछे धारेश मिथ्यात्वी वणवेठे, विद्याहीनता होणेसें सब तरे की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण नोजकोंकों कर्म कर करके मानणे लगे पूज्यनाव उठगया, जो कनी नोजकलोक एसा समझते होंगे की हम तो अवलमेंही शैव वैष्णव थे (उत्तर) यह समझकी नूल है हम पहली लिखदिया है जैनधर्मकी वहुलायतमें प्रजा जैन रही, वोधोंके अमल वोद्ध, शाख्यादिकोंके अमलमें सांख्य, इत्यादि वातें तवारीकोंसें नी पाईजाती है लेकिन् जैनधर्म उर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका है इतना नोजकोंकों जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी होते तो राजा उपलदेव पमारादिक परमजैन तुमारा लागा उर वहुमान उसवंश पर कनी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर उसमाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समझणा, पीछेसें

विष्णुमंदिरोकी पूजा ओर राजा वगेरोकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंनें तिथ नहीं करी वध गया, इस तरेही बहोतसें उसवंशी भी खुसामदीसे दुसरा धर्म धारलिया तुमको क्या कह सकतेथे, खैर इस वातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखतें हें उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकोक कहणावट भी हे " जिसकी खावे वाजरी जिसकी भरणी हाजरी " उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अतरगच्छकीसें जिनमंदिरमे झाडू देणा, वरतन मलणा, अगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा भी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेंमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध छाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री वहोतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, हुकमें हरकत नालणा नही, देव ओर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो भावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवे तो जिसकी व दोलत रोटी आदि लक्ष्मों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें लक्ष्मों रुपे श्रावक देते हें वो सव देवगुरूका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें वजाया करो ॥ अलंबिस्तरेण ॥

ऊपर छ उपदेश मेंने लिखे हे कोइ कठोर सवज लिखा होय तो माफी मागताहूं सरलभावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके छापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वाचे या गुरूमें शुद्ध करालेवें में मनशुद्धिसें सर्व सघसें क्षमा मागताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते

हैं, उनोंका मैं सदा आन्नार मानताहूं ॥ यतः ॥ तथाविक्रियते ग्रंथ, संतियद्यपिडुर्जना ॥ नहिदस्युन्नयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥ ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तोन्नी करताहूं यद्यपि डुरजन बहोत हे चोरोके डरसें लोक कंगाल नही बण बेठते तेसे १ मेनें अपनें हाथसे लिखरकर मुंबइ न्नेजकर शिष्यवर्गोके कहणेसे इसमें संग्रह मैंने अनेक ग्रंथोसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीअवीरचंदजीमुनि.से लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे. ऋषन्नदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे बणा जो। राम। उनोके मध्यवर्त्ती सब न्नगवंतोके गुणोका विलास इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सवईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवा, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीया, जुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिन्नव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्रीजिनदत्तसूरेः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी, न्नधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरोगशोगोन्नयं नोमारीनचविग्रहः, प्रन्नृतयः प्रीत्यामणत्पुच्चके ॥ यस्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाक्षरध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ सवईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौसठ योगण पाय लगाई ॥ डाइण साइण व्यंतर खेचर, न्नूतप्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तडक कडक्क न्नटक, अटक रहै जु खटक न काई ॥ कहे अमसीह लषै कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुहाई ॥ १ ॥ इति॥ राजै थुंन्न गौरठौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसे, जगत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही न्नाव आय, पूजै लख लोक पाय ॥ प्यासनकू रानमाहि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु हाट,

हाट पुर पाटणमें ॥ देह गेह नेहमें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसीह ध्यान धरे, सेवका कुशल करे, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अग उछरग, कुशल वणिजै व्यापारै, कुशल देव देहरे, कुशल घन राजदुवारे ॥ पुन्य पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ जणीजे, वाहण आवे कुशल कुशल घर२ गाईजे ॥ जिनचंद्र सूरि पुट्ट पट्टधर नाम मत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजता नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वर्त्तो ससार कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लच्छि घर कुशले आवै ॥ कुशलै घन वरसत कुशल घन धन्नरुयन्नो, कुशलै घोम्ना पट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरमो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग रलियामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणों ॥ १ ॥



रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

॥ अथ फुटकर चैत्यवदन ॥

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

॥ तपस्याविधि स्तवन संग्रह ॥

॥ अथ लावणया सग्रह ३४ घन १० ॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ रत्नसमुच्चय ॥



॥ मंगलाचरण ॥



ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्य ध्यायंति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्म अपार । संसारमें सार पदारथनांमी ॥
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर न्रूप सुधामी ॥
मंत्रमें यंत्रमे ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अतरजांमी ॥
पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करे ताहि सलामी ॥ १ ॥
नमो निसदिस नमायके सीस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥
धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥२॥

॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें१ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥
दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥
देतहि देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नाहि खजीनो ॥
एसो पसाय कियो गुरुराय । तिणें भ्रमसो पदपकज लीनो ॥१॥

अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नम ॥ श्रीसारदायै नम ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीको नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
चगी रगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकू गाईहे ॥
हसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें घ्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

॥ व्यजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क्ष । ज्ञ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ पृ नृ वृ मृ शृ सृ हृ ॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य छ्य ज्य ट्य ठ्य ड्य ण्य त्य द्य ध्य न्य प्य भ्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र घ्र ज्र त्र द्र प्र ब्र भ्र म्र श्र स्र ह्र ॥ क्व ग्व ण्व त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व ॥ क्न ग्न घ्न त्न प्न म्न श्न ष्न ष्ण स्न क्ष्ण ॥ क्म ग्म घ्म च्म ण्म त्म न्म श्म ष्म स्म ह्म द्म । र्क र्ख र्ग र्घ ॥ क्क ख्क ग्ग ग्घ ङ्ग । च्च च्छ ज्ज ज्झ ञ्ज

ह ठ ड्ड ढ्ढ ण त त्य ढ द द्द [illegible] स्र
घ श्श ष्ष स्स ॥ ञ्य त्स्न [illegible] । ६ ।
७ । ८ । ९ । १० । ११ । १०[illegible] ०००
॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्रो कृष्णवृहस्या [illegible] ॥
पृथ्वीभृद्वल्युश्रेष्ठात्म । [illegible]

॥ अथ [illegible] ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । [illegible] ॥
अथवा विद्यया विद्या । [illegible] ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च । [illegible] ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । [illegible] ॥ २ ॥
पंडितेच गुणा सर्वे । [illegible] ॥
तस्मात्मूर्ख सहस्रेषु । [illegible] ॥ ३ ॥
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । [illegible] ॥
पृथिव्या भूषणं राजा । [illegible] भूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रु. पिता [illegible] न पाठितः ॥
न शोभते सभामध्ये [illegible] यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । [illegible] ॥
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । [illegible] ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । [illegible] ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति [illegible] ॥
अविद्यं जीवितं [illegible] च ॥
पुत्रहीनं गृहं [illegible] ॥
न च विद्या [illegible] ॥

कोऽर्थ पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥
उपदेशो हि मूर्खाणा । प्रकोपाय न शांतये ॥
पय पानभूजगाना । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । विद्यते धर्मबुद्धय: ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्ण समाम्नाय· तत्र चतुर्द्दशादौस्वरा· दशसमाना-तेषाद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोह्रस्व परोदीर्घ· स्वरोवर्णः वर्जो· नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यजनानि तेवर्गापचपच वर्गाणाप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषा घोषवंतोऽन्ये अनुनासिका ङ· ञणनमा अनतस्था· यरलवा ऊष्माण शषसहाः अ इतिविसर्ज्ज· नीय क इतिजिह्वामूलीय· प इत्युपध्मानीय अ इत्यनुस्वार पूर्व· परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरव्यजन परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धि इतिसंधोसूत्रतः प्रथमश्चरण· समाप्त ॥

॥ हितोपदेशः ॥

ॐ अर्हतोभगवतइंद्रमहिता । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा । पूज्या उपाध्यायका ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधका ॥
पंचेते परमेष्ठिन प्रतिदिनं। कुर्वंतु वो मगल ॥ १ ॥

अर्थ –(एते पंचपरमेष्ठिन प्रतिदिनं व युष्माकं मंगलंकुर्वंतु) यहजो पचपरमेष्टिपदहै सो हमेसा तुमभव्यजीवोंकू मगलकरो के· सेकहे पंचपरमेष्ठि (अर्हतोभगवतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्टि श्री अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोकों हणे सो अरिहत कहीजै फेर श्री अरिहंत केसेंहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहै फेर अरि· हंतमाहाराज केसेहै भगवंतहै भगशब्दके अनेकार्थ कोषमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत जगवंतमेंहे एकतो सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालके फेर श्री अरिहंत जगवंत केसेंकहे (इंद्रमहिता) चोसठ इन्द्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें बिराजमानहे सो बारे गुण एसेहें प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग जर पसीना जर मेलरहित बज्रा खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही जर मास गऊके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदस्य होतीहे अर्थात् चर्म चक्षुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेही होताहे जर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊचा होताहे जिसकी छाया वेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोडे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वीट नीचा रहे पाखडी ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी२ जापामें यथावस्थित समझे एसा उनोंकों मालम देवेके जगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही वात सिद्धातोंमें कहाजीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे । सदेहदेहियंसमंछित्ता ॥ तिहुअणमणुसासंता । अरिहताईतिमेसरण १ । ३ ॥ श्रामर ४ जगवानके दोनों तरफ इन्द्र चम्मर ढोलता रहे ४ ॥ आसनश्च ५ जगवतके वेठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहे ५ ॥ जामंडलं ६ जगवानके पिठाडी भामंडल रहे जिस्सें जव्यजीव जगवानके तरफ देखनके जगवंतके च्यारमुख च्यारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख ... जर तीन दिसामें जगवंतकी प्र-

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी　　८ श्रीचंद्रप्रभूजी
९ श्रीसुविधनाथजी　　१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी　　१२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी　　१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी　　१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी　　१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी　　२० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी　　२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी　　२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी　　२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी　　४ श्रीस्वयंप्रभुजी
५ श्रीसर्व्वानुभूतिजी　　६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभुजी　　८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी　　१० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११ श्रीसूव्रतनाथजी　　१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी　　१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी　　१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी　　१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी　　२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी　　२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी　　२४ श्रीभद्रकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमधरजी　　२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी　　४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी　　६ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी — ८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रभूजी — १० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी — १२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रवाहूजी — १४ श्रीभुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभूजी — १६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी — १८ श्रीमहाभद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी — २० श्रीअजितवीर्यजी,

॥ च्यारसाश्वतातीर्थंकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी — २ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी — ४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव भवंति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी — २ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी — ४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी — ६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी — ८ श्रीसीताजी
९ श्रीसुभद्राजी — १० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी — १२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदवदंतीजी — १४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रभावतीजी — १६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतियोंकों त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐ परमेष्टिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्र ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तव तेरे वोल चिंतवे, सो कहते हें ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारु ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पाच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे वोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हें ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हें ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इच्छकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा ाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोगेजी? स्वामी शाता छेजी? इति ॥ । ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे दे- वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछे नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अभुठि उमि कहे पीछे खमासमण देकें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेह. पीछें इच्छ कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥३॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरु ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरु ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पडिले- हण डावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र- विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ काय- दंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीन डावा मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥३॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिछादंसणं-शल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥१॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंन्ने परिहरुं॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोज्ज ॥२॥ ए दोय मावे खन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे हाथे परिहरु ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंबा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरु ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥३॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं॥ इति मुहपत्ति पमिलेहणा संपूर्ण॥५॥

॥ पीछें खमा होय कें इछामि खमासमणका पाठ कहे कें इछाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक सदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछे इछ कहे कें फेर खमासमण दे कें इछा० ॥ ज० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछे इछं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नवकार गणी इछाकारेण सदिस्सह जगवन् पसाउ करी सामायिक दंमक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछे करेमि जंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनु पच्चख्खाण ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछे खमासमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि॥ गुरु कहे पडिक्कमह. पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएण छीएणं जंभाइएणं उड्डुएण वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुछाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताण भगवताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकाय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥ इहा चार [illegible] एक लोगस्सको

झगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुन्डरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाण, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥ ४ ॥ अन्नयदयाण, चक्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाण ॥ धम्मनायगाण, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराण, विअट्ट छउमाण ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताणं मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिण, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाण संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ भयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ भविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइ ॥

॥ जावंति चेइआइ ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाई ताइ वंदे ॥ इहसंतो तत्थ संताइ ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ भगवन् जावंत केवि साहू ॥ भरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ ॥ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुओ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो ॥ तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥

॥३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवग्रहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुत्त महायस ॥ भत्तिप्भरनिप्भरेण हिअएण, ॥ ता देव दिज्ज बोहि ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरू ॥ होउ ममं तुह पभावउ भयवं॥ भवनिव्वेउ मग्गा, णुसारिआ इठ्ठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चा उ ॥ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछै खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिणदुसुमिण राई पायछित विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीछै इच्छं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउस्सग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउस्सग्ग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागरवरगंभीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पडिक्कमणा ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदियें ॥ १ ॥ खमासमण देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वांदीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकु वांदियें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोमालीयें बेठ कें मस्तक नमाय कर दोनु हा[illegible] मुहम्हे दे कर ॥ सवस्सवि

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि देवसिअ दुचिंतिअ दुप्भासिय दुच्चिठिअ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कम ॥ इति ॥ १ष ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइय ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछे नमुत्थुण कह कें खमा होय कें ॥ करेमि भंते सा माइयं सावद्य जोग पच्चक्कामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें इ च्छामि काउस्सग्ग जो मे राइउं० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्ग ॥ जो मे देवसिउ अइआरो क उ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अक रणिज्जो ॥ दुज्झाउ ॥ दुविच्चिंतिउ अणायारो ॥ अणिछिअव्वो ॥ अ सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्ह गुत्तीणं ॥ चउन्ह कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाण ॥ तिन्हं गु णव्वयाण ॥ चउन्हं सिक्कावयाणं ॥ वारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंमिअं जं विराहिअ ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कम ॥ इति ॥ इ हा देवसियके ठिकाने राइय कहेना ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ पीछे तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं कह कर चारित्रशु द्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइआण ॥ करेमि काउस्सग्ग वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते है ॥

॥ अथ वदणवत्तिआए ॥

॥ वदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढमाणी ए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछें अन्नत्थ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुरकरवरदी० ॥ सुयस्स जगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ पुरकरवरदी ॥

॥ पुरकरवरदीवड्ढे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ जरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्द, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुरकलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्र करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेनो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देव नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्रूअ जावच्चिए ॥ लोगो जड पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वढउ सा सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स ज गवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नत्थूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे. काउस्सग्गके माहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आ गें लिखेंगे. पीछे सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु- वगयाणं, नमो सया सबसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ त देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेलसिहरे,

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसदिस्सह इछं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिय दुच्चिठिअ इच्छा कारेण सदिस्सह भगवन् इछं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कम ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछे नमुत्थुण कह कें खमा होय कें ॥ करेमि भंते सा माइयं सावद्य जोग पच्चरकामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें इ च्छामि काउस्सग्ग जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो क उ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अक रणिज्जो ॥ दुज्झाउ ॥ दुव्विचितिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ अ सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्ह गुत्तीणं ॥ चउन्ह कसायाण ॥ पचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गु णव्वयाण ॥ चउन्ह सिरकावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंम्डिअं ज विराहिअ ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कम ॥ इति ॥ इ हा देवसियके ठिकानें राइय कहेना ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछे तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं कह कर चारित्रशु द्दि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्दि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्ग वदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते है ॥

॥ अथ वदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढमाणी ए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछें अन्नत्थ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुक्खरवरदी० ॥ सुयस्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ पुक्खरवरदी ॥

॥ पुक्खरवरदीवढे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ नरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेनो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्नूअ नावच्चिए ॥ लोगो जड पइछिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुर ॥ धम्मो वढउ सा सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स न गवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नत्थूससिएण कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे. काउस्सग्गके माहे आजुणा चार प्रहर चितवे. सो आ गें लिखेंगे. पीछे सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाण बुद्धाण, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु- वगयाणं, नमो सया सवसिद्धाण ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराउ, तारेइ नरं [illegible] वा ॥ ३ ॥ उज्जिन [illegible]

दिक्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं न मंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥२७॥

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराण संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछे संम्मासा प्रमार्जन पूर्वक वैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वांदणां निमितें मुहपत्ती पम्लेिहुं ? गुरु कहे पम्लेिह ॥ मुहपत्ती पम्लेिहे. पीछे वांदणा दें तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उन्ना हुआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गह इतना पाठ कह कर नूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह कें कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संम्मासा प्रमार्जन कर कें उकरू वेठ के डावे हाथमें मुहपत्ती ले कें डावे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निलाड पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिसके मध्य नागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो ने किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछे फेर ॥ जत्ता ने ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खमा होकें पीछें पगसें नूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे तहा आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए [
॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो
खमणिज्जो ने किलामो ॥ अप्पकिलंताणं उह

वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइअं वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीअं वइक्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो, संवच्छरीयेंसंवच्छरीअं वइक्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेना ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियके ठिकाने राइयं कहेना ॥

॥ पीछे रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते है ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणता प्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥३॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥१५॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवता प्रत्यें भला जाण्या होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि दुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्यु होय, करता अनुमोद्यु होय सो सर्व मन वचन, कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स मिछा मि दुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहा प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछें सवस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इछाका० ॥ भ० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछें इछं तस्स मिछामि दुक्कडं कह कें संडासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठे कें जिमणा गोडा उंचा रख कें डावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तब गुरु कहे भणेह ॥ पीछे इछं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इछामि पडिक्कमिउं जो मे राइअ इत्यादि कह कर ॥ त निंदे तच गरिहामि

पर्यंत वंदित्ता सूत्र कहे. सो लिखते है ॥ पीछें खमा हो के अप्पुठि उमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव सिद्धे, धम्मायरिए अ सवसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसियं सबं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छकाय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठाय परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुबयाणं, गुणबयाण च तिएह मइयारे ॥ सिरकाणं च चउएहं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइ भारे भत्त पाण वुच्छेए ॥ पढम वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुबयमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आयारिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अणु वयंमि, निच्च परदारगमण विरइउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व

अगुरागे ॥ चनुत्थ वयस्स इआरे, पमिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चममि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चनुप्पयंमि, पमिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उट्ट अहेअ तिरिअं च ॥ वुढ्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ नवन्नोग परिन्नोगे, बीयमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चिते पमिबद्दे ॥ अपोल डुप्पोलिअ च आहारे ॥ तुच्छोसहि जरकणया, पमिक्कमे० ॥ २१ ॥ इगाली वणसाम्री, जामी फोमी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव द, त लख रस केस विसविसय ॥ २२ ॥ एव खु जतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असई पोसच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मसल जंतग, तण कठे मंत मूल नेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पमिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणू वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रसगंधे ॥ वच्छासण आन्नरणे, पमिक्कमे० ॥ २५ ॥ कदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण न्नोग अइरित्ते ॥ दमंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ सथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव न्नोयणान्नोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चनुत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ डुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविन्नागो, न कर्ड तव चरण करण जुत्तेसु ॥ सते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पत्रोगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मझ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकाग, रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ त निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठि जीवो, जइ विहुपावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंत मल विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहि, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ डुरकाण मंत किरिअ, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंभरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अभ्रुठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कतो, वदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्स महणाए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअ च धम्मो अ ॥ सम्मदिठी देवा, दितु समाहि च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दहणे अ तहा विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव जीवे, सवे [illegible] मे ॥ मित्तीमे सव भूएसु, वेरं

मज्झ न केणइ ॥ ४ए ॥ एव मह आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-छिअ सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥ इति ॥४ए॥ इहा प्रजातके पमिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं कहना ॥

॥ पीछें दो वांदणा देकर अवग्रहमांहियकोज कहे ॥ इछा-का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्नुठ्ठिमि अप्रिंतर ॥ राइय खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली वैठ के, बे बाह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्नुठ्ठि ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह जगवन् अप्नुठ्ठिमि अप्रिंतर देव-सिउं खामेउं ॥ इछं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं जत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्जविणय परिहीण सुहु-मंवा बायर वा ॥ तुप्ने जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिछामि डुक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहा गुरु पण मिछामि डुक्कमं कहे. पीछें बे वांदणा देई जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय के आय-रिय उवज्जाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहमीए कुलगणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, जगवउ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, जावउ धम्मो निहिअ निअ चित्तो ॥ सव खमावइत्ता खमामि सवस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि नंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह ॥ मुहपत्ती पमिलेही बे वादणा देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिनवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्राधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंमले हस्तिदंते, वरकारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंमे वरतरद्रविमे उद्रियाणे च पौंमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविमकवलये

मज्झं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव मह आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-
छिअ सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कतो, वंदामि जिणे चउवीस ॥ ५०
॥ इति ॥२ए॥ इहां प्रन्नातके पमिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइअ
कहना ॥

॥ पीछें दो वांदणा देकर अवग्रहमाहिथकोज कहे ॥ इच्छा
का० ॥ स० ॥ न्न० ॥ अप्रुठिमि अप्रितर ॥ राइयं खामेमि
गुरु कहे खामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बे
वाह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्रुठि ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह न्नगवन् अप्रुठिमि अप्रितर देव-
सिअं खामेउं ॥ इछं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं न्नत्ते
पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर
न्नासाए उवरिन्नासाए ॥ ज किंचि ॥ मज्झविणय परिहीण सुहु-
मंवा बायर वा ॥ तुप्रे जाणह अह न जाणामि ॥ तस्स मिठामि
डुक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिठामि डुक्कम कहे. पीछें बे वांदणा देई
न्नूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय कें आय-
रिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहमीए कुलगणे अ ॥ जे
मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण
संघस्स, न्नगवउ अजलिं करिअ सीसे ॥ सर्व खमावइत्ता, खमामि
सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, न्नावउ धम्मो निहिअ
निअ चित्तो ॥ सव खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्त करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणा देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणा निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणा विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणा प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वक्खारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिछले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंडे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये

कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ महीमंरुण पुस्सोवन्न देहं, जणाणदण केवलन्नाणगेहं ॥ महाणदलछी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिन्नरायं ॥ १ ॥ इम होज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहरुण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुझ पद पकज प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिथ्थ० ॥ णमोत्थुण ॥ जावंति चेइआइ० ॥ जावत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते है ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेव्या रे ॥ धन्य भाग्य हमारा ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हु इहा आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि भविजन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ सवत अढारे ध्यासी मास आषाढे, वदि आठम भोमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिद्दमें, कुमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीछें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रूषभदेव पुंमरीक ॥ शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदन।क ॥ करियें जिन आगल, टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पमिलेहण करे, सो लिखते है॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ पमिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे. संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ इमहीज दोय खमासमणे अंग पमिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं कणदोरो पमिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार भगवन् पसाउ करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पमिलेह रखे, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पमिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछें खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्ती पमिलेहु ? गुरु कहे पमिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उहि पमिलेहण संदिस्साउं ॥ उही पमिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पमिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी दृष्टिपमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ प्रवाभी प्राये एही करते दिखते है ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ भ० ॥ सामायिक पारु ॥ गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछे यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊभो थको, तीन नवकार गुणी नीचा गोडाळीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ भयवं दसण्णभद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ भयव दसण्णभद्दो ॥

॥ भयव दसण्ण भद्दो, सुदसणो थूलिभद्द वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एह विहा हुती ॥ १ ॥ साहूण वदणेणं, नासइ पाव असकिया भावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय मित्तपि सभरइ जीवो ॥ जं च न संभरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुह वायाइ भासिय किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधें लीधु विधें कीधु, विधि करता अविधि आशातना लगी होय. दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमाहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिच्छामि दुक्कड ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिला सामायिक पारी कें, पीछे पडिलेहण करे. इहा यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पछे गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछे खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिसाउं ? गुरु कहे संदिसावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छ कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पछें करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहिय पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पडिलेहि वांदणा देई कहे. इच्छाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी. पछें गुरु, दिवस चरिम पच्चक्खाण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्ष अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चक्खे ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चक्खाण करे ॥ वांदणा न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चक्खाण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

म० ॥ सिज्झाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछे इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झाय करु ? गुरु कहे करेह ॥ पीछे इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उभो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय करे ॥ पीछे खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पाछे इच्छ कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पांगरणु पडिग्गाउ ? गुरु कहे पडिग्गाएह ॥ पीछे इच्छं कही शुभ ध्यान करे ॥ इति सध्यासामायिक विधि ॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीछे इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पक्खी तथा चउमासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे है. अब जयतिहुअण लिखते है ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइ जिणेस पास थंभणय पुरट्ठिअ ॥१॥ तइ समरत लहंति झत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणभुंजहि रज्जहि ॥ पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण महजिण॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्णनट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीणखएणखुण्ण

निरसल्लिअसूलिश ॥ तुह जिणसंरणरसायणेण लहु हुंति पुणणव, जय धणंतरि पास मइवि तुहुं रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मततंतसिद्धि अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तडवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइ विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि, दुरिअई हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंभेइ भीमदप्पुद्धर सुरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थतित्थभत्तिब्भर निब्भर, रोमंचं चिअचारु-काय किंनरनरसुरवर ॥ जसुसेवहि कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणदचंद भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि बारिवाह जयजंतुपिआमह, थंभणयट्ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवण्णुअवण्णु सुण्णु वन्निउ छप्पण्णि हि, मुक्खधम्मुकामत्थकाम नर नियनियसत्थहि ॥ जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइ अमण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसण्णुसुण्णुगग्गिरगिरकरुणय ॥ तइंसहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मह विज्झविसज्झसइ पास भय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पईपासविविअसंतनित्तपत्तंतपविसिय, बाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपुलइय ॥ मण्णूइंमण्णसलूण पुसअ-प्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरग-जुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भवणेदिमहूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहुप्पव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियर,विहुरिअ तमपहयर, दसिअ सयलपयत्थविहरिअ पहाभर ॥ कलिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेणि ॥जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसपास मई मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणुं ॥ जय जतुहजणएणतुल्लजजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जतु पिआमह ॥ १५ ॥ भूवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसवुलचिठहि, इय तिहुअण वणसिह पास पावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरतरयण कर रजिअ नहयल, फलिणी कदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग ससग्गअगजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंभणय पुरठिअ ॥ १७ ॥ महमणतरलपमाणनेय वायाविविसठलु,नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपाल हिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिकप्पिउणेयकलुणकिंकिवनजंपिउ, कि वनचिठिउकिठदेवदीणयमविलंबिउ ॥ कासुनकिय निप्पलुलल्लुअह्मेहिदुहत्तई, तहविन पत्तउताण किपि पई पहु परिचत्तइ ॥ १९ ॥ तुहु सामिह तुहुं माय वप्प तुहु मित्तपियकरु, तुहु गइ तुहुं मइ तुहिज ताण तुहुं गुरु खेमकरु ॥ हउ दुहभरभारिअबराउ राउलनिब्भग्गउ, लीणउ तुह कमकमल सरणजिणपालहि चगउ ॥ २० ॥ पइकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥किवि गजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइ अवहो-

रक्खिकेणपास सरणागयवछल ॥ ११ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्नपयोअण, तुहं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त समचित्तवित्तिनयानिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गउविमइं पासनिरंजण ॥ १२ ॥ हउं बहुविहदुहतत्तगत्ततुहुं डुहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउंजिण पासअसामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन सोहिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग विभागनाहनहुजोअणतुहसम, न्नवणुवयारसु हावन्नाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइं किंघण नएइ न्नुविदाहुसमंतउ, इय डुहबंधव पासनाह मइं पाल थुणंतउ ॥ १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अणविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिणचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइ चंगउ ॥ १५ ॥ अहअणविजुग्गयविसेसकिविमणहि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह, किं अणुंण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पच्चण नहु होइ विहल जिणजाणउ किं पुण, हउं डुक्खि निरुसत्तचत्तडुक्कहुउस्सुयमण ॥ तं मन्नउ निमिसेण एण एउविझइ लप्नइ, सच्च जं न्नुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइ अप्पपयासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणंवहु जंपिउ ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणादयासउ, जइअवगिणसि तुंहिजअहहाकिहोइसहयासउ ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअपाइणवेलविउ, तउजाणुजिणपास तुम्ह हउअंगीकरिअउ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउहावण, रक्खंतह निय कित्तिणे य जुज्जइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्ध ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथन्नणयपुरछिअ, इय मुणिनरसिरि अन्नयदेव विन्नवइ

॥ पीछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणा मुहपत्ती पमिलेहु ? गुरु कहे पमिलेहेह पीछे मुह-पत्ती पमिलेहि कें वांदणा देवे पीछे अवग्रहमाहिज जन्नो थको इच्छा० ॥ स० ॥ न० ॥ देवसिय आलोउं, एसा कहे तब गुरु कहे आलोएह. पीछैं इच्छ आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अति-चार आलोवे. पीछैं सवस्सवि देवसिय इत्यादिथी मांमीने इच्छा-कारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पमिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछे इच्छ तस्स मिच्छामि डुक्कम कहि कें समासा प्रमार्जि प्रमार्जित नूमियें आसन पर बैठ कें नगवन् ! सूत्र नणु एसा कहे. तब गुरु कहे नणेह. पीछे इच्छ कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि नंते नणीने इच्छामि पमिक्कमिउ जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दूसरा सब सुनें. पीछैं खमा दो कर अप्नुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खमा हुवा इच्छा० ॥ स० ॥ न० ॥ अप्नुट्ठिओमि अप्रितर देवसिय खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछे इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछे विधिसेंती दो वांदणा दे कर आयरिय उव-ज्झाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि नंते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सग्ग इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउ-स्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें पीछे दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स नगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू०

॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें पारि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे. पीछे सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछे गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अव श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछे खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥अन्नत्थ० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधव. श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षतु क्षेत्रदेवता ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पीछे खमा हुवा एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडूबैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह.

॥ पीछें मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणा देइ ॐ वरकनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभ ॥

॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सव्वामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥१॥ पच्चखाण नहि लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणा, वांदणा, काउ-

स्लग, पच्चक्खाण, ७ आवश्यक साधता कानो, मात्रा, उंगो अधिको अक्षर ऊंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इच्छामो अणुसट्ठि० ॥ कहो बैठे पछें गुरु एक स्तुति कह्या पीछे श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें णमो खमासमणाण ॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाण, कही संसारदावाकी स्तुति कहे

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंगी कुरंगं, मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्ति ॥ विकचकमलमुच्चैः साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी॥४॥ इति॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थुणं० कह के एक श्रावक खमासमण दई कहे —इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ भ० ॥ स्तवनभणु स्तवन सांभलु ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह पीछे आसन पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें नमो स्तवन कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ भविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

कांई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरुप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहा तत्त्व पिछाणे रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोता, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मझार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछे तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अड्ढाइज्जेसु कहना, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥

देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्त काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछे इच्छं कहि कें देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्त करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे

॥ पीछे खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उड्डावणाउ करेमि काउस्सग्ग ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहो. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे पीछें खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउ फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपित ॥ संसिक्त स्तुतिभिर्जलै शिव फल स्फूर्जत्फणापल्लव, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयता नित्य मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछे नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंभणयट्ठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे

॥ अथ श्रीथंभणयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयट्ठियपाससामिणो सेस तित्थसामीण ॥ तित्थ समुन्नय कारणं, सुरासुराण च सव्वेसि ॥ १ ॥ एस मह सरणत्थ, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंजणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्त करेमि काउ-स्सग्गं ॥ पीछें खमे दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोग-स्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछे प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें डावो गोडो ऊंचो करि कें खमासमण देई के, इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लूल्लूरण, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणालिद्धउ ॥ नंनव जलहर तडिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयछय वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायका ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिन कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछै नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्खी, चउम्मासी अरु संवछरीके रोज तो बडी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें छोटी शांति गुणे, सो लिखते हैं

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांति शांतिनिशांत, शांतं शांताशिव नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्त, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ॐमिति निश्चितवचसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनम शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह जूतपिशाच, शाकिनीना प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत त शांतिम् ॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्या, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, जद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूना च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ जव्याना कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ ९ ॥ जक्ताना जन्तूना, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीना धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरताना, शांतिनताना च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्ति यशो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज रोगरणजयत ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्य ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिव, कुरु कुरु शांति च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टि कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

उँ मिति नमो नमो ह्रॉ, ह्रीं ह्रूं ह्र: यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥१४॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमता, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-विदर्भित. स्तव शांते ॥ सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं याति, छिद्यते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैन जयति शासनम् ॥१८॥ इति॥

॥ पीछै चीराकका अथवा बीजलीका चादणा पड्या होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउ-स्सग्ग करें, पछे प्रगट लोगस्स कह्यो पूर्वलो परें सामायिक पारे, पीछें एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्या क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुति ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंडाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानु', कल्पवृक्षोपमान. ॥ भवजलनिधिपोत सर्वसंपत्तिहेतु, स भवतु सतत व, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेव: ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुति ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वसो,' वदनादिच्छितप्रद ॥ पूजानात्पूरक: श्रीणा, जिन साक्षात्सुरद्रुम' ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ सुवर्णवर्ण गजराजगामिन, प्रलबबाहु सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रै. स्तुतपादपकज, नमामि भक्त्या ऋषभ जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुति

॥ अथ शातिजिन स्तुति ॥

॥ सोलम जिनवर शातिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कचन वरण शरीर कापि, अतिशय अभिरामी ॥ अचिरा अगज विश्वसेन, नरपति कलचद ॥ मृगलछन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृद ॥ भुगमा अमृत वेहवी ए, जास अखण्डित आण ॥ एक मने आराधता, लहियें कोडि कल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशातिनाथस्तुति ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुति ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवत ॥ यादवकुल अवतस हस, उत्तम गुणवत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति रहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्यु ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल नि शंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-सुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभु-वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंता एहनु, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडिक्कमी ॥ १॥ खमासमण देई देवसी आलोइय पडिक्कंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पडिलेहु ? चउमासीयं चउम्मासियं मुह-पत्ती, संवच्छरीयं संवच्छरी मुहपत्ती पडिलेहु ? एम कहे पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वांदणा देई, तिहां पक्खीमें पक्खी वइक्कंतो ॥ चउमासी पडि० ॥ चउमासीउ वइक्कंतो संवच्छरीमें संवच्छरो वइक्कंतो, एम यथायोगें कहे ॥ पीछे गुरु कहे पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-क्खिक ॥ चउमासिक सांवच्छरिक भणजो छींक जयणा करजो मधुर स्वरें पडिक्कमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो मांडलमें सावचेत रहेजो, पछे सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछे कहो ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अभि-

तर पक्कियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पछे मस्तकें अंजलि करतो थको, इछ खामेमि पक्किय ॥ ३ ॥ कही, गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्कियें पनरसन्हं दिवसाण पनरसन्हं राईण ज किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउन्हं मासाण अन्हं पक्खाण वीसोत्तरसो राइदियाण जं किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि कहे. संवछरीयें दुवालसन्हं मासाणं चउवीसन्हं पक्खाणं तिन्निसयसठिराइंदियाणं ॥ ज किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारे गुरु पण मिछामि दुक्कडं कहे ॥ तिहां शेष साधु उचरता हुवे तो पाखियें तीन, चउमासीयें पांच, संवछरीयें सात साधुने खमावे ॥ ॥ पीछें उगी अवग्रहमाहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ स० ॥ भ० ॥ पक्कियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछे इछ आलोएमि, जो मे पक्किउ ॥ २ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवछरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते है ॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणमि दसणमिय, चरणमि तवेय तहय विरियमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३ तपाचार ४, वीर्याचार ५ एव पांच विधि आचारमाहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बादर, जाणता अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइ करी मिच्छामि दुक्कड ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञान--कालवेला-मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकाले पढिउ, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव चांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वोसार्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडो अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिज्झाई अणोझा कालवेलामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धात भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा सापडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूक लागो ओसासे मूक्यो कनें छता आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्ते सार सभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रते भणतां गुणता प्रद्वेष मत्सर अतराय अपघात कीधो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान ए पाच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइउ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइ करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अठ्ठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,

सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसबंधिया फलनणे विषे नि सदेह बुद्धि धरी नही चारित्रिया साधु साध्वी तणा मल-मलीन गात्र देखी दुगछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, सधर्माह गुणवततणी अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चितवी सधर्माहे थिगेक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउ, विणसतु उवेखीउ, छती शक्ते सार सभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधु, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधोतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पासें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठबको लागो, मुखतणो वाफ लागी, ठवणारिय हाथथको पडीओ, पडिलेहवो वीसार्यो, नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहि समिईहि तिहि गुत्तीहिं॥ एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजलसंघाणपारिठ्ठावणीयासमिती ५ मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पच समिती तीन गुप्ति, रुडी पेरें पाली नही ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीवे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषत श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार —संका कख विगिछा, पसस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सका - श्रीअरिहत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गाभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियाना चारित्र जिनवचन तणो सदेह कीधो आकाक्षा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक
ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देरानां प्रभाव देखी रोगें आ-
तकें इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बोद्ध सांख्यादिक सन्यासी
भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र
चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र
शोळ्यां [illegible]-शराव संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजा-
त्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ
ठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-
अनतचोदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,
कीधा, पिपल पाणी घाल्यां वलाव्यां घर
नदी समुद्र कुडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान
र माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणना
व्रतोलां कीधा, कराव्यां विचिकिच्छा —धर्म-
संदेह कीयो जिण अरिहंत धर्मना आगर
मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें
, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,
चारित्रिया ऊपरे अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी
शा कीधो, प्रीति मांडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म
तविधे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहि
ना अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन, वचन,
मि० ॥ १ ॥

णातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार वई
भारे भत्तपाण वुच्छेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें
प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे
कर्म कीधा, चारा पाणी तणी वेला सार सं-

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा सकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आवी मोकली ॥ छट्ठे दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पाच अतिचार अने करमहूनी पन्नरे, एव वीश अतिचार॥ सचित पडिबद्धे, अपोल दुप्पोल्य च आहारे०सचित्त तणे नियम लीधे अधिक सचित्त लीधु, तथा सचित्त मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छौषधि तणु भक्षण कीधु होला उंबी पहुक काकडी भडथां कीधा, लुख्या धान प्रमुख भक्षण कीधा ॥ सचित्त दव्व विगई, पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते सभार्या सक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमाहि आदु मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंवली गोल्हां खाधा, चोमासा प्रमुखमाहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहु दिवसनु दही लीधु, मधु महुडा मांखण माटी वेंगण पीलू पीचू पपोटा पीपी विष हीम करहा घोल वडा अणजाण्या फल टींबरु अथाणु आमणबोर काचुं मीठु, तिल खसखस काचा कोठिंवडा खाधां, रात्रिभोजन कीधु, लगबगती वेलायें व्यालू कीधु, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लख्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पाच वाणिज्य पांच कर्म्म, पाच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या. धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. दासी मांखण तपाव्यां, अगीठा

कीधा कराव्या. तिलादिक सचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कदर्प्प लगे विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणहोने असबद्ध वाक्य बोल्या. खाडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्या आप्या, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अबोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हीडोले हीच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, सभेडा लाया, भेसा सांढ कूकडा, भिढा श्वानादि जूझतां कलह करता जोया, खाधी लगें अदेखाई चिंतवो माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुदी, छास पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां ते माहि कीडो कथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वाछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चितव्यु, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्यु हलाव्यु, छती वेलाइं सामायिक न लीधु, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वीज दीवा तणी उजाही लागी कण कपासीया माटी मीठु नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना सघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण प्ररउ पारिउ पारवुं वीसारिउ, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पाच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामाहिवाहिर थकी काइ अणाव्यु, आप कन्हाथी वाहिर मोकल्या, साद करी रुप देखाडी काकरी नाखी आपणपणुछतु जणाव्यु ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ सथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे सथारा तणी भूमि वाहिरला थंडिलां दिवसे शोध्या पडिलेह्या नहीं, मातरु अणपडिलेह्युं वावरिउ, अणपुजी भूमिकाइ परठविउ, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो परठव्या पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्यु पोसहशालामाहि पइसता नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा सघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, सथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ पोरसिमाहि उघ्या, अविधि सथारु पाथर्युं, काल वेलायें पडिकमणुं न कीधु, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वादवा वीसारिया, पोसह असूरो लीधो, सवागे पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि सविभागव्रते पाच अतिचार ॥ सच्चित्ते निख्खवणे० ॥ सचित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतु दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतु फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धे असूझतु फेडी सूझतु कीधु, आपणु फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगे दान दीधुं, गुणवत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधु, अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पाच अतिचार इहलोए परलोए० ॥ इहलोका ससप्पउगे परलोगाससप्पउगे जीविआससप्पउगे मरणा ससप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछया. परलोक इद्र अहमिद्र देवाधिदेव पदवी वाछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वाछा कीधी, दु:ख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ सलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधु नही ऊणोदरी ते पाच सात कवल ऊणा रह्या नही. द्रव्य सक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधु नही आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग सकोच्यां नही, नवकारसी पोरसी गठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमड्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवा वीसार्या. बेसता नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिम न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुपाणी पीधुं, वमन थयु ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यतर तप॥ पायच्छित विणओ० गुरुकने मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायच्छित तप लेखा शुद्ध पुहचाडयु नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रते विनय साचव्यो नही, वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय

कीधी नही, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ, परिक्कमइ जो जहुत ठाणेसु ॥ जुजइअ जहा थाम, नायवो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणु छतु बल वीर्य गोपव्यु, रूडा पचाङ्ग खमासमण न दीधा, बेठा पडिक्कमणु कीधु ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसलेहण पण पनर कम्मेसु ॥ बारस तवविरिअ तिग, चउवीस सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाण करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनत काय बहुबीज भक्षण महाआरभ महापरिग्रहादिक कीधा, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधा, जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नही, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८ ए अढारह पापस्थानकमाहि जे काइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एव प्रकारें श्रावक धर्मे श्रा सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसा सो अतिचार माहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कड ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार सपूर्ण ॥

॥ पीछें सवत्सवि पक्खिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउत्थेण पडिक्कमह, चउमासे छट्ठेण पडिक्कमह संवच्छरीयें अट्ठमेण पडिक्कमह इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कही द्वादशावर्त्त वांदणा देवे. पीछें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, देवसिय आलोइयं पडिक्कता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अभितरपक्खियं ॥ २ ॥ खामेऊ? गुरु कहे खा० ॥ पीछे इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वें कह्यो, तिम कही मिच्छामि दुक्कडं देई खमावे, पीछे बे वांदणा देई. भगवन्! देवसिय आलोइयं पडिक्कता पक्खिय ॥३॥ पडिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह पीछें इच्छ कही करेमि भंते सामाइयं॥इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिउ ॥३॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी०अन्नत्थू०॥कही॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांभले, अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. भगवन्! सूत्र भणु? गुरु कहे, भणेह. एसो वचन मनमें धारो॥इच्छ कही, ऊभो थको, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे बीजा श्रावक करेमि भ ते० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारी, ऊभा थका तीन नवकार गुणी बेसें पीछे ॥ ३ ॥ नवकार ॥ १ ॥ करेमि भंते कही, इच्छामि पडिक्कमिउ जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसिय सर्व ॥ एहने ठिकाणें पडिक्कमे पक्खिय, चउम्मासिय सवच्छरियं सर्व कहे. पीछे ऊठी, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण भणी, खमासमण देई इच्छा० ॥ स० ॥ भ० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करू? गुरु कहे करेह. पीछे इच्छं कही, करेमि भंते

सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीये बार लोगस्स चउमासिये वीस लोगस्स संवच्छरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी पारी लोगस्स कहे बेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणा देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अभ्भिंतर पक्खिय ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे खामेह पीछे इच्छ खामेमि पक्खिय ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो तिम कहे, पीछे इच्छाका० ॥ सं०॥भ०॥पाखी॥३॥ खामणा खामूं ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणा खामेह, पीछे श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचु नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछे गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह पीछे श्रावक कहे. इच्छ इच्छामि अणुसट्ठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंबिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणा, अथवा बे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनी पेंठ पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें देवसिक भणजो एम चउमासे ए सर्व द्विगुणो कहणो, संवच्छरीयें त्रिगुणो कहणो पाछे जिणें तप कीधो हुवे ते पइट्ठियं कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पछि बे वांदणा देई, अब्भुट्ठिओमि अभ्भिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे पछैं बे वांदणा देई आयरिय उवज्झाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि देवसिक पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे. पीछे भवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें भवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन, अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवा पीछें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी साजले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम जणदे नियम संजारे, सो इस तरें पच्चख्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चख्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पच्चरकाइ. अणत्थणाजोगेणं सहसागारेणं लेवालेवणं गिहिञ्जसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चरकाइ अणत्थणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चरकाण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पच्चखे. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चरकाण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चरकाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइम साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चरकाण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुठसी पच्चरकामि, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थ०॥ सहसा०॥ पच्छणकालेणं दिसामोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगइउ पच्चरकामि इत्यादि पर्वेसी

परें कहणा ॥ इति पोरिसी पच्चरकाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पच्चरकाण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चरकाइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पच्चरकाइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चरकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढ अवढ वा पच्चरकाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० ॥ सह० ॥ पछ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सव० ॥ विगइउ पच्चरकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपच्चरकाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसि साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पछ० दिसा० साहु० सव० एकासणं बिआसणं वा पच्चरकाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअभुठाणेणं पारि० मह० सव० वेसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चरकाण ॥आ०८॥

॥ पोरसि साढ पोरसि वा पच्चरकाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पछसका० दिसा० साहु० सव० एकासणं एगठाणं पच्चरकाइ दुविहं तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं गुरुअभुठाणेणं पारिठाव० मह० सव० वेसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अण० सह० पछ० दिसामो० साहु० सव० आयविल पच्चरकाइ अणउ० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठा० मह० सव० एकासणं पच्चरकाइ, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह०

सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअनुठाणेणं पारिठा० मह० सव० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चख्काण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसि साढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाण खाइम साइमं अण्ण० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्खामि. अण्ण० सह० लेवालेवेणं गिहथसंसिठेण उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएण पारि० मह० सव्व० एकासणं पच्चख्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अण्ण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चख्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाण खाइमं साइमं अण्ण० सह० मह० सव्व० देसावगासिय भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अण्ण० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठ पच्चख्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसि पुरिमढ अवढं वा पच्चख्खाइ अण्ण० सह० पछ० दिसा० साहु० सव देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अ० स० म० सव्व० वोसरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चख्खाण ॥

॥ पोरसि साढ़ पोरसिं पुरिमढ़ं अवढ़ं वा पच्चख्कामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार असणं पाणं खाइमं साइम अ० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तिय पच्चख्खामि. तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइओ पच्चख्खामि इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासिय इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चक्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि. देसावगासिय पूर्ववत् ॥इति दिवसचरिम दुविहार पच्चक्खाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिम पच्चक्खामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चक्खाण ॥ ए ॥

॥ नवचरिम पच्चक्खाइ तिविहपि चउव्विहपि आहार असणं पाण खाइम साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ नवचरिम, दो आगारकानी होय ॥ इति नवचरिम पच्चक्खाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अनिग्रह पच्चक्खाणकेनी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पाचमो चोलपट्टागारेण सो साधुकों होय ॥ इति अनिग्रह पच्चक्खाण ॥

॥ अहणं नते तुह्माण समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि दघउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं देसावगासिय खित्तउणं उच्च वा अणाउवा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चक्खामि नावउणं जावगहेण न गहिज्जामि उलेण न उलिज्जामि असेणकेवि रायकेण वा एसो परिणामो न पमिवज्जइ ता अनिग्गह असत्रणानोगेणं सहस्सागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चक्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चक्खाण करे तव देसावगासी नही पच्चक्खे अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ठ आगार पच्चक्खे सो दिखावे है. पाणस्स लेवाडेण वा

अलेवाम्हेण वा अछेण वा वहुलेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चख्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरमिढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्सउ, अठेवय आ-यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयत्नाठे, छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पच्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहिय पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं ॥ अर्थः—इहां गुरु कहे पच्चख्खाइ. शिष्य कहे पच्चख्खामि पच्चख्खाइका अर्थ सब जगे अंगीकार वाची जाणना. जेसे सूरज उदय हुआ पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पच्चख्खाण मुहुर्त्त कहते दो घडी काल उपरात जहा तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहा तक चउवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करू. सो च्यार प्रकारका आहार इस मुजब हे. असन कहते अन्न, चावल, गहू, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जवकूं आदि लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लडू वगेरे सब तरेका पकवान सूरणादिक सब तरेका कद दूध दही रोटी राब घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूण सेंधवादिक इत्यादिक सब असणमाहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आछण जवोदक तुपोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखडी नालेर खजूर द्राख सेक्या अनाज आबा केला काकडी अखरोट खारक बिदाम वगेरह सब जातका मेवा सब जातका फल खादम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरमे बहेमा आवळा तुलछी कसेला काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविडंग अजमा अजमोद कुलिजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा काटासेलिया कुंभटिआ पानसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजड़ वावची वावल-छाल धवछालि खेजड़ेकीछालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अथ अनाहार चीजे कहतेहैं नींवकीछालि जड़ पान लिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूड़ेकीछालि चंदन-कीराख रोहिणीकीछालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिआ चिरमी कथर वोरकीजड़ इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब भो-गणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इच्छा सयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे पच्चख्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चख्खाण करे सो अधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे अन्नछणाभोगेणं कहिये अना-भोग टालके किया जो पच्चख्खाण, अत्यत भूल जाणेसें कोइभी चीज भूलके मुखे माललो होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीछा नाख देवे तो पच्चख्खाणमें भग नही· उर जाणे बाद भक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे भग होय ॥१॥ पछन्नकालेण कहते कालकी प्रछन्नता आकाशमें गर्द झरती होय आकाशमें· बद्दल छाये होय तेसेइ पहाड़कीउट आजावे सूरज नही दीखे तब भ-रमसु पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहता दिसा भूलकर पूरबकू पछिम जाणकर पचख्काणका काल पूरा हुये विगर भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहता सहसात्कार बहोत उताव लके योगसे अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका छींटा

मूंमें गिर जाय तो व्रत भंग नही ॥४॥ साहूवयणेणं कहतां साधूके वचनसें उग्घांमा पोरसीआदिक भरम संयुक्त सुणकर पच्चरकाणका काल पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥५॥ सव समाहिवत्तियागारेणं कहतां पच्चरकाणका काल पूरा होणेसें पहली अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी थिरता रहे नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक पथ्य देवे वा आप लेवे तो पच्चरकाण भंग नही ६ महत्तरागारेणं कहता पच्चरकाणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य संघादिकका प्रयोजन होणेसें पच्चरकाणका काल पूरण भये विगर ही भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां गृहस्थ देखतां साधू भोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पच्चरकाण कर भोजन करणे वेगाहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब साधू उस ठिकाणेसें उठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करे तो व्रत भंग नही उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करेतो व्रत भंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारेणं कहता पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोमासा आसन चल जाय तो व्रत भंग नही ॥९॥ गुरु अब्भुठाणेण कहता आपका गुरु आणेसें तथा आपसें कोइ वमा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते भोजन करता एकाशनादिकमे आसन छोम खमा हो जावे तोभी व्रत भंग नही ॥१०॥ पारिठावणियागारेणं कहता सब पच्चरकाणमें यह आगार साधुकाहे. जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तब

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतभी आहार करे तो व्रत भंग नही ॥११॥ लेवालेवेणं कहता भोजन करणेका थाल प्रमुख भाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका असलगाभया हे उसकू हाथ वगेरेसें पूछ नाखा उस परभी किंचित्वे मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ॥१२॥ उक्खित्तविवेगेण कहता आयंबिलादि पच्चख्खाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणे योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत भंग नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाय सके नही एसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत भंग नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिठेणं कहता भोजन पुरसे जिससेती एसी कुडछी आदि देकर भाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरडी होय प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें भोजन पुरसे तोभी व्रत भंग नही १४ पडुच्चमुख्खिएणं कहता सर्व था लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमालम चोपडणेमें आयाहे लेकिन् घृतादिकका स्वाद नही मालम देता हे तो नीवी पच्चख्खाणमें उस द्रव्यकू खाणेमें आवे तो व्रत भंग नही और जो धारविगय लेवे तो व्रत भंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पच्चख्खाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलिपणत्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपणत्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपव्वज्जामि साहूसरणंपव्वज्जामि केवलिपणत्तं धम्मंसरणंपव्वज्जामि ३ इच्छामि पडिक्कमिउं

पगामसिज्जाए निगामसिज्जाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंटणाए पसारणाए छप्पइयासंघट्टणाए कुइए कक्कराइए छीए जंभाइए आमोसेससर क्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इत्थीविप्परियासिआए दिट्ठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाणभोयणविप्परिआसिआए जोमेदेवसिउ अइयारोकउ तस्समिच्छामिदुक्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिखायरिआए उग्घाडकवाड उग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए बलिपाहुडिआए ठवणापाहुडिआए संकिएसहस्सागारे अणेसणाए पाणेसणाए आणभोयणाए पाणभोयणाए बीअभोयणाए हरियभोयणाए पछाकम्मियाए पुराकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसंसट्ठहडाए रयससट्ठहडाए पारिसाडनिआए पारिठावणिआए उहासणभिरकाए जंउग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिशुद्धं पडिग्गहिअ परिभुत्तंवा जंनपरिठवणिअं तस्समिच्छामिदुक्कडं पडिक्कमामि चाउकालं सिझायस्स अकरणयाए उभउकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देवसिउ अइआरो कउ तस्स मिछामि दुक्कडं पडिक्कमामि एगविहे असंजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं पडिक्कमामि तिहि दंडेहिं मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं पडिक्कमामि तिहि गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेण नीयाणासल्लेणं मिछादंसणसल्लेण पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं पडिक्कमामि तिहि विराहणाहि नाणविराहणाए दसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पडिक्कमामि चउहिं कसाएहिं कोहकसाएणं माण—— एणं मायाकसाएणं लोहक—— एणं पडिक्कमामि चउहिं स—— हारसणाए भयसण्णाए मे——

ए परिग्गहसण्णाए पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए भत्त-कहाए देसकहाए रायकहाए पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेण झाणेणं रुद्देणझाणेण धम्मेणंझाणेणं सुक्केणझाणेण पडिक्कमामि पचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-णीआए पाणायवायकिरियाए पडिक्कमामि पचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेण गंधेण फासेणं पडिक्कमामि पचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउवेरमण मुसावायाउवेरमण अदिन्नादाणाउवेरमण मेहुणाउवेरमण परिग्गहाउवेरमण पडिक्कमामि पचहिं समिईहिं इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनि खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसघाणपारिठावणियासमि-ईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएण आउकाएण तेउकाएण वाउकाएणं वणस्सईकाएण तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहि लेसाहिं किण्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-उमलेसाए सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहिं अट्ठहिं म-यठाणेहिं नवहिं बम्भचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं तेरसहिं किरियाठा-णेहिं चउद्दासहि भूयगामेहिं पणरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसएहिं गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबम्भे इगुणवीसाए ना-यज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडज्झयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी साए भावणाहि छव्वीसाए दसाकप्पववहाराण उद्देसणकालेणं सत्ता वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताण आसाय णाए सिद्धाणआसायणाए आयरिआणआसायणाए उवज्झायाणआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ०सावयाणंआ०सावियाणंआ० देवाणआसाय०देवीणंआ०इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ०सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ०सव्वपाणभूअजीवसत्ताणंआ० कालस्सआ०सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणारिअस्सआ० जवाइदं वच्चामेलिअ हीनक्करिअ अच्चक्करिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुट्ठदिन्नं, दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउसज्झाउ कालेनकउसज्झाउ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए नसज्झाइय तस्स मिच्छामि दुक्कड णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमाहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुणं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं इत्थट्ठियाजीवा सिझंति बुझति मुच्चंति परिनिवायंति सवदुक्खाणमंतंकरंति तंधम्म सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि तंधम्मं सद्दहतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणुपालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अप्नुट्ठिमि आराहणाए विरउमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजम उवसंपज्जामि अवभं परिआणामि बंभउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्छत्त परिआणामि सम्मत्तं उवसपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहि उवसंपज्जामि अमग्गं परिआणामि मग्गं उवसंपज्जामि जं संभरामि जं च न संभरामि जं पडिक्कमामि ज च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुच्छ

परिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अगार सहस्स सीलंगधारा ॥ अरखयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मझ्झ नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कतो, वदामि जिणेचउवीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्र समाप्तं ॥

॥ अथ पख्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिथ्यंकरे अतिथ्थे अतिथ्थसिद्धेय तिथ्थसिद्धे अ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महरिसि नाण च वदामि ॥ १ ॥ जेयइमगुणरयणसायर, मविराहिऊण तिन्निससारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुय च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करति, परम रिसि देसियमुयार ॥ अहमवि उवठ्ठिउत, महव्वय उच्चारण काउं ॥ ४ ॥ संकित महव्वय उचारणा महव्वय उचारणा पचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछठ्ठा तजहा सव्वाउ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाउ मूसावायाउ वेरमण सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमण सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउराइभोयणाउवेरमण तत्थ खलु पढमे भते महव्वए पाणाइवायाउवेरमण सव्व भते पाणाइवाय पच्चखामि से सुहुम वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसय पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्ननसमणुजाणामि तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयलल्लोए कालत्तणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावत्तणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपिगमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खती-पहाणस्स अहिरणसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभ चेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिखावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-त्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाण याए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-गदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मदयाए किड्डयाए तिगारव-गरुयाए चउकसाउवगएण पचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-सोक्ख मणुपालयतेण इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहि समणुन्नाउ त निंदामि ग-रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण अइयं निंदामि प-डुपन्न संवरेमि सव्व पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहि नेव सयपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-णीवा संजयविरय पडिहय पच्चखाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूयाण सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताण अदुक्खणयाए अ-सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्ख

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताण विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ पाणाइवायाउवेरमणं ॥ १॥
अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाउवेरमण सव्व भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसय मुसवाइच्चा नेवन्नेहिं मुसवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं मुसावाए सव्वदव्वेसु खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालउण मुसावाए दियावा राउवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव वभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसवलस्स निरग्गिसरणस्स सपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स ससारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएण रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएण पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेण इहं वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिज्जंतो वा परेहि समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण अइय निंदामि पडिपन्न संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्व मुसावाय जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेवसयमुसंवइ

ज्ञा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्ञा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खिय सिद्धसख्खिय साहूसख्खिय देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसि पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसि जीवाणं सव्वेसि सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महठ्ठे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसठ्ठे तं दुख्खखयाए कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि दोचे भंते महव्वए उवठिउमि सव्वाउ मुसावायाओवेरमणं २ अहावरे तचे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा बहुवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंत्तवा अचित्तमत्तंवा नेवसय अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्न गिण्हाविज्जा अदिन्न गिण्हतेवि अन्ननसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओण अदिन्नादाणे गहणद्धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रन्नेवा कालओण अदिन्नादाणे दियावा राओवा भावओण अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इम्मस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स ७ ८ मव नव बंभचेर गुत्तस्स

निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
व्वियारस्स निव्वित्तोलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-
यस्स अविसंवाइयस्स ससागपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
अभिगमेणवा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं
पडिपुन्नभारियाए सायासुख्खमणुपालयतेण इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
हणेसु अदिन्नादाण गहियंवा गाहावियंवा घिप्पतंवा परेहिसमणुन्ना
ओ तं निंदामि गरिहामि तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएणं अ
इय निंदामि पडुप्पन्नसंवरेमि अणागय पच्चख्खामि सव्व अदिन्नादा
ण जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसय अदिन्न गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
अदिन्न गिन्हाविज्जा अदिन्नगिन्नतेवि अन्नन समणुजाणामि तंजहा-
अरिहंतसख्खिय सिद्धसख्खिय साहूसख्खिय देवसख्खियं अप्पसख्खियं
एव हवइ भिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चख्खाय पाव
कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ
णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं
जीवाण सव्वेसिं सत्ताण अदुखणयाए असोयणयाए अजूरणयाए
अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे
महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं
दुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए
त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताण विहरामि तच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि स
व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमण ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते म
व्वए मेहुणाओवेरमण सव्व भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वं वा मा
णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिकमामि निंदामि गरिहामि। अप्पाण वोसिरामि से मेहुणे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविंत्तियस्स कुक्खीसबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स ससारपारगामिस्स निव्वाणगमणपज्जवसमाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपाल्यतेणं इहवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणसेवियवा सेवावियंवा सेविज्जतोवा परेहि समणुन्नाओ तनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण अइय निंदामि पडुप्पन्नसवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्वमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओह नेवसयमेहुणसेविज्जा नेवन्नेहिमेहुणंसेवाविज्जा मेहु गसेवतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तजहा अरिहतसक्खिय सिद्धसक्खिय साहुसक्खिय देवसक्खियं अप्पसक्खियं एव हवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिजीवाण सव्वेसिंसत्ताण अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महट्ठे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुक्खखयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओमेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्व भंते परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पवा वहुवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतवा अचित्तमंतवा नेवसयं,परिग्गह परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिन्नतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण नकरेमि नकारवेमि करंतपि अन्ननसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओण परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओण परिग्गहे दियावा राओवा भावओण परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेण अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-
गरुयाए चउकसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सोक्खमणुपालयतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
हिउवा गाहाविउवा घिप्पतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-
न्नंसंवरेमि अणागयंपचक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहं-
परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-
सक्खियं साहुसक्खियं देवसखियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भि-
क्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा
एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
परमरिसिदेसियपसत्थे तदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहिलाभाए सं-
सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
उवट्ठिउमि सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
इभोयणाउवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि सेअसणंवा पाणंवा
खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुं-
जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि
तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
भोयणे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे,

एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे स
गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसि
सत्ताण अदुक्खणयाए असोय
अपीडणयाए अपरियावणिया
महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्
कम्मक्खयाए मोहखयाए बो
सपज्जित्ताणं विहरामि चउत्
मेहुणाओवेरमण ४ अहावो
सव्व भंते परिग्गहं पच्चक्खा
मतवा अचित्तमंतवा नेवसय
परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरि
वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं म
वेमि करतंपि अन्ननसमणु
निंदामि गरिहामि
तंजहा दव्वओ खित्तओ काल
साचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओण प
सुवा कालओण परिग्गहे दियावा
अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेण
केवलिपन्नत्तस अहिंसालक्खणस्स स
संतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उव
सस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कु
सरणस्स सपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण
निव्वित्तीलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स अ
रगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफल
वणयाए अबोहिए अणभिगमेण अभिग

देसिएपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छठे भते महधए उवढिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमण ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंच-महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछठाइं अत्तहियठाइ उवसंपज्जित्ताणंविह-रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा-रूवारसागंधा फासाणचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइ-क्कमे ॥ ४ ॥ इच्छापुच्छायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे पढमवयमणुरक्खे विरयामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बोयवयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे तइयंवयमणुरक्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विर-यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-णधम्मे पंचमंवयमणुरक्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छठंवयमणुरक्खे विरयामो-राईभोयणाओ॥ ११ ॥आलियाविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे पढमवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइयाओ॥ १२ ॥ आलियवि-हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाउ ॥१३॥ आलियाविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तईयंवयमणुरक्खे विरियामो अदिन्नादाणाउ ॥ १४ ॥ आलियविहार-समिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे चउत्थवयमणुरक्खे विरियामोमेहु-

णाउं ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंचमवयमणुरक्खे विरयामो परिग्गहाउ ॥ १६ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे छठवयमणुरक्खे विरयामोराईभोयणाउ ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तिविहेणपडिक्कतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्छत्तं एगमेवअन्नाण परिवज्जतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अणवज्जजोगमेग सम्मत्तएगमेवमाणतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइअट्टरुद्दाइं परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तधम्मं दोन्नियझाणाइधम्मसुक्काइ उवसपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २२ ॥ किण्हानीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसग्गाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ उवसपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविउ रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहंसवरसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २७ ॥ पचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवज्जतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २८ ॥ पंचेंदियसवरणं तहेवपंचविहमेवसज्झायं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पियभासाउअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ ३० ॥ छव्विहमब्भिंतरिय वज्झंपियछव्विहतवोकम्म उवसपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयठाणाइं सत्तविहचेवनाणविब्भगा परिवज्जतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहंसत्तिक्कयामहज्झयणा उवसपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपच ॥ ३३ ॥

अट्ठमयट्ठाणाइं अट्ठयकम्माइंतेसिबंधिच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच॥३४॥ अट्ठयपवयणमाया दिट्ठाअट्ठविहनिट्ठिअट्ठेहिं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसारत्थायनवविहाजीवा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंबरंतहयसंकिलेसंच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिठाणा दस चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरओ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो तिविहेण पडिकंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्त सल्लुद्धरणं धिइवलंवसाओ साहणट्ठोपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरण निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थझाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो एसखलुतित्थंकोरहि रइरागदोस महणेहिं देसिओ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिउ तिल्लुक सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणत मप्पमेय नमोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहओ नमोत्थुते भगवओ त्तिकट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइय छव्विहमावस्सय भगवंत तंजहा सामाइयं चउवीसत्थओ वंदणयं पडिकमण काउसग्गो पच्चक्खाण सव्वेहिं विएयमि छव्विहे आवस्सए भगवतेससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहतेहिं पत्तियतेहि रोयतेहि

फासतेहि पालतेहिं अणुपालतेहि अतोपख्खस्स अंतोचउमामीए अतो सवच्छरस्स जवाइयं पढिय परियट्टिय पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए ससारुत्ता रणाए त्तिकट्टुउवसपज्जित्ताण विहरामि अतोपख्खस्स जंनवाइय नप ढिय नपरि यट्टियं नपुच्छिय नाणुपेहिय नाणुपालिय संतेबले सतेवी रिए सतेपु रिसक्कारपरिकमे तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरि हामो विउट्टेमो विमोहेमो अकरणयाए अभुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाण जे हिइमंवाइय अंगवाहिरिय उक्कालिय भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुय महाकप्पसुयं उववाइय रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नदीअणुयोगदाराइ देविंद थुव तंदुलवेयालिय चदा विज्झय पमायप्पमाय वीयरागसुय विहार कप्पो चरण.विसोही आउरपच्चख्खाणं महापच्चख्खाणं सव्वेहिंपिए यम्मि अगबाहिरिए उक्कालिए भगवते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सन्नि ज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं प न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहतेहिं पत्तियतेहि रोयंतेहि फासतेहि अणुपालतेण अतोपख्खस्स जवाइय प ढिय परिअट्टियं पुच्छियं अणु पे हियं अणुपालियं तदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहि लाभाए ससारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसपज्जित्ताणविहरामि अंतोप ख्खस्स जंनवाइयं नपढिय नपरियट्टियं नपुच्छिय नाणुपेहिय नाणुपा लिय सतेवले सतेवीरिए सतेपुरिसक्कारपरिकमे तस्स आलोएमो प डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमोविमोहेमो अकरणयाए अभुट्ठे मो आहारिह तवोकम्म पाय.च्छित्त पडिवज्जामो तस्समिच्छा.मिदुक्कड न मोतेसि खमासमणाण जेहिंइमंवाइय अगबा हिरिय उकालिय भगवंतं

तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्तो सूरपन्नत्ती चदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमाणपविभत्तो महल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलधरोववाए देविंदोववाए उठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरियावलियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचुलियाउ वह्नोदसाउ आसीविसभावणाउ दिठीविसभावणाउ चारणसुमिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहपिएयंमि अगबाहिरए उक्कालिए भगवते ससुत्ते सअत्थे सग्गथे सन्निजुत्तीए ससगहणोए जे गुणात्रा भावावा अरिहंतेहि भगवंतेहि पन्नत्तावा परुवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहि पत्तियतेहिं रोयतेहि फासंतेहि पालंतेहि अणुपालंतेहिं अंतोपख्खस्स जंवाइयं पढिय परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालिय तदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जन वाइयं नपढियं नपरियट्टिय नपुछिय नाणुपेहियं नाणुपालिय संते बले सतेवीरिए सतेपुरिसकारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तपडिवज्जामो तस्स मिछामिदुक्कड नमोतेसिखमासमणाण जेहिइमंवाइय दुवालसंगंगणिपिडग भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाउ विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अतगडदसाउ अणुत्तरोववाइअदसाउ पण्हावागरणं विवागसुयं दिठिवाउ सुदिठिसुहाउ सव्वेहि पिएयंमि दुवालसगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहतेहि भगवतेहि पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे स

द्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्द हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पख्खस्स जवाइयं पढिय परियट्टिय पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं त दुख्खक्कयाए्कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जनवाइयं नपढियं नप रियट्टियं नपुछियं नाणुपेहिय नाणुपालियं संतेबले सतेवीरिए संतेपुरिस क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिह तवोकम्मं पायछित्त पडिव ज्जामो तस्समिछ्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणजेहिंइमंवाइय दुवाल सगं गणिपिडग भगवत सम्मकाएण फासति पालति पूरति तीरति किट्टं ति सम्मंआणाए आराहति अहंचनाराहेमि तस्समिछ्छामिदुक्कड ॥ सुय देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसि सुयसागरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्र समाप्त ॥



॥ अथ अष्पुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडिलेही राख्या, जे पोसहना उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थापनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पछें खमासमण देई, ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह इछ कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे पीछें उभो थई, खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इछं कही, खमासमण देई. इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे

ठाएइ, पीछें इह्णं कही खमासमण देई ऊन्नो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ- च्छकार भगवन् पसाउ करी, पोसह दंमक उच्चरावो ? गुरु कहे ज- च्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वो- सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चख्खाण लीजे, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चरकाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि भं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सब्बउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सव्वउ बंभचेर पोसहं, सब्बउ अवावार पोसहं, सब्बउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जावदिवसं अहो- रत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भं ते पमिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुभाषण करतो उच्चरे ॥ पीछे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहु? गुरु कहे, पमिलेहेह बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीछे दोय खमासमणें सामायिक संदिसाहुं? सामायिक ठाउं? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊभो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणें बे- सणो संदिस्साउ? बेसणो ठाउ? कहो, पीछें दोय खमासमणें सि- ज्झाय संदिस्साउं? सिज्झाय करुं? कहो खमासमण देई ऊभो थको, आठ नवकारनो सिज्झाय करे. शीतादि परिसहे [illegible] खमासमणें. पागरणुं संदिस्साउ? पागरणुं पमिग्घाउं? कहे. इहां सामायिक विधि पूर्वं कह्यो छे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छे. [illegible] इरियावही पमिक्कमी छे, तेमाटें इहां सामायिक [illegible] पीछे इरियावही नही पमिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन [illegible]

सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछे पडिक्कमण-वेलासीम सिझाय ध्यान करे. पीछे पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांदी पीछे खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पीछें इछं कही खमासमण देइ कहे इछाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछे इछ कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहि कम्मभूमिहिं इत्यादि नमस्कार भणे, जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३२ पृष्टमा लिख्यो छे तो पण लक्षें फेर लखीयें छैयें दोय खमासमणें,इछाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरुवचनें इछं कही धोतियो कणदोरो पडिलेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इछकार भगवन् ! पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे पीछें खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछे इछ कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणे ॥ इछाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ उंही पडिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह उंही पडिलेहण करुं ? गुरु कहे. करेह.

॥ अथ २४ थंडिला पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंडिलपडिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यहं चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंडिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणे पासे ३, वाम पासे ३, पडिलेहे ॥ ६ थंडिला दरवजेके भीतर पासें दहिणे ३, वामें ३ पडिलेहे ॥ ६ थंडिला दरवजेके बाहर दोनु पासें पडिलेहे ॥ ६ थंडिला जिहा उच्चार प्रस्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पडिलेहे ॥ इति २४ थंडिलां पडिलेहणविधि संपूर्ण ॥

पीछें इरुं कही, कंबल वस्त्रादि पडिलेही. पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे इहां आचार दिनकरमे कह्यो छे दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ स० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पमिलेहु ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करता पूर्ण पहुर दिन चढया उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपमिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पमिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ज० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पमिलेही पान जोजन पात्र पमिलेही राखे. पीछें सिझाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पाचे शक्रस्तवें देववादण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इच्छाका० स० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे पीछें नमोत्थुण कहे खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स कहे. संमासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पाच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तिछ" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उजो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती०

अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक नव० पारी बूरी थुईकी गाथा कहे पीछें पुक्करवरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर, बैठकें नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बैसें ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे. पीछें जयवीयराय कही. नमोत्थूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधि ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियों हुवे, तो पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकू पच्चक्खाण पारे ॥

॥ हवे पच्चक्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. खमासमण देई, इच्छाका० ॥ ॥

प्र० ॥ पाणहार अमुक पच्चख्खाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ प्र०-पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चख्खाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पच्चख्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिछामि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंभवें अतिथिसंविभाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चख्खाण पारी आहार करे पीछे आसण बेठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चख्खे, पीछे इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चख्खाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछे जो बहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिले जई, अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवु कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालाये निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प डिक्कमे खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ प्र० ॥ गमणा गमण आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह पीछे इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक वेशें जई, संज्ञा सा पूजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विरा हियं, तस्स मिछा मि डुक्कड, एम कही वेसे. पीछें पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ प्र० ॥ पडिलेहण करु? गुरु कहे करेह.

इच्छं कही दूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह [illegible]
प्रमार्जुं ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीछें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही
दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावुं ? अंग पडिलेहण करुं ?
कहे. पीछें गुरु वचनें इच्छं कही मुहपत्ती पडिलेही दंमासणो [illegible]
प्रमुखें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीछें काजो गुरु [illegible]
एकातें विखरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण [illegible]
कहे ॥ इच्छकार जगवन् पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहावो ॥
पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा [illegible]
समीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ [illegible]
पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही खमासमण [illegible]
मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
भ० सिद्धाय संदिस्सावुं ? सिद्धाय करुं ? एक रीतें [illegible]
ध्याय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु [illegible]
पच्चक्खे ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे [illegible]
दोय देई, पच्चक्खाण करे. पीछें एक खमासमण [illegible]
सं० ॥ भ० ॥ उपधि थंमिला पडिलेहण संदिस्सावुं ? [illegible]
मासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि [illegible]
गुरु वचनें इच्छं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ०
॥ बेसणो संदिस्सावुं बेसणो ठाउं ? कही बेसणो [illegible] प
डिलेहे. पुजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीगुं [illegible] भो
छे तेमाटें सर्व पाठो कडिपट्टो धोतीयो कायोत्सर्गें [illegible] उप
नवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कडियाटुं [illegible]
वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ [illegible]
सिद्धाय ध्यान करे. पीछें [illegible]
जो चउदश हुवे, तो पाखी [illegible]
करे.

संवछरी पमिक्कमणो करे तिहा देवसी पमिक्कमणो पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " ठाणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासम णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं? कही बेठो थको तीन नवकार प्रमुख सिझाय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पमिक्कमणविधि आगें एही पुस्तकमें लिख गये है वहासें जान लेना

॥ हवे पमिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी लीम सिझाय ध्यान करे जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज कहेतो थको, भूमि प्रमार्जे थमिल स्थानकें जई, देहशका निवारे प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे भगवन् ! बहु पमिपुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे, पीछें राई सथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पमिलेहु ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीछें इच्छ कही, खमास मण देई मुहपत्ती पमिलेहे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ सथारो सदिस्साउ ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० स० ॥ भ० राई सथारो ठावु ? पीछें गुरु वचनें इच्छं कही, चउक्कसाय पमिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवदन करे. भूमि प्रमार्जी, सथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही सथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि भते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमाईण महामुणीणं, 'अणुजाणह जिट्ठिज्जा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे, निद्रा नावे जा सोम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवाडो फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें छठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशका निवारी, इरियावही पडिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिद्याय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहा इरियावही न पडिक्कमे, पीछें दोयखमासमणें सिद्याय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला लीम सिद्याय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोया पीछें संथारा उवट्टणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्कमणो करी पडिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पडिलेहण करी, धर्मशाला पूंजी, काजो ऊद्दरी इरियावही पडिक्कमे. दोय खमासमणें सिद्याय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिद्याय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारु? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयु? गुरु कहे आ-

संवत्सरी पडिक्कमणो करे तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो ऐमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें “ गमणे कमणे चंकमणे ” इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं? कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिझाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि आगें एही पुस्तकमें लिखे गये है वहासें जान लेना.

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसंन्न कहेतो थको, भूमि प्रमार्जे थण्डिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे भगवन् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे, पीछें राई संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीछें इच्छं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० राई संथारो ठावुं ? पीछें गुरु वचनें इच्छं कही, चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे, पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमाईण महामुणीण, 'अणुजाणह जिट्ठिज्जा अणुजाणह परमं गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जा सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवामो फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें छठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशका निवारी, इरियावही पमिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिद्धाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पमिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहा इरियावही न पमिक्कमे, पीछे दोयखमासमणें सिद्धाय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पमिक्कमण वेला सीम सिद्धाय करे. पमिक्कमण वेला हुवा पमिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवट्टणाकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पमिक्कमणो करी पमिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पमिलेहण करी, धर्मशाला पूंजी, काजो ऊध्धरी इरियावही पमिक्कमे. दोय खमासमणें सिद्धाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उभो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पमिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं? गुरु कहे आ-

संवछरी पडिक्कमणो करे तिहा देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्युं छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो एमि इत्यादि देवसी आलोया पीछें " गणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खम णें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० सिझाय संदिस्साउं ? लिख। कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिझाय करे ॥ -

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि आगें एही लिख गये है वहासें जान लेना

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च तीन सिझाय ध्यान करे जो लघुनीति प्रमुख करवी कहेतो थको, भूमि प्रमार्जें थण्डिल स्थानकें जई, देह प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे भगवन् ! ब रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पडि संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाका० सं० ॥ भ० मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीछें ख मण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमासमणें ॥ इ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउ ? बीजें खमासमण ॥ भ० राई संथारो ठावु ? पीछें गुरु वचनें इछ पडिमच्छुच्छूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक चैत्यवंदन करे, भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो ख- ईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिड्डिजा अ

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइय आलोउं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ज० ॥ अप्भुट्ठिओमि अप्भिंतर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह. पीछें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिला पडिक्कमणामें नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटें पीछें गुरु साखें पच्चख्काण उपवासनो करे. पीछें दोय खमासमणें बहुवेलं सन्दिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां. हवे पडिलेहण तो पूर्वें करी छे, तो पण आदेश मागवो. ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें वली खमासमण देई इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे, पीछें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पडिलेहे. नहीं तो वली आसण पडिलेहे. दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करे आगें सर्व क्रिया पूर्वें अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी, पण इहा अठ पुहरी पोसह तो पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरो पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पच्चख्काण किया, पीछे दोय खमासमणें उंही पडिलेहण संदिस्साउं ? उंही पडिलेहण करु ? कहे, पण थंडिला पद न कहे. अने थंडिला नहीं पडिलेहे.यह नि केवल दिन संबधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहणविधि ॥

यारो न मोत्तव्वो पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें छतो थको हाथ जोड्या- मुहपत्ती मुखें दिया थका तीन न वकार गुणी सन्थारा पमिलेहे. गोमालायें बेसी मस्तक नमावी, " नयव दसनन्नहो " इत्यादि जावनारूप गाथा कहे. पीछें पोस· हना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविभागव्रत साचवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु प ण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीछें साधुनें जे आ हार दीधो, तेहनोईज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधि ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चित थई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पमिलेही, कचरो विधिशुं परठवी इरियावही पमिक्कमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पमिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंमक उच्चरता जावदिवसं पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे पीछें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणदुस्समिण काउस्सग्ग करी पमिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेल संदिस्सावे २, अने जो पूर्वं प मिक्कमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पमिक्कमणानें अंतें पमिलेही राख्या जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेल संदिस्सावे २, तथा जो गुरुसें जूदो पमिक्कमणो करयो हुवे, तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पमिलेही बे वांदणां

पमिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर बे खमासमण देई, इंही थंमिला पमिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्या हुवे, तो पण था नक शून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वे ला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवणना २४ थडिला पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विरुद्ध जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधि संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे सव्वस्सवि देवसिअ, दुचिंतिय दुप्रासिय दुचिट्ठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविसयकायकी, सव्वस्स विराइअ, दुचिंतिअ, दुप्रासिअ, दुचिट्ठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंडणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधर तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भवस्संति ते सव्व भव्वाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुवार पोय, कलका वली पंकपक्खाल

॥ अथ श्री सर्वांध चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊचरयो है. पीछें संध्यानी पडिलेहण करता रात्रि पोसहनो भाव थयो, तो पच्चख्काण किया पीछे दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछें सामायिक विधि पूर्वें लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊचरया पीछे दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पागरणो सदिस्सावी, पीछें दोय खमासमणें. ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उही अभिला पडिलेहण सदिस्साउं उंहि यंभिला पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह इछं कही उपधि पडिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वं लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो भाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरयो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडिकमे. पीछे चउविहार पच्चख्काण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमण देई पोसह सदिस्सावे फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहा दिवसेसंरत्तिं पज्जुवासामि कहे संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे पीछें बिहु खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते उच्चरे. दोय खमासमण देई सिझाय सदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो सदिस्सावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पागरणु सदिस्सावे पीछे बे खमासमण देई, अग

गणधर मुनि परिवार ॥ भवियणनें तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, कं रियें व्रत पच्चक्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपतिं विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगडुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः,क्षि० ॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तया च ज्योतिष्कास्विलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः,क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ईंईंकि थपमप, धुधुमि धोंधों, भ्रसकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकि दों दों, दाग्दिदि दाग्डिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥ झझिझेंकि झेंझें, झणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर शैल शिखरे, भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगूदा धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥गुणगुणण गुणगण, रणकि णेंणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ झझि झेकि झूझू, झणण,रणरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश, महेजिना ॥ २ ॥ ठकि ठूंकि ठूंठूं, ठ हैं ह ठ

तीर्थं ॥ मणोवंछियहे सुमंदारकप्प, जिणंदागमं वंदिमो सुमद्द ॥ ३ ॥ विकोसे जिणदाणणंजोजलीणा, कलारूव लावस सोदग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि झाणं, सिरी जारई देदि सुहनाण ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिः पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहा तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रिय ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपरा पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, जक्ताना जविनां गृहेषु व-सुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारक्त पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुति ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हु नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रजुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां डुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रजु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर दीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता होडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाज अपार ॥ चउमासें रहिया,

सण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, पम्किमण संवछरी करियें अण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें जलें जावें जरियें पुण्य जंमार ॥ वलि चैत्य प्रवाहें फिरतां आज्ञ अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणता पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर उखेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा हम्मीवछल करियें वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी· लधार ॥ अम्हदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, घन सघनश्याम शरीर सुदर शंख लंछन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ छेद ग्रंथ प्रसङ्ग अर्था चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी जाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें वालक दोय जेहने सदा जवियण सुखकरू, डुख हरें अंबा लुब सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

ह्रिंक, ठर्ह्रिपट्टा, ताड्यते ॥ ततलोंकि ठोंठों, त्रेंवि त्रेंदिनि, मेंदिर्मेदि नि, वाद्यते ॥ ँडँ ँडँ कि ँडँ ँडँ, ध्रुंगि ध्रुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कलरवे ॥ जिनमतमनतं, महिम ततुतां, नमति सुरनर, मुच्चवे ॥ ३॥ पुदाकि पुदां, पुपुह्दि पुदां पुपुद्धि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट, रणकि रणेंरणेंरणण मेंमें, मंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासन, देवता ॥ ४॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन०॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुन्न समता रस धामी जी॥ श्रीसिघ्चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी॥१॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनु ध्यान धरतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवस जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ विमल कमलदललोयण सुवर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छनायक सद्गुरु, श्रीजिनन्नक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणी परें पत्नणे, श्रीजिनलाञ्न सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हु ध्यावु गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ नगरजेसलमेरविभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं । विपुलमंगलकेलिविभासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका । फलति तस्य मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तथणं ॥ पंकवभप्पयदेवगणं । सिरिअघुय वंदू आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया । मम हुंति जिनागमसुक्कलया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । कल्लाणपयोरुहवुढिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिनागममन्दिकरं ॥ ३॥ सिरइंदसमुज्जलगायलया । सुहझाणविणम्मियएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥ ४ ॥ इति रुपभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । रुपभजिनेसर लोकदिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पाच भरत वलि पाचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिवपद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणहीं प्रका

॥ अथ दीपमालिकास्तुति• ॥

॥ पापाया पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासन•, क्ष्मापालप्र भुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकाते शुभे, स्वातौ य• शिवमाप पापरहित संस्तौमि वीरप्र भुम् ॥ १ ॥ यज्ज्ञानगमनोत्सव व्रतवरज्ञानाकरास्तिकणे, सद्भूपाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिजवादिवीरच रमास्ते श्रीजिनाधीश्वरा, सघायानघचेतसे विदधता श्रेयांस्यने नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनप श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयाचक्रुस्तरा सूत्रत ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थने कसमये सम्यग्दृशा भूस्पृशा, भूयाद्भावुककारकप्रवचनं चेतश्चम त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देव ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन चन्द्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मन प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुति• ॥

॥ अथ थुइसग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण- कमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं च मेरुपासे झलकता । सोहे वीस मदा गजदंता ॥ तिण ऊपर छे जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अग । थानक वीस भण्या तिहा चंग ॥ तिण ऊपर जे श्याणे रंग । ते नर पामे सुक्ख अभंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च उवीस । पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ सघतणा जे विघन निवारे । तिहुअण ज [illegible] मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे। तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३॥ शक्र सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः। सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्। भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेभ्य ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोकारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीर देवं नित्यं वंदे १ जैना· पादा युष्मान् पातु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुति ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मान, दिन२ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवि यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकात, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जपे गुणगण इम श्रीजिन लाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं त, अजियसुविहय, नंदणं सुव्वयव्वा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविधशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयासं धर्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसौ, पच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे,

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंदु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूंथ्या श्रीगणधारोजी । अंग उवांगत अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय प्रग प्रमाणे, जिहां षटद्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्या, तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिंदे वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी थो, वंछित नित सेवीजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सव मन धरी अमंद । श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणित ऋध्धिधारी आचारीमा ईस । एह गुणना धारक वंदु जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन जापित सिद्धांत । स्याद्वादमयादिक हेतुयुक्ति नवि भ्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सहनाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी साची देवी सानिधकारी । दुखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाभ्रे अपारी । जिनलाभ पयंपे होज्यो जयश्कारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोद्धारी ॥

॥ यदंह्रिनमतावेव । देहिन सति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाभेयजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदति वृंदारुगणाग्रतो जिना । सदर्थतो यद्रचयंति

ज्वद्धास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूंती सुणि त्रिपदी ततकाल । गणधारक गूंण्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयभंग पदारथ सत्त२ नव तत्त । भवियणने तारे सायर जिम वोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केसरि अंबा पउमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वामुरवृक्ष ॥ ध्यावे सुख पावे श्रीजिनलाभ सूरीस । जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशितलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप राणी नंदाकेरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी फेडे भवना फंद । चित चोखे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥१॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहु भवणे ठवणा सासय असासय हुत । ते सगला त्रिकरण प्रणमु श्रीअरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयभंग निखेपा स्याद्वाद मितसिठ ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोडि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन लाभसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगडो सार । अढी गाउ ऊंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुखकार । श्रीतीरथनायक वैसे चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरोवर चामर ढोले इंद । देवदुंदुभि वाजे भाजे कुमति फंद ॥ भामंडल पूठे झलके जाण दिनंद । तिहुअण जन भवि मन मोहे सयल जिनंद ॥ २ ॥ द्रव्य भाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार ।

वय गहणखणे, केवले लोयकाले, पञ्चाणिव्वाणठाणे, पगवण समए, संथुम्रा जावसार ॥ देवेर्दि दाणवेदि, जवणवणसए, विंतरे किंन्नरेहिं, । तं मझं दिंतु मोरकं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥२॥ देऊं तित्थंकराणं, जमिदअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सव्वन्नूणं च पासा, अदमविनियमा, जायए सव्वकाल ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएर्दि, नियगममदणं, बीयअंकूररूवं । अव्वावाद जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कल्लाण एसु ॥३॥ गोरीगधारकाली, नरवरमदिषी, दंससंगोरिदञा । सव्वञामाणमंबा, वरकमलकरा, रोदिणीवत्तअंबा ॥ पन्नत्ती उत्तपउमा, धणइसरसई, खित्तगेदाइवासा । सातिं सघे कुणतु, गदगणसईया, पंच कल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकल्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंमण आदिदेव । हू अदनिस समरूं तास सेव ॥ रायणतल पगलां प्रभूतणा । पूजि सफल फूल सोदामणा ॥१॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जरया॥ गिरिं करूणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोदम सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुन्डरगिरि मदिमा जे मांद। ते आगम समरू मनउछाद ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख कवरूयक्ष । मन वछित पूरण कल्पवृक्ष ॥ सिद्धक्षेत्रसिदरे सदवेवता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपद्दाण । दीक्षा, वर केवल ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद। तसु जवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अठावय चंपा पावापुर गुन्न गाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणजाण ॥ अजितादिक वीसें पुदता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख । श्री पालतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भवि प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति· ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी । जे नर अंतर आतम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरी थिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत तिछ भूपोजी । ए पद निज भवि भावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । द्रव्यभावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थानकनी सेव करे भव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल है मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गछ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकूं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण । उवझाय साहू नाण दसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मकार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार । शुन्न नावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ डुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । नवछेद रूपाणी मीठी अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो नवि प्राणी । सुय देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुजगिरि नमिये रुषन्नदेव पुंमरीक । शुन्न तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरज्नीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य वदनीक । करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अरुत गिणतीसें चढता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा न्नापइ इम जगदीस । तेहिज नित प्रणमू स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्ष्नो पूनम चैत्र मास शुन्न वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करता नर नारी पामे न्नवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्केसरीदेवी से विय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जपे गणनायक श्रीजिनलाज्नसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुति ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरु सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद महिमा न्नापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत वलि सिद्ध आचारज उवज्ञाय । मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हजार । सहुनी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अमवत्तीस पण वीवीस सार । समसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार ॥ इण

ववगय मंगुल न्नावे, तेहं विउलतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प न्नावे, थोसा मि सुदिठ सप्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व डुरकप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण, तव पुरिसुत्तम नामकित्तण ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुरकयर, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ सतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणय ॥ पुरिसा जइ डुरकवारणं, जइअ विमग्गह सुरककारणं ॥ अजिअं संति च न्नावउ, अन्नयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल न्नुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ, सुनय नय निउणमन्नयकर, सरणमुवसरिअ न्नुवि दिविज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअर पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणय ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्त वित्थिन्न संथिअं थिर सरित्थ वत्थं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं सयवारिह हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लरकणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहमणान्निराम परम रमणिज्ज वरदेव डुडुहि निनाय महुरयर सुहगिर ॥ ए ॥ वेढउ ॥ अजिअ जिआरिगणं, जिअ सव्वन्नयं न्नवो हरिउं ॥ पणमामि अह पयउ, पावं पसमेउ मे न्नयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्कवट्टिन्नोए महप्पन्नावो जो बावत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

इग तेहनो नासि जाय सब दूर । वलि दिन२ अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौभाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोछव नित नवला सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम२ संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर ठाम२ तुम देखो चवदस पख्खी होय, भूला काइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्राकेरी साख, भविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी भाख ॥ आवस्यक सूत्र इण पर बोले चवदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यानो विघन हरेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगच्छ मरुण कुमति विहरुण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पख्खी चोदस थुइ संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरण लिख्यते ॥

॥ अजिय जिअसवभय, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

गयणंगण वियरण समुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९॥ किसलय माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअ, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडि सयसथुयं, समणसंघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअ अजिअ पयउ पणमे ॥२१॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग याचर विमाण, दिव्वकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ स संभमो अरण खुभिअ लुलिअ चल कुंडलंगय तिरीड सोहंत मउ लिमाला ॥ २२ ॥ वेढउ ॥ जं सुरसघा सासुर संघा, वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंडिअ, सुट्ठु सुविह्मिअ सव्व लोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरिअंगा, गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया हिणं ॥ पणमिऊणय जिण सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहपि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअ ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरतरविआरणिआहिं, ललिअहंस वहुगामि णिआहिं ॥ पीण सोणिथण सालणिआहिं, सकल कमल दललो अणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभरविणमिय गायल याहिं, मणिकंचण पसिढिलमेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखि खिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणो हर सुंदर दसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंद, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेस पयउ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

जणवय वई वत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चउदस वररयण नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छसवइगाम कोडि सामी आसिज्जो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढउ ॥ तं सतिं संतियरं, संतिन्न सव्व भया ॥ संति थुणामि जिण, सतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर नरव सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहि महामुणि, अमिय बलाविऊल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्द निद्द धवल ॥ दंतपंति संति स त्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सव्वलोअ भावि अ प्पभावणे अ पइसमे समाहि ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमल ससिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअ ॥ तियसवइगणाइरेअ रूव, धरणिधर प्पवराइरेअ सार ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अवले अजिअ ॥ तव सजेमअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिण अजिअं ॥ १६ ॥ भूअगपरिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहि पावइ न त नवसरय ससी, तेअ गुणेहि पावइ न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहि पावइ न तं तिअस गणवइ, सारगुणेहि पावइ न त धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तिच्छवर पवत्तयं तमरयरहिअ, धीरजणथुअच्चिअ चुअ कलिकलुसं ॥ सतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयउ, सतिमह महा मुणि सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअय ॥ विणउणय सिरिरइ अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअ ॥ विवुदाहिव धणवइ नरवइ, थुअ म हिअच्चिअं वहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पभं तवसा ॥

पयं, अहवा किरिं सुविहम्मा ज्नुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्दरणे, जिणव यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनस्क निग्गयपहा दंम्हच्छलेणगिण, वंदारूण दिसंत इव पयम्ं निवाणमग्गावलि ॥ कुदिंडज्जल दंतकंति मिसत्त नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविड इक्क सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिक्कं जलोहि, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लचा लंघए जो पएहिं, अजिअ म हव संतिं सो समछो छणेडं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासन्नत्ति प्पेरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामछ्छसिं, फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णि च्छिअ मे ॥ ३ ॥ सय खजयहिआणं नाममित्तेण जाण, विहरूइ लहु डुना निछ्दोघट्टघटं ॥ नमिरसुर किरीहू ग्गिछ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि णिंदे ज्निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वद्धए देहदित्ती, विलसइ ज्नुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयज्नत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं ज्नूरिदिव्वगहार, फुरूगणरसन्नावो दारासिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज हंसणछे अज्नोया, इव पुणमणि वधा कास नट्टोवयार ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छज्जए जा णिमुत्ती ॥ सरज्नस परिरज्ना रज्ननिवाणलच्छी, घणअणघुसि णिक्कु प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयन्नंगं वछ्णिच्च अणिच्च, सदसद णाज्निलप्पा लप्पमेगं अणेग ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्ध तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे सन्नरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, ज्नमइजय मसण्ण तावमिछ्छत्तछ्गं ॥ फुरइ फुरूप

थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयत्त पणमिअ स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहि ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पण्डिअआहि ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्खराभिराम सद्द मीसएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव भाव विब्भमप्पगारएहि नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तय तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायओ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मण्डिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागयसोहिआ, सत्थिअ वसह सीहरिवच्छसुलछणा ॥ ३२ ॥ ललिअय ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोस दुट्ठागुणेहि जिट्ठा ॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरातिया ॥ एव तव बल विउल, थुअ मए अजिअ संति जिणजुयल ॥ ववगय कम्म रयमलं, गइ गयं सासया विमला ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ त बहुगुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसाय ॥ नासेउ मे विसाय, कुणउअ परिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ त मोएउ अनंदि, पावेउअ नंदिसेणमभिनंदि ॥ परिसाऽवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहि, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उभओ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुट्ठ महारो गानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, स लिलंजलिसेय वुड्ढिय च्छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभ्भिय जलनिहि, उब्भड कल्लोल भी सणारावे ॥ संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे ॥ डज्झंत मुद्धमिय वहु, भीसरणरव भीसणम्मि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसत भोग भीसण, फुरिआरुण न यण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजल य, सच्छह भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंत कीड सरिसं, दूर परिच्छुढ विसम विस वेगा ॥ तुह नामक्खर फुडसिद्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भि ल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लु रिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहव सारा, तुह नाह प णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घ, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयण, दूरवियारियमुह महाकाय ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभ्भ म पत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह करुल्लाल वड्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल हरारावं ॥ १४ ॥ भीम महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअल, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ स मरम्मितिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥ कुंतविणिभि

लता णतणाणं सुपूरो, पयम मजिअसंती झाण सूरो न जाव ॥९॥ अरि करि हरि तिण्हु एह्वु चोरा हिवाही, समर ममर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजती, निविम्तरत मोहा न्नक्करालुखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरअदारु दित्तझाणग्गि जाला, परिगय मिव गोर, चिंतिअ झाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा कतिचोर करिज्जा, चिरथिर मिह लच्छि गाढसंथंन्निअव ॥ ११ ॥ अम्हविनिवम्हिआण पन्निवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु सति संतिनाहा जिआण ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस पक्क पाइकपुस, सयलपुहवि रज्ज छड्ढिअं आण सज्ज ॥ तण मिव पम्हि लग्गं जेजिणामुत्तिमग्ग, चरण मणुपवस्रा हुतु ते मे पसस्रा ॥१३॥ वणससिवयणाहि फुल्लनित्तुप्पलाहि, थणन्नरनमिरीहिं मुठिगिज्झोद रीहिं ॥ ललिअ न्नुअलयाहि पीण सोणित्थणीहि, सयसुर रमणीहि वंदिआ जेसि पाया ॥ १४॥ अरिस किम्हि न्नकुठ गठि कासाइसार, खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणच्छी कुच्छिक ण्णाइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरतु ॥ १५ ॥ इय गुरु दुहतासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुगथुत्त वच्छरे वा पवित्त ॥ पढइ सुणइ सिज्झा एह झाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धा एह सिग्घ ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे सर, तह अइराविससेण तणइ पचम चक्कीसर ॥ तित्थकर सोल सम सति जिणवल्लह सथुअ, कुरु मगल मम हर दुरिअमखिलं वि थुणतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजिनशातिस्तवन द्वितीय० ॥

॥ अथ नमिऊणनामक तृतीय स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणि णो ॥ चलणजुअल महाभय, पणासणं सथव वुच्छं ॥ १ ॥ सम्हिय

ह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ जवसत्त सिवस म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिउस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपय, भिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपभिवरकाजरका, गोमुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ सिरि वन्न सति सहिआ, कय मयरका सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पमुहयभिवा, सिद्दा सिघाइआ पवयणस्स ॥ चकेसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्ञा देवी, उदिंतु संघस्स मगल विउल ॥ अछुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ सम ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रका, जरका चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहज्ञागा सतावं, तिउस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सद्य हासवे ॥ वेयावच्च गरा विअ, तिउस्स हवतु सतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुत्तमग्ग, विहिअ जवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीदरई गीयजसो, सपरिवारो सुह दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, उहाणि सद्याणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासरिक, खवालया नवग्गहा ससरकत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहका, सपास कुलिअद पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहका स कंटएहि, सविविवडेहि कालवेलाहि ॥ सवे सयज्ञ सुहं, दिसतु सघस्स संघस्स ॥ १९ ॥ जवणवइ वाणमतर, जोइस वमोणिआ य जे देवा ॥ धरणिद सक्क सहिआ, दलंतु उरिआइ तिउस्स ॥ २० ॥ चकं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिउस्स ज गवउ, नमो नमो वद्दमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ज्ञविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासण कुप, ह नासणं सद्य जय मरणं ॥ २२ ॥ सिरि उसजसेण पमुहा, हयजय नि

१७

न्न करि कल, ह मुक सिकार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा न्नमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण न्नयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा न्नयहरं, पास जिणिंदस्स संथ वमुआरं ॥ न्नविय जणाणंदयर, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय न्नय जरक रस्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिस्क पीमासु ॥ सं फासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताण कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ, सयल न्नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ त जयउ जय तिउ, जमिउ तिआहि वेण वीरेण ॥ सम्म पवत्तिअन्न, व सत्त सताणसुह जणय ॥ १ ॥ नासिअ सय लकिलेसा, निहय कुलेसा पसउ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिउ, स्स मंगल दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दढकम्म वीआ, वीआपरमि ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुछाणि तिउ स्स ॥ ३ ॥ आयार नावरता, पचपयार सया पयासता ॥ आय रिआ तह तिउ, निहय कुतिउं पयासतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वणितु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, साहूण जणिअ सव्व साहज्जा ॥ तिउप्पन्नायगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगय नाण, निव्वाणफल च चरणमविहवइ ॥ तिउस्स दंसण त, मंगलमुवणेउ सिठियरं ॥ ७ ॥ निच्चुजमो सुअधम्मो, समग्ग न्नविगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणमुठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

इ दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ भवसत्त सिवस म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ए ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिठस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपय, भिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपभिवरक्काजरका, गोमुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ सिरि वंभ संति सहिआ, कय मयरस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंवा पभिहयर्मिवा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुम्काणि ॥ १७ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदितु संघस्स मगल विउल ॥ अच्छुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ सम ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रम्का, जरका चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहभावा सतावं, तिठस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरया कुपहाउ सव्व दासवे ॥ वेयावच्च गरा विअ, तिठस्स हवतु सतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुत्तमग्ग, विहिअ भवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुह दिमउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआण, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासस्कि, खवालया नवग्गहा सनरकत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहका ल कटएहिं, सविठिवच्छेहिं कालवेलाहिं ॥ सव्वे सव्वत्थ सुह, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १ए ॥ भवणवइ वाणमतर, जोइस वमोणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलतु दुरिआइ तिठस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंत, गच्छइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतित्थस्स भगवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ज्ञाविसासण जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासण कुप, ह नासण सव्व भय महण ॥ २२ ॥ सिरि उसभसेण पमुहा, हयभय नि,,

न्न करि कल, इ मुक्क सिक्कार पज्जरमि ॥ १६ ॥ निज्झिय दप्पुद्धर रिज, नरिंद निवहा ज्नणा जस धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण न्नयाइं ॥ पास जिणनाम सकि, त्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा न्नयहर, पास जिणिंदस्स संथ वमुआरं ॥ न्नविय जणाणंदयर, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय न्नय जक्ख रक्खस, कुसुमिण डुस्सजण रिक्ख पीमासु ॥ सं झासु दोसु पथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ, सयल न्नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीयस्मरण संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारभः ॥

॥ त जयउ जय तिच्छ, जमिच्छ तिच्छाहि वेण वरिण ॥ सम्मं पवत्तिअन्न, न्न सत्त संताणसुह जणय ॥ १ ॥ नासिअ सय लकिलेसा, निहय कुलेसा पसच्छ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिच्छ, स्स मंगल्न दितु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म बीआ, बीआपरमि ठिणो गुणसमिद्दा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुच्छाणि तिच्छ स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयार सया पयासंता ॥ आय रिआ तह तिच्छ, निहय कुतिच्छ पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वणितु सवस्स सघस्स ॥५॥ निवाणसाहुणिज्झिअ, साहूणं जणिअ सव साहज्जा ॥ तिच्छप्पन्नावगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगय नाण, निवाणफल च चरणमविहवइ ॥ तिच्छस्स दंसण त, मंगलमुवणेउ सिठियर ॥ ७ ॥ निच्छमो सुअधम्मो, समग्ग न्नवगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणसुठिअस्स सघस्स, मगलं सम्ममि

समच्छेरय निसिवि, प्फुरंतु सछंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेणव सूरिं जिणे, सरेण दयमदिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुक्कइत्त पत्त कित्ती, पय मिअ गुत्ती पसत सुहमुत्ती ॥ पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जई सरो मंती ॥ १२ ॥ पयमिअ नवग सुत्तठ, रयणुक्कोसो पणासिअ पत्नसो ॥ भवभीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥ ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणवंधु रोधणिअं ॥ सिरि अभयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरि ब सारंग भग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द लणो, आसाइअ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ भीमभव काणणमिअ, दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्त, सूरी जिणव ल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरछिअ सच्चरणो, चउरणुठग प्पहाण सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उठमुहो सहइ जस्स करो ॥ ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावउठ भउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहिब, सूरि जिणवल्लहो होउ ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया भवा ॥ जेण जिणवल्ल हेणं, गुरुणा तं सबहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि रोमणी वूढ दुवह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सहइ सत्ताणता णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुबहइ ॥ जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, सिरि निलउ पणय मुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठमृस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण, पुरठिउ निठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयम सुं हम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ भव सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाणं जिणाति, उ सुवयंते कुणतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिणं

वद्दा दिसंतु तिडस्स ॥ सव्व जिणाणं गणिद्दा, रिणो एदं वंदिअं सवं ॥ २३ ॥ सिरि वद्दमाण तिङ्ग, द्दिवेण तिर्ण समप्पिअं जस्स ॥ सम्म सुदम्म सामी, दिसउ सुदं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पय इएन्नद्दिआ जे, न्नद्दाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु स म्मं, जिणगणद्दर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसऊ, डुस्सवं तस्स नत्रि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिउ, सुनिठिअठा सुद्दी होई ॥ २६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थ स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पचम स्मरणम् ॥

॥ मयरद्दिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंत. न्नवद्दिव थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्मद्दिय मोद्द जोद्दा, निद्दय विरोद्दा पणठ संदेद्दा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ, सुद्द सदोद्दा सुगुण गेद्दा ॥ २ ॥ पत्तसु जस्स सोद्दा, समत्त पर तिङ्ग जणिय सखोद्दा ॥ पन्न्गिग मोद्द जोद्दा, दंसिअ सुमद्दङ सङोद्दा ॥ ३ ॥ परिद्दरिअ सङवाद्दा, द्दय डुद्द दाद्दा सिवंब तरु साद्दा ॥ संपाविअ सुद्दलाद्दा, खीरोदद्दिणुव्व अग्गाद्दा ॥ ४ ॥ सु गुणजण जणिअ पुङ्गा, सङ्गो निरुवङ्ग गद्दिअ पवङ्गा ॥ सिवसुद्द साद्दण सङ्गा, न्नयगिरि गुरु चूरणे वङ्गा ॥५॥ अङ्गसुदम्म प्पमुद्दा, गुणगण निवद्दा सुरिंद विद्दिय मद्दा ॥ ताण तिसंऊ नाम, नामं न पणासइ जिणाण ॥ ६ ॥ पन्त्विङ्गिअ जिणदेवो, देवायरिउ डुरंत न्नवद्दारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उङोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्दमाण सूरी, पयमीकय सूरि मंत माद्दप्पो ॥ पन्त्दिय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुद्दजणउ ॥ ८ ॥ सुदसील चोर चप्पर, ण पत्तो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिंद्द, तङाणउ पणाय सुगुणजणउ ॥ ९ ॥ पुरउ डुल्लद महिव, लुदस्स अणद्दिल्ल वारुए सुयमं ॥ सुङ्कत्ति आरिङ्कण, सीदेणव दवलिंगि गया ॥ १० ॥ द

समच्छेरय निसिवि, प्फुरंतु सछंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण हयमदिश्र दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पय ष्फिश्र गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जई सरो मंती ॥ १२ ॥ पयष्फिश्र नवग सुत्तत्र, रयणुक्कोलो पणासिश्र पनसो ॥ न्नवन्नीश्र मविश्र जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥ ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणवंधु रोधणिश्रं ॥ सिरि अन्नयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरि व सारग न्नग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द लणो, श्रासाइश्र पवर कवरसो ॥ १५ ॥ न्नीमन्नव काणणमिश्र, दंसिश्रगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुन्न, सूरी जिणव ल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ न्नवरहिश्र सच्चरणो, चन्नरणुन्नग प्पहाण सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उद्धमुहो सहइ जस्स करो ॥ ॥ १७ ॥ दंसिश्र निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिश्र सावउन्न नउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहिव, सूरि जिणवल्लहो होउ ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया न्नवा ॥ जेण जिणवल्लु हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिश्र पवर पवयण, सि रोमणी वूढ डुव्वह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सहइ [illegible] णक्करो ॥ २० ॥ सच्चरिश्राण महीणं, सुगुरुणं पारतंतं [illegible] जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, सिरि निलउ पणय [illegible] २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणं [illegible] ५ ॥

॥ अथ श्रीपष्ठमस्मरणं ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घ, जिणवी [illegible]

सिरि पासजिणो [illegible]

हम्म पमुहा, [illegible]

जिणाति, उ [illegible]

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि धज्जणय ठिअ पा, ससामि पयपउम पणय पा णीण ॥ निद्दलिअ दुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ दुरिआई ॥ ४ ॥ गोमुहपमुरक जरका, पडिहय पडिवरक परक लरका ते ॥ कयसुगु ण संघ रका, हवंतु सपत्त सिवसुरका ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासणुउर, पुरठिउ वद्धमाण जिण नचो ॥ सिरि बंभ संति जरको, रकउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निवुइ पुर प हियाण, नवाण कुणंतु सुरकाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहि पहरि उछिस्स कंधरा धणियं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सवहा ह रउ विग्घाणि ॥ ए ॥ तिउवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो नयदेवो, रकउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो ऐस रूव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा नय देवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, नयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, ढमाण तिउरस्स बुद्धिकए ॥१२॥ जिणदत्ताण सम्म, मन्नति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदत्त गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठ स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामक सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहर पासं, पास वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसह रविसनिन्नास, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ नवेन्नवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त वन सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्र प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुग युगादा, वालंवन भवजले पतता जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्म ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशाङ्ककान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्त ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगोमृगेन्द्र, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिल किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेदं, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणव पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री
णा शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जन
यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमस. परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति
मृत्युं, नान्यः शिव. शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि
भुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संत. ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंक
रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भग
वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नम. क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगत परमेश्व
राय, तुभ्यं नमोजिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्व संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैं, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं
भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव
पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
भ्राजते तव वपु कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
नं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम
रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपु. कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु
चिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्र
त्रयं तव विभातिशशांककांत, मुच्चै स्थितं स्थगितभानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर
त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखा भिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्त, पद्मानि त
त्र विवुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनें
द्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृत प्रह
तान्धकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योत
न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
रावताभमिभमुद्धतमापतत, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रिता
नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
भूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रम क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
क्रमयुगाचलसंश्रित ते ॥ ३५ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्प,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
खमापतन्त, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
समदकोकिलकण्ठनील, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ॥ आक्राम
ति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
॥ ३७॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भू
पतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ३८ ॥कुन्ताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता
रतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद
पकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणन
क्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया
नपात्रा, स्त्रास विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूतभी
षणजलोदरभारभुग्ना, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशा ॥
त्वत्पादपकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा॰
॥ ४१ ॥ आपादकण्ठमुरुशृंखलवेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृ
ष्टजंघा ॥ त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्त, सद्यः स्वयं विग
तबन्धभया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावाद्, आरोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपति सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयन्तां २, भगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिता त्रैलोक्यपूज्या त्रैलोक्येश्वरा त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१ शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकरा· ॥

॥ ॐ ह्रै श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिना

॥ ॐ ह्रै श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भ द्रकर २४.

॥ एते भाविततीर्थंकरा: जिना ॥ शान्ता· शान्तिकरा भ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र क्षतु वो नित्य ॥ ॐ ह्रै श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुम्भ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनका. ॥

॥ ॐ ह्रै श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति व र्त्तमान जिनजनन्य. ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ए, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुम १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १ए, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ए, अशोका १०, मानवी ११, चंमा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कदर्प्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १ए, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्रा. ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ए, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अछुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोमशविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां. ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु वर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवतु ॥ अस्मिंश्च भूम ण्डले आयतननिवासिना साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणा, रोगोपस र्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिऋ द्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवा भवंतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा नि शाम्यंतु शत्रव पराङ्मुखा भवतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना थाय, नम शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्य र्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकर श्रीमान, शान्ति दिशतु मे गुरु. ॥ शान्तिरेव सदा तेषा, येषा शान्तिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदु स्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसपत्, नामग्रहण जयति शाते. ॥ ३ ॥ श्रीसगपौरजनपद, राजाधिपरा जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्याना, व्याहरणैर्व्याहरेच्छातिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शातिर्भवतु,श्रीपौरलोकस्य शातिर्भवतु, श्रीराज संनिवेशाना शातिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकाना शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शाति. प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु, शातिकलश गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू पवासकुसुमाजलिसमेत, स्नात्रपीठे श्रीसघसमेत, शुचि. शुचि वपु' पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालकृत, चदनतिलक विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शातिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीय मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यति नृत्य मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मगलानि ॥ स्तो त्राणि गोत्राणि पठति मत्रान्, कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अह तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसम भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगत, परहितनिरता भवतु भूतगणा ॥ दोषा प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोका ॥ २ ॥ उपसर्गा. क्षयं यान्ति, छिद्यते वि

प्रवह्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्ति· समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एप पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकर ॥ मंगलाना च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नम ॥ कमलप्रभसूरींद्रो, भापते जिनपजरम् ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं य· पठेदिदं ॥ मनोभिलषित सर्वं, फल स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फल ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मन· शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेपी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिपु सर्वज्ञ·, परमेष्ठी शिवंकरः॥ ८ ॥ पूर्वाशा श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयी विजितेंद्रिय ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायवीपरमेश्वर· ॥ उत्तरा तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजन ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, न्नाकाशं पुरुषोत्तम· ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षतु सकलं कुल॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ सम्भव· कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनदनः ॥ १२ ॥ उष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं [illegible] धीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतल ॥ श्रे

यासो वाहुयुगलं, वासुपूज्य करद्वय ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यक रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्ठिवंश, जंघे च मुनिसुव्रत. ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमि श्ररणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथ सर्वांग, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमय जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरजन ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, सग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजर ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसपदं ॥२२॥ जिनपंजरनामेदं, य· स्मरत्यनुवासर ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नर ॥ २३ ॥ प्रात समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, य स्तोत्रमेत ज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्स कमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंस ॥ वादींद्रचूडामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरु श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमेंस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतउ मणभितरिं, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो वहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे ससार ॥ १ ॥ के

वलि न्नासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण झाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसे बहु परि, इण झाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ ७ ॥ निय सिर ऊपर झाण मझ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अवदल सहित तिहा मांहे कनकवर ॥ तिहा वेठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुक्ख, अरिहंत झाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्ख ॥ ३ ॥ पनर भेय तिहा सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सोहग साहे ॥ राती धोती पहर जपे सिद्धह पुवे दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर सहू जगधंद, मणमूलो उवय करे बुद्धि हीणजाचंघ ॥ ४ ॥ दक्खिण दिसि पंखमी जपे नमो आयरिआण, सोवनवन्नह सीस सहित भवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे राज्ज ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावै ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिजे अंग पुव्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिसि पंखमीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवौ परमानद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विदुर तिहा नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहा फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणे, पंचवन्न तिहा नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग [illegible] सी अवर अनत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मत ॥ ७ ॥ एसो पच नमोक्कारो पद दिसिअ गणेहि, सव्व पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ईसाण पएसि ॥ चिहुं दिसि चिहु विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुत्त पायालह सामी, समलकुप्रर उपन्न जिन्न सुर लोयह गामी ॥ सबल कबल वे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ छींके बैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाछरू आचारत वाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही उपर मंत्र जपियो मनमाहे ॥ चित्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर धाम संकट टले राजा वसि होवे, तिथ्थकर सो होइ लाख गुण विधिसु जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीड़ते किमहि न होवे ॥ कुष्ट जलोदर रोग सवे नासै एणही मत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मन्त्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण छउमथ्थ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तिथ्थराउ महिमा उदयवंतो, सयल मत्र धुरि एह मत्र राजा जयवंतो ॥ तिथ्थंकर गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुओ नवकार ॥ १२ ॥ अड सपय नव पयं सहित इगसठ लहु अस्कर, गुरु अस्कर सत्तैव इह जाणो परमख्कर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुख्कह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुख्क निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पथ

परमेष्ठि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शप्तति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयास । अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ सम य खित्त ठियाणं । सरेमि चक्कं जिण दाणं ॥१॥ पणवीसाय असिआ । पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेउ सयल डुरियं । ज्ञवियाणं ज्ञत्ति जुत्ताणं ॥२॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहन्नूअ रस्क साइणि । घोरुवसग्गं पणासेउ ॥३॥ सत्तरि पण तीसा विय । सठी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि । चोरारि महाज्ञय हरउ ॥४॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रस्कतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुह सरसुंस । हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम गप्नं । चक्कं किर सवउ ज्नद ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । वज्ञसिंखला तहय वज्ज अंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता। कालि महाकालि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥माणसि महमाणसिआ । विज्ञा देवीउ रस्कतु ॥८॥ पंचदस कम्मन्नूमिसु । उप्पन्न सत्तरि जिणाण सय ॥ विविह रयणाणवन्नो । वसोहिअ हरउ डुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥ तिथ्थयर गयमोहा । झाए अव्वा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वर कणय सख विद्रुम । मरगय घण सन्निह विगय मोहं ॥ सत्तरि सय जिणाण । सव्वामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ ज्नुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि डुठ देवा । ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेण । फल हेलिहिकणखालिअपीयं ॥ एगंतरगहमुग्गय । साइणि न्नूयं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि [illegible]तं । सम्म मंतं डुवार पडि

लिहियं ॥ डुरिग्रारि विजयतंतं । निम्रतं निच्चमब्बेह ॥ १४ ॥
॥ इति शसति जिन स्तोत्र ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दक्खो, नालियायरवियासिगोपसरो॥ रयणत्तय स्स जणउ, पासजिणो जयउ जय चक्कू ॥ १ ॥ कय कुवलय प मिवोहो, हरणं किय विग्गहो कला निलउ ॥ विहियारविंद मह णो, दीयराउ जयउ पासजिणो ॥ २ ॥ कलीइ निज्झिणतो, सि दूरं पुहवि नदणो कूरो ॥ जय जतुग्रमग्रवको, सुमंगलो जयउ पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पल दल नीलरुइ, हरिमम्ल सगुठ इलानदो ॥ रयणियरदारउमह, बुहोपसीइज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय वियट्ठो, नायग्रो नागरायकय पूउ ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय रिउ सुह दिसउ ॥ ५ ॥ राया वट्ट समुज्झलं, तणुप्पहा मम्लो म हाम्लूइ ॥ असुरेहि नमिज्जतो, पासजिणदो कवी जयउ ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो, संतो डुखावहो जयंम्मि थिरो ॥ बहुलतमा सरिस सिरी, जय चक्कु सुउ जयउ पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो सायर, मायम्मरहं अहो तणु विमुक्क ॥ लोग्रा ऋरणी सूय, पास जिण सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिग्राइ पासनाहो, सिहावमालीनहो ऋवणकेउ ॥ दूरंतम रासीउ, सत्तम ठाण छिउ हरउ ॥ ९ ॥ इग्र नवगह थुइ गम्र, जिणपहसूरीहि गुफियं थवण ॥ तुह पास पढइ जोतं, असुहावि गहा न पोम्मति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषित ॥ गृहशांतिं प्र वक्ष्यामि, लोकाना सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्र खेचराज्ञेया, पूज नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै, नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥

पद्मप्रभस्य मार्त्तंड. श्चंद्रश्चंद्रप्रभस्य च ॥ वासुपूज्य भूमिपुत्रा, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्मारा:, शांतिःकुंथुर्नमिस्तथा ॥ वर्द्धमानो जिनेंद्राणा, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा, श्चाभिनंदनशीतलौ ॥ सुमति· संभवः स्वामी, श्रेयासश्च बृहस्पति· ॥ ५ ॥ सुविधे· कथितः शुक्र·, सुव्रतस्य शनैश्चर. ॥ नेमिनाथे भवेद्राहु·, केतु. श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाँल्लग्ने च राशौ च, पीमयंति यदा ग्रहा. ॥ तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिभिर्धूपैः, फलनैवद्यसंयुते ॥ वर्णनद्दशदानैश्च, वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल, बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहु· ॥ केतुप्रमुखा· खेटा·, जिनपतिपुरतोवतिष्टतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णके. ॥ स्तुताश्च पूजिता भक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहा. ॥ १० ॥ जिनानामग्रत· स्थित्वा, ग्रहाणा सुखहेतवे ॥ नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ११॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रभावत पूर्वाद्, ग्रहशांतिविधिर्मत· ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनगर्भित नवग्रहशांति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह क्रूर होय तो १ पद्मप्रभुजीकी माला फेरणी. चंद्र । २ चंद्रप्रभूजीकी ॥ मगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्रीविमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीअरनाथजी, श्रीशांतिनाथजी, श्रीकुंथुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी ॥ बृहस्पति । ५ श्रीऋषभदेवजी, श्रीअजितनाथजी, श्रीसुपार्श्वनाथजी, श्रीअभिनंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी, श्रीसंभवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥ शनीश्चर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु । ९ मल्लिनाथजी, पार्श्वनाथजी ॥ रंग मुजब दान गुरुसुपात्रने

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये जर ज्ञावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यज्ञेदि, ज्ञीताज्ञयप्रदमनिंदितमंह्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमज्जिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विज्ञुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशः कथमधीश ज्ञवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुज्ञवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं ज्ञवति तेषु ममावकाशः ॥ जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति ज्ञवतो ज्ञवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विज्ञो शिथिलीज्ञवंति, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो ज्ञुजंगममया इव मध्यज्ञाग, मज्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमाने ॥९॥ त्वं तारकोजिन कथं ज्ञविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृ

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य म रुत. स किलानुन्नावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रन्नृतयोऽपि हतप्रन्नाव वा·, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतन्नुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामि न्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रन्नावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विन्नो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरा पिलोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संन्नवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश न्नवतो न्नविनः क्षणेन, देहं विहाय परमा त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलन्नावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव धातुन्नेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विन्नाव्यसे त्वं, न्नव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि वर्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुन्नावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म नीपिन्निरयं त्वदन्नेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र न्नवतीह न्नवत्प्रन्नावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरो ति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विन्नो हरिहरा दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिन्निरीश सितोपि शंखो, नो गृ ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुन्ना वा, दास्तां जनो न्नवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अन्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोपि, किं वा विवोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १ए ॥ चित्रं विन्नो [illegible] ख्वृतमेव, विष्वक् पतत्य[illegible] [illegible] ष्टिः ॥ [illegible] यदिवा मुनीश, [illegible] व हि

भंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गम्भीरहृदयोदधिसंभवाया, पीयूषतां तव गिर समुदीरयंति ॥ पीत्वा यत परमसंमदसंगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमु त्पतंतो, मन्ये वदति शुचय' सुरचामरौघा ॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय. खलु शुद्धभावा ॥ २२ ॥ श्यामं गम्भीरगिरमुज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवा हम ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशो कतरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागता व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभो प्रमादमवधूय भजध्वमे न, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्त्र याय, मन्ये नदन्नभिनभ सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भ वता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकार: ॥ मुक्ताक लापकलितोच्छ्रसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रतापयशसामिव स चयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभि तोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विप राङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्त हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्य ॥ २९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्व मीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञान त्वयि स्फुरति वि श्वविकाशहेतु' ॥३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा, दुत्था पितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हताह

ताशो, ग्रस्तस्त्वमीन्निरयमेव परं डुरात्मा ॥ ३१ ॥ यत्रर्जाडुर्जित घनौघमदभ्रनीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त मथ डुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन डुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड, प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवडुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधवडुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ डुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, डुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव [illegible] मा पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ [illegible] ग्य भवदंह्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फल कि

मपि संततिसंचिताया ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूया, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थ समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागा ॥ त्वद्विंबनिर्मल मुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्या ॥४३॥ जननयन कुमुदचंद्र, प्रभास्वरा स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ ते विग लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक ल्याणमंदिरस्तोत्र ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ आद्यताक्षरसंलक्ष्य, मक्षर व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा लासम नाद, बिंदुरेखासमन्वित ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांत, म नोमलविशोधक ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचक परमेष्ठिन ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीज, स र्वत प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो न मोनमः ॥ ॐ नम सर्वसूरिभ्य, उपाध्यायेभ्य ॐ नम ॥४॥ॐ नमः सर्वसाधुभ्य ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनम ॥ ॐनम तत्वदृष्टिभ्य । चा रित्रेभ्यो नमोनम ॥५॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टक शुभ ॥ स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वित ॥६॥ आद्य पदं शिखा रक्षे, त्परं रक्षेत्तु मस्तक ॥ तृतीय रक्षेन्नेत्रेद्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिका ॥ ७ ॥ पचम तु मुख रक्षेत्, पष्ठं रक्षेच्च घंटिका ॥ नाभ्यंतं सप्त मं रक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वंप्रणवत सांत, सरेफोद्यब्धि पंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसूर्यांकान्, श्रितोबिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या, पचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सांतदसमलंकृत ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नम । जंबुवृक्षधरो द्वीप, क्षारोदधिसमावृत ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट, काष्टाधिष्टैरलंकृत ॥११॥

तन्मध्यसंगतो मेरुः कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-मंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥ नमामि बिंबमार्हंत्य, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षय निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं सात्विकं राजसमतं ॥ तामसं-चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ॥परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुं ॥ ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु-वर्णांतः, सरेफो बिंदुमंडितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनो-त्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः ॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरईस्थिति-संलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हर-स्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां॥२६॥ गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥ तयाछादितसर्वांगं, मामाहिनस्तुडाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य य० मामाहिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामाहिनस्तुलाकिनी ॥३०॥

देव० मामाहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामाहिनस्तु-शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामाहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० मामाहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामाहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥ देवदे० मामाहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामाहिसतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देवदे० मामाहिसतुवह्नय ॥ ३८ ॥ देवदे० मामाहिसं-तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामाहिसंतुदुर्जना ॥ ४० ॥ देवदे० मामाहिसंतुन्नूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या न्नुविलब्धय ॥ तान्निरभ्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वर ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवान्नूपीठवासिन ॥ स्ववीसिनोपि ये देवा, सर्वे रक्षतु मामित ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धय ॥ ते सर्वे मुनयो देवा, मा संरक्षतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनान्नूत-वेताला, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपशाम्यतु, देवदेवप्रन्ना-वतः ॥ ४५ ॥ ॐह्रीँ श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चन्डी सरस्वती, जयावाविजया नित्या क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामागा काम-बाणा च, सानंदानदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एता सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-त्त्रये ॥ मह्य सर्वा प्रयच्छतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्य सुदुःप्राप्य, श्रीऋषिमंमलस्तव ॥ न्नाषितस्तीर्थ, जगत्-त्राणकृतेनघ ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यन्न्र-ष्टा निज राज्यं, पदन्न्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीन्न्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न सशय ॥५१॥ न्नार्यार्थी लन्नते न्नार्यां, पुत्रार्थी लन्नते सुतं ॥ वित्तार्थी लन्नते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धि, गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ न्नूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

भुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्य, सर्वभीतिविनाशकं ॥५४॥ भूतैः प्रे तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, र्मुच्यते नात्र संशय ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपःकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्रिको जाप, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधि यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे तन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे, भवे सप्तमके ध्रुव ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानदनंदित. ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थान परं सोपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तम परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लभते पदमु- त्तम ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंडल स्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकनिराकृत्य मूलयत्रकल्यानुसारेण लिखित गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव ना मानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मल. शाश्वतोशुद्धः । निर्वि कल्पो निरामय ॥ नि.शरीरी निरातंक. । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तम ॥ निर्भयो निरहं कारो । निर्विकारोथ [illegible] ॥ निर्दोषोनिरुज. शांतः । नि र्भयो निर्मम· शिव· । [illegible] । निष्कर्मो [illegible] भु. ॥ ४ ॥ निर्वादो [illegible] निरघो जिन ॥ [illegible]

प्रतिमश्लेष्ठ, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचर: ॥५॥ नि:संगात् प्राप्तकैवल्यो ।
नैष्ठक शब्दवर्जित:॥ अनिंद्यो मत्पूतात्मा । जगत्‌शिखरशेखर.॥६॥
नि शद्वो गुणसपन्ना. । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शुद्ध
प्राप्त. । कर्मद्योतिवलावद्द ॥ ७ ॥ अजरो अमर. सिद्ध । अचिंत' अ
क्षयो विभु ॥ अमुर्त अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीश प्रजापति.॥ ८ ॥
अनिद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो भव. ॥ अप्रमेयो जगन्नाथ ,
बोधरूपो जिनात्मक. ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान
लोचन ॥ अवेद्यो निर्मलो नित्य । सर्वशल्यविवाजित ॥ १० ॥
अजेयसर्वतो भद्र । निष्कषायो भवातक ॥ विश्वनाथ. स्वयंबुद्ध ॥
वीतरागो जिनेश्वर. ॥ ११ ॥ प्रतक्षो सहजानंद । अवाङ्मानस
गोचर ॥ असाध्यशुद्धचैतन्य । कर्मनोकर्मवर्जित. ॥ १२ ॥ अनत
विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशक' ॥ कर्म्मार्जितो महात्मान ।
लोकत्रयशिरोमणि. ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वर शंभु । विश्ववेदी
पितामह ॥ सर्वभूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यक ॥ १४ ॥ आनं
दरूपचैतन्यो । भगवास्त्रिजगद्गुरु' ॥ अनतानतधीशक्तिः । सत्यव्य
क्तव्ययात्मक ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्त । सप्तधातुविवर्जित ॥
गौरवादित्रयाद्दूर । सर्वज्ञानादि रुयुत ॥ १६ ॥ अभय' प्राप्तकैव
ल्य. । निर्माणो निरपेक्षक ॥ निष्कल केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र
दायक' ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावक ॥ स
र्वेश' सतसुखावास.। जिनेंद्रो मुनिसंस्तुत ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम
ज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशक ॥ प्रवुद्धोभगवान्नाथ । प्रस्तुत पुन्य
कारक ॥१९॥ शकर सुगतो रुद्र । सर्वज्ञो मदनातक ॥ ईश्वरो
भुवनाधीश । सच्चित्त. पुरुषोत्तम ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।
विमुक्तो मुक्तिवल्लभ ॥ योगीन्द्रो नादिससिद्ध । निरोहो ज्ञानगोच
र: ॥ २१ ॥ सदाशिवा चतुर्वक्र । सत्सौख्यत्रिपुरातक ॥ त्रिनेत्र

त्रिजगत्पूज्य: । कल्याणकोटिमूर्त्तिक: ॥ २१ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्य ।
सर्वपापनिवार्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेव । सर्वभूतहितंकर ॥ २२ ॥
स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्ध पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानंद ।
चैतन्यश्चैत्यवैभव. ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
तामह ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निराग परमेश्वर. ॥ २५ ॥ महा
देवो महावीरो । महामोहविनाशक. ॥ महाभावो महादर्श । म
हामुक्तिप्रदायक ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
त्मक: ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महातिम्पदस्थितः ॥ २७ ॥ महा
पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंनो ।
महामहिम अच्युत ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजस बोध । एकानेकवि
निश्चल: ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानक. ॥२९॥ महासूरो
महाधीरो । महादुखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाहृ
द्यो महागुरु ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविद्वंसो । निष्कामो विषयाच्यु
त ॥ भगवंतामहाभ्रातो । शांतिकल्याणकारक ॥३१॥ परमात्मा
परज्योति । परमेष्टी परमेश्वर ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमश्रा
त्मक ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुत: ॥ ना
कृतिं नाक्षरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मक ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त
जसबोध. । ससारछेदकारण ॥ निरवद्यो महाराध्य । कर्म्मजित्
धर्म्मनायक ॥३४॥ बोधसत्त्व जगद्वद्यो । विश्वात्मा नरकांतक ॥
स्वयंभूपापहृत्पूज्य । पुनीतो विभव स्तुत ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो
महातीतः । रूपातीतो निरंजन ॥ अनतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश
नायक: ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वसी । योगिनां ज्ञानगोचर. ॥
जन्ममृत्युजरातीत । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसं
बंध । पवित्रो गुणसागर ॥ प्रसन्नः परमाराध्य ॥ लोकालोकप्र
काशक ॥ ३८॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इष्टवंद्य: सुरार्चित. ॥ नि

प्प्रपचो निरातङ्को ॥ नि.शेषक्लेशनाशक. ॥ ३९ ॥ लोकेशों लोक संसेव्यो । लोकालोकविलोकन. ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठंति पुन पुन ॥ ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीज्ञ ह्नाहुस्वामिना विरचित लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्न पारन्ते परमविदुपस्ते ज्ञिनपरं । गणागीर्वाणानाम पि गुणगुरौर्गैतुमनलम् ॥ नलम्त्र लम्त्र स्वाधिपमिहनयैस्तर्वकलवं । नुवद्भिः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रात· स्तोतुं किल निरवकाशोप्यहमिहो । यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोश्चावच वच । गृणीया सह्य तत्ननुत्नव इवेष्टार्थप्रतिभूपदोपास्ते पार्श्वस्तन यजनयित्र्या शिवमम ॥ २ ॥ स्वकाग्रामःसूना गुतनिधनमूनोयवसु ना । सुनामन्नोङ्नो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोज्ञानो न्नु वनन्नवने नो वृषन्नर । व्यधांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥३॥ सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । ऊंगन्नय्यारामेमरकुरुहवामे यजिनपा ॥ इतोग्राक्ग्रामे शितरसमकामेपुविजयो । त्वमकोंलि न्नामे दुरमदजधामे ततमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे न्नुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ ध्रुतारेकेतारे क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे हिद्वारे न्नवदहनवारे कुरुरुपां ॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान हिमिथुनमाराध्ययविज्ञो ॥ ज्वलद्रस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता । मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसन्नवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे वव्रजविहितसेव कुशलता, लताजातेदेव प्रशमिवरदेवत्वमतमा· ॥ तमालाज्ञोमेवः परिकरिद्देरेवत्सलसदा, सदानदकेवल्यचलपदमेवस्तु तिरुते ॥ ७ ॥ कजन्माककायकिरवगणहंकीर्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूहाप्रततिपरशुंकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं ददानंकंकल्लोपमसुरमरालंन्नुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं ज्ञचकुशकदात्रंसुहृदये रहोरात्रंछात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रन्नो पवित्रं सचित्रशुचितरचरित्रंखतमसा ममित्रंयैर्म्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम् ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंदृगुदकन्नवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स फलजनुपस्तेखलुमता इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला न्न षारण्येटन्तकथमपिन्नवंत्वंनदहसुः॥१०॥ नजानेहंनेतः कुमततिमर प्रावृतदृशा गतिर्म्मोहकाणादरहरन्नवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य न्निमतफलोत्सर्जनपरा त्वदाख्यानोचिंतामणिमिवन्नजन्तेस्तविधयः ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुताम्कामपिकृपा न्नवास्तापोदत्व त्तलनिपतितं प्रोद्धरतराम् मुहु.खिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर ण शरण्योसिश्रेयान्प्रन्नुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा घरितकनकाद्रायमहिमा हिमालाभ्रान्त्याब्धि प्रतिन्नटगन्नोरत्वविदित• दित प्रत्यूहालिः शुन्नमत जगत्पावनजिना जिनाधीनश्रीरः कुमतिवसुधालीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविभ्रद्दोधपरमपुरुपः सिद्धिन गरीं गरीय. साम्र ज्यगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्त्तुकर्म्माष्टकरि पुवलंप्रत्जयमहा माहतीर्थेशश्रीन्नरमतुलमास' द्युमहा ॥ १४ ॥ महाराज स्तुत्योऽरिततरुसिन्दुरतिलको लकोन पालाकः सकलन्न विनामोहशमनः मनस्यश्रान्त मेवरसरसिकादम्बइवसन् वसञ्जी यात्पार्श्वप्रन्नुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीन्नोलोकोत्तरपद मुपेत सकलवि । लविवित्रदोप.लोयवसलवनेप्रासविन्नवः न्नवध्वस्त्यै नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कसिद्दावलोकबंधुरम् ॥ न्नवन्तंसद्योग प्रथि तपदवीचारिनि - . ॥ . [illegible] त.विश्वेश्वरसमे इदंस्थाने यन्तिभवृ [illegible] खगा. कलावन्तंकिनश्रुतमतसवाचारनि

स्ताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकजरुप्रकाशोथतमसं हरन्लोकंकुर्व
न्नमलकमलोल्लासमयकम् प्रवोधय्यातन्वनिततकरत पंकदलनो ज
गच्चकु पार्श्वोदिशतुकुशलमेसमयज्रः ॥ १८ ॥ नितान्तसन्तापंस
मतनुमतायन्नमृतग्रु कलाभिः संपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो
षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरऽदा वतान्नामापुत्र सपदिविपवस्तार
कपति १९ स्फुरंत्यासिद्धर निजतनुरुचाचारुप्रकृति र्महीजन्मातल्ला
स्यथप्रन्नतिद्धु खाभिजलदः बुधोबोधस्फीतिंददविरतराजतनयो ध्व
यातीतोलोकेतनुन्नवनमात्रे तिवलवान् ॥ २० ॥ धरादिस्थैशान शु
भ्रजरुचिन्नोगोरकरण सदापायाद्देमासुरगुरुरपायाज्जिनपति स्थिर
स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोज्ञानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकेर
केतुरसित ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठेष्ठेष्स्यस्त्रिदसविसरेष्योवरतया सि
तोकेशोनूनत्रिजगदवनात्वकमलन्नूः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज
न्माधिवसना चतुर्धकृत्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २२ ॥
प्रतीतोवेत्यारिशठकमवमानप्रदलनात्पराध्यैश्रीयोगात्कमलनिलयेसो
सिन्नगवन् ननाकश्रिह्यातिशयज्ञरविक्तस्त्रिन्नुवने जवाद्धक्रोगीतः
परमपुरुषोतोहरिह्यै ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिन्नुवनजनैकाधि
पतया शिव शश्वन्नृणापरमपदढानैकसुविधे असित्वंसर्वज्ञ सकल
जगदर्थौधकलना न्नशूलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्नोविषमदृक् ॥ २४ ॥
अवाप्त श्रेय श्रीप्रवितरणलीलाविदलिता विलेयाश्चक्रोणोरुदमहि
मलारोतिशयवान् विमुक्तश्चोसन्न रुतकुमतजन्न सुमनसा हिताया
शेषाणांसुकृतपदवींत्वकथयन् ॥ २५ ॥ जिनेंद्राद्येरात्रत्रहु विपदम
न्नद्भुतमरं कलत्रयेनात्रकसदहरिहरादि सुरगण सकर्णोनाकर्णयामित
चरिततांधूर्त्तनिवह प्रतारितद्दोष मित्तसततरोष स्थिरतिद्दत ॥ २६ ॥
समग्रामग्रामप्रज्ञवज्ञयदो वोधरहित सरुग्जन्त्वद्देवीपुरुद्धरितरूरमा
नकलित पुरानोहान्नू नभिरमिहसगहोनमहित सदेवोश्रायत्तरुश्च

मपिसमासादिमयका:॥ २७ ॥ प्रन्नोकिंवामेतैरन्निमतविधानेलसतरै
रपास्तोपास्यस्तंखलुजिनवरेणयेोनवरतम् मनोलिम्मैंत्वत्यह्वनजयुगले
सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणाभिष्टसुदृशा ॥ २८॥ अदभ्रंद
म्नांसिन् द्रविणन्नरमहीसदृश विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो
दधत्स्नौवर्णानामुपरिन.लिनानाक्रमयुगं पुनर्न्निर्लोन्नानाधुरिसुमतिमन्नि
स्त्वमुदित ॥ २९॥ लसन्ति सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी
मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोप्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल
क्ष्मां.णिदधत कुनस्तैनैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनस॰ ॥ ३० ॥ चल
प्राज्यराज्यंविदितविन्नवापारयलपतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व
रतरम् कृतेनिर्ग्रंथत्वप्रशमरसवाहेस्त्यसुमता महच्चित्रंचित्तेजनयतित
वेद्तुचरित ॥३१॥निकामाधोत्सृष्ट्या ततवनदवृष्ट्यातिशयित जगद्दा
रिद्र्याग्नि स्मकिलजिनविध्यापयसिय त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु
ग्म सुधादया नतयैं स्वेष्टाप्तैमुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग
त्येकाधाराह्रितनरककारानिलयत॰ समुद्धर्तुंजन्तून्परिहृदसमंतूनपिक्ति
ल तवत्रातर्जन्माजनिजननमुख्याकगणहृत् न्नवेवेशरतोर्थोपिचनिक्र
पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना
मनाक्यस्येद्धक्तोयदि यदनुगंमह्यसनित नितम्विन्यान्वीतः सपदिकुरु
तेतस्वपसम समाङ्गल्यंवाधप्रन्नवतिनक स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र
लापायाद्धुद्धास्तवगुणगणान्नान्तिविशदा स्त्रिलोकीन्नूजानेसुरपयमणे
न्नानवङ्व रसज्ञानाकोठ्याप्यमलधिपणोनव्यधिपणो नतानीष्टेसख्या
तुमदरपरार्ध्यंतुसरदा ॥ ३५॥ नमस्तुभ्यससृत्यतनुततटिनीतारणतरे
नमस्तुभ्यंन्नीमामयसमदन्तावलहरे नमस्तुभ्यसूक्तातिमधुरिमदासी
कृतसुधा समुद्रायामुडश्युदवसिततुभ्यंजिननम ॥ ३६ ॥ पादेयाद्
महिमालयायसुमन॰ सन्दोहशुश्रूषिता ह्रिहन्द्रायकलिच्छिदेन्नगवते
न्नव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुन्यनम. ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीमितं छन्द ॥ पवनाशनतारकवक्करमा भरनिर्झितताररकराजगण· कृतल क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवदे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द ॥ भवदमलपदाम्नोजन्मसलभ्रचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलि प्रार्थये हम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुपरम्यत्वामचिन्त्य स्वरुपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा दप्रसादलनृपरघुनाथदासम् माशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती प्रणुतसस्तृतितोवपार्श्वे ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृहुरुनामगर्भ्रवसततिलका वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तव ॥ अहार्ग्येपुस्तम्वेरमशशिमितेहायन वरे नभोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदभरत ॥ १ ॥ इतिश्री पार्श्वप्रभोमहिम्नस्तोत्र सपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवदन ॥

॥ सिद्धो विज्झाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंडरीउ मुनिदो । वाली पज्जुन्न सवो भरहसग मुणी सेलगो पथ्रगोय ॥ रामो कोमी पच ड्रविड नरवई नारदो पडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम लगिरिमह तिव्वमेथ नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिव॥

॥ अथ श्रीथभणापार्श्वनाथ चैत्यवदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थभणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम सिरि पास साम, राजे अभिराम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि देव सठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण्ण भिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, ...ष . आराहउ जदि एग मण, पावो पद

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कात दात, करुणारस धामी ॥ १ ॥ काचनगिरि सम देह, काति रूप लाछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुन्डरीकनी जाण ॥ प्रभु थो दरसन संपदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिखर समेतको । चाहूं दरसण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सुजगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वाण ॥ भविजन भेटो भगतसुं । तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ भावी जिनवर भरहखित्त । भंभण मणिधारी ॥ १ ॥ लावन वर्ण सुदेह मान । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमान । जिनराज समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जाण ॥ भावी जिनवर भेटिये । कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामार्द्धे सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय॥ तदंतर्मंत्र मे स्मरहरमयं सेंदुममलं निराकारं शश्वज्जप नरपते सिध्यतु सते ॥१॥ ...

। ... ॥ ...

स्वती हरतु मे इति सरस्वती स्तुति

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुन्यनम ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीमितं छन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्करमा न्नरनिर्क्किततारकराजगणः कृतल क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवदे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द ॥ न्नवदमलपदाम्न्नोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलि प्रार्थये हम् वितरविततवोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुपरम्यंत्वामचिन्त्य स्वरूपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा दप्रसादसन्नूपरघुनाथदासम् माशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भवसंततिलका वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रन्नुस्तव ॥ अहार्य्येपुस्तम्वेरमशशिमितेहायन यरे नन्नोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदन्नरत ॥ १ ॥ इतिश्री पार्श्वप्रन्नोमहिमस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीक निवो । वाली पज्जुन्न सवो न्नरहसग मुणी सेलगो पग्रगोय ॥ २ कोमी पच द्रविड नरवई नारदो पडुपुत्ता । मुत्ता एव अणेगे लगिरिमहं तिन्नमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ [illegible] चैत्यवदन ॥

॥ श्रीसेटी तट [illegible] ॥ [illegible]

सिरि पास साम, राजे [illegible] सिरि अ[illegible]

देव संठवियाण दिय [illegible] पल्लव म

म्मिय ॥ [illegible] नर [illegible] जाए ॥

आराहत [illegible]

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुष्व ज्नवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरियें एणि ससार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल ज्नम रो रमे, तेम अरिहत तू चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरु अरिहंतनुं ध्यान हियमे वस्यु, बापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्यु ॥ गम जिम गरुमवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कऋ सावऋ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्द चारित्र कहियें प्रज्नु पालशु, ङ ख ज्नं मार ससार ज्नय टालशु ॥१६॥ तुम्ह हु दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहत आगल कही ॥ एवमी मारी ज्नगति जाणी करी, आपजो बापजी तार केवल सही ॥१७॥ कलश॥ एम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारण, ङुरित वारण, सुख करो ॥ ज्नवऊाय वर श्री, ज्नक्ति लाज्नें, थुणयो श्री, सीमधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवु प्रज्नु, पूर आ शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमधरजीनी स्तुति सपूर्णा ॥

॥ अथ पजमी वृद्ध स्तवन प्रारभ ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पाचमि तप ज्नणु ए, जन्म सफल गिणु ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचद, केवल न्यान दिणद ॥ त्रिगमे गहगह्यो ए, ज्नवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडू ससार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किश्यु ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, ज्नगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए, कोम बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या

सूत्र मझार ॥ किरिया छे सही ए, पण पाछें कही ए ॥ ७ ॥ क्रिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें जरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ जगवंत जाखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ए ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि साजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, जवियणने हितकारो रे ॥ पा० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण जला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुजदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पा० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ बे कर जोमी जावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पाचमि पमिक्कमणो करो, पढो पंमित गुरु पासो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जिण दिन पाचमि तप करो, तिण दिन आरंज टालो रे ॥ पाचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ पाच मास लघुपंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी रे ॥ पाच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥पां०॥६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उह्लालानी देशी ॥

॥ हिव जवियण रे पाचमी उजमणो सुणो, घर सारु रे वारु धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवता वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामतां सोहिलो ॥ उह्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पाचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्गरली ॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजियें ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पाच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणा ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

भजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणा वारू वलीह कमली पाच झिलमिल अति भली, स्थाप नाचारिज पाच ठवणी मुहपत्ती पम्पाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नयकरवालिया, इण परें श्रावक करे पाचम उजमणुं उजवालिया ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर साहू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणु ढोइयें, पूजाना रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणु सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखड़ अंगलूहणुं दीस ए, पंच पच सघली वस्तु ढोवो सगतिशु पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पाचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाडियें रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाडीये ॥ इण करणी रे करता ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक माहे ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासता सुख जे लहे, जे करे पाचमी तप अखण्डित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में थुण्यो श्री अरिहत भगवत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवत श्री जिन चंद सूरिज, सकलचद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय सुदर, भगति भाव, प्रशासियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपचमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलु ज्ञान ने पछे किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ प० ॥ ॥ १ ॥ नदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥
मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार रे ॥
दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥
चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशु तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान
समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ
प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुन्दर कहे हुं पण
पासुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ प० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोमी पास ॥
सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी
साहिब मेरा वे, अरिहा सुग्यानी पास जिणदा वे ॥ ए आकणी ॥
सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें
पेखतां मानुं, नव नवि उधिय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥
भव दुःख भंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी
गुण ताहरा माहरां, विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥
दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथिया पहिमे
नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु
मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे
रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥
किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें
तु वसे साहिब, शिवसुखनोहो ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा
ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा
रसी, धन धन काशीनो देश सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत
रेंश बावीशें, वदि [illegible] ॥ आठम दिन भले [illegible],
भारी जात्र चढी [illegible] ॥ अ० ॥ ८ ॥

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जुहारता, मोरी स फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फल्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बाध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन महारी तुम्हशु प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिल्या जी, हियडुं हीसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण छये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊभिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बेठी जुग्गी, मागशिर शुदि इग्यारश वग्गी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रुवग्गी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान, पाच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवग्गी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पाच कल्याणक हुवे तिम हीज, पंचासनी संख्या परगग्गी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणता एम, दोढसें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवग्गी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर रायग्गी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पग्गी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

कीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें धर्म ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए विधि मोक्ष तणी पारखी ॥ मा० ॥ ए ॥ उजमणुं कीजें श्रीकार, ज्ञानना उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग गुरु पाये परखी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजें ढूकडी ॥ मा० ॥ ११ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पच्चक्खाण करो आखडी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसर शोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो थाहरी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्री सारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जा घर शांति सदा सुख होई ॥१॥ शांति जपीने कीजे काजा, सोइ काम हुवे अभिरामा ॥ शांति जपी परदेश सिधावे, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछे सोही पूरे, दारिद्र दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घटघट के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नहि जावे, कहितां मो मन अचरज थावे ॥ ५ ॥ मार दिया सबही ह थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचे, राज तज्या पिण साहिब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ [illegible] सहू प्रभु पास रहीजे, [illegible] धारी नाम कहीजे ॥ ७ [illegible] पूजक के मन भावक

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह जए जग नायक, नाम अतीत सवे विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजे, नाम देव अरिहंत जणीजे ॥ सयल जीव हितवंत कहीजे, सेवक जाण महा पद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गम्भीरा, दूषण नहि इक माहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण न रहे प्रभु एकण गामी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखे, पिण सुपनो कबहु नवि पेखे ॥ रीत विना बावीस परीसह, सैन्या जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना जग आंण मनावे, माया विना सबसुं मन लावे ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजे, त्रिभुवनपति त्रिगमो सेवीजे ॥ १२ ॥ निग्रयपणे सिर छत्र धरावे, नाम जती पिण चमर ढुलावे ॥ अभय दान दाता सुखकारण, आगे चक्र चले अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजे, कर्म सबीको मूल खणीजे ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापे, लछ घणी देखी नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे, ना किसही कू सीस नमावे ॥ अकिंचनको विरुद धरावे, पिण सोवन पंकज पगठावे ॥ १५ ॥ तजि आरम्भ निज आतम ध्यावे, शिवरमणीकुं साथ चलावे ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारे ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिये, तेरे गुणांको पार न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तू त्रिहुलोकतणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक छै वडवीरा ॥ १८ ॥ तुम जेसें वडभागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स वायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनवु तोसु, करो कृपा जिनवरजी मोसु ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, भवसायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मण्डण सोहे, तिहा जिन शान्ति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायें, श्री.गुणसागरके मन भायें ॥ जे नर नारी इक चित गावे, मन वंछित फल निश्चे पावे ॥ २१॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोभा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पड़े जंजाले, उपयोगसुं वैसे जिन आले ॥ आसातना चउरासी टाले, साश्वता सुख तेहिज संभाले ॥ २ ॥ जे नाखे श्लेषम जिनहरमें, कलह करे गाली जूये रमे ॥ धनुषादि कला सीखण ढूके, कुरलो तंबोल भखे थूके ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणो, सज्झा कंगुलिया दोप सुणो ॥ नख केस समारण रु धिर क्रिया, चादोनी नाखे चामडिया ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये कावो, खावे धाणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावे, अज गज पशु ने दामण दावे ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखे, नख गाल वपुपना मल नाखे ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विद चन अपणो कर धन धरणो ॥६॥ वैसे पग ऊपर पग चढिया, थापै छाणा ढमे हुंढणिया ॥ सूकवे कप्पड पप्पड वडिया, नासीय छिपै नृप भय पडिया ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथा ज कहे, इहां संख्या बैतालीस लहे ॥ हथियार घडे ने पशु बांधे, तापे नाणो परखे रांधै ॥ ८ ॥ भाजो निस्सही जिनगृह पेसे, धरे छत्र ने मंडपमें वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनही, चामर वींझे मन गम नही ॥९॥ तनु तेल सचित्त फल [illegible], भूषण तज आप कुरूप थिये ॥ दरसणथी सिर [illegible], इगसाडे उत्तरासंग न [illegible] ॥१०॥

छोगो सिरपेच मोम जोमै, दर्पिये रमनें वेसे होमै ॥ सयणासुं जुहार करे मुजरो, करे जम चेष्टा कहै वचन बुरो ॥११॥ धरे धरणो झगमे झझंगो, सिर गूथे बावे पालगी॥ पसारे पग पहरे चाखडि-या, पग झटक दिरावे डुखडिया ॥ १२ ॥ करदम खूंदे मैथुन ममै, जू आवलि अंव तिहां वंमै ॥ जधामे गुक करे वयदा, काढे व्यापार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरे, अंघोले पीवा ठाम जरे ॥ दूषण जिनजवनमें ए दाख्या, देववदनजाष्यमें जे जाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावग सगति वता, आसातन टाले वारसता, परमाद वसे कोई थावै, आलोयां पाप सहू जावै ॥१५॥ तबोल ने जोजन पान जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री जोग हुआ ॥ दूषण पनहो ए जघन्य वसे, वरज्या जिनमंदिर माहि वसे ॥१६॥ ड्व्यत ने जावत दोय पूजा, एहना इज जेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रजुनी मन शुद्ध करे, वंछित सुख लीला तेह वरे ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम जव्य प्राणी जाव आणी, विवेकी शुज्ञ वातना ॥ जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थंकर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवझाय श्री अमरसिंह वरे, जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमु रुषज जिनेसर पाय, धनुष पांचसे जेहनी काय ॥ बीजो अजित जिन मुझ मन वसे, मान धनुष साढाच्यारसे ॥ १ ॥ तीजो संजव सुख दातार, जेहनी काय धनुष सो च्यार ॥ अजिनंदन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ जगवान, धनुष तीनसे देहनो मान ॥ पदम प्रजू पूरे मन आस, देह धनुष दोयसे पच्चास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस संजम होय, देह प्रमाण धनुष सो दोय॥ चंद्राप्रजु जिन मुज मन वसे, देह

प्रमाण धनुष दोढसें ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, ऊंच प्र मांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमाण ध नुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयास नमूं उल्लसी, ऊंच प्रमाण धनुष तनु असी ॥ वासपूज्य बारम जिन चद, मान धनुष सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल२ गुणकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर ॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पच्चास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पैंतालीस ॥ शांति करण शोलम जिन शाति, देह धनुष चालीस सोन्नति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मांन धनुष पैंत्रीस उदार ॥ अर अ ढारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ए ॥ मल्लि नाथ जिन उगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम मुनिसुव्रत अरिहत, वीस धनुष तनु मांन कहत ॥ १० ॥ इकवी सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम श्रीनेमजिनंद, दस धन दीहे जांण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो वीस, प्रणमें प्रह शम धरिय जगीस ॥ तो घर रुद्धि सिद्धि उछ रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन देहमांन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ रुषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चोरासी पूरव आय ॥ बी जो अजित जसु सुत्रे साख, आउ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती र्थंकर सम्भव तीसरो, आउ लाख पूरव साठरो ॥ अभिनंदन पूरै मन आस, आउ लाख पूरव पच्चास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस, आउ लाख ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए थित,

जांण, लाख तीस पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरव वीस, दस लख पूरव चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरव गेय, इक लख पूरव शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसा तणो, वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम जिणंद, लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पञ्चाणवें, श्री कुंथुनाथ तणी सञ्जवे ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन ज्ञणी ॥ ७ ॥ वरस सपूरण त्रीस हजार, मनिसुव्रत परमाउ उदार ॥ वीस सहस नमिजिन थित ज्ञणी, वरस सहस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस बहुत्तर वीरजिणंद ॥ ऊपन्नतणा तेरे अवतार, सात चड शंतोसर वार ॥ ९ ॥ सुव्रत ज्ञव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुं७ ज्ञव ससरे जगदीस, सगला ज्ञव एकसो अमतीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अगवीस, सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल छयाल हजार, पमधिक सहु साधवो सो च्यार ॥ श्रावक लाख पचावन ग्रुरे, अमतालीस सहस ऊपरे ॥ १२ ॥ एक कोमि श्रावका सुजगीस, लाख पाच सहस अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवन ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सार ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं, पन्नणसु श्रुत अनुसार ॥ जेहने नाम लियें निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै भव पारं ॥ १ ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदमप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्रप्रभू ने सुविध शीतल जिन श्रेयास, वासपूज्य जिन सुरमणि, विमल गुणेकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुंथुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए जिन चोवीस ॥ जग वछल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥३॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम भरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पाचमो शांति चक्कीस, छठो कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संभूमि सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय ताम, बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र भरत सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ सभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते प्रणमु सिरनामी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्ठ दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जाणिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पचम परगडो, पुरुषसिंह परमाणिये ए ॥ ९ ॥ छठो पुरुष पुंडरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नामे आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहा पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पाच छठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नेर, चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें भद्र, सुप्रभु सुदर्शन, आनंद नंदन शुभ मती [illegible] बलभद, बलदेव ए नव, आठ थया तिहां सिव [illegible] १२ ॥ बलभद्र ब्रह्म

काल उत्सप्पणी, जास्यै तिव कृष्ण सासनें ए ॥ अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत भणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणे प्रभु रहता काल सुखें गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंभ वलय प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक गति गामिया ए, ते पिण भावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल ससारनी ॥ ए देशी ॥

शाति नें कुंथु अरि एह भव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरा पिता, एकहिज थाय नव एण लेखें छता ॥ तीन चक्रधर तणा मिलिय बारें टल्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाल दीजे इसें, माय सहुनी थई साठ लेखे इसें ॥ एह नररयणनो ध्यान नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम थुण्या तीर्थंकर चक्कीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करें सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सेत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, भय भंजण भगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मनके लट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू, जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिरचउमासे रह्या, थिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामे शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंमरीक ॥ पुमरगिरि तिण कारणे, जगति करो निरजीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरु, विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥ श्री० ॥ ६ ॥ थावचा मुनिवर सुक, सहस१ परिवार ॥ पयग बंधणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पाच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचले, सुर नर करे बखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण मूंगरे, मुनिवर कोमा-कोमि ॥ पाज चढंता सान्नरे, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जे वायण प्रतिबूझवी, ते दरवाजे जोय ॥ गोमुख यक्ष कवम मिली, सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावता, अविचल लील विलास श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवन लिख्यते ॥

॥ देसी गरबानी ॥

श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीमा जात्रा निनाणू करिये रे॥१॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहा पूरव निनाणूं आया रे, प्रभु समवसरया सुख दाय ॥ या०॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोमिसुं पूंमरीक जांणो रे, जे पाम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सँते रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने तोमी रे, जिहा . दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमा

॥ या० ॥ ५ ॥ इम ज्ञरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे रे, पाम्या सुगति तणो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीमे रे, सीधा बहु यादववसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पाचे पाण्डव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वली सब प्रद्युम्न कहाय ॥ या० ॥ ए ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम ज्ञाष्यो श्रीज्ञगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ ज्ञजात्र गिर सम नही कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्या पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त पहारी रे, पडचारी ने ज्ञूमि सथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम छहरी जे नर पाले रे, बहु दान सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण ज्ञय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धनग ते नर ने नारी रे, ज्ञेट विमलाचल इक तारी रे, जइये तेहतणी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवन ॥

ऋषज्ञ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतडी अवधारो रे ॥ जगना तारू ॥ मुऊ तारो जी कृपानिध स्वामी, जग जसवाद प्रगट है तादरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण ज्ञोक्ता पर गुण लोसा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज०॥ अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥२॥मु०॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हु तुम चरणे आयोरे ॥ ज०॥तुम रीझावण देते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ज०॥३॥ मु० ॥ काल अनत रह्यो एकेंद्री, तरु साधारण पामी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता वलि विकलेडी, वेष धरया दुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पचेंडीपणो धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अब तो हूं पिण हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं दुखडा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सुंम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥ तुझ सरिषा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥ तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे ॥ ज० ए ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥ ज० ॥१०॥ मु०॥ वर्ष अढारे गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेटया, वीकानेर मझारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवन ॥

॥ वीर सुणों मोरो वीनती करजोडी हो कहु मननी वात ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिभुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हू भम्यो, भव माहे हो स्वामी समुद्र मझार ॥ दुक्ख अनंता में सह्या, ते कहिता हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभू, दुख भजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तोरे चरणे हू आवियो, सामी मुझने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वाम ॥ हुंतो परम भक्त तादरो, तिण तारो हो नहीं ढीलतो काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चन्डकोसिये, तें दीवो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इन्द्रजालियो, इम कहतो हो आ यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजी र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या तादरा, तें झगड्या हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगामी हो तें कीयो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काचली ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ए ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूकों हो चारितथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण उधरयो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ तें पिण आद्रकुमारनें ॥ ते तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक राणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसो हो नहीं आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उधरया, कहु तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव मादरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पले, नही तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरु निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामे सुख संपदा, तुम नामे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नामे वंछित फले, तुम नामे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवता सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ साजलि, आयो हूं धर आस जी॥ पू०॥१॥ इण संसार समुद्र अथागे, ज्रमियो जवजल मांहिजी॥गिलगिचिया जिम आयो गिमतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगे, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंम क हूं ज्रमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न रकतणो इक दंमक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नें तीन विकलेंडी ॥ जगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें डी तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतपी नें वैमाणिक, इम दंमक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तिर्यंच अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजे, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आजखे नर तिरि, निहचे देव ज थाय जी ॥ निज आऊखे सम के ऊंछे, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर नाई, समूर्छिम तिर्यंच

रा स्वाम ॥ हुंतो परम भक्त तादरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चण्डकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इडजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या तादरा, ते झगड्यो हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगामी हो तें कीयो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमतो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूकी काछलो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारितथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण ऊधरयो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आद्रकुमारनें ॥ ते तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक राणी चेलणा, रुप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसो हो नहीं आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पले, नहीं तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नामे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मम्न, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लछन, सेवता सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ साभलि, आयो हूं धर आस जी॥ पू०॥१॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहिजी॥गिलगिचिया जिम आयो गिम्हतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगे, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंम्डक हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इक दंम्डक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पाच थावर नें तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नें वैमाणिक, इम दम्डक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजे, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखै नर तिरि, निहचै देव ज थाय जी ॥ निज आऊखै सम के ऊंछे, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर नाई, समूर्छिम तिर्यंच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरजज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥ ॥ ८ ॥ आउ सख्याते जे गरजज, नर तिरजच विवेक जी ॥ बादर पृथवी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ पर्यासा इण पांचे ठामे, आवी ऊपजे देव जी ॥ इण पाचा माहे पिण आगे, अधिकाई कहु देव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी मामी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला, मानवमाहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परे, जीव भमै संसार ॥ दोय गति नें दोय आगत जाणिये, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ संख्याते आयु परजापता, पचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहिज वे नरकमें, जाये पाप प्रपच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सापणी, छठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ॥ ऊपजे गरजज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकै, तिरयंच के नर थाय ॥ ते पिण गरजज ने परयापता ॥ संख्याती सयु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकिया ने नरकथी नीसरघा, जे फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे भागे करते कहुं, पिण निश्चे नही कोय ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे, बीजी हरि बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकरपद लहे ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥ ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरवविरति लहे, छठि देसविरत्त ॥ सातमी नरकनो समकित — लहे, न हुवे अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ [illegible] कमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

[illegible] रे, एहनो इम अधिकार

॥आउ संख्याते नर सहु दंडके रे, आवी लहे अवतार॥मा०॥२०॥ तेउ वाउ दंडक बे तजी रे, बीजा जे बावीस॥ तिहांथी आया आवे मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असंखी आउवे रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरने मनुष्य हुवे नही रे अरिहंत भाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त्ति ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवे रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥२३॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजे रे, चक्रवर्त्ति वलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवे रे, वैमानिकथी देव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव भमें इण पर भव माहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा माहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंद्री तिर्यंच संख्याते आऊखे जेह, ते मरी चिहुंगतिमा जावे इहा नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आव कहावे, तिहांथी आउ सख्याता नर तिरयंचमें आवे॥ विकल चवी लहे सरवविरति पिण मुगति न पावे, तेउ वाउथी आयो तेहनें समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीने सगलाही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमाहि लहे अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि आवै दसे ठामे, थावर विकल तिरी नरमाहे उतपत्त पामे ॥२८॥ पृथवीकाय आद देई दस दंडके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ मनुष्य विना नव माहे तेउ वाउ वे जावे, विकलेंद्री ते दसमाहि जावे पूगाही आवे ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती माहे तिहा रहियो काल अनत ॥ पुढवी

पाणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेंइंद्री तेंइंद्री अने चौरिंद्री मझारै, संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि ता नर तिरयचमें रहियो, हिव मानवभव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम हुवे छूटकबार, पिण छै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धै अ- रिहत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तूं मन वंछित पूरण आणंद चूरण सामी, ताहरी सेव लही तो मैं नवनिध सिद्ध पामी ॥ अवर न काइ इछू इण भव तूंहिज देव, सूधै मन इक होज्यो भवर ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर छगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावे, धरमसी सुजगीस ए ॥३४॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनं॥

॥ अथ इरियावही मिछामिदुकड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु पणमू रे पास जिनेसर थभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पडिक्कमी जिम इरियावही, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वाणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिडुक्कड तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंद्री तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, दुर ते क- रिवा भणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुढवि दग रे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे वादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग वखाणया, विगल तिय वह जाल ए ॥ जल थल खचर भुयंग उइ, पण इंद्रिय तिरि अम्पयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुम्वी, नारकी तिहा सात जे ॥ ते चवद भेदे करी जाणो, पज्जत्तय अपज्जत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविपिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंभिय दस रे नव लोगंतिक जाणियै, सोलह विध रे व्यतर देव वखाणियै ॥उल्लालो॥ वखाणियै दस विध भुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ बारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव भणया ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणिये असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए॥मेरुपिया पासती चारि ७ खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए ॥ सात ९ अतर दोय पासें दीप छप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै भेद उइ आगला जांणी मणुय पज्जत अपज्जत्तयाए॥ एक सौ एक समुर्छिम भेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहू छे एह अभिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस छसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागें दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह उइसय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितभर आण ॥मन-

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअक ॥ तेतीस सहस सत सात-असी नि तक॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे थइयविरायना तिणि त्रिगुण सन्नाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख बह साखे वगुण न्नाय ॥ इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिछामि डुक्कडदेई न्नविक तरया न्नवजल नि धिकेई ॥ तरे अठे वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम करि निरमल ॥ ते मुखन्नाषे वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूथे ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पमिकमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केवल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ नवकाय लछमी किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लन्न तवन करि इन संथुणयो न्नावे करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥दोहा॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज॥ वस्तु-तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सत न्नग रचना विना, वधन

बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रह्यो अवयव अेकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रुप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ काले ऊपजे विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥ काले गर्भ धरे जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले बोले काले चाले, काले झाले घरसूत रे ॥८॥ काले दूधथकी दही थाये, काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, अंत करे बे वाक रे ॥ ए ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बार चक्कवे, वासुदेव बलवंत रे ॥ काले कवलित कोइ न दीसे, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्प्पणी आरा, छै वे जूजूये भाते रे, पट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न२ दिन रात रे ॥११॥श्री०॥ काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ वृद्धपणे हुय बलि२ दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तव स्वभाववादी वदे जी, काल किसुं करे रक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसे तिमज निस्सक ॥१३॥ सुविवेक विचारो जुओ उ वस्तु स्वभाव ॥ ए आकणी ॥ छते योग योवनवतीजी, वाझणि न जणे वाल ॥ मूछ नही महिला मुखे जी, करतल ऊगे न वाल ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सभाव नवि सपजे जी, किमह पदारथ कोय॥

अंब न लागे नींबमें जी, बाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु०॥ मोरपं ख कुण चीतरे जी, कुण करे सध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी, सुंदर नयण कुरंग ॥१६॥ सु० ॥ कांटा बोर बंबूलना जी, कुणें अणि-याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध॥ ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकें नित वसे जी, मणि हरे विस ततकाल, परवत थिर चल वायरो जी, ऊरध अगननी झाल॥१८॥ ॥सु० ॥ मछ तुंब जलमां तिरे जी, बूडे काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परें सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय सुंठथी उपशमें जी, हरमे करे विरेच॥ सीझे नहीं कण कागनो जी॥ सकल स्वभाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषे काठनो जी, भुयमां थाये पाखाण ॥ सख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो ससि सीयलो जी, भव्यादिक बहु भाव ॥ छए द्रव्य आपापणा जी, न तजे कोइ सुभाव ॥ ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

काल किसुं करे बापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो न होय भवतव्यता जी, तो किम सीजें कज्ज रे ॥ २३ ॥ प्राणी म करो मन जंजाल, ए तो भावी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ जलधि तरे जंगल फिरे जी, कोडि यतन करे कोय ॥ अणभावी होवे नहीं जी, भावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आवे मोर वसंतमां जी, झाले केइ लाख ॥ खरचा केइ खाखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ बाउल जिम भव तव्यता जी, जिण जिण दिसे भजाय ॥ परवस मन मानसतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसें विण चिंतव्युं जी, आवी मिले ततकाल ॥ वरसा सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुजूमिते जी, समुद्र पम्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणाजी, नयण हरे गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करे जी, किम राखीस रे प्राण ॥ आहेमी तर ताकियो जी, ऊपर जमें सींचाण रे ॥प्रा० ॥२९॥ आहेमी नागे मस्यो जी, बांण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊमी गयो जी, कोल नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सत्र हएया संग्राममां जी, रात पम्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जी, राख्याही न रहंत रे ॥प्रा०॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वन्नाव नियत मति रूमी, करम करे ते थाय ॥ करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव नवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्यो रे करम न छूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें राम वस्या वनवासे, सीता पामी आल ॥ कर्मे लंकापति रावणनु, राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मे कीमी कर्मे कुंजर ॥ कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग सोग फुख पीमित, जनम जाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे जिनने जोड निमा रे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ ॥चे०॥ कर्मे एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मानी अंधतणी पर, जग हींमे हाहूतो ॥ कर्म वली ते लहे सकल फल, सुखन्नर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ करमीयो करकोले ॥ माहे घणा दिवसनो जूखो, नाग रह्यो ममकोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु मुखमां, दीये आपणुं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया, कर्म मर्म जोवो एह ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजे ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी जणे ए, ए च्यारे असमञ तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरठ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करता मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तर्णी ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिञ पैसता जोय तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी उंची चढे ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करता इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि करषा विना ए, नवि रधायें अन्न तो ॥ आवी न पमें कोलियो ए, मुखमा क्षेपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलें ए, जोउ कर्म्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंज्ञ तो ॥ उद्यमथी खट मासमा ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपेंइ सरवर जरै ए, का करे इ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउं ए, करे पाहाणमा ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या जणे ए, उद्यम जोड़ै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंता, श्रीजिन चरणे आवे ॥ अमिय रसे जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे, ॥५०॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पाचे समवाय मिल्या विन, कोइ काज न सीझै ॥ अगुल जोगे

कवल तणी पर, जे बूझै ते राझै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दिये वमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै, काल क्रमे वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोक्तादिक, जाग्य सयल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज जवादिक पामी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे प्रा० ॥ ५५ ॥ जवथितनो परपाक थयो तव, पंमित वीर्य उल्लसियो ॥ जव्य स्वजावे शिवगति गामी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवे, सासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रज मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च समवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ पजणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी जाव अपार ॥ चवदे गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पामे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छठो प्रमत्त

पिठाणूं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सतम सलहीजै, अठम अपुरव करण कहीजै, अनिवृत्ति नाम नवम्म ॥ सुखम लोन्न दसम सुविचार, उपशात मोह नाम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणे, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणे, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल ससारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकातनय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणें, संस यी नाम मिथ्यात चोथो ज्ञणें ॥ ६ ॥ समऊ नही काय निज घट रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ नंत अन्नव्यनें, करिय अनादि थिति अंतसुन्नव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंम जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ॥ चौथ पंचम ठठे गण चढने पमे, किणहि कषाय वस आय पहले अमे ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहीय सासादनें थित इसी सान्नली ॥ हिव इहा मिश्र गुणठाण तीजो कहै, जेह उत्कृष्ट अतरमहुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ताम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, केतो सावि मिथ्यामतो ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर दहणा बेक वत्ती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय माहि, मरण लहै नही, आउ बंधनपमै नवो ए ॥ के तो लहै मिथ्यातकै समकित लहै, मति सरखी गति परज्ञवैए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहै, मति विन किहा समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणगण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥ सद्दु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा भव में रहै ए ॥ केइएक भेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उपशम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध, ते नर क्षायकी, तिणहिज भव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बाध्यो आऊ, सातें तिहां थकी, तीजे चोथे भव तिरै ए ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणठाण, प्रगटै चोकरी प्रत्याख्यान ॥ भेल तजेवा वीस अभक्ष, पाम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारे व्रत संभारै ॥ पूजादिक षट् कारज साधे, इग्यारे प्रतिमा आराधे ॥ १८ ॥ आर्त रौद्र ध्यान है मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस कमी पुवकोड, पंचम गुणठाणे थित जोड ॥ १९ ॥ हिव आगे सातें गुणथान, इक २ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद वसै जिण ठाम, तेह प्रमत्त छट्ठो गुणधांम ॥ २० ॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आवस्यक सार ॥ उदयत चोथा च्यार कषाय, तेह प्रमत्त [illegible] कदाय ॥ २१ ॥ रूंधो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान [illegible] आराधे ॥ जिहां प्रमाद किया विन नासै, [illegible] सातम गुण भासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखियां ॥ ए देशी ॥

पहिले अंसे

ते गर्ण ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवे उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहे, अष्टम नाम अपूरव करण तिर्णे कहे ॥ सुक्ल ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अडिग ध्याने धरे ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणिये, जिहां भाव थिररूप निवृत्ति न जाणिये ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हणें, उदै नही जिहा वेद अवेदपणो तिर्णे ॥ २५ ॥ जिहा रहे सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखे, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखे ॥ संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे, मोह प्रकृति जिण ठांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करे किणही परे, तो पावे अहमिंद अवर गति नादरे ॥ च्यार वार समश्रेणि करे संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम ठाम समीप पहिले पडे, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुदगल रडे ॥ क्षपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी बारम्म चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेमो आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित्त अमल यथा आख्यात, हिव आगे तेरम गुणथान तणी कहे वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकडी क्षय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहने जूना कप्पड जेम ॥ दरसण ज्ञांन वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट थयो विचरे श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी ज्ञानी परगट वात, महिमावंत अढारे दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे ऊणी कही इक पूरवकोडि, उत्कृष्टे तेरम गुणठाणे ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरुध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंते समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरतां जेहनो मान, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरे कोय, पहिलो बीजो चोथो परन्नव साथे होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लान्नै पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर बाहरू मेरू मंमण, सुमति जिण सुपसानले ॥ गुणठाण चवद विचार वरण्यो, न्नेद आगमनें न्नले ॥ संवत सतरैसे बत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदे गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्वनी, गाथा न्नाखा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधे, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी वलि बायाल, सत्तावन बारे चौ नव क्रम न्नेदनी माल ॥ १ ॥ इग दु ति चौविह पणविह छविह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदे गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि पणिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जत्ता चवदें होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्पा सोय ॥ नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए षट लक्षण लक्षत जीव द्रव्य इह लोग ॥३॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन, सासोसास

भाषा मन पन्न ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंदी पंच पज्जत्ती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें पन्न पज्जत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पाच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार उ सात आठ एगिंदी विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंडी नें नव दस क्रम थाय, प्राणाथी जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूंना त्रिण२ भेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विभेद ॥ खंधा देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नन्न काल ए पांच न जीव॥६॥चलण सहाई धम्मेंथिर सठाण अधम्म, अवगाहें पूरण गलणें नन्न पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें साल पल्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल॥७॥पन्न इग दो सग सग सग पन्न इग अक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन कानासें माण, केवलनाणी भणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि सर्वेण संठाण चोवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आतप ने उजोय ॥ ए ॥ सुभखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तिछकर पुण्य बयाल ॥ तस बादर पज्जत्त प, त्तेय थिरं सुभ सोय ॥ सुभग सुसरं आइज्ज जसें त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मिच्छ थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरिय च दुग एकेंडी वि ति चौरिंडी तेय, कुखगई उपघा अपसत्थ वस चौ भेयं ॥ ११ ॥ पढम संघयण विना सघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप त तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरं गेय, असुभ दुभग दू सरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इदि कसाय अव्रय तिम जोग बायालीस सेव पचीस किया संजो

ण ॥ काइ अहिगरणीया पावसिया परिताप, आणा...

...की परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय ...

...तेम,, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥...

थ ने सत्थि सहत्थे जेह, आज्ञापनकी वेयारण ...

१४ ॥ अणव कंख पच्चंयना भवठगी समुदान, ...

ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परि...

ण चारित्त, पणतिग वाबीस दस बारे पण ...

रिया न्नाषा एषणा सुमतीना नेद होय, ...

स्केवण पाचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती ...

व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ ...

सीत उसने मासा निरवत्थ, अरति जोय ...

सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलान्न रोग ...

न्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ ...

सजम सम्म, सत्य सौच आकिंचन ...

नित्य असरण संसार एग अनत्त, ...

वि न्नावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सु...

धरम साधक अरिहंत ए बारे न्नावना ...

स्थापन बीजो सोय, परिहार विशु...

॥ १९ ॥ तिम अहरकाय चरित्त ...

विधि आचरणें के जिय पाम्या ...

ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई ...

अणसण उणोदर वृत्ति संखेप ...

बाहिर तप परू न्नाग ॥ पार्य...

ध्यान काउसग अ . तप...

न्नाव काल अ

नो संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगड चित्र कर कुंजकार जंडारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना जाष्या जे जे जाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्राव ॥ इम संखेपें विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावें पाम्यो वरण वस्यु हिव मोख तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपण ड्व्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल पांचमो बठो अंतर जाण ॥ जाग सातमो जाव आठ तिम अलप बहुत्त ॥ ए नव जेदें जावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक पदवी है जे पदेअविनाजाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहीय अजाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ समत्ते क्षायक सन्नी असन्नी येसन्नि, अणाहारी आहारी अणाहारी ऊपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध जीव ॥ ड्व्य होय अनंत, लोग असंखम जाग एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपाता जावे नहि सिद्धा अंतर जोय, सरव जीवथी जाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जेहने बे ते क्षायक जाव, जीवत जेहनें वलि परणामक जाव समाव ॥ सहुथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्त, अणजाणताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरब जिनेसर मुखथी जाष्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत निच्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम ससार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनत अतीत अनागत तहगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेदै विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुज्ञ सदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक करिवर सिहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वरुसाखानी पडिसाख ॥ ग्यानसार ते पडिसाखानी सूखम डाल, ए नव पद नव रयणे विनाऐं गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवछर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा जन नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंडक रचनायें तवुं, सखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंडक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ वि ति चौरिंदी गभ्रथर, तिरि नर तिहा मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंडक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनायें ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहण संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा तुगनो ए अरथ कह्यो सक्षेव ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुचो हुं तेहथी कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गभ्रज तिरि वाउ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच दंडक इगवीस रह्या ति ...थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह

प्रमाण, भाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वभावक अंगुल भाग सख्यात, उकोसे पणसै धनु सागरने विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गम्रय तिरि वणस्सय काय, जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ बेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंद्री देह उंचै आकार ॥ आरंभ काले वैक्रिय देहनो ए परिमाण, भाग एक इग आंगुलनो सख्यातम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख, नवसै जोयण तिरयचने ए सूत्रे साख ॥ स्वभावकथी दुगणो नारक वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक एक उक्कोसविउवण काल, विगल संघयणो थावर सुर नारकनी माल ॥ गम्रय नर तिरनें षट विगलनें छेवट्ठ एक, सरब जीवनें च्यार दसेसणाये छेप ॥ ५ ॥ नर तिरनें षट सुरनें समचौरस सठाण, हुंडग इग नारग विगलेंद्री सूत्र प्रमाण, नाणाविह धयसूईमसूरनी चड आकार, वणसइ वाऊ तेऊ जू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गम्रय पट नर तिरि दोय, वेमाणिय नारग तेउ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस रह्या ने च्यार, दार इडियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुद्घात सग नरनें पण गम्रय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार भेसनें तीनु भेव ॥ दिठी दोय विगलमें थावरने मिथ्यात, सेसने तीन दिठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर बि ति नें एक अचक्खू दंसण होय, चौरिंद्री ते चक्खू अचक्खू दंसण होय ॥ मनुजने च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें लीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण, गम्रय मणुनें तीन अनाणनें पाचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें तेरे जोग, मनुजने पनरे च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाऊकायने पाच तीन थावर सयोग, मनुजने बार नरग तिर देवने नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण पम चौरिंडी थावर तीन, उववाय इग चवण दार दोनुं समकीन ॥११॥ एगसमै संख्यात असख्या चवण पपात, गप्नय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असख चवत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस सहस उक्टि, वणस्सई ख्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीन, व्यतर पल्य अधिक लख वरष पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें बार वरस गुणचास दिवस उम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्नें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ जुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पल्य तेना असंस वेमाणिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें पट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अणारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय उए दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मझार, दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पएसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गप्नय मणुजनें दीह कालकी सन्ना होय, केइक आचारज कहे दिठिवायणी होय ॥ निश्चय पज्जत्ता पंचिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवा माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥ संखाउपज्जत पंचेंदी तिरि नर तेम, पज्जत्ता जू दग पत्तेय वणस्सई जेम ॥ ए सरवेमें निश्चे सुरनी आगति हुंति, पज्जत्त संख गप्नय तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर उपजे न हुवे सेस, जू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजे असेस॥ पुढवाई दस पयमें जू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ उववंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

वाई दस पदमें विगल जावन आवत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरोने जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थीपुरसें चोविह सुर तिरि नर तीनू वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पज्जत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥२१॥वेइंद्री तेइंद्री पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥ हे जिन ए सहु भावमें पाम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणता किमही न आवे अत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दसण लहि विरत न पामी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पाम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक वंदाण देव, आतम गुण संसार समच कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ सवत ससि रस वारण तेम चद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अठम चौमासो कर जेपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, वालबोध गुरुरूप॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा ससारी जीव दु भेद, सत्ता भिनें सिद्ध अनंते रुप अभेद॥ससारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, भु अप वाउ

तेज वणस्सइ थावर धार॥ १॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ अोडल तूरी ऊस भूमि पाइण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विछेद ॥ भूमि आकास ऊस हिम करग आळुना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूंअर तेम ॥ होय घणो वधि अप्पकाय पिण पाइण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा ज्वाला भोभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युताहिक अगनि जीव विख्यात ॥ उब्भामग उक्कलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणतेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंबाल, भूंफोडा अद्दत्तिय सरबे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा साधा गाठा भाजे सम भाग ॥ काटी ढाल भूंमिमें रोप्यां पल्लव थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरे एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गाल फल मूल काठ बीजे जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पाचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुर्ते आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकालोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवडी संख गडोला जहिगा लटनी जात, चदन काअलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय बाहाकम पौरादिक वेइंद्री होय, गोमी माकण जूआ कीडा कीडी होय ॥ दीपक ईली धीवेलो गोगीडा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कृम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीडा जिम चोरकीडा गोवालो तेह, ईली कंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह ॥ वींछू ढंकण भमरा भमरी इंद्री च्यार, तीडा माखी डास मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवडोला माकडिय पतग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पचेंद्री च्यार विछेद॥

घम्मा वंसा सेला अंजन रिठा कात, मघा माघवई नारग ए नामे सात ॥११॥ जलचारी थलचारी नजचारी तिरयच, मच्छ कच्छ सुसमार मगर गाहा जल अच ॥चौपय उरपरि जुजपरि साप जुचारी लेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय॥१२॥ खेचर चम्म रोम पखी चमचेड कपोत, मनुजलोकथी वाहिर समुग विगय पंख होत ॥ सरवे जल थल खचर समुछम गप्नय दोय, कम्म अकम्म जूमि अतर दीवा मणु जोय॥१३॥असुरादिक दस होय वाण व्यतरिया अठ, जोइस पच वेमाणिय डुविहासु सें दिठ॥ पनरे जेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार॥१४॥ देह आउखो एक सरीरे थितनो मान, प्राण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण॥अंगुल जाग असंख लहू एगिदी काय, जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय॥१५॥वि ति चउरिंदा अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास, बारे जोयण तीन गाउ इग जोयण जास ॥ सचमना नेरइया धणु सय पंच प्रमाण, तेहथी अरध२ ऊणा अनुक्रम रयणाए ॥१६॥ जोयण सहस गप्नचर मच्छ उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहुत्त जूचारी पंखी जेह खेचर नव घणु उरग जुयग जोयण नव होय, नव गाऊ परिमाण समुछम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खट गाउ उचास चउप्प यं गप्नज माण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ जुवन व्यतर जोइस वेमाणिय ईसाणान, सात हाथ उक्कोसें ऊचपणे तणु हुत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहिंदे पन ब्रह्म लातक पाच, शुक्र सहस्रारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथें तीन, नवग्रैवेयक दोय पचाणुतर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय जू आऊ वाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार वरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास, अनुक्रम बेइंदी तेइंदी चौरिंदी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय, चौपय

तिरिय मनुजनौं तीन पल्योपम आय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कासे पुव्वकोमि, पंखीने इग भाग असंख्य पल्यनो जोम ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समूछम मणुं भेद, जहन्न उक्कोसें अंतमुहुत्त नियम थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपे अधिकार, जे वलि इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उसप्पिणी सहु एगिंडी आपणो काय, उपजे चवे अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवत्सर विगल आपणो देह, सात आठ भव पंचेंडी तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उद्दवरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आउ वल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ इग डु ति चौरिंडीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पचेंडी दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जे.वे वयोग जिय मरणें होय ॥ जोम सायर ससार अपार अनंती वार, जमियो जीव धरम विन जोण असीने च्यार ॥ २५ ॥ सग सग सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रें साख ॥ भू अप तेउ वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनत भंग जिन आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न भोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुंसक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धाते सिद्ध कहत ॥ इम ए जीवविचार गाथाथी भापारुप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्री जिनलाभ सूरीस, रत्नराज गणि मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर आर, माघ चोथ दिन कीने मझार ॥ २९ जीवविचार स्तवन सं

॥ अथ समवसरण विचारगर्भित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥ प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां, त्रिगडो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवे, एह कहूं अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥ सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जबे आविया जी, गावे अपछरह गंधर्व ॥ समवसरण रचै सुरवराजी, सखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ भुवनपति वीस इंदे मिळया जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस छ दस वेमाणिय जुगथा जी, चोसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूज परमारजे जी, भूमि योजन सम भाव ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिड़काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुभ धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर हिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण अरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमाण ॥ भवणवइ देव त्रिगडो भलो जी, करय ते सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-तणो जी, सोवन कांगरे सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी, कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ भींत ऊंची धणुं पांचसे जी, सवा-तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहु गढ तणी जी, पावडी वीस हजार ॥ थाक श्रम नहिय चढता थका जी, एक कर उच्च विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथवीथकी जी, उच्च

रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसे जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहा जी, नीलमणि मोर निरमाण ॥ कुसय धणु मध्य मणि पीठका जी, उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें झाकझमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देवछंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवदुंदुभि नाद उपदिसे जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ तिर ऊपरे जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव्व दिसि आसणे आय बेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू ॥ दीपे असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखें सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसाल ए, रूप चिहुं २ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वाण श्री जिनतणी, भगवंत उपदिसै बार परषद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग निकूणें करी, गणधर साधवो तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी भुवणनी विंतरी खीपणें, नैरुतकूण जिनवाण कान्ने सुणे ॥ त्रिहूंतणा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ बारह परखदा मद मछर छोड ए, लूख त्रिस विसरै सुणे कर जोड ए ॥ १९ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उच्च आकास ए, झलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु धरिय पहिले गढे, होय पगचार नर नार ऊंचा चढे ॥ जिनतणी वाणि सुणि जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणे जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मादिलो प्रोल

मांहे वसै ॥ २२ ॥ चिहु दिसि वाटली वावि चौं जाणियै, विदिसि चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहा वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल देम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयत अप राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुवरु पुरुष खट्टंग अ र्चि माल ए, रजतगढ प्रोलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगडो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण ठांम ए॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी रुद्धि दीठी जियै, तेह ध धन धन्न अवतार पायो तियै॥ पास अरदास सुणी वछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सरदहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवन ॥

॥ अथ श्री रुषभदेवजी सुण २ सैत्रुज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं तो अरज करू सिरनामी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, भवसायर पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जाउं वारी हु वार हजारी कृ०॥२॥ हिव किसिय विमासण कीजे, मुझ ऊपर महिर धरीजे, दिल रजन दरसन दीजे ॥ कृ०॥ ३ ॥आज सयल मनोरथ फलिया, भव२ना पातिक टलिया, प्रभु जो मुझसै सुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ॥ ४ ॥ समरयां सकट टलि जावै, नव नव नित मंगल थावै, मुझ

आतम पुन्य नरावे ॥ रू० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजे, केसर चंदन चरचीजै, दिन धन२ तेह गिणीजे ॥ रू० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चद चकोरो ॥ रू० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरे, वीस माहा नय संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारे ॥ रू० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोभ सवाई ॥ ॥ रू० ॥ ९ ॥ नाभिराय कुलंवर चंदा, नव जन मन नयण आनंदा, नलगे सुर असुर सुरिंदा ॥ रू० ॥ १० ॥ जयकारी रिषभ जिनंदा, प्रह सम धर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन नक्ति सूरिंदा ॥रू०॥११॥ इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंमण गुण निलो ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए॥ १ ॥ नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण ऋद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी छै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लभै पार ए ॥ तास नयर अवतार ए, तसु अतिशय रूप नदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूछै नूपतिनें कह्या ए, करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ वीजै वृषभ ऊदार, धरणी जिण धरयो नार ॥ ५ ॥ तीजे सिंह प्रधान, जसु वल कोय न मांन॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पाचमै पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठे दीठो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज लहकती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कुंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ए ॥ समुद्र इग्यारसें ठामें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी राति, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमथी नीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो नृप उदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारे ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर ठाम ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम उगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधा दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरुजगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकियें पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर थानक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ इंद्र मिली तिहां आवै, लेइ निज भक्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ करी जनम महोछव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल द्वीप नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी उगो दिवस उदार, घर२ गाईजे कीजे मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिन्नसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन२कला करी जिम चंद, त्रिहु ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधान, जोवनवय आयो परणायो राजान १ए

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदे प्रभु रहतां काल सुखे गमें ए, आगे ...
संजम लेवा समे ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावे ... ए, ...
संवछरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ ...
इंद्रादिक सब मिळ्या ए, देस विदेस विहार करी ...
ए, पामीय केवलज्ञान सुरे महिमा करी ए, ...
मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गोडीपासतणा गुण जे नर गावे ...
परलोग सुवंछित पावे ॥ संघ करी संघपति ...
चोर धाम संकट टलै विघन बुराइ न ...
पनमावइ जाल वदे सिर आण, सामड ...
काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि काम ...
शेखर लील समयरंग इण पर बोले ॥ २२ ...
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन ...

मंगल कमला कंद ए, सुख ...
अजिय जिणंद ए, शांतीसर नय...
प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस ...
मानव भव सफल करेसु ए ॥ १ ॥ ...
जिनसासण भास ए, रिसह ...
हस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिह ...
गाजियो ए ॥ विजया तसु ...
॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ...
वस्यो दस मास ॥ प्रभू ...

मन आंणंदियो ए, सुत नाम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उछाह ए, कुमर२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चाले गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए, लवन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधे सब काज ए, प्रभु पाले पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हथणापुर ठाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नाम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे वेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवतरयो ए ॥ मानव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जाणियो ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नाम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुण जाणे कही ए, त्रिहु भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणे हिरणलो ए, वन सिंह बीहे एकलो ए ॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गीतहि राग सु रंग ए, पिण पन्नगे लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्यो ससि लक ए ॥ तिण पाम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सामि सांभल्यो ए ॥ आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लवन तणो ए ॥१५॥ लीला पति परणे घणी ए, नव नविय कुमर राया तणी ए ॥ बल वल अभियण जोगवे ए, पीय राज भली पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर तणें मन्डल समें ए, पचास सहस वरसा गमे ए ॥ तो तेजै दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्ररयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी भरह छखन्ड ए, वरतावी आण अखंन्ड ए ॥ चवद रयण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जख्ने अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुत्तर पुर

वरा ए, बत्तीस मौरुबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोम्ड ए, ठिन्न वे नमें वे कर जोम्ड ए ॥ १ए ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमधमें ए, बत्तीस सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला वएय लीला जरी ए ॥ जगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह स अतेउरी ए ॥ २१ ॥ अवरज ऋद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र यण जंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुत्रपु रे पुण्य प्रमांण ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस सहस पचवीस ए, सव पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर विहुं तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए सार ए, विहु लीधो सजम जार ए ॥ २४ ॥ विहुं खम दम धीर ज धरी ए, विहु मोह मयण मद परिहरी ए ॥ विहुं जिन झाण समाण ए, विहु पाम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहु देवहि कोम्- डिमहि ए, विहु चौतीसे अतिसय लहि ए ॥ समवसरण विहु ठाण ए, विहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए, विहु आगलि इद अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावै सुरवहू ए ॥ २७ ॥ विहु सिर छत्र चमर विमल, विहु पग तल नव सोवन कमल ॥ विहु जिनतणे विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ विहु जवयार जुवन जरी ए, विहुं सिद्ध रमणसु परवरी ए, विहु जजी जव फंद ए, विहु उदयो परमाणद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणे चिंतामण सुर तरु समो ए ॥ शुणि अति सऊ विहाण ए, तिहा इह परजव नवि हाण ए ॥ ३० ॥ विहु उच्छव मगल करण, विहु सं [illegible] दुरिय हरण ॥ विहुं वर कमल नयण वयण, विहं श्री [illegible] जुवण रयण ॥ ३१ ॥ [illegible] नोलिमतणी

जिण श्रुय ज्ञणि ए ॥ सरण विहु जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसी जी, सिव सुख तणो उपाय ॥ ज्ञविक जन धर श्रीजिन उपदेस, बूटे कर्म कलेस ॥ ज्ञ० ॥ आंकणी ॥ पमिलेहण मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी छे पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाव विचारिये जी, इम ज्ञाखे जगदीस ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ प्रथम वे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पमिलेहण दृष्टिनी जी, करे धर्मनी पुष्टि ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ ज्ञ० ॥ सीप वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोमा आवरो जी, नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ ज्ञ० ॥ देवतत्त्व गुरुतत्त्वसू जी, धर्मतत्त्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी, तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज्ञ० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति ग्रहीजे शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, तीने दंम विशुद्ध ॥ ज्ञ० ॥ ८ ॥ पमिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ हिव पमिलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज्ञ० ॥ ए ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, सुद्ध करो वाम वाह ॥ तज ज्ञय शोक डुगंछना जी, दक्षिण पिण करे साह ॥ १० ॥ ज्ञ० ॥ धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज्ञ० ॥ काढ सल्य तीन उरथकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कपाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करो घात ॥ १२ ॥ भ० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्ध होय ॥ ए पडिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तू जोय ॥ १३ ॥ भ० ॥ इम पडिलेहण जे करे जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरे करे जी, पामैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ भ० ॥ कलस ॥ इम वीर जिनवरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांभली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहाणी, सुणो भवियण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, मुखथकी ए समही ॥ मुंहपती पडिलेहण तणी विध लब्धिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल ससारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार थाये घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांभली, लहिय समकित अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप करे, जिणथकी जीव संसारसागर तिरे ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइये, जीव निर्मल हुवे वस्त्र जिम धोइये ॥ २ ॥ दोष लागे तिके चार प्रकारना, धुरथकी नाम नें अरथ ते धारणा ॥ किणही कारण वसै पाप जे कीजिये, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजिये॥३॥ कीजीये जेह कदर्प्प प्रमुखे करी, दोप तेवीय परमाद सज्ञा धरो ॥ कूदता गर्वता होय हिंसा जिहा, दर्प्प इण नाम करि दोप तीजो तिहा ॥ ४ ॥ विणततां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकुट्टिया दोप ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी, दोष धर प्रायश्चित्त लेह [illegible]कथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरण-तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमड एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए जो खमित थायें अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपडिलेह्या परिमढनो तप धार, गिरता एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमड जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं भेद मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीसु अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनतकाय आरम्भ विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, बि ति चउरेंडी असाया एकासणथी वृद्ध॥ बहु बि ति चौरें-डिय हएया नि ति चन्न उपवास, सकप्पादि चिहु विधि डुगुणा डुगुण प्रकास ॥ ए॥ उद्देही कुलियावस्ना कीडी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूकया दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन क्रमि पातन आंबिल इक एक, जीवाणी ढोलता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ सकप्पादिक एक पचेंद्री उपद्रव होय, दोढ त्रिण आठ दसै उपवासैं आलोयण जोइ, बहु पचेंद्री उपद्रव छठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पचेंद्रीनें लकडी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें छठ विचार ॥ साध समक्षें लोक समक्षें राज समक्ष, कुडा आल दिया डुइ चौथरु छठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दमाया तेम मराया वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवडना दोष किया गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधा बहु असतीपोस ॥ करीय डुआलस चार हजार गुणो नव-

कार, मिछादुक्कड देउ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ रे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पडिक्कमणा विध पातरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै भणया, इकर आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंबिल, भांगे आलोयण इमें ए ॥ एक पाच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊपरा, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, भंग किया वली, फिर अट्ठी पातिक हाणीये ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटिये, दीधै अठम तप करे ए ॥ मागी सूई दोध, कातरणी छुरी, आंबिल चढता आदरे ए ॥ १८ ॥ जीव करावे युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एकर जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमादान, नियम करी भग, मद्य मास माखण भख्या ए ॥ आलोयण उपवास, सकप्पादिक, चिहुं भेदे चढता लिख्या ए॥ २० ॥ बोलरा मिरखावाद, अदत्ता दान त्यु, जघन्य एकासण जाणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास दसर आणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमाहे भंग ॥ च्यार सिक्षा व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववाडि कदाय, तिहा जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआ अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधुअने श्रावक पोसोध, एकेंद्री सच्चित संघट्टे कीध ॥ वीतर भोले सच्चित जल पी

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पछिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजगईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरवे पुष्कर अरध माहे, सरवे जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वदू जिन सेतेरमो, श्रीमहाभद्र अगरम नित नमो ॥ देवजसा उगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ त्रु० ॥ जिण च्यार पुष्कर अरध माहे, कह्या पछिम भाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरव लाख वरसां, आउ इक २ जिण तणो ॥ पाचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ हिव उत्कृष्टे भेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहे, पांचे भरते जिम पाचे लहे ॥ त्रु० ॥ जिण लहे पाचे तेम पाचै, एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहा पिण छै जूजूआ ॥ एकसो सतर एम जिनवर, कोडि नवसय केवली, नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदिवै नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरे नही जिनराज ए ॥ धन २ पाचे महाविदेह ए, विचरे वीसे जिन गुणगेह ए ॥ त्रु० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसया चोतीस ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजे तारण तरण विचरै, केवली दोय कोड ए ॥ दोय सहस कोडी सुसाधु बीजा, नमु वे कर जोड ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा भूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस विहरमाण ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखविजय हरख जिनंद सानिध नेह धरि धमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधोपुष्करद्वीप एवं ३॥ द्वीपमें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें विच-

रता साश्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाभाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र भणी क मदेज्यो, तुम्हे नरभव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथ मांहे गाजे, आबू मारूमें हेत विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वाहे ला गो, ऊंचो अधरिये जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावे, निरखंता भिपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी है बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला वायो रे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहा वनवेल्या आझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढारे वणराई, एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू लडानो रंग सुहावे रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठ रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरडाई, चक्केसरि देवी सहा ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाड वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जी तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंडायो रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ झीणी२ कोरणी झेरयो, दल मारुवण जेम भकेरयो रे जा० ॥ नवी२ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया झिणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ उतरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ भगणित कोड सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा० ॥ करजोडीने आगे, मंत्री जिनवर पाय लागे, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुठै चढिया हाथी, मंडाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल समवड कोई, भूमंडल माहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि ति ण वंस विगताला, वस्तुपाल अने तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी ऋद्धि पाई, इहां नियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

द्धवो जिणहर पासै, वार कोरनी लागति न्नामें रे ॥ जा० ॥ देरा णी जेगाणी, आलानी अनव कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहा देव ल सोह वधारी, नेमनाथजी वाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल वाम्हो दीठो, ते तो लागे नयणे मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहा केइ देवल पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गात्र आ गल जाइयै, देवल देखी सुख लहियै रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा प्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते धातो, फिगमिग रही दिनने रातो रे ॥जा०॥ मण चवदेते चम्मा लौ, जिण विबनो न्नाव निहाल्यो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली न्नीम सोन्नागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहा लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा० ॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन न्नावी रे ॥ जा० ॥ जिहा तिहा पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥ ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥ जा० ॥ साहमी वछल कीज्यो, आतमलीनो जसलीजो रे ॥ जा० ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वाता केइ अचरज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणियै छै जे कोई, अहिनाणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥ ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥ जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचद बोले रे ॥ जा० ॥ २१ ॥ इति आवूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषन्नानन वधमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जि णा ए॥१॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिन्नुवन सासता, प्रणमुं विंव सोहा मणा ए ॥ २ ॥ चेऽहर सग कोडि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस ठिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवे नवग्रीवेके पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सहस सत साठ अठे गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक वखाण, चउ२ चेईहर साठ सवे त्रिहुं गण॥इकसो चोवीसे गुण प्रतिमा चिहुं नाम, ग्यारसें चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसे सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन असी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति सुंदर वक्ष सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस ॥ कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढय, वीस सत रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पच चूला सदी ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुख, इग्यारेंसें सत्तर सुख ॥ कुंम त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणिये रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणिये॥१२॥त्रिण लाख सहस वलि त्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवाले सब मेलीजे रे, [illegible] नमीजे ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन लक्खा रे, दो [illegible] करुक्खा ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजे

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोमी रे अरुवन लख अधिके जोमी ॥ छत्तीस सहस अधिक कहीये रे प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी। पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर जूपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारखी, हित सुख मोक्ष निदानो जी। जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि०॥ जीवाजिगम प्रमुख माहि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी। साजलतां जणतां सुख संपदा, हियमे हरख अपारो जी॥४॥वि०॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा सथुणया जिनवर तणा, विहुं नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सेकेलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुंदर गुण जणें अजिराम ए, त्रिहु काल त्रिकरण सुद्द होयज्यो सदा मुऊ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद। प्रजूजी विराजै रे सूरत बिंदरे रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीहढरथ नृप गेह ॥ श्रीवछ सोहे रे लाछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रजु देह ॥ २ ॥ ज० ॥ विषय निवारी रे सजम संग्रह्यो रे, लाधू केवलनाण ॥ सघन घना घन जिम ध्रम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन जाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

वदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब विलोकता रे, दुक्कृत दूर पुलाय ॥ इन्द्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत आईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब भराविओ रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अढारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे थापियो रे, बिंब अनेक प्रकार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी लहु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्रीखरतर गछ भाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन थुण्या रे, विबुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे हूं तो भरवा गइथी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवडलो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारे मुंने थास्ये कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातडली तव थास्ये महारी सवि वगे रे लो ॥ १ ॥ हारे कोइ दुर्जननो भंभेरयो माहरो नाथ जो, उडवस्यै नहीं क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी सरिखो कुण छै दुनिया . . . थे रे जिम तेहने घर

करी रे लो ॥२॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध जो, गली रे सी करवी तेहथी गोठडी रे लो ॥ हारे काइ कूड़ खाई ते मिठाईने माटे जो, क्याही रे परमारथनी नही प्रीतडी रे लो ॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजामी जीवन प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाएयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत वच्छल भगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥ हारे प्रभु लागी मुझने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्याथी होइ उन्नोगलो रे लो ॥ हा रे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहा-राज जो, हेजे रे हसी बोलो डंमी आमलो रे लो ॥ ५॥ हारे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आसरुली अणियाली का-मणगारीयूरे लो ॥ हारे मारे नयणा लपट जोवे खिण २ तुझ जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा ते पिण जाणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हु जाउं वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआ थइ मन आणो कलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहुं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरु रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांडयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें भुहारया भोंयरा रे लाल, सूतां उठ सवेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देस जाणीतू देहरू रे लाल, मोटो देस मेवाड ॥म०॥ लख नवाणु लगाविया रे लाल, धन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ खरतर वसई खतसू रे लाल, निर

खंता सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियंतरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुभारे पैसता जी, पाप पडल गयां दूर रे ॥ मोहन मारुदेवीनो लाडलो जी, दीठे मीठे आनंद पूर रे ॥ स० ॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोडाकोडी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ चुगल भागी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी साकल साथ रे ॥ धार कथाडा तम संवेगना जी, अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणू जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजानें पावत आतमा जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजे जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन मंदिर धरीजे रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजे, मनमो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग दुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥ जे दरसण विन किरिया पावै, ते नवि कहिये तरिया रे ॥आ०॥२॥ नय एकांते दरसन थापे, फिर भरे ते पापे रे॥ आप आपणा मति आलापै, ते भूला भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्द दरसन स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आत्म उमगे रे ॥ आनदघन उपजे तसु अगै, सिद्दरमणने रगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भव कोमाकोमीमें भमता, तुझ दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत सयोगे ताहरे सनमुख, आज भले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटको, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अद्भुत, आतम गुण उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दरसण दीजै रे ॥ लाभउदय जिनचद लहीने, सगला कारज सीजै रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण सपदा रे, तुझ अनंत अपार ॥ ते सांभलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ ए आकणी ॥ जे जे कारण जेहनों रे, सामग्री सयोग ॥ मिलता कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० । २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण सयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तम भोग ॥ अ०॥ ता० ३॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंद निहाल ॥ तिम प्रभु भक्ते भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥ ॥ अ० ता० ॥४॥ कारण पद कर्त्तापणें रे, करिआरोप अभेद॥ निज पद अर्थी प्रभुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रभू रे, परमानद सरुप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टव्यो रे, जास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अभिलाखीपणो रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ए ॥ तिणे निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्र सुख सागरू रे, भावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोमी वीनवुं जी, सुणि स्वामी सुविदीत ॥ कूम कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ आकणी ॥ तूं समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझने डुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी, दीठां डुख अनंत ॥ भागसंयोगे भेटियो जी, भयभंजण भगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे डु ख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुक्ख ॥ परडुख भजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुक्ख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां पखें जी, जीव रुले ससार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकालें दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ पीछे नही जी, गमरप्रवाही लोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिन धमर२ सहू कहे जी, थापे अपणी जी वात ॥ सामाचारी जुइ जुइ जी, शंसय पमयां मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजाणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

नमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ नग-
वंत नाण्यो ते किहा जी, किहा मुझ करणी एह ॥ गज पाखर
खर किम सहे जी, सवल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप
परूंपुं आकरो जी, जाणे लोक महंत ॥ पिण न करू परमादियो
जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनते मैं लह्या जी,
तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पामिया जी, किहा जइ करूं
पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणू उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-
विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥
सहज पड्यो मुझ आकरो जी, न गमें नूंडी वात ॥ परानिंधा क-
रता थकाजी, जाये दिन नें रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखे धंधे पड्यो जी,
नरके करसी रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो
हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख नली दिये जी, तो मन आणू
रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादनणी विद्या नणी जी, पररंजण उपदेश
॥ मन संवेग धर्यो नही जी, किम ससार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥
सूत्र सिद्धात वखाणतां जी, सुणता करम विपाक ॥ खिण इक
मनमाहे ऊपजै जी, मुझ मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध
२ कर उच्चरू जी, नगवत तुम्ह हजर ॥ वार २ नाजू वली जी,
छूटकवारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचता जी, कीधा
आरंन कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर ओम
॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दारूया अनरथ दंम ॥
कूम कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंम ॥ क० ॥ २१ ॥
अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणा
जी, गिणता नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही
जी, राचे रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहू जी, ते तू जाणे

सरूप ॥ कु० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोन्न ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोन्न ॥ कु०॥ ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें वालचें जी, रात्रीन्नोजन दोष ॥ में मन मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ कु० ॥ २५ ॥ इण न्नव परन्नव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडुक्कर्म जी, न्नगवंत तोरी साख ॥ कु० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, वगस२ माइ बाप ॥ कु० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार वे एतलो जी, सरदहणा वे शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ कु० ॥ २८ ॥ रिषन्नदेव तूं राजियो जी, सेत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रन्नु मोरी सार ॥ कु० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुक्कर्म जी, देता दूर पुलाय ॥ कु० ॥३०॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तू देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, न्नव २ ताहरी सेव ॥कु०॥३१॥ ॥कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण न्नेव्या नान्निनंदन जिन तणा, करजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि न्नणें॥३२॥इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रुषन्न देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

रुषन्न जिनेसर प्रीतम माहरो रे, न्नर न चाहूं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, न्नागे सादि अनंत ॥ रु० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमा सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कत कारण काष्ट भ्रक्षण करे रे, मिलसु कतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियै संभवे रे, मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपे रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रजन में नवि चित धर्‌युं रे, रजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवन ॥

॥ मारु मन मोह्यु रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथडो निहालू रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणे हु जीतियो रे, पुरुप किस्युं मुज नाम ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, भूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ प० ॥ २ ॥ पुरुप परंपर अनुभव जोवता रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुचे कोय ॥ अभिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित वोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लवधि लही पंथ निहालसु रे, ए आस्था अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिने किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभू भेद ॥ सेवन सेवन कारण पहली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥१॥ भय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परणति परिपाक॥दोष टलें वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक॥ सं०॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत॥ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित सेवक याचना रे, आनदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥ ॥ मतर भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलुं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धीठाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिसण२ रटतो जो फिरूं ... समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम भाजे विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्ल भ सुलभ कृपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परि सरपण सु विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत मा, बहिरातम धुरि भेद ॥सु० ॥ बीजो अतर आतम तीसरो, पर मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्र ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर र ह्यो, अतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा तम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर भाव॥परमातमनूं हो आतम भाववू, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आ तम अरपण वस्तु विचारता, भरम टले मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मो हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उगासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्णा रे ॥ हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नता उजय विलक्षण, एक ठामे केम सीझे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
भयदांन ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण भावे रे ॥ प्रेरण
विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
श क्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निग्रंथता संयोगे रे॥योगी भोगीवक्ता
मौंनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भं
ग त्रिभंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
आनंदघन पद लेती रे॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवन ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनडो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो भाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज
नी वासर वसती ऊजड़, गयण पायालें जाय॥सांप खायने मुखडुं
थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २॥ मुगतितणा
अभिलापी तपिया, ज्ञान नें ध्यांन अभ्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं
चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
धरनें हाथे, नावे किण विध आंकूं॥किहां कणे जो हठकरीहटकूं,
तो व्यालतणी पर वांकूं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो
ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांह ने सहुथी अ
लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कु० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंडित जन समझावे,
समझै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्यु ए
लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ छै नर,
एहने कोई न झेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
गलूं साध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,
ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य तें

चस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचू कर जाणु दो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ लुं ॥

॥ श्रीसखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना संचित पाप परा सब मेटियै ॥ मन धर भाव अनत चरण युग सेवता, अणहूंते एक कोडि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रभू दूरथकी में तादरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ भव २ तुमहीज देव चरण हू सिर धरु, भवतायरथी तार अरज आहीज करू ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप सजम भार त णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगतगुरु अम्ह भणी॥३॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिरयो, सहीया दुख अनेक न कारज को सरयो ॥ मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या कीध सचेत जरा दूरें करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवतो जिणचद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आवेलाल, नगर ब्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आवेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आवेलाल, सकट सहु प्रभु परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिता करी चकचूर, प्रगट्यो आनद पूर ॥ आवेलाल, वाट विहंमता पिण टली जी ॥४॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आठेलाल, मन वंछित मुझ सहु फल्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया छो प्रभु आप ॥ आठेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्षमा-कल्याण ॥ आठेलाल, वाचक इम वीनती करे जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जु ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय, निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पाच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे॥ तीन कमल मुझ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन भमे निसदीस, इम मन आणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजे रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्यूं छाजे रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे॥ ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिन राया रे ॥ साचे पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रभु-गुण अनुभव नीर, साग सुरंगे रे ॥ टाल्यो पातिक पंक, आतम संगे रे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखे रे ॥ मनुहर पाचम दीस, सहु संघ साखे रे ॥ नगर मदेवा मांहि, पास जुहारया रे ॥ श्री जिनचंद मुणिंद, वंछित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुझ वीनती गोडीचा, अलवेसर अवधार हो गोडी चाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोडीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पाणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महा-राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-रवा सेव हो, वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो जेवमो, गो० ॥ सगली

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं छिनछिनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु तुमहीसे राच्यो, ज्यु चात्रक चित्त घनमें ॥ तू० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणै, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तू० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण भरतमां ॥ कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणा बाल ज्यु रे, अरहा परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सत्थवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्या रे, किम वाधे उत्साहो रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर थका पण श्रुत तणो रे, हुतो परम आधार ॥ हमणा श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम-सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भविजना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थया, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति जलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्ध तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशे पावापुरी, ऋद्धें जरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीजरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा, बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती, अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुफ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं बहेनी, विमलाचलगिरि जईए रे ॥ आ० ॥ सुण बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनइ इम जाखी ॥ जरतादिक नरपतिने आगल, इंड्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इण गिरिवरियें काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणना दुःख छोमीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां जरता [illegible] शुद्ध सुजावें ॥ कोमि जवारा पातक कीधा, एक [illegible] ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुं

जो, जोता लागे मीठो ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोई न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरजनशु नेह धरीने, आगें उलग करस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ प हिरावी प्रभु कंठें लहिस्या, शिव मारगनी सूची रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गद्दिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भमता, भवसायर निततरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव नवाण वार प्रथम जिन, रायण रूखे आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ हवे ए गिरि वर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी प्रभु मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युत गति लहे, नवग्रैवेका हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या श्रीमहावीर ॥१॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जा, भले में भेव्या श्री जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो वे देहरो जी, तिहा प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चख्खाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥३॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण लख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

ति हय देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, होसी सफल मुझ आस ॥ पझ मास गिणतां थका जी, पूरी थइ चोमास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइयार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेठो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे हे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी का न पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीछे करस्यूं पारणो जी, हू प्रभूने पमिलाभ ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आभ ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवसर कछ्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथपुत्त ॥ वेसाल्पापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेमी प्रते इम कहे जी, काइक भिक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू भरने वा कला जी, प्रभूने आंगी दीध ॥ नीरागी तेही क्रिया जी, तिहां प्रभू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव बजावे डुंडुभि जी, जै बोले कर जोमि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढोवारे कोमि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ क्षीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजादिक सहूए कहे जी, धन२ पूरणसेठ ॥ ऊंची करणी तें करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वाजित डुडुभिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारणो जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अभागियो जी, मेरे न आया साम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंमल ठाम ॥ ज० ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमाहि ॥ निरधन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वामी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास संतानिया जी, तिहा मुनि ॥ ज० ॥ १९ ॥

राजियो जी, लोकास्युं आणद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछें जी, जीव पुन्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण बाल्यो बंध ॥ विना दांन दिया लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घडी एक सुर दुदुभि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहिनो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ सुकनगरमें था पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दान दियां सुपात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदता जी, दान सुपात्र रसाल ॥ दान देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मुनि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जाणपणो जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुझ मिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंतनी साख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु० ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते ऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चवदे लाख साधार ॥ बि ति चउरेंद्रि जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार२ प्रकाशी ॥ चवदे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणभव परभव से

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध ७ कर वोसरूं, डुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादांनना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, वलि राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ॥ निंद्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ए ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आंण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भव जे किया, जीवना वध घात ॥ चिडीमार भव चिडकला, मारघा दिन ने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर भव माछला, झाल्या जलवास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग मारघा पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालभवमें किया, आकाराकर दंड ॥ बंदीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी डुरक ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडना, अति तिरक ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंभारने भव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीभव तिल पिलिया, पापे पेट भराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने भव हल खेड्या, फाड्या पृथवी पेट ॥ सूडाने दान किया घणा, दीधा बलध चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही आंगमी, भरया अधिका भार ॥ पोठी ऊंट कीडा पड्या, दया नावी लिगार ॥ ते० ॥ १ए ॥ छींपाने भव छेतरयो, कीधा रंगणपास ॥ अगनि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अभ्यास ॥ ते० ॥२०॥ सूरपणे रणझूझतां, मारघा माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूला ने कंद ॥ ते

ञलंच्या ॥ आरम्न कीवा अतिघणा, पोते पाप ते संच्या ॥ते०॥२२॥ अगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सून लेइ वीतरागना, कूमा कोलज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली नव ऊदर गिल्या, गिलोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे नवे, में जू लीख मारी॥ते०॥२४॥ नारुन्नूजातणे नवे, एकेंडी जीव, ज्वार चिणाग दुसे किया, पामंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खामण पीसण गारना, आरम्न अनेक ॥ राणण इधण अगनिना, कीया पाप ञदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पाच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमाम्पिया, रोदन विखवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने नागा, मूल अने उत्तरतणा, मुऊ दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिसक जीवतणे नवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवरू दूपण घणा, वलि गरन्न गलाया ॥ जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत नंजाया ॥ ते०॥३०॥ नव अनंत नमता थका, किया कुटुंब संबध ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, तिणसु प्रतिबध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणनव परनव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, करू जनम पवित्र ॥ ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ते०॥३३॥इति आलोयण सिझाय स०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावता, मुऊ सुख वलज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अहम्मदावाडे पास ॥ गोमीनो धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुन्न वेला शुन्न दिन घमी, महुरत एक मंमाण ॥ प्रतिमा तीने पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥ धण कण कचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी॥गु०॥ ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूती जी ॥ अश्वनी ऌमे अश्वनी पीडा, अश्वनी वाल विगूती जी॥ गु० ॥५॥ जागंतो जक जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुऊ सतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहऊठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ठंठो मले जे, टका पाचसे लेजे जी ॥७॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरऊिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी, लाछ घणी घर जास्ये जी ॥८॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुऊने मिलस्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढया, वस्तु वहे तस पोठी जी ॥ ए ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं विहतो तुरकमो, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुहणातणो, सऌलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा देव हे कोइ ॥ अत्र सताव परगट करो, नहितर मारे सोय ॥११॥ पाछलीरात परोऊिये, पहली बाधे पाज ॥ सुहणामाहे सेठने, संऌलावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तू लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण सऌारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुऊने होसी बहु फलदायक, ऌाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रहऊठीने थुणजे जी ... ॥ देइने ...

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे नोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ प
वित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निर
धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पुत ॥ कायरने सूरापणो
धरे, पार उतारे लछी वरे ॥ ४३ ॥ सोन्नागीने दे सोन्नाग ॥ पग
विहूणाने आपे पाग ॥ गांम नही तेहने थे गांम ॥ मन वंछित पूरे
अन्निरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने द्ये आधार, नवसायर उतारे पार ॥
आरतियानी आरत नंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरयां
साद दिये जक्कराज, तेहना मोटा अगे दिवाज ॥ बुद्दिहीनने बुद्दि
प्रकाश ॥ गूंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दा
तार, नयन्नजण रजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेमीतणा, श्रीपार्श्व
नाम अक्कर समरणो॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्कर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध
दूरे टले, डुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा नय चूकवे, विष
अमृत उपकार॥ विषधरना विष उतरे, संग्रामे जय जयकार॥४९॥
रोग शोग दालिद्र डुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-
हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ॐजततू २ डुज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्कर ज
पते ॥ नूतने प्रेत झोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते
॥ ५१ ॥ ॐ ० ॥ डुष्ट रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा डु
त्तपंते ॥ गर्नबधन अण सर्प विछू विष, चालिका बाल मेवाऊखते
॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी माइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका
दोष हुते ॥ दाढ उदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ हुँ० ॥ धरणेंद पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लीलो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ हुँ० ॥ अष्ट महाजय हरे कानपीमा टले ॥ उतरे शूल शीसग जणते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नाम अभिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, भमरो आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एव मेए समणा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु, दाणभत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि त्ति लप्रामो ॥ नहि कोइ उव हम्मइ ॥ अहागडे सुरीयंते, पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंड रयादिंता, तेण वुच्चं ति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति शासनं॥१॥मंगलं भगवान्वी रो, मंगलं गौतम प्रभु ॥ मंगलं स्थुलभद्राद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं॥२॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्टि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म रक्षा करं वज्र, पंजरा भस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सब साहूणं, मोचके पादयो सुभे ॥ एसो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले ॥ ४ ॥ सब पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाण च स-

बेसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्रमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभावात् रक्षेय, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभि. ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठी पदे सदा ॥ तस्य नस्याद्भयं व्याधि, राधि श्चापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा० स्तोत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण भवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहिता न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, भूमंडल विचरे तारे भवियण कोड़ि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक भेद ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गछभार धुरधर सुदर शशिहर शोभ, कर शारणवारण गुण छत्तीसे थोभ ॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गम्भीर, तीजे पद नमिये आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमू परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरया संकट दूर टले ततकाल, जपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमू नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो छो, अहो भव्य लोको भुला कां भमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो छो, पड्या पाश मे भूतमाने भजो छो ॥ सुराधेनु छंमी अजाने अजो छो, महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण राशभने हस्ति साटे ॥ सुरद्रुम ऊपाम्ने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहा काकरोने जे किहा मेरु शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥किहां विश्वनाथ किहा अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथ, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना दुःख दालिद्र दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुषोने वृथा क्यु गमो छो, कुशीले करी देहने का दमो छो, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ भजो भगवंत तजो द्दष्टिरागं ॥ ६ ॥उदय रत्न भाखे सदा हेत आणी, दयाभाव कीजे मोहि दास जाणी ॥ मोरे आज मोतीअमे मेह वूठा, प्रभु पास सखेसरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व सजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकमा, तसनामे नावे ढूकमा ॥ भूत प्रेत नवि मंमे प्राण, ते गौतम ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नामे जयश्कार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पड तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू विलसे वंछित कोडि ॥ महियल मनि मोटा राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण छे बहू ॥ कहे लावण्य समय कर जोडि, गौतम तूठा संपत कोडि ॥९॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वादी, सफल मनोरथ कीजिये ए॥ प्रभात उठी मंगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए॥ १ ॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहिनडी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती माहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुषभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमाहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उरुदना बाकला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लहि व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धूआ धारणी नंदन राजेमती नेम वल्लभा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम लेइ देव डुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपदा नाम वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंद्रिका ए, शीयल सलूणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशंबिक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नामे सुरभुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न कांची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोता पाप पुलाये नाम लेता मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवशी जेहनो कामण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी कूवाथकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिय सुभद्रा चंपा बार उघाडियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद गामनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांडवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांडव माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जपता पातिक जाए, दरसन दुरित निकंदिए ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पडियां शीलज राख्यों, त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र छे साखी, उदयरत्न भाखे मुदा ए ॥ प्रह उठीने जे नर भणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ पृथ्वीकूख रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अवतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, तृप्रा सुरलोक गंग ॥ करत धरत गात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत प्रभु आये चग, वाणी गुण लस जग ॥ वर्द्धमांन जित अनंग, शंशय तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेख॥ वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय अंग बार, रचना रुत अति अपार, बोधन जग जीव सार, भये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुन्दन श्रुतिसारी ॥ ज० ॥६॥ सिद्धियोग नद चद, कार्त्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रभूति जगधणी ॥ कुशल निधान सुख भणी, पाठक ऋद्धिसारीज०॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे छे जी मुनिवर भेस ॥ म्हाने० हाथ लकड़िया कांधे कंबलिया, शिर शोभित तनु केश म्हा० ॥ १ ॥ चोलपट्ट चादर पागरणी, उज्जल रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ जयणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३॥ थिवरकलप जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ दे उपदेश भविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हा० ॥५॥ करतरामऋद्धिसार वंदना, निरखत एसो भेस ॥ म्हां० ॥६॥ इति पदं॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध भई, मन अरिहंत२ ध्याते हे ॥ अरिहंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय २ जय२ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत उधारण, सुरनर चरण लुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ रचाते, अपछर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवदुंदुभि नाद बजाते हे, धर्म के ते हे सुख देते हे ॥ भविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें लाते हे ॥ रामनगर कहे ऋद्धसार, तू आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सझाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तु उठे परभात, चार घड़ी ले पाछली रात॥ मनमा समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार ॥१॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म, कवण अ मारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले जे मन शुद्ध, धर्मनी हैये धरजे बुध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणु, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ति करे पच्चरकाण सूधि पाले जिननी आण ॥ भणजे गणजे स्तवन सज्झाय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाले गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवस्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, क रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश ए के घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिकानो परिहार ॥ म भरिशकेनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म भाख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कहिये बत्रीश, अभक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजें किमे, काचा कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिभो जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गु ली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणा कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बेबे वार, अणगल पीता दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीना करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकि

त शुद्ध हैये राखजे, बोल विचारीने जाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं, उघाडा म० मल सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुज्रचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार; चार आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम जाजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण जव जवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥१९॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जावा ॥ समेतशिखर आबु गिरनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥ ॥२०॥ श्रावकनी करणी बे एह, एहथी थाये जवनो बेह ॥ आठे कर्म पमे पातला, पाप तणा बुटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे सस नेह, करशो डु.खहरणी बे एह ॥२२॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पजणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंत करवि निसुणहु जा जविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥जंबूदीव सिरिजरहखित्त खोणी तल मंमण, मगहदेस सेणियनरेस रिजदल बलखंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुजूइ तज तसु पुहवी जज्जा ॥२॥ ताणपुत्त सिरिइंद जूय जूवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकजजलपाडिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जमाडिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गजी

र सिंधु चंगम चयचामिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल जीत इन्ठ गुण मेल्ह्या संचिय ॥ अह वा निच्चयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गंग रतिहा विधि व चय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुर कविण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हींमे परवरिया ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव नरह वासमि खोणीतल मंमण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुब्बरगाम तिहां, विप्प वसे वसनूइ सुंदर तसु पुहवि नज्जा, सयलगुणगणरूवनिहा ण, ताणपुत्त विज्ञानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥७॥ नास ॥ चर म जिनसर केवलनाणी, चो विहसंघ पइठा जाणी॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्ता ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत खीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहास सन बेठा, ततखिण माह दिगंत पइठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया म दपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डुडुभि आगासें वाजो, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि नवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वरवरसंता, जोज नवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंमक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपम दी

गोयम म करिस खेव, छेद जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेवे ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल सिय ॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस वहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोले भोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए॥३६॥ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिहवासें सं वसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सह कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें झ लके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हेसा, जिम सुरतरुवर कणयथ तंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमाहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी जाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जूमीपती जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामी, अठमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवक्कर पहिलो पजणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवा धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसता काय करीजें, देस देसांतर काय जमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पजणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वम जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

णो ए ॥ तिहां छेठी गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्या भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भं- मार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुं- डरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमता, चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खतिखमगुणकलिय, सुविणिय सव्वलद्धि सं- पणं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमसामि ॥ ४ ॥ सर्वा- रिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वा- मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आणी मन आनंद ॥ रास भ- णूं रलियामणो, सेत्रुजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हु- आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इन्द्रादिक आ- गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुज तीरथ सारिखो, नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीठा दुरित पुलाय ॥ भेटता भव भय टले, सेवता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुजो ने श्रीपुंडरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक ॥ विम- लाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पूरवे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणग्रांम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बेठा अपने गाम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पिहुलो मूल ऊंचपण, छवीस जोयण जांण ॥१॥ सत्तर जोयण जाणवो, बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण ऊचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण ऊचो सही, ध्यान धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण, चोथे अरे मझार, ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पचम अरे, मूलतणो विसतार ॥ दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ॥ ५ सात हाथ छठे अरे, पिहुलो परबत एह ॥ ऊंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठाम रे ॥ अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥१॥ सेत्रुंजसाधू अनता सीधा, सीझसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज तीरथ नही भेट्यो, तेगरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूंख समोसरया स्वामी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रुजगिरि आय रे ॥ पाच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, ति

ण पुंमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमुं परन्नात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदसने दिन, नमीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सेत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सीधा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, डावम ने वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सीधा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रद्युम्न गया इहां मुगते, आठू कर्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तिर्थंकर, समवसरया गिरिश्रृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरग रे ॥ से० ॥ ए ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध रे ॥ पाचसें साधसुं सेलग मुनिवर, सेत्रुंज शिवसुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंज सीधा, नरतेसरने पाट रे ॥ राम अने नरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अनंता सेत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सेत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहु को सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनम इना पातिक जाय ॥ १ ॥ रुषभदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ नरत गयो वंदणने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहि मोटा अरिहंत देव, चोसठ इंद्र करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, नरत सुणीने मन गहगह्यो ॥ नरत कहे ते किम पामिये, प्रभु कहे सेत्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ नरत कहे संघवी पद मुज, ये आपो

हूं अगज तुझ ॥ इंद्रे आणया अक्षतवास, प्रभु आपे संघवीपद तास ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रां बिहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ भरते गणधर घर तेम्हिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेम्हायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भगत कीधी अतिघणी, संघ चलायो सेत्रुंज भणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोम्ह साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यासुं वधाय ॥ तिण ठामे रही महोत्सव कियो, भरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरू पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायणरूंख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, भरत करायो गुरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग ॥ भरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माहे पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्राशाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्राशाद, भरतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ भरततणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी ॥ राग सिंधूडो आसाउरी ॥

॥ भरततणे पाट आठमे, दंडवीरज थयो रायो जी ॥ भरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा वली, तेन कहु अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब भंडारीयो, पश्चिमदिसि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जिवारो जी, इशानेंद्र करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ भुवनपती इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥से०॥८॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र करावियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय करावियो, ए नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र किया पाप जायो जी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी, सेत्रुंज भेट्यो अपारो जी, काष्ट चै

त्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजेनो संघ करी, थापी सकल सरुपो जी ॥ से० ॥१५॥ अठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम् जावम् करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचारो जी, वाहमदे मुंहते कराविया, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह कराविया, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुज्ञ वारो जी ॥ करमे मोसी कराविया, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते ठे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना,पामीजे ज्ञवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहु, सांज्ञलो जिम ठे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुजे पूजनीक ॥ ज्ञगवंतनो ज्ञेष मानता, लाज्ञ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावता, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहा सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे ठोम ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक ज्ञणी, ज्ञोजन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलाज्ञतां,अधिको तेहथी देख ८

ज उतरू ए, सिद्धवरूलूं विसराम ॥ चैत्यप्रवाड इण पर करी ए, ती धा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुजतणी ए, सफल कियो अवतार ॥ कुसल क्षेमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर बेठा जणे जावसु ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव त सोल वयालिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुजत णो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गछ खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, सम यसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणता आणंद था य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्यु रास रसाल ॥ तीरथ शि खरसमेतनी, महिमा बडी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले, प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोडाकोडी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्या पाप पुलाय ॥ जविजन जे टो जावसु, ज्यु सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी, कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवतना, तिम ए ती रथ होय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहा जितशत्रु

नेसर वली ॥ विजयाराणीने सुत जांण, अजितकुमर सहु गुणनी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उछव धरे ॥ तीर्थकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिळ्यो सहु जोग ॥ अवसर दे संवत्सर दान, संजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपावी पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुहवीमंडलमांहि, भव्यजीव प्रतिबोधन तांहि ॥५॥ सिंहसेनादिक गणधर थया, पंचाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरया, श्रावक श्रावकणी लहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवी था जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठाणुं सही, दोय लाख संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी संख्या सुविचार ॥ बहुत्तर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गंभीर ॥ गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ भूचर खेचर किन्नर सुरी, इंद्रादिकसहु उछव करी ॥११॥ थाप्पो तीरथ मोटो मही, अठाइ महोछव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते भवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावत्थीनगरी भरी धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा
ण, जेहने सुत श्रीसम्भव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण
सरीर मनोहर प्रभुनो जाण, लछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधा
न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उंच
पणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर
होय, दोय लाख मुनि जेहने गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख
श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीशम्भव
जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणु श्रावकलोक, षट
लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु दु
रितादेवी सानिधकार, विचरता प्रभु सकल संघमें जयश्कार ॥४॥
सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण
कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवाण,
तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजाण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवाण ॥ शिखरस-
मेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसु सुक संजमपरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संवर राजा सोहे
मन रली ॥ सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रग
ट्या चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी
तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे ॥
पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए॥ तीन लाख मुनि
व लाख आर्या, सहस त्रिंसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी
दो लख श्राद्धनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकस्यारी संख्या
जाण ए, नायकयक्ष कालिका जाण ए॥ उल्लालो ॥ जाण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधु परवरया प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला ॥२॥ चाल॥ सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंछन क्रौंच सोहै सुभगे हसे ॥ पूरव लाख पच्चासी आउ ए, इकसौ गणधर गुणगण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहै सहस वीस प्रमणां ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥३॥ चाल॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धर नृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलतणो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाईसे त... कहौ, तीन लाख पूरब थित कहावे एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस छिहतर श्रावक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच लाख वलि पाच हजार ए, श्रावकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई ॥ तसु चरण पंकज वालवंदे हृदय आनंद गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमर सु सेवतां, पामे वंछित काम ॥ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोहता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरब लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसै देहनो, कंचनवरण सुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्खनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी थाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि परवर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार लालरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्रप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्रप्रभु वंदिये, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुष दोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ भविकमल प्रतिबोधना, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरब आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवे ऊपरै, प्रभुजीनो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भ्रकुटीसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दूहा ॥

॥ जय श्रीसुविध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, जए सुविध सुज्ञ जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरब कह्यो, प्रज्ञुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल ख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौं लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ५ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा निधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ६ ॥ मास संलेखण कर प्रज्ञु, मुक्ति गए इह गोर ॥ तीरथ महिमा म हियलै, प्रगटी च्यारुं ज्ञेर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सु णज्यो अधिकार ॥ ज्ञद्दिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥ ८ ॥ लंबन सुज्ञ श्रीवत्सनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥ए॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रज्ञुनो आयु प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ १० ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी सख्या ज्ञेर ॥ सहस तयासी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सहस अठावन लक्ष चौं, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानि धकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति गए प्रज्ञु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ धनर समति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कं चनवरण श्रेयास प्रज्ञूजी, जपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो रे नमो श्रीत्रिज्ञुवन राजा, खम्ग लंबन प्रज्ञु पाय जी ॥ धनुष असी

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥१२॥ ज० ॥पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जांन ॥ ठसै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, श्रावक संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका संख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरथा जी, देवी बला गंधर्व॥कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखण सर्व ॥ज०॥१५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रोता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी बिछियानी ॥ हारे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरु॥ए देशी ॥

॥हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या थंवरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला॥कचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥ ॥२॥ श्री अ० ॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जाण रे लाला ॥सहस बहुत्तर तीननी लक्ष श्राविका संख्या आणरे लाला ॥ श्रीअ० ॥३॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सार रे ॥ श्रीअ० ॥४॥ मिथिलानगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचावन वर्षनी, थित गणधर अठावीस रे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चालीस सहस मूनीसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस चयासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म०॥

श्राविका तिंतर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला॥ सहस मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥९॥ राजग्रही राजा पिता, सुमीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वरस तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या व हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष-प चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिनें सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सितर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल क्ष सहस चलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि सख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

ढाल ॥ आदर जीव क्षमागुण [illegible] देशी ॥

[illegible] पुरुष [illegible] जी ॥

सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय२ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्याता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अडतीस हजार जी ॥ भूमंमल विचरे भवि जनकू, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा यहय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जग में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ छहरी पाले जे नर आवे, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करे भक्ति, संघपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पामी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जात्रा करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वछल मुनिभक्ति, पूजा उछव थाट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उछाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ...भु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्रने सीस जी ॥ वाखचंद निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसें सितमोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, न्नणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

रूषन्न प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंम्मरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, न्नावे श्रमण सुगुरु न्नगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० ॥ न्नरत महामुनि प्रथम चक्कीसर, बाहूबल उपशम न्नंमार ॥ सूरयसादिक आठ मुनिसर, पाम्यो विमलाचल न्नवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रूपन्नवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सोधा, कलमल कालक मूंकी कंख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्ति, साधु महावल संजम लीह ॥ अचलादिक बलदेव अष्ट मुनि, राम रूपीसर नवम अबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ब वसुंधर, श्रीमल्लिनाथ पुरवन्नव मित्र ॥ पहुंता परम रूशीसर शिवपुर, पाली श्रीजिन आण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ वंदु विष्णुकुमार लबधि निधि, खंदक सूरीना सीस सत पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रमण सुकोमल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयदुवंस अक्षोन्नसु सागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणरास रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने उवयाली, पुरसेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध रूपीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण रूपि श्रीथावच्चा

सुत, सहस साधु संजतसु कृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ ढाल वीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसु सुक संजमधरो, पचसयासु सेलग मुनिवरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंमरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्या संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, श्रीतर प्रकासे तिमर नासे, नविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रबुध्ध नारद्र मुनि प्रमुख पेंताल ए, दमदंत महाऋषि कुजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषन्नदत्त रतनत्रय गुणी, सन्मरु देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पाम्व प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी बोधक जिनमती ॥ उल्लालो ॥ जिनमती वालक पूत्र मेहल थिवर आणंद रक्कियो, अणगार कासव धर्म नाख्यो सोधि सिवपुर संक्कियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुंमरीक महामुनीसर प्रणमिये शुन्न संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वडु वलकलची र केवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकडू डुमइ नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्रीजुवा ए रुपजाति देखी थया वम वइरागिया, संजमसिरि नज मोहनिश तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खतै कुसलकुमारसु ध्याइये, लोहचा मुनि चरणे लय लाइये ॥ काल उदाई प्रमुख महागुणी, संजम सुद जयती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पामिया ॥ श्रीश्रमणज्नइ सुनइ सुंवर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठ्य मीस सुव्रत, साधुसुवत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत मोन्नइ गरुत गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रुषीसर वंदिये, दसारणन्नइ नमुं उख वंदिये ॥ अर्जुनमाली सुख संजमधरो, सुदृढप्रहा

१३. सिवरमणी वरी ॥ उल्लालो ॥ सिवरमणी वरी श्री कुरगडू क्षमावंत प्रसिद्ध, कोडिन्न दिन्न अने सेवाली पनर सतक तिहोत्तरा ॥ गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गुरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंद्र प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खंधकुमार सदा अभिनंदिये, नमिह भरद मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसु समरी करी, रुय इलापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्रे इंद्र नाम निर्ग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण सुदंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअभयसुत आइकुमार ए, चित्त चतुर नर चित चमकार ए ॥ उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात ऋषिवर, देवतांनिध जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजे सुजिन पावत हित भणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥ श्रीकपिल ऋषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमु निरलेप ए ॥ १७ ॥ ॥चाल॥ जति जयघोष विजयघोषे जुत, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुत ॥ श्रीइखुकार नृपति कमलावती, राणी भृगुसुं बोहित सुजमती ॥ उल्लालो ॥ सुजमती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए बहूं, लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ क्षत्रिय मुनिसर साधु, सजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसंयती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्पो, विषसुं शीतल सिवकमला मिल्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशंस्यो तप गुण वीर ए ॥ २० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहु भद्र नंदकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥ श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग क्षमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत तीसग सरोरुह रिष नम्या आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख रिष च्यारे आदरी, विधिसु संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अनेकुमार मुनि अन्नयंकरो, हल्ल विहल्लसु आतम हितकरो ॥ उल्लालो ॥ हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिपेण आराधिये, सुनक्षत्र ने सर्वानुन्नूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालन्नद्र सुधन्न मुनिवर समरंता मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वरुवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूस्वामि ॥ प्रन्नव सिय्यंन्नव परगमो, सुजस जसोन्नद्र स्वामि ॥ महामुनिसर नित नमू जी, नांमे घर नवनिध्य वाधे रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संन्नू तिविजय जयो, न्नद्रबाहु कृतन्नद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर श्रीथूलन्नद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ न्नद्रबाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य मुनीराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, तारया२ आतम काज ॥ म० ॥ ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जाणिये, अज्जसुहस्थि विसाल ॥ संप्रति नृप पमिबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ २५ ॥ श्रारिजसामि पसंतियो, अज्जसुन्नद मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींहगि री समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवयर स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, न्नद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरु, श्रीरक्षत गुरु दक्ष ॥ पुस मित्र गुण गहगह्यो, प्रन्नु उरवलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंरू सा धु सुविधइ न्नरयो, श्रीखंदिल सुविहद्ध ॥ सूत्रअरथ रतने न्नरयो, क्षमाश्रमण देवर्द्धि ॥ म० ॥ २९ ॥ पचम काल महामुनी, श्री उपसे सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मन्नूमी जिके, हुआ होस्ये अणत ॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रायने, साहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिकं रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल छत्तीस ए, श्री विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरें रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजे सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री मतिभद्र सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणियें, सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख भरपूर ॥ म० ॥ ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम हासिद्ध घेर फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥दो०॥ वरतमान चोवीसी वंदू, मन सूधे नित मेव री माई॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई॥ ॥व०॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंद प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ मह सम सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमियें, जेहना नांम प्रगट ए जांण ॥ केवलग्यानी ते निरवाणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ ॥ नि० ॥ सर्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वां मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर सेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजंगीत, सिवकरं स्यंदन संप्रति नामे, वंदीजें जिनवर चोवीस ॥ ८६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल ससारमी ॥

जे भविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुँ काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाभ प्रणमीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुसी जिन बीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उवाइ नरिंद ए, तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साध ए, चोथो स्वयंप्रभू नाम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सिद्धांतमें जाणिये, पंचम सर्वानुभूति प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते छठो स्वामि सलहीजिये ॥ संख श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल-जिणं, सतक श्रावक शतकीर्त्ति दसमो भणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्यकीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषाय जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निरमम देव सुलसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाध जिन सतरमो श्रावका रेवती, अढारमो शतालजीव संवर जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव ते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो, देव बावीसमो अवड श्रावक भणुं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते भद्र चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगम चोवीस जिन जाणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ परसिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कह्या, सास्त्र अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर युगमधिर बाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु ऋषभानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी, भुजंग ईश्वर नेमि भाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा भद्र नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नांम लिया नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अभिधान ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ९ ॥ अठ कोडि छप्पन्न लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे ब्यासी देहरा, त्रिहुं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोडिया, बिंब त्रेपन लाख ॥ सहस अठावीस च्यारसे, अठयासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ बिंब जिणवर नाम ए, समरथा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, समकित सुद्ध थाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी वीस विहरमांण चउ जिणवर सासता, संथुण्या सतरैसे बयाले अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंतामणितणी पर प्रबल वंछित पूर ए, महसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री बिंब जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिग्झाय लि० ॥

जग चूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलओ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्कू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए् आए् उवमाणेणं ॥ २ ॥ जइता ...जे - ो, विसहइं बहुयाई असरिसजं

णस्स ॥ इय जीयंतकराई, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न चइ
ऊइ चालेचं, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं
वि,मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जद्दो विणीय विणउं, पढम
गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय हियउं
सुणाइ सव्व ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इछंति ॥
इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्व ॥ ६ ॥ जइ
सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पयाण
नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न
पया परिहवई एस गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुणी
तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को
॥ गंभीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी
सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अविकडणो अचवलो, पसं
तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
पह दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए जगवई, रायसुयज्जा सहस्स वदेहिं ॥ तहवि न करेइ
माण, परिय छइ त तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग, स्स
अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेछइ आसणगहणं, सो विणउं सव्व
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिउ साहू ॥
अभिगमण वंदण नम, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो
पुरिसप्पभवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिट्ठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो,
किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो, तइया वाणा-
रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहिय, आसी किररूववंतीण ॥ १६ ॥
तह वि य सारायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहि ॥ उयरडिएण
इक्के, ण ताइया अगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म
ज्झाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहि निज्जइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नथि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह नरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ कि परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिख्खिओ मिअहं ॥ उम्मग्गेण पमंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ ज जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण नावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविझ़डिओ ॥ संव च्छरमणसीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग प्पिय चिं, तिएण सछंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेण ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गविओ निरवणा मो ॥ साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्वकेइ बुझति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ ॥ २८ ॥ कहतं नन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स डुक्कमल्लियइ॥ जं च मरणा वसाणे, नव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह स्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुझई कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइनिवं मारओ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिज्ञत्ताइ रायलछीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, नरिय नरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू णवि जीवाणं, सडुक्करा इंति पावचरियाइं ॥ नयवंजा सा साला, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पमिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवम्मियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं॥ ३३ ॥ इति पोसह सिझा० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिघाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥ महामुणीण ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहियें. अणुजाणह जिठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंमिअसरीरा ॥ बहु पमिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए गमि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथार, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुम पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पमिलेहा ॥ दबाई उवउगं, ऊसासनिरुंनणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सबं तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा नरकाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्न, माया मोसं च मिछत्त ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, रकम ग्ग संसग्ग विग्घ नूआइ ॥ डुग्गइनिबंधणाइ, अठारस पावठाणाई ॥ ६ ॥ एगो ह नछिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाण दंसणसजुउ ॥ सेसा मे बाहिरा नावा, सव्वे संजोगलरकणा ॥ ॥ ८ ॥ सजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग सबंधं, सव तिविहेण वोसिरे ॥ ए ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगल, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्त धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्ज, अरिहंता मझ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावग ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्ज सिद्धा य मज्ज

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आ यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावग ॥ ४ ॥ सा हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त जोणि लरकाउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लरकाउ ॥ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ ति रिएसु हुंति चउरो, चउदस लरका यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मझं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणह, मझह वेर न भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती का देखो तुम्हें रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊ जलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप सभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भर्यां रे, केहना नलीया चुए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो

आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणा रे, जेहमा देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, फाली काल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खेरअङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परिमाण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥ सु० ॥ कजो जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणा रे लाल, कजा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जसम हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वाछ्यो हुवे रे लाल, सुपनेह्वी नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलगुनरयो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊतरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थया रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ इति सीतासती सिद्याय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिझाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाम्री चढयो, पेखियो मुनी एकंत ॥ वर रू पकाते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुझ पिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता संहु जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी गुण मन हरमी, हरमी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही, नहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ वेहु राजवैद्य बुलाइया, काधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुझ उपशमे, तो लेउं सं जमन्नार ॥ इम चिंतवता वेदन गई, व्रत लीधो रे हरख अपार ॥ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नाहिं, ते नणी हुं रे अनाथ॥ वीतरागनो धरम वाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे णिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुचे रे सरग मझार ॥ श्रे० ॥ ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय सुंदर तेहना, पाय वांदे रे वे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय ॥

॥ कर पमिकमणो न्नावसुं, दोय घमी शुन्न झाण ॥ लाल रे ॥ परन्नव जाता जीवनें, सबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पमिकमणु न्नावशुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खमी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ क० ॥ २ ॥ लाख वरस लग ते [illegible] एम

न काज रे हूं० ॥ ईंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥ इति ढंढण ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन, मनमें तो मांनी रे नंदन ताहरे ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो ममतो रे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिली दीले रे धन्ना, तो विन मूनी मोरा नंदन, अनुमति देतां रे जीन्न वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तोसे नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो०॥ कोम्र बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन माणो रे धन्ना, वय पिण जाणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर७ जिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥कहाणी रे रहणी नही छे सा.रखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुक्कर जोग छे ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अम्मा, कूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुक्कर मारग जननी दाखियो॥१२॥ सुख अजिलाषी हे अम्मा, कूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमारथि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सहु सुणयो ॥ १४ ॥

मैं इम जाएयो हे अम्मा, वीर वखाएयो मोरी अम्मा, ए धन जोवन आयु थिर नही॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजै मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनमति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छठ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाएयो सुरनर आगले ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा जणे ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवाडे मोरी अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा ॥ सगर हुओ महा पुत्रनो दुखियो, कर्म्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म्मे कीयो तनु छार रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म्मे दवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा राणी ॥ बारे वरस लग माथे आएयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संभूम नामे आठमो चक्री, कर्म्मे सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष जना देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

म काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं०
हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती भावना हुं०,
हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, कहे ज
॥ ए ॥ ढ० ॥ इति ढंढण ऋषि सिझाय संपूर्ण

॥ अथ धन्नाऋषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय
मनमैं तो मानी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि
धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे
॥ २ ॥ दस दिली दीले रे धन्ना, तो विन मूनी मे
मति देता रे जीव वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसे
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर
बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥
रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुर
कोड बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन माणो
पिण जांणो मो०॥ भोगवि लेज्यो रे भोग
अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही
हावणो ॥ ८ ॥ घर घर भिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा
रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो
गम भणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुक्कर जोग छे ॥
वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥
केला रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें भाख्यो हे
कूड न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुक्कर मारग जननी दाखियो।
सुख अभिलाषी हे अम्मा, कूड न आखी मोरी अम्मा॥कायर
जननी दाखियो॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही पर
थि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सहु सुणयो ॥ १४

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पम्यांथकां, पाम्डव पांच प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पड्यो, खोइ सहू राजरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जदाण अवगुण घणा, करे पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिषि दह्व्यो जादवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वेस्याघर वसे, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेडे कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो पहली नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छहे चोरीने विसने करी, जीव लहे डुक्क जोर वि० ॥ मुंजदेव राजायें मारियो, चावो हुंस्क चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जाणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण जव परजव आणंद अतिघणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥ ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर-वांदी वलतां थका जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथ॥राति वन मांहि काउसग्ग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी, चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेडाराजानी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सील शृंगार सबलो पहे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमें वस्यो जी ॥ सौडि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ झबक जागी

बारमो चक्री, कर्मे कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो भविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न कोड़ जा धवरो साहिब, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी माहि मूंठ एकलडो, विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ए ॥ पाण्डव पांच महा फूझारा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रडवडिया, भ मिया जेम भिखयारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलडे जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पाम्या, बीतक बहु तस बीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बाध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥ करमसु जोर न किसका रे ॥प्रा०॥क०॥१३॥ सतिय सिरोमणी द्रो पदि कहिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पाच पुरुषनी हुइ ते नारी, पूरब कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आभानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चद ॥ माइ कीधो पंखी कूकडो, कर्म्मे नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ते पारवती नारी, क रता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसाणमे वासो, भिक्षा भो जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंडया नर कर्मे, भांज्या ते पिण साजा ॥ ऋद्धिहरष-कर जोडीने विनवै, नमो२ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म्म सिझाय स०॥

॥ अथ सात विसनकी सिझाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार बि वेकी ॥ सात नरकना रे भाइ सातेई, आपे दुक्ख अपार विवेकी ॥

॥ अथ बाहूबल सिझाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल झूझे रे ॥ मूंठ उपाडी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथ की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी भाखै रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, बाहूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ्यां केवल न होई रे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमानो रे ॥ लघु बांधव बांदू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलडिया वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांडिया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथ में परिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मूंक्यो निज अभिमानो रे ॥ पांव उपाडी वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, बाहूबल ऋषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर वंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिझाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे सीसो जी॥ पाय उवराणा रे वेलू परजले, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊभो गोखने हेठो जी ॥ खरै डुपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठो जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण ठारो जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, तूं रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोबन रस काया काइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसे दिन रातो

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्ये तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण वस्यो जो ॥ श्रेणिक पख्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांतो जाजियो जो, चमकियो चित्त नरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वादी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मकार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी; व्रत लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ जूलो मनजमरा कांइ जमें, जमियो दिवस ते रात ॥ मायारो छोजी प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुंज काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना छोरू केहना वावरू, केहना माय नें बाप ॥ ठ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य नें पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो डुंगर जेवडी, मरवो पगला रे हेठ ॥ धन संची सच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल डुख जरयो, तिरवो छे रे तेह ॥ वीचमें बीह सबलो अछै, करमें वाय नें मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नदी मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वाणियो ॥ संबल लेज्यो रे सार ॥ ७ ॥ जू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकरू माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह मंद कहे वस्त वोरीयै, जे कुछ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज जवा रियै, लेखो साहिब हाथ ॥ जू० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तू केणे ज्ञोलव्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौं किण दूहव्यो रे, हू नवि धुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहिस ज्ञार रे जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया डुख अणंत ॥ सासोश्वासें ज्ञव पूरीया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तू बालक अछे जो, जोवन ज्ञरघो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, ज्ञोगवि सुख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डुख न सहणौं जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मै सुणियौ कांन हे मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांठलीये जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ ज्ञुइ पाला नित हींमणो जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया॥ हूं न० ॥ ६ ॥ ज्ञमता जीव अनंत ज्ञम्यो जी, धर्म डुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तव किम करणो होय रे मायमी ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमें नवसर हार ॥ जोवनज्ञर छोरू नही जी, काइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हू न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजमी जी, रूप रमणि रस ज्ञोग ॥ अतहि सुहाली देहमी जी, किम डुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ए ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम ज्ञोगविये सोय हे मायमी ॥ अ०॥ १०॥ खमिश मात पसाय करी जी, में दीधु तुझ डुख॥ दिउ आदेस जिम हु सुखी जी, वीर चरणे ल्युं दीख हे ॥ मा० ॥अ०॥११॥ तन फाटे लोयण ऊरे जी, डुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुवो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठे, तब दीठो निज मातो जी ॥ ४ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियें२ मझारों जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणको, पूछे लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतरे तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग२ पापी रे माहरा जीवने, एहे मे अकारज धारयो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखती रे सिल्ला उपरे, अरणक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल लीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिझाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जांणिये, धनदत्तसेठनो पूत॥नटवी देखी रे मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरब नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावडी, वंस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतो, खेले नवनवा खेल ॥क०॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घमघमें, गाजे अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तिहां राय चिंते रे राजियो, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पडै नट वो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आपे रे भूपती, नट जांणे नृप वात ॥ हूं धन वछू रे रायनो, राय वंछै मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो, धन२ साधु नीराग ॥ धिग२ विषया रे जीवना, मन आण्यो वैराग ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ संवरभावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय॥ केवलि महिमा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

सुगुरु मुखे भविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ, आठ पुहर असिझाई होय ॥ ए॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां असिझाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणे प्रसवे दिन सात, बेटी आठ दिवस विख्यात ॥ सो कर मांहि कही असिझाई, नारी ऋतु दिन तीन कहाइ ॥ ११ ॥ इंडो फूटै प्रसवे गाइ, जां जर रुधिर पडै तिन गाइ ॥ असिझाइ सो कर माहि, त्रिण्ह पोहर के ऊपर नही ॥ १२ ॥ असाढै चौमासे दिने, पडिकमणा गयांथी गिणै ॥ वार पोहर असिझाई कही, काती चौमासे इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर असिझाई छे बहू, गीतारथ गुरु जांणै सहू ॥ सांभलि ए में कही संखेवि, हरखै पय प्रभू कीजे हेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतक्षर जेह, च्यार मावठवीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अक्षरै, तब कवि नांम कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिझाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरो, सहि पालो रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित शुद्ध पालौ, टालो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार सिक्षाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो भवि यण मनरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ वली ॥ ॥ २ ॥ मम काढो रे लोभी नर कूडो करौ, जाणी सावद्य रे अ भक्ष बावीसे परिहरौ ॥ वड पींपल रे पिलखण ने कठुंबरो, ऊंबरफल रे रखे तुमें भक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लाला ॥ रखे तुमें भक्षण करौ भावण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा ठंभि परहा, दोष मूल माटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

तिम करो जी, मैं दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठै रमै जी, हिव अह्म कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३॥ कुमर भणै सुकुली थिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जाणियो जी, जो ल्यो संयमभार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ सिविका तब सझी करी जी, कुवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उच्छव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम जाणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोडी पूनो भणे जी, ते तरस्यै ससार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिगसर मास, पहिली पड़वा तीन विमास॥ चौथी पड़वा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिझाइ भाख ॥ १ ॥ जा लगि होली झड़ै वार, धुंवर पड़ती हुवै जिवार ॥ जा परचक्रनो भय नवि जाय, ता लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केस पाखाण, वरसै ता लग असिझाई जाण ॥ जूझै मल्ल माहोमाहि जाम, ता लग असिझाई तिण गाम ॥ ३ ॥ नृपति परभव पोहतो होय, जा लग पाट न वैसै कोइ ॥ तां लग बोली वै असिझाइ, स हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहोर सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पड़िवा लग असिझाइ वकी ॥ पड़िवा बीज तीज चादणी, समीसाझ असिझाई गिणी ॥ ६ ॥ आद्रा नक्षत्र न लागे जाम, गाज बीज असिझाइ ताम॥ गाज बीज जो हुवे अकाल, असिझाइ वे पुहर संभाल॥ ७॥ चन्द्रग्रहण असिझाई भणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी॥ जघन्य प्रकारै आठ वि चार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभु॰ संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहन॰ संघस्य० वलि० ॥ ए ॥ (अथ उर्द्धदिसि) ब्रह्मलोकत्रि ग्नोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दिग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥
॥ ओर बलबाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्त्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकन गरे अमुकचैत्ये अमुकमहोछवे सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गछ२ स्वाह। ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनम॰ ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअ ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गछ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐन मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिपवाहनाय दंडआयुधाय कृष्ण मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गछ२ स्वा हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेरुतकूणे) ॥ ॐनमोनेरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गछ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिम दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गछ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाक्षछ० स्वाहा॥ ६ ॥ इति ॥

णा सन्निहियाय तेसवेविलेवण धूवपुप्फफलवश्वसणाहिं बलिपमि च्छता तुष्टिकराभवतु पुष्टिकरा सतिकराभवतु सर्वजणंकुर्वंतु सवजि णाण सहणप्पभावेन पसन्नभावतणे सवत्थरक्खंतुकुर्वंतु सवदुरियाणी नासतु सवाशिवमुवसमतु सैंतितुष्टिपुष्टिसिवसत्थयणकारिणोभवतु स्वाहा. ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासक्षेपकूं मंत्रके बलबाकुलमें मालके सुद्द करे ॥ पीछे आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके वास्ते वस्त्रसें ढककर रखणेमें आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खो लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खडा रहे, २ दूसरा केसरकी कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा अरीसा, ५ पांचमा धूप धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग लवाजित्र इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खडा रहै. जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल वा कुलादिक चढावे, चामरकरे, आरीसा दिखावे, वाजित्र वजावे ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावत.समारूढ· शक्र· पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसोस्तु बलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ बलबाकुल चढावे) (अग्निकूणके सामनें) ॥ सदावह्निदिशो नेता पावकोमेषवाहन संघस्यशांतयेसोस्तु बलिपूजाप्रयच्छतु ॥ २ ॥ (एसा कह वाकुलादिद्रव्य चढावे) (दक्षिणदिशकी तरफ) ॥ दक्षिणस्यादिश स्वामी यमोमहिषवाहन संघस्य० बलि० ॥ ३ ॥ (बलबाकुल चढावे वाजित्र वजावे) (नैरुतकूणकी तरफ) ॥ यमापरातरालेको नैरुत शिववाहन· सघस्य० बलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमदिशि) ॥ य· प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० बलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० बलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० बलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानाचदिसोविभुः संघस्य० बलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहन. संघस्य० बलि० ॥ ९ ॥ (अथ उर्द्धदिसि) ब्रह्मलोकविभोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० बलि० ॥ १० ॥ इति दश-दिग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुया पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥
॥ थोर वलनाकूलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइन्द्राय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्त्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकमहोछवे सर्वोपद्रवाद्रक्षबलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइन्द्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष० गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐनमोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवाहनाय दंडआयुधाय कृष्णमुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नैरुतकूणे) ॥ ॐनमोनैरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिम दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्ग्च्छ० स्वाहा॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ ॐनमोधनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाहलि० गन्ध२ स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) ॐनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय ईशानाधिपतये वृषभवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह लि० गन्ध२ स्वाहा ॥ ८ ॥ इति ॥ (ऊर्द्धलोके) ॐनमोब्रह्मणे राजहंसवाहनाय ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन० अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गन्ध० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॐनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि२ गन्ध२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढे ॥ यथा ॥ शक्राद्या लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ता, आयातास्नात्रकाले कलुषहृतिकृते तीर्थनाथस्यभक्त्या, न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसुखाः स्वास्पदंसाम्प्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयातुकल्याणभाज ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीन, मंत्रहीनचयत्कृत, तत्सर्वंक्षमतंदेव, प्रशीदपरमेश्वर ॥ २ ॥ आह्वाननैवजानामि, नैवजानामि पूजनं, विसर्जननैवजानामि, त्वमेवशरणमम ॥ ३ ॥ पीछे यथाशक्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करे ॥ इति नवग्रह दशदिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतश्रावय२ स्वाहा (इस मन्त्रसें जलमंत्रे पीछे) ॐ ह्रीं अमलेविमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पापावावाअशुचिशुचिभवामिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीछे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रों.॥(सात वेर इस मन्त्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीछे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों अर्हते

नमः) इस मंत्रसें सात वेर गुरू पाससें केसर मंत्रायके तिलक करें (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर२ सोमेर२ कुरु२ वल्गु२ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ॐकवलीक: क: स्वाहा ॥ (इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमफली मत्रायके हाथके वांधै तर जब मंगलजीके च्यारुं तरफ मौलीमेंढल वाधे सोभी इसी मंत्रसें मंत्रायके वांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सामने हाथ जोमके वेठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीछे तीन वेर नवकारमंत्रसें मं त्रकें चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्ना त्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्टा मंगलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहिये. पीछे मं दिरजीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावे अष्टद्रव्य चढावे. पीछे चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चादीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकद्रव्य इत्यादि सर्वद्रव्य (ॐक्षेत्रपाला यनम.) एसा बोलता हुवा चढावै. पीछे मंगलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावै नागरवेलके पान समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें वाधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीछे वांयें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजब पूजा करै.) पीछे सर्व स्नात्रिया कू १८ स्तुतीसें देववंदावै.

अढारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हें ॥ पहली इरियावही पडिक्कमें च्यार नवकारका काउसग्ग कर लोगस्स कहे. नीचे वेठके द हिणागोडा धरतीपर रख के डावागोडा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोत्थुणं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्थु० १ एक नवकारका काउसग्ग करे नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंह्रि मनादेव थुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग इस थुईकी दुसरी गाथा कहे. पुक्खरवरदी० वदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० थुईकी तीसरी गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका काउसग्ग थुईकी ४थी गाथा कहे पीछे बेठके नमोत्थुणं कहके खडा हो के श्रीशातिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिभिर्दोषै र जिताय जितारये नम. श्रीशातयेतस्मै विहितानतशातये ५ (तत. श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्ग० १ नवकारका काउसग्ग) ॥श्रीशातिजिनभक्ताय भव्यायसुखसंपदं श्रीशातिदेवतादेया दशातिमपनीयते ६ (तत. श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालिनीदेयात् द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥(तत. श्री भुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासाक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ९ ॥ (तत. श्रीअंबिकादेवतानिमित्त०) अंबानिहितडिंभामे सिद्धबुद्धसमन्विता सितेसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (तत. श्री पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा क्षुद्रोपद्रवतःसामा पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदेवतानि०) चंचच्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निभा चिरंचक्रेश्वरीदेवीनंदतानिवताच्चमा ॥ १२ ॥ (तत. श्रीअच्छुप्तादेवतानि०) खड्गखेटककोदंड बाणपाणिस्तडिद्द्युतिः तुरगगमनाच्छुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुवेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्श्व श्रीपार्श्वस्तूपरक्षका श्रीकुवेरानरारूढा सुताकावतुवोभयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया द्वीरसेवकः श्रीमन्सत्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिकृतानिजः ॥ १ ५ ॥ (ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःसदा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतागिरा ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्रादिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धायिका श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काउस्सग्गकर स्तुति कहे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामासिद्धायिकापातु चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके बेठे चैत्यवं० नमोत्थु० जयवीयराय पर्यंत कहे ॥ इस तरे १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्टा विधि ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मोली सूत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करे. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखे (पीछे) सोने चादी वगेरे के कलसमें अबोटजल भरके सोनवाणी करे, हाथमें कलस लेके सात नवकार गुणे.॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु२ स्वाहा॥ इस मंत्रसे सात वेर जलको मंत्रके मंडलजीके च्यारों तरफ धारा देवे, ऊपर जरा छीटा देकर पवि करे, धूपखेवे (पीछे) नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आटा मंडलजीके बाहर करदेवे, पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मेढल मरोडफली चारुं तरफ बाधे (पीछे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके॥ ॐ आँ ह्रीं श्रीं अर्हतेनमः॥ इस मंत्रसे मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका छीटा देवे (ऊपर) चावलोंको साथियो करे, टीकीदेवे, मंडलके अगाडी साथिया चावलोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर भेट धरे, (पीछे) केशरचदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन करे ॥ (पीछे) वासक्षेप पुष्प हाथमे लेके॥ ॐ नमसीनतयात्रीविश्वा

धारैनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलजूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह स्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलपीठकी पूजा करे (पीछे) स्त्रात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंगल कों वधावे नीचे चावलोंका साथिया करके रुपिया नालेर थापना कों धरे (पीछे) स्नात्रिया मंदरके जीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रि गमेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐन मोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्ठिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरेंद्रसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति ष्ठ२ स्वाहा. ॥ इस मंत्रको ७ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंगलप्रतिष्ठा करकेपीछे सिद्धचक्रपूजा सरू करै॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ७ कर्केतनरत्न, १४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथ-में ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अत्राष्टदलमध्याब्ज क र्णिकायाजिनेश्वरान् आविर्नूतोल्लसद्बोधा नात्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून यजेसमस्ता तिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानाबुजकर्णिकाया ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह भ्योनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं वोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने२ जगे सर्व द्रव्य चढावै पीछे रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालव स्त्र, ७ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान नि दधेन्नक्तिनिर्न्नर ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेगतित प्रणष्ट दुष्टाष्टकर्मामधिग म्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्योनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीछै) रकेबीमें पीला गोटा, पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि सर्व द्रव्य ले के पूजा पढे (यथा) स्थापयामितत.सूरीन् दक्षिण स्मिनदलेमले चरत'पंचधाचारान् षट्त्रिंसत्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरीसदाचारविचारसारा नाचारयंत. स्वपरान्यथेष्टं उपसर्गैकानिवारणार्थ मभ्यर्च्चयाम्यक्षतगंधधूपै.॥६॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सूरीभ्योनमःस्वाहा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालड्डू, ४ इंद्रनील, २५ मरकतपन्ना, सर्व द्रव्य लेके खडा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढे (यथा) द्वादशागश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रेपश्चिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशस्ये पठंतियेन्यान्यपिपाठयंति अध्यापकस्तानपराब्जपत्रे स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ उपाध्यायेभ्योनम· स्वाहा (पश्चिमदिशाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरूदकालड्डू, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढे (यथा) व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुक्लध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान् साधुवासीससुव्रतान् ॥ ए ॥ वैराग्यमतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वादशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सर्वसाधुभ्योनम· स्वाहा ॥ ५॥ (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य हाथमे ले के खडा रहे काव्य पढे (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्रद्धा, लक्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनशुद्ध, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ . . . . (ईशानकूणमें दर्शनपदको

थापनापूजा करै इति ॥ पीछे) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वेतवस्त्र, चावलोकालड्डु, आदि सर्व द्रव्य ले खमा रहै ॥ काव्य पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावभासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप्रस्थ पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानायनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै॥ इति ॥) फेर) रकेबीमें ७० मोती, स्वेतगोटा, स्वेतधजा, स्वेतवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खमा रहे. काव्य पढै (यथा) सामायिकादिभिर्भेदै, श्चारित्रचारुपचषा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैर्हनैऋतेक्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रायनम. स्वाहा (नैऋतकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥) पीछे) रकेबीमे ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व द्रव्य लेके काव्य पढै (यथा) द्विधाद्वादशधाभिन्नं, पूतेपत्रतपस्वयं ॥ निधाययामिभक्तयात्र, वायव्यादिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगुतपसेनम स्वाहा (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी थापनापूजा करै इति ॥ अथअर्घ) निस्वेदत्वादिदिव्यातिशयमयतनन्श्रीजिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकगुणभृदाचारसाराश्चसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुदराण्यादिसक्त, स्तत्सिद्धयेपाठकानायतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं अष्टदलंपद्म, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहातैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं असिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्री अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यंनम (इति मूलमंत्र) इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमे एक तो वीचमें च्यार- दिशिमें च्यार विदि

स्तांमे एमें अंटदल कमलके आकार नव कोठे मंमलके मध्य जाग में होय जनोकी पूर्वोक्त प्रकार पुजा करावे (पीछे) दूसेर वलयमें चूमीके आकार १६ कोगा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे (ओर) एकेक कोगा वीचमें खाली रहा दे जसमें अनाहतपद (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) एसा पद स्थापन करे (पीछे) एक रकेबीमें मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखा ले के खमा रहे अनाहन पदमें मिश्री लवंग चढावे ओर आठ वर्गमें दाखा चढावे (यथा) (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः (ॐ ह्रीं स्वर वर्गायनमः) (इहां) १६ दाख चढावे २ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) मिश्री लोंग ३ क ख ग घ ङ (ॐ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख चढावे ४ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ५ च छ ज झ ञ (ॐ ह्रीं चवर्गायनमः ॥ ६ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ७ ट ठ ड ढ ण (ॐ ह्रीं टवर्गायनमः) ८ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ९ त थ द ध न (ॐ ह्रीं तवर्गायनमः) १० (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ११ प फ ब भ म (ॐ ह्रीं पवर्गायनमः) १२ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) १३ य र ल व (ॐ ह्रीं यवर्गायनमः) १४ (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) १५ श ष स ह (ॐ ह्रीं शवर्गायनमः) १६ पहिले अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोले२ दाख चढावे सब ९६ (ओर) य र ल व १ श ष स ह १ इण दो वर्गोमें ६४ चोसठ दाख चढावे इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा वलयमें) चार दिश चार विदिशिमें आठ परमेष्टिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके वीच२में वलाका तीन२ देवे तीनुं वलाकामें २४ खाना होय एके

क खानेमें २ दोय २ दोय लब्धिपद स्थापन करणेसें चोवीस घरो में ४० लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्टीपदमें (ॐ ह्रीं परमेष्टिनेनमः स्वाहा) एसा ० वेर कहके ० बीजोरा चढावे. तर लब्धिपदका नाम बोलके खा रका ४० चढावे (यथा) ॐ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोहिजिणाण ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाण ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसवोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोअ णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोकुठ्ठबुद्दीण ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोबीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ० ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोदिठिविसाण ॥ ॥ १० ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोसंभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोस यसबुद्धाण ॥ १२ ॥ ॐह्रींअर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐह्रींअ- र्हणमोबोहिबुद्दीण ॥ १४ ॥ ॐह्रींअर्हणमोउजुमईण ॥ १५ ॥ ॐह्रींअर्हणमोविउलमईण ॥ १६ ॥ ॐह्रींअर्हणमोदसपूवीणं॥१७॥ ॐह्रींअर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १० ॥ ॐह्रींअर्हणमोअठ्ठंगनिमत्तकु सलाण ॥ १९ ॥ ॐह्रींअर्हणमोविउवणइड्डिपत्ताण ॥ २० ॥ ॐह्रीं अर्हणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐह्रींअर्हणमोचारणलद्धीणं ॥ २२॥ ॐह्रींअर्हणमोपन्नासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐह्रींअर्हणमोआगासगामी ण ॥ २४ ॥ ॐह्रींअर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐह्रींअर्हणमोस- प्पियासवाणं ॥२६॥ ॐह्रींअर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐह्रींअ- र्हणमोअमियासवाणं ॥ २० ॥ ॐह्रींअर्हणमोसिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐह्रींअर्हणमोजयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीण ॥ ३० ॥ ॐह्रींअर्हणमोभगवताणं ॥ ३१ ॥ ॐह्रींअर्हणमोअक्खीणमहाण- सियाण ॥ ३२ ॥ ॐह्रींअर्हणमोवद्धमाणाण ॥ ३३ ॥ ॐह्रींअर्हण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ऱ्हीअर्हणमोतत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोघोरपरिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोघोरवंभयारीण ॥ ४० ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोआमोसहिपत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोजल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोविप्पोसहिपत्ताणं ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोसव्वोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोमणवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हणमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ ऱ्हींअर्हअम्यालब्धिपेदभ्योनमः ॥ इस तरे लब्धिपदका नाम वोल२ के तीजे चोथे पाचमें वलयमें ४८ खारका चढावे ॥ (पीछे) मंगलजीके गलेमें ऱ्हींकारजी स्थापन किया हे (जहांसे) साढातीन नवलाका मगलजीके चोतरफ देके नीचे (क्रों) एसा अक्षर लिखा हे (जिसके) प्रथम वलयमें आठे दिशायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दाडिमफल चढाव (यथा) ॐ ऱ्हींअर्हत्पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढावे ॥ ॐ ऱ्हींसिद्धपादुकाभ्योनम ॥ २ ॥ ॐ ऱ्हींआचार्यपादुकाभ्योनम. ॥ ३ ॥ ॐ ऱ्हींगुरुपादुकाभ्योनम· ॥ ४ ॥ ॐ ऱ्हींपरमगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ऱ्हींअदष्टगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ऱ्हींअनंतगुरुपादुकाभ्योनम ॥ ७ ॥ ॐ ऱ्हींअनंतानंतगुरुपादुकाभ्योनम. ॥ ८ ॥ ॐ ऱ्हींअष्टगुरुपादुकाभ्योनम. स्वाहा ॥ इस तरे छठे वलयमें ८ दाडम चढावे (पीछे) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८ देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे (यथा) ॐ ऱ्हींजयायैनमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ऱ्हींजंभायैनम. स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ऱ्हींविजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ऱ्हींअभायैनम. स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ऱ्हींजयंत्यैनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ऱ्हींमोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ऱ्हींअपराजिता

थैनम स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ अंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी तरे) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावें (पीछें) आठमें वलयमें १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चादीके वर्ग लपेटी १६ सुपारी चढावे (यथा) ॐ ह्रीरोहएयैनम ॥ १॥ ॐ ह्रीप्रज्ञप्तैनमः॥२॥ ॐ ह्रीँवज्रश्रृंखलायैनम ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीवज्रांकुशायैनमः॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँचक्रेश्वर्यैनम. ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीपुरुषदत्तायैनम. ॥ ६ ॥ ॐ ह्री काल्यैनम. ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीमाहाकाल्यैनम ॥ ८ ॥ ॐ ह्री गौर्यैनम. ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँसर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँवैरोव्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँअच्छुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँमानस्यैनम ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढा के पूजा करे पीछे नवमें वलयके वायें तरफ शासनदेवीया ॥ २४ की थापना कर पूजा करे ॥ २४ पूंगीफल चढावे (यथा) ॐचक्रेश्वर्यैनम ॥१॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकाल्येनम. ॥४॥ ॐमहाकाल्यैनम ॥५॥ ॐश्यामायैनमः ॥६॥ ॐशांतायैनमः ॥७॥ ॐभ्रृकुटियैनमः ॥८॥ ॐसुतारकायैनम ॥९॥ ॐअशोकायैनम. ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनम. ॥ ११ ॥ ॐचंडायैनमः॥ १२ ॥ ॐविदितायैनम. ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनम ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायियिनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाणयैनम ॥ १६ ॥ ॐबलायैनम. ॥ १७ ॥ ॐधारएयैनम ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनम. ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनम ॥ २२ ॥ पद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायिकायैनम ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिणे तरफ २४ यक्षराजकी स्थापना करे वरकलपेटी २४ सुपारी चढावें ॥ (यथा) ॐवहाबालायैनम. ॥ २४ ॥ ॐ[illegible] ॥ २ ॥ ॐगो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐनृकुटयैनम ॥ २१ ॥ ॐरस्णायनमः ॥ २० ॥ ॐकुबेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐयक्षराजायनम ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनम ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनम. ॥१६॥ ॐकिन्नरायनम· ॥१५॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐपण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमाराय नमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनम· ॥ १० ॥ ॐअजितायमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायैनम· ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसुमायनम ॥ ६ ॥ ॐतुम्बुरुयैनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनम. ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनम· ॥३॥ ॐमहायक्षायनमः ॥२॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीछे चार दिशामें ४ द्वारपालकी स्थापना कर के पीला वलवाकुल चढावे (यथा) ॐकुमुदायनमः ॥१॥ पूर्वदिशि ॥ ॐअंजनायनम ॥२॥ दक्षिणदिशि ॥ ॐवामनाय नम· ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ ॐपुष्पदंतायनमः ॥४॥ उत्तरदिशि ॥ पीछे चार विदिसकी तरफ च्यार वीरपदमें काले वलवाकुल चढावे (यथा) ॐमाणभद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपूर्णभद्रायनम· ॥ २ ॥ ॐकपिलायनम. ॥ ३ ॥ ॐपिंगलायनम ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें वलयमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीछे पूर्ण कलसके आकार ऊपरसें कियाजया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठिकाणे नवनिधान पदे. तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति रोकनाणा मालके स्थापन करे) (यथा) ॐनैसर्प्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐपांडुकायनम· ॥ २ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥३॥ ॐसर्वरत्नायनम. ॥ ४ ॥ ॐमहापद्मायनम. ॥ ५ ॥ ॐकालायनम. ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनम· ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनम. ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीछे कोह्लेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें वंगली का आकार किया है (जहा) ॐह्रींविमलस्वामिनेनम. १॥ एसा

कहकेचढावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के वायेनेत्रके पास वंग लीमें (ॐक्षेत्रपालायनम.) एसा वोलके चढावै २ ॥ पीछे तीसरा कोइलाफल) हाथमें ले के नीचे पींडिके दक्षिणे तरफ वगलीमें) ॐचक्रेश्वयैनम (एसा वोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चौथा को इलाफल हाथमें ले के नीचे पींडेके वांये तरफ वंगलीमें (ॐअप्र तिहसिद्धचक्राधिष्टायकायनम) एसा वोलके चढावै ॥ ४ ॥ (पीछे दसूं दिशामें इन्द्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै वणसकेतो अ पणा२ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि द्रव्य चढावै अथवा सर्वको एक द्रव्य सर्व समान चढावै (यथा) ॐइंद्रायनम॰ ॥ १ ॥ कनक वर्ण चदन केसर चपो द्राख पीलावस्त्र पान सुपारी रोकद्रव्य आ दि सर्व द्रव्य चढावे १॥ (अग्निकूणे) ॐअग्नयेनमः ॥२॥ रक्तवर्ण का वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) ॐयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ (नैरुतकूणे) ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै (पश्चि मदिश) ॐवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व द्रव्य चढावै ५ (वा यव्यकूण) ॐवायवेनम ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च ढावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव र्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) ॐईशाना यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ८ ॥ (अधोदिसि) ॐनागायनम॰ ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ९ ॥ (उर्ध्वदिशि) ॐब्रह्मणेनम ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था पन पूजन करै ॥ (पीछे यंत्रके पींदीके स्थानक नव कोठा किया गया दे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) ॐसूर्यायनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ १ ॥ ॐसोमायनम ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐ ह्रींसोमायनमः ॥ ३ ॥ लाल रंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐ वृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥६॥ सपेदवर्णनेदोल वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐ शनेश्चरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनमः ॥ ९ ॥ छींटरंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इस तरे नीचे नवग्रहकी स्थापनपूजा करे. पीछे स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावे चैत्यवंदन कर थुइ कहकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीछे गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करे पीछे यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करे ॥ इति मंडल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये (जब) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करे तब तो छए महीने मंडल पूजा विस्तार विधीसे करता रहे ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण भये बाद उछव के साथ मंडलपूजा कराके नव२ उपगरणोंसें उद्यापन करे जलजात्रादि अठाईमहोछव कर धर्मशालासिणगारे (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते चढावे, ऋद्धिरहित भावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावे (उर) पंचायती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंडलपूजादिक नवपदपूजा अवश्य विधिसंयुक्त करता रहे ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणभद्रस्वामीसर्वज्ञाय नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥ ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनम ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवासर्सर्वज्ञायनम. ॥ १८ ॥ श्रीहरिहरसर्वज्ञायनम. ॥ १९ ॥ स्तमेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीशातिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र प्रभसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ ऋषभनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ सोमकातसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ अजितचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजेश्वरसर्वज्ञायनम. ॥ ३२ ॥

॥ अथ धातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पक्तीं ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पुंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनम ॥ ॥ ५ ॥ खेमकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमूर्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा० ॥१०॥ डुक्तितनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ महल्लनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ वलंभृत सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमेद्रसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवातिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥० २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीभानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रभंजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५॥ श्रीजलप्रभसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥ श्रीऋपिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुरूंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री चज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीतीर्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ धातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीपेंग नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रभानदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचद्रप्रभनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा०॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥११ ॥ श्रतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितागसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंद्रसर्वज्ञा० ॥१५॥ श्रीसमाधिसर्वज्ञा० ॥१६॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीकपिलनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रभाकरसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥ ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ॥३०॥ श्रीसहस्राभसर्वज्ञा० ॥३१॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥३२॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजीवरूपिकसर्वज्ञा० ॥ ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजगत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥-श्रीमहाम

ईंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरन्नूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार चंद्रसर्वज्ञा० ॥११॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनम ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रन्नसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलन्नद्रसर्व ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्दार्थसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय, नमः ॥ १ए ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय० ॥ २१ ॥ श्रीवृंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचड्रातपसर्वज्ञा० ॥२३॥ श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीमहा यशसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीन्नमोकनाथसर्वज्ञा०॥ २६ ॥ श्रीप्रद्युम्नना थसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनम ॥ २ए ॥ श्रीपुष्पकेतु सर्वज्ञायनम ॥ २ए ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा०॥ ३० ॥ श्रीसमतकेतुस र्वज्ञायनमः ॥ ३१ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्विातियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंदसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र नान्नसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीन्नी मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुन्नद्दसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीन्नद्रगुप्तसर्व ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीसुढधसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥ ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मन्नूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥२६॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्रह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्धमानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पाच भरत पाच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजितनाथसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ (धातकीखंडेप्रथमभरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥ (धातकीखंडे द्वितियभरतेजिननाम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ३ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमभरतेजिननाम) प्रभासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ (पुष्करार्द्धद्वितियभरते जिननाम) प्रभावकनाथसर्व०॥५॥ (जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननाम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धातकीखंडेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ (धातकीखंडे द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमएरवतेजिनना०) आनाद्दिकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०) श्रीवभिनंद्नाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका गुणना संपूर्ण ॥१६ स्यांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५० श्वेत. सर्व सख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ तस्पद नामी कंभरा, कारण सिव सुखकंद ॥१॥ वाग्देकालरदातणो, भर धरि समरण शक्ति ॥ सत्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सुचि भक्ति ॥ २ ॥ वे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाभ ॥ पूर्वापर भवि तेहनें, विजय नामको लाभ ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु प्रतिदिशा, कग्रनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण विश्वावीस ॥ ४ ॥ खंड धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन गिरि युग वे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर भा

णिये, द्वीप सकल गुणखाण ॥ अर्थ जाग जसु जत्तमें, गिरि युग जलद समान ॥ ६ ॥ जोजवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो बत्तीस ॥ धारो गणित अनुक्रमें, पणयुत्तर शत दीस ॥ ७ ॥ एह अढाइ द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहा सदा, जाख्यो श्रीजिनजाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे जिनराय ॥ ते हूं प्रति विजये जणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ए ॥ (ढाल पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज ॥ अजित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ जविकजन प रख्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चोतीस संजुआ जी, वाणी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥ ज० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ विचरया महियल बोधता जी, विजय मकार सजंद ॥ ज० ॥ ३ ॥ पंच२ जरतैरवतै जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरे जगजन तारता जी, समरया संपति थाय ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन वरू जी, अतुल सकल गुणखान ॥ श्यामवरण सोले कह्या जी, अकल कला द्युतिवांन ॥ ज० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिशत कह्या जी, नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम जलहलइ जाथरू जी, कनकवरण बत्तीस ॥ ज० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम तिन विमल प्रकाश ॥ जविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचास ॥ ज० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित उपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुजातमा जी, धरिये जाव विशाल ॥ ज० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुया जी, उजमणो निज शक्ति ॥ कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी जक्ति ॥ ज० ॥ ए ॥ ए तपविधि जवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अनुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंद ज्येष्ट पकुर ए, वदि सप्तमी रवि दिने हितवच्छल्न कथनधर न्नूर ए ॥ गुरु खरतरावर तरणि सन्नि-न्न जैनचड सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे अमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती–मतिज्ञानावरणीरहितायश्री सिद्दायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्दायनमः २, अवधि ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि द्दा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावणकर्मकी नव प्रकृती ए)–चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निद्राकर्म रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच ला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकृति २)–साताबे दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी कर्म की प्रकृती १८)–सम्यक्तमोहनीर० १८, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोन्नर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोन्नर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोन्नर० ३१, सञ्ज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर० ३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोन्नर० ३५, हास्यमोह नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, न्नयमोह नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुर्गंछामोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४. ॥ (आयुकर्मकीप्रकृत।

४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद० ॥
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद० ॥
४७ परतीर्थकादि सलाप वर्जनरूप स० ॥
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थकादि गन्धपुष्पादि अपणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सद० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चितन श्रीसद० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंतनरूप सद० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंतनरूप सद० ॥
५९ चारित्रधर्म्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद० ॥
६० चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चितनरूप स० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य सन्निन्नमिति चितवनरूप स० ॥
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद० ॥
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद० ॥
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०॥ इति स०॥
॥ इस वजे समसठ नमस्कार कर खमासमण देके अन्नत्थू० कहके

६७ लोगस्सका काउस्सग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंदुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद के चितव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नम. ॥
२ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ॥
३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ॥
४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
१० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
१२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
१३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
१६ मनेकरीईहामति० ॥
१७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
१८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
१९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

२० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
२२ मनेनापाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
२४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
२८ मनोधारणा मति० ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नम ॥
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नम ॥
३२ असज्ञी श्रुत० ॥
३३ सम्यक् श्रुत० ॥
३४ मिथ्या श्रुत० ॥
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नम ॥
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नम ॥
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
४० अगमिक श्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ अनगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वद्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करे, खमा होके अन्नत्थू० कहके एकावन लोगस्सका काउसग्ग करे. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण हे, इसोंसें तंदुलका आंबिल करे. सत्तर भेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृदुताधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्म्मरूप चारित्रे० ।

१० तपोधर्म्मरूप चारित्रे०

६१ सिज्झाय तपोरुप चा० ॥
६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥
६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥
६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥
६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥
६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥
६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥
६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥
६९ माया निग्रहकरण चा० ॥
७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रभेदाः ।

॥ इस तरे ७० नमस्कार करै. खमा दे के अन्नत्थूससि० ७० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पचास भेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥
२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ॥
३ बाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊणोदरी तपभेद त० ॥
५ द्रव्यतपवृत्ती संखेप तपभेद त० ॥
६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥
७ कालतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥
८ भावतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

९ कायकिलेस तपन्नेद तप० ॥
१० रसत्याग तपन्नेद तप० ॥
११ इंद्रीकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
१२ स्त्री पशु पंमकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त०॥
१३ आलोयण प्रायछित्त तप० ॥
१४ पमिक्कमण प्रायछित्त तप० ॥
१५ मिश्र प्रायछित्त तपसे० ॥
१६ विवेक प्रायछित्त तप० ॥
१७ उपसर्ग प्रायछित्त त० ॥
१८ तप प्रायछित्त त० ॥
१९ ब्नेद प्रायश्चित्त त० ॥
२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
२१ अणवस्थित प्रायछित्त त० ॥
२२ पारंचिय प्रायछित्त त० ॥
२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
२५ चारित्र विनयरूप त० ॥
२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
२७ वचन विनयरूप त० ॥
२८ काय विनयरूप त० ॥
२९ उपचारक विनयरुप तप० ॥
३० आचार्य वेयावच्च त० ॥
३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
३२ साधू वेयावच्च त० ॥
३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमे चैत्र सुद ७ सें लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे उत्तमताका कारण एसा हे–बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोछव आते हें जिसमें चैत्र आसोजकी अठाई तो सास्वती हे आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोमें च्यारुं निकायके देवता ओर ६४ इद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हे, (पुन्याई२) कहते जये अष्ट द्रव्यसें पूजन करे, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें जक्ति करे, पीछे नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं सफल मानते जये अपणे२ देवलोक जावे इसी मुजब तीसरी अठाई आसाढ चोमासेकी (१४) पीछे (४९) दिन जाणेसें संवछरी पर्व साचवणेकू (८) दिन तक अठाइ महोछव करे. लेकिन यह अठाइ सास्वती नही कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीजी जावे, पहली पीछेजी करलेवे ॥ यह नवपदजीकी जली शाश्वती अठाइमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंस उधार करके जव्यजीवोंके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जद्रबाहूस्वामीनें इसकों प्रसिद्ध करा, इस वास्ते जव्यजीवोंको यह तप प्रमाण हे, ओर जो अजवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंडन करते हें सो तीर्थंकरका वचन उत्थापणेसें अनंतससारमें जमेंगे. सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हें ओर उन सूत्रोमेंसें एक हरफकेजी यथार्थ अर्थकूं तोडके नया कल्पन करेगा पचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका हे) ॥ सुत्तगणहररइय, तहेवपत्तेयबुद्धरइयच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अन्निन्नदसपुविणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियोका रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोका रचा जयेकूं जगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम नगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा हे, एकार्थ वाचक हे इस वास्ते नद्रबाहु उमास्वातिवाचकादिकोके बनाये निर्युक्ति छेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अन्नी नंमारोमे मोजूद हे ॥

॥ अथ अष्टापद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (७) सें लेकर पूर्णमासी तक (केइयक नव्यजीव) अष्टापदजीकी उली करते हें (जिसमे) पमिक्कमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी उली तुब्य करै (इतना विशेष हे) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः (इस पदका) २००० गुणना (वा) वीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसग्ग करै, आंबिल (वा) एकासणेका पञ्चरकाण करै, पीछें पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी थापना करै, मंमल रचै, सो विधि लिख्यते हें ॥

पूर्व
१ । २ ।
उत्तर १५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४
त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
नर्द्धः
दक्षिण ३।४।५।६
७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।
पश्चिम

(चत्तारि दक्खिणाए, पच्छिमउ अठ्ठुत्तरा२ ॥ दस पुव्वाए दो अग, वंदमि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुव्वाइ उसजमजियं ॥ दक्खिणउ संनवाइ चत्तारि, पच्छिम सुपासमाइ, धम्माइ दसउत्तरउ ॥ २ ॥) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंमल में बणाणा. इहां कांकणमोरे मोली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंमलवत् जाणना. नवग्रह दश दग्पाल थापना करे. पीछे एक२ काव्य पढ२ के एकेक कोठेमें एक२

चोवीस माहाराजकी पूजा करावे, पीछे वलत्राकुल टके दिग्पालों को विसर्जन करे ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक हुया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरुष गुरुमुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोछव करे. एसेंही ऋद्धिवंत श्रावककू धर्मके उद्योत वास्ते सब भगवतके कल्याणक जो जो होय उसका उछव करणा. एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोछव पूजन करणा चाहिये, इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चेत्रीपूनम पर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे॥

प्रथम चावलके पुंजसें सेत्रुंजयपर्वतकों स्थापन करे (तिस पर) पट्टा रखके श्रीपुंडरीक गणधर (वा) श्रीऋषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करे अक्षत मोतियोंसें पर्वतको वधावे, केसरचंदनसें पर्वतको पूजे, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीछे) पूजन सरू करे (यथा) दश (१०) वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुप्फदामेणलइई॥चउत्थछठ्ठअठम, दसमदुवालस कलाइय ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका अधिकार लिखते हें. एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्हवण करावे, पीछे श्रीसंघ खडा होके (१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करे यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस२ जघन्यें नारेल १ सुपारी १० और फल

फूल यथासंभव चढावे. धूप खेवे, कपूरकी आरती करे, पीछै सिद्ध गिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, १० खमासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंडरीक गणधराय नमः) इस पदका १० वेर नमस्कार करे. पीछै (श्रीसेत्रुंजय पूंडरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थूससि०) कहके १० लोगस्सका काउसग्ग करे (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उच्छव होय वखत कम रहे तब एक लोगस्सका काउसग्ग करे १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका स्तवन कहे) पीछै अनेक प्रकारका वाजित्र बजावे ॥ इति प्रथम पूजा विधि ॥ अब इसी तरे (वीस। तीस। चालीस। पच्चास। यह चारों पूजाके भेद जाण लेणा (इतनाही विशेष हे) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करे ॥ तीसरी पूजामे १० की जगें ३० की विधि करे. चोथी पूजामे १० की जगे ४० की विधि करे. पाचमी पूजामें सब विधी ५० की करे. तथा (सिद्धक्षेत्र श्रीपुंडरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणनो करे. उत्कृष्टसें पाचु पूजामें जुदी२ धजा चढावै. जघन्यसे पाचूं पूजा कियेपीछै १ धजा चढावे। यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वरस, ज्यादा हो सके तो ५ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त तपस्या करे. गुरूके मुखसें उपदेस सुणे, संपूर्ण तप हुयां पीछै सिद्धगिरीकी जात्रा करे, ग्यानपूजा करे, गुरुभक्ती करे, साहमीवच्छल करे (यह) चैत्रीपुनमके दिन श्रीऋषभदेवस्वामीके प्रथम गणधर श्रीपुंडरीकजी पाच कोडी साधू साथ अक्षय सुखको प्राप्तभये. (इसवास्ते) भरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्रीपूनमको आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध किया. यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणेसें इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोके पुत्र पुत्रादिककी वाछा पूरण होय, उंर

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परभवमें देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होयेसें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकार. ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसायलें, पुंडरगिर रे गाईस हूं सुभ जावलें ॥ मति सुरगिर रे सहस जीभ जो मुख हुवे, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवे ॥ (उल्लालो), किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहा मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण है अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण जाखियै, तिरयच नारकतणी गतिना दुःख दूरें राखिये ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंडरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणे जलो ॥ (उल्लालो) गुण जलो अनुक्रम आदि जिनवर पास सजम शिवपुरी, पुंडरीक गणधर प्रथम विहरे सुमति गुपते संचरी ॥ पण कोडि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंडरीक कहाव ए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्या फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपे थानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लालो) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरै, बहु जाव जत्ते त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ जावना जावे तेण दिवसे पच कोडि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पच्चासा रे श्रावक निरती सरदही ॥ चउथ छठे रे अठम दसम दुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए गुरु मन वसे ॥ (उल्लालो) मन वसे पूजकपूरधूपे मासखमण फले वली, स.मन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम गुरुमुख सुणीअछै परंपरा, ते मोह माया कपट छंमी सुणो जवि यण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी थापी निवेरो ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल दूर करीजे ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुंज रचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरे करि आठ॥ प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥ ऊजा थई नवकार गुणंता, दस२ जेती तिलक करंता ॥ माला पुष्फ पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्रस्तव पांचे देव वांदे, जघन्यना वंदण पाप छेदे ॥ दसे नमस्कार करंत जेती, राखी करी दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ए ॥ आराधिवा काजे काउसग्ग, जिणे किये जांजे कर्मवग्ग ॥ लोगस्सउज्जोय दसे वखाण, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज एह, इसी परे बीजा च्यार तेह ॥ दसातणी वृद्धि तिहां गिणीजे, एक चित्त सूधै शुभ पून्य कीजे ॥११॥ धजातणी रोप तिहां करीजे, एकेक पूठे अथवा गिणिजे ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पर्छा प्रभु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा योगे संघपूजा आदरो, साहमीवच्छल करो जविका जवसमुद्र ल। लावरो ॥ सपक्ष सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि बहू लहै, श्रीअमर माणिक सीस सुपरे साधुकीरति इम कहै॥१३॥इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहलो वेमे स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुभ धर्मी शुभदिन गुरूके पास नंदीश्वरतपः [illegible] नंदीश्वरद्वीपके च्यारुं दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें [illegible] २) बावन

करै जिस दिन जो महाराजके नामका उपवास होय उसही नामका २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषभ्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नम ॥४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर ऊलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसे एक उली होय ४ उली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब ऊजमणा करै नंदीश्वरद्वीपका मम्डल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोछवकरकेग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवछल करै, मंम्डलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहाम्की रचना करै चार दिसामें ५२ करै, वीचमे अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके वीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वेसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीऋषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण किया पीछे बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती भया उस वखत उत्तम दानके प्रभावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोकी वर्षा २, साढीबारे कोम्ि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवदुंदुभी वाजित्र ५, एसे पांच द्रव्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन भुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसें आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी हे. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करे, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावे. पीछे गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चख्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, ओर जो मंग लीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसा वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन हे इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकत्र होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोछव करावे. शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छाटे इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उछव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे सो लि० हे ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्य

मंगलानि अलंकारभूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो यह सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंडण हे, अर्थात् अलकार समान हे यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पडिक्कमणा पोसा करे, कोइ भगवानके मंदिरमे नाना-प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पाले, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करे, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें बण आवे सो करे, इसमें विरोध नही लेकिन् कोईभी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, उर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों जाणा, पाच शक्रस्तवसें देववादे, पीछे गुरुके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरातका सोगन लेवै, साऊकूं चोमासी पडिक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासे फागुण चोमासे कोंभी सेवन करें ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ भव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे२ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चौमासेपर्वका उद्योत करते हें, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस देसमें श्रावकण्या इस महीनेंमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती हे. जिसमे उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रथसे उध्दरण करके सक्षेपविधिसें इहां लिखते हें ॥

॥ अथ त्रुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमढ्ढ १, एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, (यह १ उली) इस तरे पाच उली करें तपोदिन २५ उजमणे २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इस तरे

उली च्यार करै. तपोदिन १६ ऊजमणें १६ लडू चढावे ॥ इति कषायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उली ३ करै. तपो-दिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावे ॥ इति योगशुद्धितप. ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें ज्ञानपूजा करे ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें स्नात्र पूजा करावे ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणे गौतमस्वामीकी पूजा करे ॥ इति चारित्रतप. ॥ ६ ॥

अठम १, उठ, १, उपवास १, एकासणा १, एकलठाणो १, दत्ति १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उली. इसी तरे उली आठ करै. तपोदिन ७७, ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाडा करायके ग्यानखाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूडणतपः ॥ ७ ॥

नाद्रवा वदि चउथसें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा बिआसणा करे, घरदेरासर आगे अथवा अन्ने ठिकाणें कलस स्थापन करे, एक मुठी चावल सदा कलसमे नरे, संवत्सरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखे, स्नात्रपूजा करे, ज्ञानपूजा करे॥इति अक्षयनिधि तपः ७॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनम.) इस पदका २००० गुणना करे, गुरू के पास स्तवन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगे) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें ज्ञाननक्ति गुरुनक्ति करै. इति रोहणीतपः ॥ ए ॥

सुदिपक्षके पाचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करे अंबिकादेवीकू वेस चढावे॥इति अंबिकातपः॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धातपूजापूर्वक मौनसयुक्त उपवास करे इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकातर उपवास ८। पारणे आंबिल ८, एवं दिन १६ ऊजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकातर उपवास १५, एवं दिन ३०, ऊजमणें सोनेका अथवा रूपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढावे ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पडिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करे जो तिथि भूले सो तिथि उर करै. ऊजमणे एकसो वीस लड्डू मदिर चढावे, स्नात्र करावे ॥ इति सर्वसुखसपतितप. ॥ १४ ॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टालके छोटी पाचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पाचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. ऊजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति छोटी पाचमतप ॥ १५ ॥

सुद पाचमकूं पाच वरस पाच मास उपवास करै. उपवास के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण पकान फल कलशादिक पाच ५ चढावे, सत्तरभेदी पूजा करावे, साहमी वछल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पडिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाशणादि तप करै. अशोगवृक्ष पुजापूर्वक देव आगे नैवेद्य चढावे. इस तरै वरस १ तप करै ऊजमणें चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा करै ॥ इति अशोगवृक्षतप ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनतनाथ पुजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करे, स्नात्र करे, ऊजमणें चावलोंसे लोकनाल वणाके सा ते राज सात पावडी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न का मुगट चढावे ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरे, आठ प्रकारकी पूजा करे, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावडी, इस तरे आठे वरसे आठ पावडी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिये. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावे, पकवान फल सर्व चोवीस चढावे ॥ इति अष्टापदपावडीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करे. ऊजमणें दूधका कटोरा भरके आठ लड्डु देव आगे चढावे ॥ इति अमृतआठमितप. २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा वीस एकासणा करे. ऊजमणें अखण्डित घी धारपूर्वक तीए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंडितदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करे. ऊजमणें ११ अंगकी पूजा करे ॥ इति श्रीइग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करे. ऊजमणें ज्ञानपूजा करे, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावे ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करे (प्रथम तेले) सिखरणसे पारणा (दूसरे तेले) सांरेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चोथे तेले) लड्डूसें पारणा (पाचमें तेले) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधुको वहिराके पारणा करे ॥ इति पंचामृततेलातप ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतप· ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावे तो सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाभ होय ऊगरेमें जीत होय॥ इति धर्मचक्रतप. ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरे करे॥इति पंचमहाव्रततप:२७॥ उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो१. उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.
एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पडिलाभै, ग्यानपूजा करै ॥ इति दालिद्दहरणतप ॥ २८ ॥

एकेंड्रिये उपवास १, बेइंड्रिये छठ १, तेंड्रिये अठम १, चौरिंड्रिये दसम १, पचेंद्रिये द्वादशम १, छकायें चतुर्दसम १, तप करै. ऊजमणें सुखडीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति छकायआलोयणातप.॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतप. ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतप ॥ ३१ ॥

छठ पाच करै ॥ इति पूत्रीसुखतप ॥ ३२ ॥

॥ अठम पाच करै ॥ इति पूत्रसुखतप ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति भर्त्तारसुखतप ॥३४॥

॥ निवी पाच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतप ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पाच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतप ॥ ३६॥

॥ एकासणा पाच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतप ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणेकी श्रावक एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोंके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्धार करके संक्षेपविधिसें इहा लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा साहमीवच्छल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातु शुभक्षेत्रोमें अपणा धन

खरच करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रभावसें इस भ वमें संसारसंबंधी दुःखदालिद्र दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परभवमें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. (किंबहुना) इति फुट कर तपस्याविधि ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भादव महिनेमें मिति भाद्वा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिकों संवछरी नामसें पर्व प्रसिद्ध है (प्रथम इस संवछरी पर्वकी महिमा कहते है) जेसें जगतमें अनेक मंत्र है पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नही २, पांचदानमे अभयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही ३, गुणमाहे विनयगुण ४, व्रतमाहे ब्रह्मव्रत ५, नियममे संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमाहे गंगा जल ९, अलंकारमाहि चूडामणी १०, ज्योतषीमे चंद्रमा ११, ते जवंतमांहि सुर्य १२, गजमे एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तु रंगमें पंचवल्लभकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे नंदन १७, काष्टमाहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्यायवंतमें श्रीराम २०, रुपवंतमें काम २१, सतीमाहे शीता २२, शास्त्रमाहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, वाजित्रमें भभा २६, स्त्रीमाहे रंभा २७, धातुमे स्वर्ण २८, दाता रमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमाहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक२ चीज उत्तम होती है. इस तरे सर्व पर्वोमे उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवछरी (दूसरा नाम) श्रीपर्यूषण पर्वकों भगवंत श्रीमहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूषणपर्वके आगेसें प्रथ म श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते है ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें ज्ञगवंत की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५, यह पाच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें पर्यूपणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवत्सरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महोत्सव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी ज्ञक्ति करै, कल्पसूत्रजीकू विधिसयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागरण करावै, प्रज्ञातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकू निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछे पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आज्ञूपण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अच्छा वस्त्र आज्ञूपण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते ज्ञये, दान देते ज्ञये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते ज्ञये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण खमा होके विनयसयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वाचे १, नगरमें सब जगे अमारिपमह वजावै, दूसरा वचनसे तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी ज्ञमज्ञूजा इत्यादिक सबका आरंज्ञ गेमावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रज्ञावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार ज्ञक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन सवत्सरीके दिन चतुर्विध श्रीसघ इकठे होकर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउछ, छठ, अठमादिक तप करै ८, अपनेश वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उत्सव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवत्सरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ खमावै १२, पारणेके दिन पोसह ॰मिकरणेवाले साधर्मीज्ञाइ-

योंकी ज्ञक्ति करै १३, गुरुज्ञक्ति करै १४, संवछरी दान देवै, साहमी वछल करै १५. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें आराधन करणेसें आठ ज्ञवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है (उर) केइयक ज्ञव्यजीव अत्यंत शुज्ञ ज्ञाव धरतेज्ञये अठमादि तप करके युक्त कल्पसूत्रजीको वाचते है उर सुणनेवाले प्रमाद निडा विकथा बोमके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धज्ञाव रखके इकवीस वेर सुणते है, सो ज्ञव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे ज्ञव सिद्धिस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोछव जो ज्ञव्य जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रज्ञावीक है, अपणी लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है उर नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्धरण कियाज्ञया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययन है सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीज्ञद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय है. जेसें सर्व नदीके वालू के कण होय उससे ज्ञी एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीज्ञ करके कहै तोज्ञी महात्मका एक अंस ज्ञी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाण जो ज्ञव्यजीव शुद्ध ज्ञावसें सेवन करेंगें सो अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धी सुख सौज्ञाग्य कों प्राप्त होंगें उर परज्ञवमें देवादिक ऋद्धि पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकार ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की उली तथा अष्टापदजीकी उली विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखी है उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्त्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिती कार्त्तिक वदि अमावस है सो दी-

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करे ३, सर्व मंदिरोंमें ज्ञगवंत की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५. यह पाच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवच्छरी पर्व आराधन करणेकू आठ दिन अठाइ महोच्छव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी ज्ञक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागरण करावै, प्रज्ञातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकू निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछे पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आज्ञूषण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अछा वस्त्र आज्ञूषण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते ज्ञये, दान देते ज्ञये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते ज्ञये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रखै श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपडह वजावै, दूसरा वचनसे तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी ज्ञडज्ञूजा इत्यादिक सबका आरंज्ञ बंधावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रज्ञावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार ज्ञक्तिसें पूजा करे, चौदसके दिन संवच्छरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होकर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावे ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउथ, छठ, अठमादिक तप करे ८, अपने श्वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवच्छरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ खमावै १२, पारणेके दिन पोसह पडिक्कमणेवाले साधर्मीज्ञाइ-

योंकी ज्नक्ति करे १३, गुरुज्नक्ति करै १४, संवच्छरी दान देवे, साहमी वच्छल करे १५. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें आराधन करणेमें आठ ज्नवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता हे (ज्जर) केश्यक ज्नव्यजीव अत्यंत शुज्न ज्नाव धरतेज्नये अठमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीको वांचते हे ज्जर सुणनेवाले प्रमाद निज्ञा वि कथा बोम्के अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धज्नाव रखके इक वीस वेर सुणते हे, सो ज्नव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे ज्नव सि द्धिस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो ज्नव्य जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रज्नावीक हे, अपणी लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करते हे. ज्जस पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे ज्जर नमस्कार करते हे॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते हे॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्दरण कियाज्नया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययन हे सर्व श्रीसंघके मंगलेक कारण श्रुतकेवली श्रीज्नद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय हे, जेसें सर्व नदीके वालू के कण होय ज्जससे ज्नी एक सूत्रके अनंते विषय हे. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीज्न करके कहे तोज्नी महात्मका एक अंस ज्नी कह सकता नही एसा इस पर्वका महात्म जाण जो ज्नव्यजीव शुद्ध ज्नावसें सेवन करेंगे सो अनेक तरे सें ऋद्धि वृद्धि सुख सौज्नाग्य कों प्राप्त होंगे ज्जर परज्नवमें देवादिक ऋद्धि पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसो ज सुदि १५ तक नवपदजी की ज्जली तथा अष्टापदजीकी ज्जली विधिसयुक्त करे. सो सब विधि पहली लिखी हे ज्जसी माफक करे॥

॥ अथ कार्त्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिती कार्त्तिक वदि अमावस हे सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें ऩया सो लिखते हे. चोवीसमे तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थके अतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, उहा आगामीकालकी सर्व वात नव्यजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्रशालामें आयके रहे अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकू नेजा पिछली पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते नये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पिछली दो घमी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त नये जिस समय नगवतका निर्वाणकल्याणक नया उस समय चोसठ इंद्र देवताग णके आणे जाणेसें बमा उद्योत नया, उर जो राजा पोषधमें बेठे नयेथे सो नावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्यउद्योत किया. एकमके प्रनात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न नया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपणे नाई नंदिवर्द्धनराजाकू घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें नाईबीज प्रवर्त्तन हुई इससें यह दीवाली पर्व बमा उत्तम हे इस दिवालीकी रातकू जो गुणना करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनम. ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारगतायनम. ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करे, उपवास करें, रात्रीजागरण करे, निर्वाणकल्याणककी आरती करें ॥ स्तवन बोले । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणें । गौतमरास सुणें इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उत्सव करणा चाहिये ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढे ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा कार्ती महीनेमें कार्त्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व जव्यजीवोंकों ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ जी नही है. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोइ तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोइ उपाय नही. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक कुष्टकर्म नाश होय. गुंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, ओर कोढादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होणेसें पाचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करे, उसके आगे पाच साथिया करे, फल फूल प्रमुख चढावे, पाच वत्तीका दीपक चढावे, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करे, यथाशक्ती रोकड्रव्य चढावे तथा पूग विटाणादि चढावे. (ज्ञानपूजा लिखते हे) नमंतिसाअंतमहीचनाहं, देवायपूयंसुविहेयपुव्विं ॥ जत्तीयचित्तंमणिदामएहि, मंदारपुप्फपमवेहि जाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्धामणिमुत्तिएहि, सुगंधपुप्फेहिवरसएहि ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सलाजावजवक्खयाय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करे. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछे जावपूजा करे सो लिखते हे) खमासमण दे के । इरियावही पमिक्कमें । लोगस्स कहे । बेठके । मुंहपत्ती पमिलेहे । अणूजाणह मेमिउग्गह (इत्यादिक) दो वादणा देवे, पीछे पाच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहे ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिजास जानु

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु भवजलनिधि तारण ॥ संयमतप आनंदकंद अज्ञाण निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति पडिबोहण, साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, भेद पचास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहा डुग परतक्ष दीसत, सकल प्रतक्ष प्रकाश भास ध्रुव केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन भाशै, बाहिर अग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य पडिशाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प सशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे, नंदी अनुयोगद्वार शास्त्र मानो मनरगे ॥ वीर परंपर जीत अनुभव उपगारी, अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपक हर नीर सम सिद्धांत अबाधे, देवचंद्र आणा सहित नयभग आराधे ॥ ए श्रुतज्ञान सोहामणो सकल मोक्ष सुखकंद, भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमोत्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा० । कहके ॥ प्रणमु श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोले, जयवीयराय० कहै, वंदणव० अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिपरूवियाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपंचमीए, पूआतवेगुणरयाणजियाणदितु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके (ज्ञान आराधवा निमित्त करेमि काउसग्ग) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहके १ लोगस्सका काउसग्ग करै, (पारके) लोगस्स० (इत्या-

दिगाथापढके) पीछे ॥ आत्नणिबोदियनाणं । सुयनाणंत्रेवहे हेना णच ॥ तहमणपज्ञवनाण । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इछामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनम. १, श्रीश्रुतिज्ञा नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, समस्त लोकालोकन्नास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरे पांच नमस्कार करै, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार करै, सो पूर्वें नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै ॥ पीछे (ॐ ह्रीं णमोनाणस्स) इस पदका २००० गुणाना करै. कम थिरता होय तो इग्यारे अगकी सिझायों पढै वा सुणें, सो लिखते है॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आचराग रे ॥ सुगणनर॥ वीर जिनंदे न्नाषियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु०१॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाउ वारंवार रे॥सु०॥ विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० व०॥२॥ सुयखंध दोय छे जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० व०३॥ हेतु जुगत कर सोन्नता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षरपदने छेहडे रे लाल, संख्याता अीकार रे ॥ सु०व०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिलि अनत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो छै इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० व० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए न्नाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वन्नाव रे ॥ सु० व० ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु०॥ विधिपूर्वक तुमे सान्नलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० व० ७ ॥ ए सिधांत महिमानिलो रे, उतारे न्नव पार रे॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

भिम्रकाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥ हो० ३ ॥ एसा साज वणायकै रे, ऋषभदेव गुण गाय ॥ श्रीजिनचद्र इम खेलतां, वारी भव२ पातिक जाय॥ हो० ४॥ इति पदं॥

॥ राग वसत होरी तालत्रत् ॥ जय बोलो रे पास जिनेसरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केसरकी ॥ ज० १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंभित तनकी, स्यामघटा जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ भभाय वाय ज्युं वादल, जीत करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया, राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपाये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहे जिनचंद्र मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७॥ इतिपद ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान गुलाल अबीर भभावो, सुमताकेसर रग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत रूप धरम जिनवरको, शुध क्षमा कहे करजोरी॥ म०२॥ इति पदं॥

॥ पुन वसतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥ संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित्त दियो रे ॥ या०२॥ मोह छोभ गिरनार सिधाए, नव भव नेह अलग कियो रे ॥ या० ३॥ तुम हो तीन भुवनके साहिब, सुरनर कहे तुमे चिरंजीयो रे ॥ या० ॥ ४ ॥ वारश मेरो वउना होयज्यो, चद कहे मन हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन वसतहोरी ॥ इक सुण ले नाथ अरज मेरी, इ०॥ इह ससार गहर तरु सिंधु, भ्रमर पभत जिहा भव फेरी ॥ इ० १॥ क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, ग्रहत जतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥ एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो डुखकी वेरी । इ० ४ ॥ परम क्षमागुण दायक लायक, अनुपम कीरत जग तेरी ॥ इ० ५॥ इति ॥

॥पुनःहोरी॥ सांवरो सुखदाई, जाकी छिव वरणी न जाई सा० ॥ श्री॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिभुवन गाई ॥ समेतसिखरगिरि मंम्रण प्रभुको, देख दरस हरखाई–हृदय मेरो अति हुलसाइ ॥ सां० १॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनंद वधाई ॥ तीन भुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई–सफल मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पाये, भव२ भटक्यो में भाई ॥ अब प्रभु चरण सरण चित चाहत, वाल कहे गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निरखी ॥ ने० ॥ भव२ संचित पाप करम सव, देखत दूर पुलाई, सुमति वधारण कुमति विमारण, ज्ञान विमल उलसाइ ॥ आ० १ ॥ वामानंदन अति छवि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनदयाल दयाकर दीजे, आनंद हरख सवाइ ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ एसें फागुण मस्त महीने च लोरी, देखो स्याम सखी मोपे ठोरी ॥ एसे० ॥ व्रजकी सखी सब वन२ निकसी, खेलत मिल२ होरी॥ मारे गुलाल अबीरसुछोभर, अपने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सभी वन२के, मधुर२ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतम२ गोरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रात रसे रस, सरस दरस प्रभु मोरी ॥प्रो ॥तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥ च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी, ने०॥ समुद्रविजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूंज तनु

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जरयौ, दिशि दूजी गिर वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोभतो, तिण माहे खेले नेमकुमार ॥ ग० १॥ फूल्या केवमा केतकी, विच फूल्या मरुआ मचकुंद ॥ वासे मोगरा मालती, तिण माहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥ आवा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजे पवन दक्षिणतणी, स्यामभमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३॥ आंब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचे नेमकुमर अजूं नही, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४॥ हरि हलधर गोपि मिली, विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलभरी, मुख ऊपर छाटे यदुनार ॥ ग० ५॥ नेम हठी हठ ना तजे, समझायो जोरें यदुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहे, वात सांभलो शिवादेवी मात॥ग०६

॥ पुन होरी ॥ धन राजुल तेरो भाग री, नेमनाथ वर पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजूं ऋषभजिणंदा, जिण मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर, गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ, फूल चढाव गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि वीनती, भव२ दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फागणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंडपमें, होय रही हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी भरिय कचोरी, प्रभुजीके अंगियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल उडाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध भांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पद ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निमित्त डुरित न्नर शिखर न्नि डुरकी, न्नवसागर तारण तरकी ॥ व० १ ॥ तीन न्नुवन तीरथ तारागण, सोन्ना लहिय निशाकरकी ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिके, महिमा जीती सुरगिरकी ॥ व० २ ॥ परमातम पद प्रतिबिंब तनको, वंछित पूरण सुरतरुकी ॥ व० ॥ वर सोरठ मंमल मंमनकी, सकल करम रज जलधरकी ॥ व० ॥ वलि वलिहारी वारंवारी, श्रीनान्नेय जिनेसरकी ॥ व० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, डुति दीपे जेम दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित करुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन न्नुवन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषन्न लंठन सोन्नाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रन्नुकी मोहनमूरति, देखत परमानंद न्नरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रन्नुकी निरतर, पदतल नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदके, न्नव२ एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पद ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसे प्रन्नु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ०॥ त्रिगढमें विराजमान, डुडुन्नि सुणत कान ॥ अपछर मिल करत गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण बिराजै साम, जीत लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥ ऐ० २ ॥ तीन छत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्फ धार ॥ गहिर असोक सार, न्नामंमल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चग, द्वादश वखाणै अग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया॥ऐ०४॥

॥ रागवसंत ॥ संन्नवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥ द्वारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला ॥ सं० ॥ त्राता तीन न्नुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी॥ साता दीजै साहिब मोकू, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं०१॥

सेनामात नयर अवतारी, जयवत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज लंछन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ स० २ ॥ साठ पूरव लख आयु अवगाहन, धनुप च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे दुरितारी, सावत्थी नगरी सारी हो लाला ॥ स० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इन्द्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिभुवन पतिकु, वदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पद॥

॥ रागवसन्त होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा०॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सेत्रुंजगिरिया॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जदुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसि या ॥ सा० २॥ राजुलनारी नेमीसर हाथे, सजम लेइ भवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सेत्रुजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४॥ इहा अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाभिनंदनकू करु जुहारा, सा० ६॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया ॥ सा०॥ ७ ॥ इति पद ॥

॥ राग वसत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे भव हारो रे॥ जि० ॥ रथ पाउधारे चदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त न कर हियरा हरख भरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरभव सफल जमारो ॥ भवि जन मन भमरा रंग भरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥ भवदुख भंजन नाथ निरजन, नाम लीथे निसतारो॥ ममता तज सम ता सग भेली, निज आतम काज सुधारो॥ जि० ३॥ आज नगरमें रंग वधाई, घर२ मगलाचारो ॥ रथ महोछव रचना रची हद, सुख

जयरे सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संन्नारो ॥ प्रन्नु पंकजकी इव सरणा ग्रही, न्नवसायर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सूंदर रूप बणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रन्नुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ शामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि ठोरुी, कोन चूक मोपै काढी न्नामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजूंगी नव न्नव केरी, प्रीत वणी जेसी इंडु यामिनी ॥ आ० ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहे न्नई सुमति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन· होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहेरे आप सुजान ॥ हो० रं० १॥ पर मंदिर तज अविचल लीजें, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ हिल मिल आप परम रस चाखे, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे, सोहे अदन्नुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अबीर उमाय जगतमे, बैठे शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुन्नव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर थान ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल न्नविकजन धारे, वंछित पावे दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग वजे तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाउ, पहिरो मनवैराग॥ हो० २॥ लाख चोरासी रामत ठारुी, च्यारुं गतिसें न्नाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खेल नविकंजन धारे, पावै नवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद्ध होय जगतमें, समकितके रग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुन. होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, दुरजनकी लाज मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर नमावो, क्षमा करो रग लाय २ ॥ दु० हो० १ ॥ शील सजम व्रत पान मिठाई, ध्यान धरूंगी मैं गाय गाय२ ॥ दु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह नमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ दु० हो० ३ ॥ जगतचदकी अ- रज वीनती, सरण गही मैं तेरी नाय२ ॥ दु० हो० ४॥ इति पदं ॥

॥पुन. होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे नरी, शिवपुरकी वात पूछूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रनु सिद्धशिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मे० १॥ मोहन रग नरयो रंग शी- वपुर, अजर अमर पद सुख वरी ॥ मे० २ ॥ इति पद ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुषन्न बेठै अलवेसर, मारो गुलाल मुठी नरकै ॥ बावो० ॥ मुठी नरकै पसली नरकै, बावो० ॥ चू- आ२ चंदन डर अगरजा, केसरका मटका नरके ॥ बावो० १ ॥ रतनजमित शिर छत्र विराजे, अंगी जमाव जमी जरके ॥ बावो० २ ॥ बाहे बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे लरके ॥ बा० ३ ॥ नान्निराया मरुदेवीको नंदन, रमिये नवि आदीसरसें ॥ बा० ४॥ आदिखान हे दास तुमारो, तार लीओ अपणे करके ॥ बावो० ६॥

॥ पुन' होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वदना रे, जिनराजकु हमारी वदना रे ॥ नव दुख वारण शिवसुख कारण, देखत नवनही फदना रे ॥ जि० १ ॥ नान्निराय मरुदेवीको नद- न, प्रणमु रुषन्न जिनदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रनु ध्यान तुमारो, जिम चातक दिल चदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ६॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥ देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द०१ ॥ बीस कोसथी दरसन कीनो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ बीसे टूंके बीस गोमटमी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पावो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥५०

॥ पुन होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसण करलै, संघयात्रा–संघयात्रा करणसें पाप कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि सीधा, ताकू शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषन्न जिनेश्वरजीको दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरजन, जवरका जुख दरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि जिनंद वद ॥ मोहे० ॥ रंग तूंही रंग रे ज तूंही है, संजम रंग मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादिको, नो अब इनकूं खिनदे ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रुद्धि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सऊदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग दे, बा बिच केवल धरदे ॥ मेरे० मो०४॥ जूधरदास कहे समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो०५॥

॥ पुन होरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रगमंरुपमें, खेलत संत वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥ ॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलत ॥ आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर जमर गुंजंत ॥ मे० २ अंग आजूषण पचेंड्यि वस, गुरुसेवास लहंत, वार जावना गहिर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदजूत पंच मादा व्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहे जिनचद प्रजुकी कृपासें, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन होरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी, रं० ॥ पास प्रभु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा० कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर उमावत, पासजीके दरबार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलाबकी छिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदग बीण रुफ बाजै, भेरी भुगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करके, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावै, मुख बोलै जयकार रे॥ चा० ७ ॥

॥ पुन होरी ॥ नेमजीसे कहियो मोरी, सामरेसें कहियो मोरी ॥ तोरण आए किण भरमाए, छोरु चले अभिमानी ॥ हा रे लाला छो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोरी प्रीत पुरानी-दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पडीसो मुंहसें कहियो, ना करिये सोधाणी ॥ आठ भवोकी प्रीत वधाणी, नवमे चले क्यु ज्यानी–श्याम तेरी सूरत पिछाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें भेद लागी, राजुल गुणकी वानी ॥ वीनती सुणके अमर पद दीजै, रंग विजय सुख दानी–आवा उर गमन छिदानी ॥ सा० ३॥ इ०॥

॥ पुन होरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमे वरसै रंग, जिन० ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सुमता चीर सुचग ॥ श्रीचि० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फुलवाडी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचि० तोरे० २ ॥ उपशम वागा अग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचि० तो० ३ ॥ अमरचद चिंतामणि चित धर, तुमसुं अविहड रंग ॥ श्रीचि० तो० ४ इ०॥

॥ पुन० होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरग, श्रीचिंतामणि

पास प्रभूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी भाव अभंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ अहवंधीकी भात भली हे, बुंटिया नव२ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवमा संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोभत है, सौरंग बास सुगंध ॥ श्रीचिं० ३॥ त्रिभुवन साहब तखत विराजे, महिरवान मनरंग ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥ श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरग ॥ श्रीचिं० ॥ भावना भावो जिनगुण गावो, अमर थयो नवरंग ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन. होरी ॥ चिंतामणि चिन ध्यावो रे, वछित फल पावो ॥ चिं० ॥ सकल भविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण गावो रे ॥ वंछित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, भर२ मुठिया उमावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं छिमकावो, भाव शुक्ल जल भावो रे ॥ वंछि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंछित० चि० ॥ दरस सरस करके सुख पावो, पुण्य भंमार भरावो रे ॥ वछित० चिं० ३ ॥ वाजित्र बाजा विविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंछित० चि० ॥ अमरसिंधुर आनंद बधावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ व० चिं० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी भीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमाहि, गावत आगम राग ॥ लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति सोहाग ॥ लाल मे० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाउं, पहिरुं मन वैराग ॥ लाल मे० ३ ॥ लख चोरासी रामत छोरु, च्यारों गति सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारे, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुन होरी॥ नेम मिले तो वाता कीजिये, हो प्यारे जिनजी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीयै ॥ हो० ने० २ ॥ में हू धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना कीजीयै ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रुपचद पद दीजीयै ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुन. होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाणयो, ममता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुन होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहि यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इछा, यामें हे दुखियारो ॥ लाल ते० २ ॥ एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें भारी॥ लाल ते० ३ ॥ धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चे धारी ॥ विनय कहे प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन होरी ॥ दर्शन विन जीवससार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमे भटकत, लहि मानवभव युही गम्यो ॥ द० १ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमे ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

२॥ माया ममतामें निश दिन तू, विषय विकारसुं नाहिं विरम्यो॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, भटकत भवमें क्यु भरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, भज भगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत छेमो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल भावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हगासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल कन्नी अरज करत हे, एक वार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं॥

॥ पुन.होरी॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवछ लंछन जनम भद्दिलपुर, कुल इख्वाग उद्धारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुसोभित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहि पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सचे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पद ॥

॥ मंगल स्तवनं॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मगल गणपति मंगल-पाठक, सब तपसी विच सार ॥ ने० २॥ मंगलधन [illegible] मंगल सब [illegible] ने० ३ ॥जय२ खेमकुसल गुरु [illegible] अवतार॥ने [illegible] दं॥

॥ इम मास द्वादश तप सुलयइ विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करतां ज्ञव्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नद सुचइ विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीबृहत्खरतर गछ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन ज्ञगवतके कल्याणकके है सो सर्व ज्ञव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य है, लेकिन् कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले ज्ञव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणनेमुजब विधिप्रपासे पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीपद्मप्रज्ञुजीअर्हतेनम॰
१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०
१३ श्रीपद्मप्रज्ञुजीनाथायनम
३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः
६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०
१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनम
११ श्रीपद्मप्रज्ञुजीपारंगतायनम

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनम

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ९ ॥

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनम.
१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०
११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनम॰
११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०
११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०
१४ [illegible]

११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः
१२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः
१३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः
१४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्टिने०
१२ श्रीशीतलनाथजीअर्हं०
१२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः
१३ श्रीरुषभदेवजीपारंगता०
३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०
७ श्री चंद्राप्रभूजीसर्वज्ञायन०
९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्टिने०
११ श्रीरुषभदेवजीसर्वज्ञायनम.
१२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनम.
१२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः
१३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनम.
१४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनम.
३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्टिने०
४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
५ श्रीचंद्राप्रभूजीपरमेष्टिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
९ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
१४ श्रीअभिनंदनजीसर्वज्ञा०
१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ९

२ श्रीअभिनंदनजीअर्हं०
२ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
३ श्रीविमलनाथजीअर्हं०
३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
४ श्रीविमलनाथजीना०न०
८ श्रीअजितनाजीअर्हं०
९ श्रीअजितनाथजीनाथा०,
१२ श्रीअभिनंदनजीनाथा०
१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरनाथजीपरमेष्टिने०
४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्टि०
८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्टि०
१२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ८

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०
५ [illegible]

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनम
७ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारगतायनम
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनम
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्ठि०
१० श्रीनमिनाथजीपारगताय०
१३ श्रीअनंतनाथजोअर्हतेन०
१४ श्रीअनतनाथजीनाथायन०
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्टकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

७ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
१३ श्रीशातिनाथजीअर्ह०
१३ श्रीशातिनाथजीपारग०
१४ श्रीशातिनाथजीनाथा०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
७ श्रीविमलनाथजीपार०
९ श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयासजीपारंग०
७ श्री अनतनाथजीपर०

५ श्रीसम्भवनाथजीपारंग०
५ श्रीअनतनाथजीपारग०
९ श्रीसुमतिनाथजीपार०
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअभिनंदनजीपरमे०
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
८ श्रीअभिनंदनजीपारंग०
८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्टशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्ठि०
१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०
१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे १

६ श्रीवर्धमानजीपरमेष्ठि०
८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनमिनाथजीअर्ह०	६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०
९ श्रीकुंथुनाथजीपरमे०	८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०
भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥	१५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०
७ श्रीचंद्रप्रभूजीपारग०	भाद्रपदशुक्लपक्षे १
७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०	९ श्रीसुविधनाथजीपारं०
८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०	आश्विनशुक्लपक्षे १
आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २	१५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि०
१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०	
३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०	

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार पष्टमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घमी गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै. उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पच्चखाण करै, तीन टंक देववंदन करै, पमिक्कमणा करै. जिस दिन जो माहाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै. उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढै. जहा जगवंतकी कल्याणक नूमि होय उहा वमे महोत्सवसें संघ समेत यात्रा करणेकों जावै. उहा विधी संयुक्त सर्व जगवतोके पंच कल्याणकका उत्सव करै. जो शक्ति नहि होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उत्सव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रजूके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उत्सव विधि लिखते ॥ च्यवन कल्याणककों (परमेष्टिनेनमः) कहियै. इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायके च्यवन कल्याणादिकका उत्सव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणकक् (अर्हतेनमः) कहणा इस दिन जलजात्रादिकका [illegible] रके अष्टो

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक उली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पडै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससु, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदै निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवता, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोहो सात पदे सही, पोसह करियै सजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी थिवर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पडिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करो वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप सख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदखणा, मुख भणिये नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणे, कीजे जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुभ मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नहि लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्ध त्यागपणो करै, सोक न धरे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरै, मुखसु बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण माह लाल रे ॥ ए षट् मासे माहिनें, व्रत ग्रहिये वडभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवा थका, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजे शक्ति विचारीनें, उछव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस२ गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी [illegible]

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा भणी, उदिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद वरसे चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गच्छ खरतर भणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरे. एक उली दो महीनेसे लेकर छ महीने पूरी करै. कदास छ महीनेमें पूरी नही कर सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पमती हे. एक उलीके वीस पद हे (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते हे, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे वीशों दिनमें दूसरा पद, एमें वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधे. वीश अठमसें एक उली होय (एसें) वीस उली ४०० सें अठमसें आराधे. और उससें कम शक्ति होय तो छठसें आराधे. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करके आराधे. उसमें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करके आराधे, उसमें हीणशक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एकाशणा करके आराधे उसमें जो शक्तिवान होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे. हीनशक्ति दिनपोसह करै. वीसों पद पोरायसेती आराधै. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवर पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपदमें ७, यह सात थानक पद तो पोसह करकेही आराधै. जो इतनी

भी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करे, सावद्य व्यापार रोमे, सो शक्ति भी नही होय तो यथाशक्ति तप करके आराधै, अपणी हीणता भावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप नही गिणे जावै, स्त्रियां भी ऋतुसमयका तप नही गिणे, तथा तपके दिन पोसह सहित करे तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो सके तो तपके दिन उभय टंक पडिक्कमण करे, तीन टंक देववंदन करे, दो हजार एक पदका जाप करे, ब्रह्मचर्य पाले, भूमि शयन करे, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करे, असत्य नहि बोले, सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे तो पारणेके दिन जिनभक्ति करके पारणा करे, जो तपके दिन पोसह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनभक्ति करे करावे, भावना भावे तथा तपके दिन तप पदके गुण भेद प्रमाण संख्यासें काउसग्ग करे. इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करे. उस पदका गुण याद करके उदात्त स्वरसें स्तवना करे, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते है॥

(णमो अरिहंताण) २००० गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमोसिद्धाण) २००० गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) २००० गुणना लोगस्स ७ का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराण) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो उवझायाणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्व साहूण) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का

काउसग्ग ॥ ९ ॥ (णमो विणयसंपण्णाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो चारित्तस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभवय धारीणं) दो हजार गुणना लोगस्स ९ का काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १८ ॥ (णमो सुअनाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १९ ॥ (णमो तित्थस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करे ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उच्छव महोच्छव प्रभावना उजमणापूर्वक करे. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उच्छवादिक संयुक्त करणी चाहिये. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्रसे लिखी है. जो गुरुका सयोग होय तब तो विस्तारसें वीशों पदकी जुदी२ विधि गुरुके मुखसें समझके करे. जो गुरूका सयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्थानक तपकों सेवन करे, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढे, वीस स्थानकजीकी पूजा करावे, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोपकरण करावे, देवपदका देवखाते लगावे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करे,

साहमी वच्छल करै, इत्यादिक द्रव्यें जर भावे विधि संयुक्त शुद्ध भावसें जो भव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके तीसरे भव अनत सुखकों प्राप्त होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप ज्ञी विधि स० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणतविन्नाणसदसणाण, सहाणदियासेसजतूगणाणं ॥ भवभोजविन्नयणेवारणाण, णमोवोहियाणंवराणजिणाण ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्योनम ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेन्द्रपूजा ॥ अथ सिद्धपूजा ॥ लोगग्गभागोपरिसठियाण, बुद्धाणसिद्धाणमणिंदियाण ॥ निस्सेसकम्मक्खयकारगाण, णमोसयामगलधारगाणं ॥ ॥२॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥ अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुक्खंरयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवाणदयागिहस्स, णमो२ संघचन्नविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनायनमः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराण, सुरीसराणं मुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमदराणं, णमोसयामगलमदिराणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्योनम ॥ ४ ॥ अथ पचम पद ॥ सम्मत्तसंयमपतितभविजन अतिदृथिरकरताभला ॥ अवगुणअछुपित गुणविभूपित चंद्रकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलागरथ स्थिरधाराधरा, भवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थविरायनम ॥ अथ छठ्ठा पद ॥ सबोहिबीजङ्कुरकारणाणं, णमोश्वायगावारणाण ॥ कुबोहिदंतीहरिणेसराण ॥ विग्घोघसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्यो नम. ॥६॥ अथ सातमा पद ॥ सतज्जियसेसपरीसहाण, निस्सेसजीवाणदयागिहाण ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो२होनतवोधणाण ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ छद्दव्वपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिच्छत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारवि दारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुदिंडुपादामलताचणस्स ॥ सुध-म्मजुत्तस्सदयालयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्विनयेनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-म्मोघकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशन चारित्र पद ॥ सग्गापवग्गग-सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्ववयान्नूपणन्नूपणस्स, नमोहिशीलस्सअदूलणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचैर्यनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमे क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविभूपणस्स, सुलद्धिनंपत्तिसु पोपणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानो कुहडुहवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तव-से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौतम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकर रस, डुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोग णाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुससवातिसयासयाणं, सुरा२धी सर-वदियाणं ॥ रवीडुबिंबामलसग्गुणाणं, दयावणाणंह्निनमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेभ्योनम ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद ॥ सविंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजणोवगारी ॥ महान्न-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगूचारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अगारमें ज्ञानपदपूजा ॥ शुद्धक्रियामंगलमगणस्स, सदेहसंदोहविखण्डणस्स ॥ मुत्तीवपादानसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगूज्ञानाय नम ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणवह्नीवनवारणस्स, सुबोहिवीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसस्सुद्धगुणालयस्स, नमोदयामंदिरसत्रयस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगूश्रुतये नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुभ्यनमःसकलविश्ववशकराय, तुभ्यनम स्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुभ्यनमःभुवनमंगलमंगनाय, तुभ्यंनमोस्तुजिनपंकविखंडनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगूतीर्थपदेभ्योनमः ॥२०॥ ध्वजासमेत अष्ट द्रव्य चढावै (पीछे) ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ इशानेंद्रायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐमाहेंद्रायनम ४ ॥ ॐब्रह्मेंद्रायनम ॥ ५ ॥ ॐलातकेंद्रायनम ६ ॥ ॐशुक्रेंद्रायनमः ॥ ७ ॥ ॐसहस्त्रारेंद्रायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंद्रायनमः ॥ ९ ॥ ॐअच्युतेंद्रायनमः ॥१०॥ ॐचंद्रेंद्रायनम ॥११॥ ॐसूर्येंद्रायनम ॥१२॥ ॐचमरेंद्रायनम ॥ १३ ॥ ॐवलीद्रायनम ॥ १४ ॥ ॐधरणेंद्रायनम ॥१५॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥१६॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनम ॥ १७ ॥ ॐवेणुदालींद्रायनमः ॥१८॥ ॐहरिकांतेंद्रायनम ॥१९॥ ॐहरिस्सहेंद्रायनम ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनम ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाणवेंद्रायनम ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनम ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः ॥ २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रभेंद्रायनमः ॥ २६ ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥ ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रभंजनेंद्रायनम ॥ ३० ॥ ॐघोषेंद्रायनम ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ ॐमहाकालेंद्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐसरूपेंद्रायनम. ॥ ३५॥ ॐप्रतिरूपेंद्रायनमः ॥३६॥ ॐपूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७॥ ॐमाणभद्रेंद्राय नमः ॥ ३८ ॥ ॐभीमेंद्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐमहाभीमेंद्रायनमः ॥ ४०॥ ॐकिन्नरेंद्रायनमः॥४१॥ ॐकिंपुरुषेंद्रायनम ॥४२॥ ॐसत्पुरुषेंद्रायनमः॥४३॥ॐमहापुरुषेंद्रायनमः॥४४॥ ॐअमितकायेंद्रायनम ॥ ४५॥ ॐमहाकायेंद्रायनमः ॥४६॥ ॐगीतरतींद्रायनमः॥४७॥ ॐगीतयशेंद्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐसन्निहितेंद्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐसामानिकेंद्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐधात्रेंद्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐविधात्रेंद्रायनमः ॥ ५२ ॥ ॐऋषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐऋषिपालतेंद्रायनमः ॥ ५४ ॥ ॐइश्वरेंद्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐमहेश्वरेंद्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐवत्सेंद्रायनमः ॥ ५७ ॥ ॐविसालेंद्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐहास्येंद्रायनमः ॥ ५९ ॥ ॐश्रेयइंद्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐहास्यरतेंद्रायनम ॥ ६१ ॥ ॐपदगेंद्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐपदगपतेंद्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐमहाश्वेतेंद्रायनम. ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्यादेवीपदे १६ सुपारी चढावे ॥ ॥ ॐरोहिण्येनमः ॥ १ ॥ ॐप्रज्ञप्तैनम. ॥ २ ॥ ॐवज्रश्रृंखलायेनमः ॥ ३ ॥ ॐवज्रांकुशयेनमः ॥ ४ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनम ॥ ५ ॥ ॐपुरुषदत्तायेनम ॥ ६ ॥ ॐकाल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐगौर्य्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐगंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐमहाज्वालायेनम. ॥ ११ ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐवैरोट्यायनम. ॥ १३ ॥ ॐअच्छुप्तायेनमः ॥ १४ ॥ ॐमानस्यैनम. ॥ १५ ॥ ॐमहामानस्यैनम ॥ १६ ॥ इति षोडश विद्यादेवी नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सोपारी चढावे ॥ ॥ ॐब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ ॐपार्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ ॐगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनम ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनम ॥ १९ ॥ ॐय-

ॐेंद्रायनम ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनम ॥ १६ ॥ ॐकिन्नरायनम ॥ १५ ॥ ॐपातालायनम. ॥ १४ ॥ ॐषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनम ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनम. ॥ ११ ॥ ॐब्रह्मएयेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायनम ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनम ॥ ७ ॥ ॐकुसमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरवेनम ॥ ५ ॥ ॐरक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनम' ॥ ३ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगोमुखायनम. ॥ १ ॥ इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनम ॥ १ ॥ ॐअजितबलायैनम ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकालिकायैनम. ॥ ४ ॥ ॐमहाकाल्यैनम. ॥ ५ ॥ ॐश्यामायैनम' ॥ ६ ॥ ॐशांतायैनम' ॥ ७ ॥ ॐभृकुट्यैनम. ॥ ८ ॥ ॐसुतारकायैनम' ॥ ९ ॥ ॐअशोकायनम ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचण्डायनम ॥ १२ ॥ ॐविदितायैनम. ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनम ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायैनम. ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाणयैनम. ॥ १६ ॥ ॐबलायैनम १७ ॥ ॐधारिण्यैनम ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनम. ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनम. ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनम. ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनम ॥ २२ ॥ ॐपद्मावत्यैनम ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायकायैनम. ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐनैसर्प्यकायनम. १ ॥ ॐपाडुकायनम. २ ॥ ॐपिंगलायनम ३ ॥ ॐसर्वरत्नायनम. ४ ॥ ॐमहापद्मायनम ॥ ५ ॥ ॐकालायनम ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनम ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनम' ॥ ८ ॥ ॐशंखायनम. ॥ ९ ॥ इति नव निधान पदे ९ कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥ ॐविजयस्वामिनेनम. ॥ १ ॥ ॐक्षेत्रपालायनम ॥ २ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐवरणेंद्रायनम. ॥ ४ ॥ ॐपद्मावत्यैनम. ॥ ५ ॥ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐअग्नयेनम' ॥ २ ॥ ॐयमायनमः ॥ ३ ॥

ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ ५ ॥ ॐवायव्येनमः ॥६॥ ॐकुवेरायनमः ॥ ७ ॥ ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ ॐनागायनमः ॥९॥ ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ १ ॥ ॐचंद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐभोमायनमः ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंडल पूजनकी विधि विशेष लिखी है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी है, इस उपरांत मंडल प्रतिष्ठा वलबाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंडल पूजामें लिखआए हे उस मुजबही करणो । फेर विशेष विधी कराणी होय तो विद्वान गुरूकों पूछके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंडल पूजा वि०सं०॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, जुगो अक्षर भगति भणी समझाई दीजे ॥ मोटो तप रोहण तणो ए जिणरा गुण गाउ, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं ॥ १ ॥ दक्षिण भरते अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लक्ष्मी इण नामें, आठ पूत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामे ए ॥ २ ॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आगो पूत्रां ... ए तिण लागे प्यारी ॥ वाधे चइतणी कला ए जिम चन्द्र ...,तिम ते ... भाय पावे प्रतिपालें ॥ ३ ॥ ... रूवनी ए घर ... दीठी राजा खेदती ए ... ॥ तीन ... ए नदी दूजी नारी, ... गंग ... ॥ पुरुष न द.ये ... वरे तिण ...

सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए वे कुमर सोजागी, कन्याकेरी आखमी ए तिणसेती लागी ॥ ऊन्ना देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवागना ए जपे जैजेकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहे लोक व खत कन्यारो जाग्यो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाग्यो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पुत्र जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल—प्रजु प्रणमुं रे पास जिणेसर थजणो ॥ ए देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख माही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पुत्र हूवा जला, चढते पख रे चन्द्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कतसेती करे क्रीमा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आख आगल देखता हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी दृष्टे पमी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खमी ॥ वृद्धापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो डुख हुओ ॥ (उल्लालो) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहे इम प्रीतम जणी, ए नार नाचे अने कूदे कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज ताइ में कदे देख्यो नही, मुऊने तमासो अने हासो देखता आवे सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचने रे रीसाणो राजा कहे, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहे ॥ ए डुखणी रे पुत्र मुए तमपम करे, जब वीतेरे वेदना जाणीजे तरे ॥ (उल्लालो) जाणे तरे तू वात डुखनी गरवगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालकभणी ॥ सातमा भूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पुत्रतणे शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आख्या भरी ॥ पडतो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण बेसारियो ॥ (उल्लालो) बेसारियो कर जोड आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ हसावै पायपकज सेवता ॥ रूपनो भूपतने अचंभो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूछियै तासो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतां रे चारणिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवभव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो भव भूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो भवातर अने राजानो वली ॥ श्रीगुरु पासे पाछलै भव रोहणी तप आदर्यो, तपतणे सगते साधुभगते तुम्ह भवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजाभणी ॥ (उल्लालो) राजाभणी विधि एह जंपै चइ रोहणतप आवियै, उपवास कीजे लाभ लीजै भली भावना भावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरगसु, इम सात वरसा लगे कीजै तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ (ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करियै हो ऊजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, भला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजे आगे हो आठे मंगलीक ॥

है ॥ महा० १ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावै, मोतियन चोक पुरावै है ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसें अरज करे है, चरणारी सेवा प्यारी लागे है ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अमाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे, मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाला ॥ ॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद संजाला ॥ जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय, रहे० ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥ अविरत घुंघट पट उघारी, अनुजव मुख निरखाय ॥ र० २ ॥ जव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ र० ३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकू, जीवन कंठ लगाय ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुन हे माय वाकमी करमगति जाय ना कही, चितत और बनत कछु औरे, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय वा० १ ॥ सकल साज लक्षियो व्याहनकू, राजुलकों तब चाह जई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन बिलख मुरझाय रही ॥ हे माय वा० २ ॥ सीता सती योंही पतिव्रगता, जानत सकल मही ॥ जूगे दोस दियो जब रुघपति, पावक कुंममें धीज दही ॥ हे माय वा० ३ ॥ कायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात लही ॥ हे० वा० ॥ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा, अकल कथा किम जाण कही ॥ उलट पलट बाजी नटसीकी, नवल सरबमें व्याप रही ॥ हे० वा० ५ ॥ इति पद ॥ पुन ॥ म्हानु प्यारो लागे है जी थारो उपदेस, म्हानु० ॥ ग्यान जगावण उगुण

मेटण, संशयन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर दुख दूर करणकूं, जगन वद्दावत देत ॥ चंद फतै नित एही चाहै, समकित सुखको खेत ॥ म्हां० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मेरो पिया पर संग रमत है, मैं केसे मनाऊं री॥ मे० ॥ सोतन संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावे री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावे री ॥ विरहानल अति ऊलस्द पिया विन, कोन बुझावे री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अनुन्नव आयो, सव परठ सुणावे री ॥ ग्यानसार प्यारी दोनं हिलमिल, सोरठ गावे री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरपित वचन करी, हो सुगुरु मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतें ऊमटी, ग्यानघटा गहरी ॥ हो सुगु० १॥ स्याद्दादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति मरी ॥ हो सुगु० ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सुगु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुन्नाव धरी ॥ सुन्नरन्नरयो सुमतारससागर, समकित न्नूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पपइया न्नविजन, बोलत न्नक्तिन्नरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत संजम खेती, न्नविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी, सहज सन्नाव फली ॥ हो सुगु० ५॥ इति पदं ॥ पुन. ॥ या घरीमें रंग, वन्यो है म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध न्नेटे, हरख न्नयो अंग अंग ॥ व० या० २॥ एसी विध न्नवश मांहे मिलियो, धर्मप्रसाद अन्नंग ॥ व० या० ३ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं उर दरिया वरसै, अब वरर धरर घन गरजे ॥ चि० ॥ नेमप्रन्नु गिरनार सिधाए, देखणकूं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दादुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन भए घन जरसै ॥ चि० २ ॥ ढूंढत ढुढ सकल वन२में, कवहु पिया ना दरसै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगें सजनी, दिवस घरी जिन फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पद ॥ पुन ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ२ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी कारी बिजुरी झरावै, दूजी विरह व्याकुल भई तनमें ॥ मो० १॥ झिरमिर वरषित गरजत दादुर, सोर करत रहे नदिया रनमें ॥ मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल भई विरागण छिनमें ॥ मो० ३ ॥ इति पद ॥

॥राग विहाग॥ समझ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो ॥स०॥ पल२ आयु घटत छिन२ही, गलत जात जेसें उरो ॥ स० १॥ या तनको कहो कोन भरोसो, छिन मासो छिन तोरो ॥ जो कछु करे सो अवही करलै, पुनपरहो जिम मोरो ॥ स० २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री, गरज२ घनघोरो ॥ रूपचंद भ्रसनाको वाध्यो, जानवूझ भयो भोरो ॥ स० ३॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मान गुमान, योवन धन छगदे ॥ म० ॥ वेलूकी भीत जलको मोती, कोइ घमी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदिया गहरी नाव पुराणी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल घर दे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थारी वाटम्ी, घर आवोनी ढोला ॥ नि० ॥ मुझ सरिखा तुझ लाख है, मेरे तूही अमोला ॥ नि० १ ॥ जोहरी मोल करै [illegible] लाल अमोला ॥ जिसके पटंतर को नही, [illegible] सुणे किसपें कहू, किसपें [illegible] झोला ॥ नि० ३ ॥

हा॥ आणंदघन प्रभु आवसी, सेजमी रगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम्॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे भाग, वीरप्रभु आए हें ॥ आ० ॥ चंदना खमी डुवार, चित्तसें करे विचार ॥ देखत ही हार हीया, हरख भराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली, अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥ आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म फेरो॥ सुकृत बहु तेरो, भगवान दिल भाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत सरदचंद ॥ कहे जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥आ० ४॥ इति॥

॥ राग परज ॥ वावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥ आप रंगीला वाकी रंगीली, उर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ० १ ॥ आप न आवे वारी न लिख भेजे, प्रीत करणकूं उतावरो रे॥ आ० २॥ आनंदघन पिया निजघर आवे, मिट गयो मोह संतावरो रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ ऋषभ विहारी, थारी तो छबि न्यारी हो ॥ ऋ०॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥ ऋ० १ ॥ धनुष पाचसें मान मनोहर, काया कंचन वानी हो ॥ ऋ० २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी हो० ॥ऋ० ३॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी,प्रभु गो पर उपगारी हो॥ ऋ० ४॥ केवल पाय प्रभु मुगति सिधाए, आवागमन निवारी हो ॥ ऋ० ५ ॥ आनंदघन प्रभु एती वीनती, तुम पर जाउं बलि हारी हो ॥ ऋ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार न टरे रे, सु० ॥ चित कछु उर विचारत हे नर, उरही उर बने रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचे, चिमिया केसें बचे रे ॥ सु० २॥ होणहार वश मस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे॥ सु० ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया, क्यूं जग चाह धरे रे ॥ सु० ४

॥भदय करम गत देखे जगतकी, जिनवर क्युन भजे रे ॥ सु० ५इति पद ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजे, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक भूप चेलणाराणी, भक्ति करत हे आज ॥ स० २॥ निज२ द्रव्य लिये पुर के जन, उमग२ शुभ साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु होन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ भव श्में तोकू सुखदाई, आनद वछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुन. ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके, भेटै सहु भवि चित सुख पाय ॥ च० २॥ गंगा दरस कमाहो लागो, कव फरसु वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुन ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखू रे ह०॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, भागा भया उजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागे, पेख्या विभाव त्यागे, अध्यातमरूप जागे ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रूपभे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हे अनाथ गुनही, करिये सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्र भुजी तिहारी साखे, जिनहर्ष सूरि भाखै, दिल माऊं याही राखे ॥ हो० ५ ॥ इति पद ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी श्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं मार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब केसें विसराज्ञा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजे कहै धन२ राजुल, प्रनु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थारे मुखमारी हो वारी राज, प्यारी छवी वरणी न जाय ॥ था० ॥ शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने थारे कुंमल सोहाय ॥ था० १ ॥ मोहनगारी सूरत थारी, देख्या म्हारो मनमो लोज्ञाय ॥ था० २ ॥ ऊरकत नेण ज्ञए दोउं निरखत, थांसु प्रनु प्रीतमी लगाय ॥ था० ३ ॥ ज्ञव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेंमें चाव ॥ थां० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रनु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय ॥ थां० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कछु करनी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरज्ञव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सुखदाई रे, जसु पातिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ ऊठ पर तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥ तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, ज्ञवजल निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगमो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रनुजी मो० ॥ मैं मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि ठानो ॥ राग द्वेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥ ए रिपु कर्म पम्यो मुऊ केमे, किस विध छूटे पानो ॥ कुमति कदाग्रह मांहि अलूज्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं ज्ञववाशी तुं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो साम संज्ञारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ ज्ञक्ति सदाई शिवसुख दाता, संज्ञवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौज्ञाग्य सूरिने निज वर, दीजे सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागज्ञैरवी ॥ वीर प्रनु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सख।

मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवे वोधा पठावै, तेरी सूरत कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशशनायक एही अरज हे, दीजै दरस वमो वैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विज्ञास॥ ज्ञोर जयो अव जाग वावरे, ज्ञो० ॥ कोन पुन्य तें नरज्ञव पायो, क्यू सूतो अव पाय दाव रे॥ ज्ञो० १ ॥ धन वनिता सुत तात ज्ञातकों, मोह मगन ए विकल ज्ञाव रे ॥ ज्ञो० २ ॥ कोइ न तेरो तूं नही का को, इह संजोग अनाद सुज्ञाव रे ॥ ज्ञो० ३॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रज्ञाव रे ॥ ज्ञो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यू वूबे अव पाय नाव रे ॥ ज्ञो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खद॥ जाग रे सव रैन विहाणी, जा०॥ उदयो उदयाचल रविमंमल, पुन्यकाल क्यू सोवे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंम वन२ विकसानी, अजुअ न तेरी हग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेतन धर्म अनादि तुमारो, जम सगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥ तुम कुल दोय अवस्था पर्य्यें, नींद सुपन ए जम नीसाणी ॥ जा० ४ आतम रूप संज्ञार आपणो, कव तुमरे घर कुमति धराणी ॥ जा० ५ ॥ सुध वुध ज्ञूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी ॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जधानी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग वेलाउल ॥ सावरो सलूणो सखी मेरे मन ज्ञावनो, रूप देखाय मेरो मन ललचावणो ॥ सा० ॥ तोरणसें रथ फेर चले पिया, ना जानु ए काहेको रुसावनो ॥ सा० १॥ नव ज्ञव नेह निज्ञाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डरावणो ॥ आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी, जयो पीया मुगतसखीको पावनो ॥ सा० २इति

राग ललित ॥ आज रूपन्न घर आवे, देखो माई आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन न्नावे ॥ दे० १ ॥ केइ मुगताफल माल विसाला, केइ मणि माणक लावे ॥ दे० २ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रन्नु वेग वधावे ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांसकुमर दानेसर, इक्षुरस वहिरावे ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल, साधुकीरत गुण गावे ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई अं० ॥ रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशातिनाथ मिल्यो री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बरास मिल्यो री ॥ पूजत श्रीशातिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग टल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख कृपा कर साहिब, ज्युं पारेवो पल्यो री ॥ समयसुंदर कहे तुमारी कृपासें, डुंरहिसुं सुहलो री ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुन. ॥ ऊठोने मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण छे अति दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवन्नव एहवो, जुरुवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जाता वार न लागे, कायाघट है काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें न्नरियो हे जिनवर, पूरब पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणे मत गमजो रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित्त रमज्यो रे ॥ ऊ० ४ ॥ मन मानोता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥ लान्नकहे जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ न्नज मन नान्निनंदन देव, न्न० ॥ ध्यान मुनिजन अनुग धारे, सुरनर करत हे सेव ॥ न्न० १ ॥ चक्री न्नू-

पति वंदे सुरपति, वासुदेव वलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष मणिधर सेव ॥ न० २ ॥ असरण शरण हे विरुद जाको, भक्तिवच्छल भेव ॥ राजसिंह प्रभु रुषभ सिर पर, नाथ हे नितमेव ॥ न० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमको न सं तावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सजके सजन, पशुवनको सुन देख रुदन ॥ गिरनारी चले निज धर्मी वतन, तकसीर वतावो रे ॥ आ० १ ॥ पूनम जेसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥ मेरी नीकी लगी नव भवकी लगन, मत छेह दिखावो रे ॥ आ० २ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब झूठे पर्मेगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेऊं दोरू नेम जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुन कीरतीवाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥ की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशि वंदन ॥ दरसणसें नयणानंद भरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अंब कदंब मालती निरमल, चंपक वेल सघन तरु परिमल ॥ बीच भुवन हिय हरख धरे, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ लावली सूरत अधिक विराजे, वासुपूज्यकी महिमा छाजे ॥ प्रभु अतिशय तन मकरंद झरे, पदकज वलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुभग दरसकू आवे, निरख२ प्रभु सहज स्वभावे ॥ जीव जर्मी मन प्रेम धरे, जगपति रूपसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम भये अगीवान, हे ना निकला मुखसें कभी भगवान ॥ यार नहीं देखा समोसरणा, किया भवदधिमें छंदर भरणा ॥ दोरू जो लेते प्रभु सरणा, दूर

दुख होते जनम मरणा ॥ बैठे जववरमें लगाया नहीं ध्यान, रांते शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल खगवान, नाभि० १ ॥ नाम जो जिनके दान देते, आठुं मद तुमसें दूर रेते ॥ यार जों तिनके चरण सेते, शपी सुमताकों तुमें देते ॥ रहे तप जपमें सदा जो सूर, वरे वो जव जव सुख जरपूर॥ करे कपूर करम चकचूर, देखरां जिन नूर हुवे दुखदूर, करो जवपार सुणो महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रजु तेरी सूरतिया लागे जली, नेणां हमारी प्रजु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुजव रंग मगन तेरी अखियां, खुल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम प्रजु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम अगोचर तेरी महिमा, आप विसंजर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥ मुझकूं आश दीनपति तेरी, उर न चाहूं देव वली॥ ने० प्र० ४॥ लग रही लगन सुधारस कारण, खटक लटक अघ दूर चली ॥ कर सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र० ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जमी शहतार फली ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जाउं कहां, शरणागतकों शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिल्यो नहीं कोई, ढूंढ फिर्यो धरती सब हेरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रजुजी अब, आन जई तुमसें जट जेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करे वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांवाज ॥ घम्मीश पलश छिनश निशदिन, प्रजु कों समरण करले रे ॥ घ० ॥ प्रजु समरण सब पाप कटत हे, अशुज करम सब हरले रे ॥ घ० १॥ मन वच काय लगी चरणन नित, ज्ञान हियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दौलतराम प्रजु गुण गावे, मन

वंछित फल वरखै रे ॥ घ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ सुमताने क्या कर म्हारा रे, जिन स्याम हमारा ॥ जि० सु० ॥ शखी दोस नही सुमतामे हे, आली नेम एसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण नई हे हमारी, वस किया पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जाडव जात कठिन मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम म तजे हो हमकू, में न तजू पद थारा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ न हमारी तोरी नही तूटे, कर वाधी इक तारा रे ॥ जि० सु सब जग जो तुमसे हो जइयें, तो क्यू चलत ससारा रे ॥ सु० ६ ॥ रूहनार राजुल प्रजुजीसें, पोहची मुगति मझारा जि० सु० ७ ॥ इति पद ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो जले विराजो जी, सावलिया महाराज पर जले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, श्रावक पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, वाह पकम ले जावै १ ॥ ऊंचा नीचा परवत सोहे, तलै जीलनका वासा ॥ पें सींह दमूके, जिहा लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक२ प विराजे, जालरेरे जणकारै ॥ जालररे जणकार सेती, वाजा ल वाजे ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवे, पूजा आण र अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंछित फल पावै ॥ तु० ४ ॥ मुनिवर वदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चद खुसाल च सेवक, हरख२ गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन. ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातिक दूर वारो रे ॥ जविया शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, में देखा

जग जोई रे ॥ ज० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहा मुक्तिपुरी सुख पाया रे ॥ ज० ॥ कोमाकोमी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद लीधा रे ॥ ज० २॥ वीश चरण जिन सोहे, जविजन चात्रक मन मोहे रे ॥ ज० ॥ ध्रुवमठ मंदिर गाजै, जिहां पाशप्रजु महाराजे रे ॥ ज० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो रे ॥ ज० ॥ तीर्थ आसातन टालो, जविजन वहरी व्रत पालो रे ॥ ज० ४ ॥ नरजव लाहो लीजे, इण तीरथ महिमा कीजे रे ॥ ज० जय जगणीस तेतीसै, अगहन सुदि पंचमी डीसे रे ॥ ज० ५ ॥ गरू गोत्र सुहावे, जवि चंदगोविंद गुण गावे रे ॥ ज० ॥ जात्रा करी मन रंगे, चंद शिखर जणै अति चंगे रे ॥ ज० ६ इति पदं॥

नः ॥ (सांवरिया जेसें वणे जेसे तारो, सां० ॥ इस चालमें) सां रियामें दीठो दरस तिहारो, मेरी जव जय बाधा टारो ॥ सा० ॥ अश्वशेननंदन जगवंदन, जगबंधव जग प्यारो॥ नीलवरण द्युति श्री नवरकी, वामा उदर अवतारो ॥सा० १॥ कमठ विमारण शिव कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी, ० शामक सत्यवारो ॥ सा० २ ॥ शिखर गिरी मंमण जिनवरजी, जुत महिमावारो ॥ कर जोमी दोउं वीनती करतहे, बुधसिंह जी धारो ॥ सा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

(श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल) ॥ त्रिजुवन नायक वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रजुजी ॥ थारी मोहनी मूरती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख छवि चंदनें निरखवा, लगन चकोर अजंग ॥ वधा० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज कलामल जाण ॥ व० ॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व० था० २ ॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीजुवन नाथ, म-

मदीयल बाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाभ सूरिंद महाराजनो रे, फळ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुन॰ ॥ धन२ ते दिवाळी म्हारे आजनीरे, मेंतो छवि निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी रे, माहे बूटी दीसे भातश्नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-मा जम्या बहु रे, काने कुंमलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन०२॥ मुने किरपा करी ते कहू कमी रे, मारे वाहले मुऊ सामे जोयुं हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ऊग्यो सो-हामणो रे॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आ जथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोता ते डुख सरवे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमा रह्यं रे ॥ ध० ३॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी ऊपरे करुणा करी रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं॥ पुन ॥ म्हारे आज आनंद वधाम णा रे, हुतो लेडं रे वाहलाजीना भामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुने दास पोतानो जाणियो रे, आयम्ता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १॥ आप्युं दरशन ते डुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो भरोसो साचा गुरू रे, प्रभु विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म नमा रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पद ॥ पुन॰ ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घमी, स० ॥ ए संसार जेसा साजेला, घमपण आया घोमे चढी ॥ मागी तूगीनें छत्र धरायो, केहनो कंदोरो केहनी कमी ॥ स० १ ॥ साधो भाई

जिनने संभारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे खींवो भज तूं भगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ आवोरुनी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम भगत वछल भगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रभु केहवी थइ तकसीर कही ने सुणावो रे, इम विन गुनहे दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ० १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रूठो ठवी लो कत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस के लंघन राचे रे, सखी आंबातणी जे रुहाम, आंबलिये न माचे रे, आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुझ दीदार नहीं तुझ जोमे रे, इण जग में जोतां कंत कहूं हूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ढीलरिया मिं त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥ आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न भावे रे, जो माहरो साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६॥ इम करतां बांधीप्रीत राजुल साची रे, जे नेहनो नावे छेह इक चित राची रे ॥ आ० ७ ॥ इम रुद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रभु नेम राजुल सी प्री त मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ झूलो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमो हन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल छिन घमी रे, मत मन प्रभुकूं भूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोभता रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन अभंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥ श्रीफलवधीपुर तिलक ज्यूं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दा स पर साहिबा रे ॥ हित कर दीजै हाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

बीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी

॥ अगमडुं२ वाजे चोघमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ ठनन२ अवाज होता, महेल बनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ नामका, नित२ वाजे चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्व नाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोभे, जैसा सरद पुनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेत्रीस कोम देवता मिलकर, ओठव करणेकुं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंद सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको पार न पावे, जिनका गुण हे सबसें वमा ॥ ३ ॥ दूर देससें आया जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचे लगाता ज्वाला जोगी, वमे२ झोके खाता, बारे बरसकी उमर प्रजुकी, ठोटेपनमें बहोत कला ॥ बरोबरीके लिये सोबती, तपशीकूं देखण चला ॥४॥ ज्ञान देख के बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे वमे लक मेमें, बमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता, तोबी जोगी नहि सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, बमा नागकूं जला दिया, दिया सार नवकार नागकू, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ठोमके चले जंगलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ वमे धीर गंजीर प्रजूने, तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराकार खमा, कमठासुरने किया कमाका, नजमंमल बादल चमा ॥ ७

॥ उसी दिनको कमठासुरने, पिछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वर्षा किया घनघोर जोरसें, पवन चलाया मतवाला ॥ कड़ड़२ कर हुआ कड़ाका, चमक बीजका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता चौताला ॥ सात खूटकी वर्षा झड़ीमें, प्रभु खड़ा है मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर बड़ा, पराजय नहिं होय जिनूंका, एसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासण डोला, हुवा घंटका आवाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाव२ धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया, पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोड़ कुपाय तो किया कमठनें, कुछबी इलाज नही चलता ॥ तर णेवाला साहिब उनकूं, छलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोड़ खड़ा ॥ धरणीधर साहिबके आगे, अरजी करता खड़ा२ ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुचे, पार्श्वनाथ शुभ मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका उजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वड़े देवलमें इंदर सोहे, घंट बाजता चोताला ॥ १२ ॥ वड़ी जुगतसें सिंहासण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढाया, दरवाजा शुभ केवलका ॥ नामंडलके आगे शोभता, मूल गुंभारा आरसका ॥ पीछे पच्चीस देरिया सोभित, सिरे काम सिंघासणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहे, सहसफणा प्रभु पारसका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहू काम है सारसका ॥ अढारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त्त फागण मास भला ॥ सुदी तीजकूं तखते बैठे, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ बहु मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वड़ी

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

बीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी

॥ अगरडुंर वाजे चोघमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ ठननंर अवाज होता, महेल बनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ नामका, नित२ वाजे चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्वनाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, मात वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोने, जैसा सरद पूनमचंदा । स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेत्रीस कोम देवता मिलकर, ओछव करणेकुं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चद सूरज करता सेव ॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करता खमाखमा ॥ जिनके सरूपका पार न पावे, जिनका गुण हे सबसें वमा ॥ ३ ॥ दूर देससें आया जोगी, बमे जोर तपस्या करता, नीचे लगाता ज्वाला जोगी, बमे झोके खाता, बारे बरसकी उमर प्रजुकी, छोटेपनमें वहोत कला ॥ बरोबरीके लिये सोवती, तपशोकू देखण चला ॥४॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें, एसी तपस्या कू करता, उ जोगी तेरे बमे लकमेमें, बमा नाग इक अघजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता तोबी जोगी नहि सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, बमा नागकूं जला दिया, दिया सार नवकार नागकू, धरणीधर पदवी पाया ॥ बमउमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज छोमके चले जंगलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ बमे धीर गम्भीर प्रजूने, तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी बमी धूपमें, नीरजन निराकार खमा, कमगासुरने किया कमाका, नन्नमन्न बादल चमा ॥

॥ उसी दिनको कमठासुरने, पिछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वर्षा किया घनघोर जोरसें, पवन चलाया मतवाला ॥ कड़ड़२ कर हुआ कड़ाका, चमक बीजका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता चौताला ॥ सात खूटकी वर्षी ऊड़ीमें, प्रनु खमा है मतवाला ॥ नाक वरोवर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वर्षा, पराजय नहिं होय जिनूंका, एसा प्रनुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासण झोला, हुवा घंटका आवाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाउ२ धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया, पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने छत्र किया ॥ १० ॥ ओर ऊपाय तो किया कमठनें, कुछबी इलाज नहीं चलता ॥ तरणेवाला साहिब उनकूं, ढलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोड़ खमा ॥ धरणीधर साहिबके आगे, अरजी करता खमा२ ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुभ मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल वनाया तेताला ॥ वड़े देवलमें इंदर सोहे, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वर्षी जुगतसें सिंहासण कर, कोट वनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढाया, दरवाजा शुभ केवलका ॥ नामंरूलके आगे शोनता, मूल गुंभारा आरसका ॥ पीछे पच्चीस देरिया सोभित, सिरे काम सिंघासणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहे, सहसफणा प्रनु पारसका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, वहू काम है सारसका ॥ अढारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त फागण मास नला ॥ सुदी तीजकूं तखते वैठे, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ वहु मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वर्षी

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तत्र जगत प्रकाशन ग्यान सुधा रस पीने ॥ मेरी धन्य घरी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हि यरा हरष न माय फरकता सीने ॥ भई दीवाली जग वीच तभीते जारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज क ठा लिया नरानरी ॥ तहां भया सरोवर महिमा अपरपारी, नंदीवरधन ने किया भुवन विस्तारी ॥ प्रभु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रभु दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल छवि भविकूं लागत प्यारी ॥ प्रभु० ४ ॥ प्रभु धरमचंद हो आप आप जस राजा ॥ क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसें जमाव अंगिया साजा, प्रभु मुन्नी चुन्नी अविचल बाजत बाजा ॥ सन अगणीसे अरुताल कृष्ण पख गाजा, भये कार्तिक दिन निर्वाण भेट माहाराजा ॥ प्रभु लखमी प्रेमसे कुशल निधी हुस्तारी ॥ प्रभु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजें, प्रभु रहम नजर कर दिलभर दरसण दीजे ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करुं नाथ तुम दूर वसे वडभागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी ॥ नहि इस दुनिया दरम्यान पंथका थागी ॥ मेरे रात दिवस इक ध्यान भया अनुरागी ॥ जो पल भर पाउं संग अमृतरस पीजे ॥ प्रभु रह० १ ॥ में भररयणीके बीच सुपन प्रभु पाया, प्रभु अर स परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोमर आनंद हरख भर आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख देखू नाथ चरणकी छाया, मेरा जनम सफल हो जाय करुं दिल चाया ॥ तुम जाणत हो घट बात ढील नहि कीजे ॥ प्रभु र० २॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजे, धन२ वो नर हर नार सुणन्त धुन साजे ॥ जो पर पाऊं इक वार मिलणके काजे ॥ तो ध्याऊं जिन तुम पाश देख दुख भाजे ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटिलता लाजे, प्रभु मतकर देरी तुरंत चढ़ा शिव पाजे ॥ तुम वचन मालती फूल भ्रमर मन रींझे ॥ प्रभु र० ३ ॥ क्या समवसरण सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥ प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, मैं चाहुं संग अभंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन भक्ति जमी रुद्धसार नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद दरख घन वरसण, श्रीसांवरिया महाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गाजे, जहां अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै, प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद भाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उपदेश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज भोग अचलपद साजै ॥ पारसके संगत लोह कनक भयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वरणूं साहिब तुम गुण गणकी राशी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि प्रकाशी ॥ श्रीअभयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल सैं गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी, श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर सुविलासी, नित आनंद उछव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामवाग विच भुवन वण्यो केलासी, क्या अद्भुत महिमा चढ्किरण परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु दुरजन

फंदा तोम्ह मोहकी फासी ॥ जिनचंद सूरीश्वर विजयराजके सर सन ॥ श्रीसा० ३ ॥ पाठक हितवल्लभ चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री संघ सदा कल्याण भक्ति बुध दीनी ॥ सन् उगणी सय अम्ताल माघ सुद लीनी, सुभ वसंतपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल क्ष्मी 'वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रूद्धसार कहै सुखकार भक्तिरस पीनी॥ भइ कंचन काया प्रभु चरणनके फरसन ॥ श्रीसा० ४इति॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजे, मेहुं दासी चरणोंकी, तोरण आये फेर मत जाऊ, तुमकूं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ छप्पन्न कोम्ह जादव मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-वरकुं सिधाए, हमकु ठांम्ही नव भवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सलू णे, मैं इहा नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी मैं तो- कु कहतहुं, देखूं शोभा गिरवरकी ॥ मातापिता बांधव सब छम्ही॥ जामु सगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल, बात सुणो पियु मुफ घरकी, हमकु छोम्ह चले निरधारी, अब है पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सु- ण हो राजुल, विषयारस है विष सरपी ॥ यह संसार असार निरं- तर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह भव पार ऊतरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहला राजुल नारी, पो- हता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोभा है जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें काया उद्धरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल माहै, फिर फेरा नहिं फिरनेकी ॥ ने० ९ ॥ इति पद ॥

॥ अथ जिनदासजी कृत १० घन तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे भव पार ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण दुख की ए हे संसार ॥ करो प्रभु निहाल भनी जिनदास, रखो प्रभु मुज चरणोके पास॥१॥सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली॥सोबत समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली॥अनंत भव वीतगया खाली, वेदना निगोदकी झाली॥अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्रभुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन, चरण पर चढे केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद गुण जिनदास गावे, शीश चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥ बोलत हे हिया मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्ममें धसकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खमा कमर कसकर, हटाया कर्मोंका लसकर॥श्रीजिनराज जिहाज खासा,शरण जिनदास लिया वासा ॥४॥ समज मन मेरा मतवाला, तुजें नाहिं कोइ हटकणवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ताला ॥ फेर तो ममताकी माला, वाल तो भगवंत पर भाला ॥ ह यासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्धे भ्रमती ॥ पूठ पर खमे जागता जती॥मुजे बलवंत भई शोल सती, मिटी मेरी डुर्गतिकी सव गती, एसा घन जिन दास गावे, अचल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट डुरगतिका भारी, नीर ज्या भरती कुमति नारी ॥ बरछी उन नेणोंकी मारी, मुव्या केइ कामी संसारी ॥ इनोकी हो रहियै खुआरी, जीता कोइ सत्य

धरमधारी ॥ प्रजु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आया ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हासी ॥ कुमतिकी पमी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकू मासो ॥ हियो खोल अरिहंतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया नही गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन रं गया पानी, गती तेरी डुरगतिकी गानी ॥ सेवक तोरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानमें लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी सुरगतिकी गानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी॥चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये॥ कीसीकी जूमी ना कहिये रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी का जेटो रे च०, जव२ सचित पाप करम सब तन मनका मेटो ॥ सुरुत कीजै–महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण जज लीजै, समकित अमृतरस पीजै ॥ लाज जिनजक्तीका लहिये रे–लाज० ॥ चल०१॥ करो मत मुखसे बमाई, करो०, तज तामस तन मनका सुमति कर घर रहणा जाई ॥ रीतसे बोलो–मेरी जान री० ॥ आतम समतामें तोलो, मत जरम परका खोलो ॥ मौनकर तन मनसें रहियेरे–मो० ॥ च० २ ॥ जोबन दिन च्यारतणा संगी रे, जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाल्यो, काया पमी नंगी ॥ प्रीत सब तूटी–मेरी ज्या० प्री० ॥ आउखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया रुठी ॥ सुख डुःख आप किया सहियेरे–सुख डु:० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा–मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चहिये रे–मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम भजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे–मु० ॥ अब अचल अखंम्डित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रुल्यो चोरासी माहि भूल्यो में भरम, भूल्यो०॥ मदारे उदय अनंता डुख बांध्या जब कर्म ॥ में कदियक हूबो रंक फिरयो तज शरम, फि०॥ अरु कदियक राजा भयो गरबको गरम ॥ जब गरब आणकर बोल्यो पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनुष्य जनममें चेत घमी शुभ आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव भला कर ध्याया, भला० ॥ में उलज्यो अनादि अज्ञान विषय भोग भाया ॥ में पम्या लोभके फंद जोमतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर भाई रे, धर्म० अ० २ ॥ अब डुर्लभ अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥ अब दानशील तप भाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट पाप परिहर रे, पा०॥अब वार २ कहुं लोय जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बेन अर भाई रे ॥ बे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुक मन भायो सदा गुण गाउं, सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जाउं ॥ अब भवर मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण चित ध्याउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चाउं ॥ स० ॥ ए

मा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र भजो भाई, अचामल तप विधिसें थाई ॥ पाप त्रिहु जोगे परिहरजो, भाव श्रीपाल परे करजो ॥ (दूहा-साखी) संवत उगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुझ आश ॥ वाल कहे 'नवपद छवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पिदं ॥ पुन० ॥ चाल ईडरभाकी॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जैसा जगसें तारण, मिलणा नही असान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ ऋद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत, इनका कौनकआन ॥ २ ॥ कुष्ट भगंदर राजरोग सब, भूत प्रेत बल नाश ॥ नवपद जैसा निरभय शरणा, फेर करो क्या आश ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहे, अर्ह पद अरिहंत॥ सिद्ध सूरि उवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव पदके बिच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर होंगें, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनकी महिमा कहा लग बरणू, मैंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुथान ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत उजमाल ॥ सुरनर भूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीविमलेश्वर यक्ष सहाई, वरचक्केसरि मात ॥ उछव विविध करे मन शुद्धसें, त्रिभुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जय२ श्रीऋद्धसार ॥ ए॥ इति पद ॥ पुन०॥ (रथ चढ जदुनंदन आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तम्हिल्काति प्रभ्र, मदन छवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तरासें, व-

सुधा पीठ विराजत हे, तीरथनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि कर ठाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदघन, चरण निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंछित दायक, अतुल सुजश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश, ज्योति अरुज सब भ्राजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग आनंद निवाजत हे रे ॥ च० ४ ॥ शंभव भुवन पुरी वालूचर, अंतरंग अरि दाऊत हे ॥ शंकर बृह्मदेव तुम ध्यावे, गोविंद चरणा भाजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति उपम काजत हे ॥ मेत्र भणी तुम जम्पी नामकी, लखमी लील पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजे कुशल निधान जक्तिजर, ऋद्धसार सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अंगज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि जककू तारो ॥ सां० १ ॥ चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारे दरश शरसकी, केसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥ सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद्र वचनामृत, नयणकमल उजियारो ॥ धन२ आज दिवशकी महिमा, जोवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुवस पिर श्रीसंघ, करत सदा जयकारो ॥ रामवाग विच इंद्रभुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो, बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसे अमतालीश शुभ दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवल्लभ बहु विधसें, चैत्य प्रतिष्टा सारो, कुशल नियी कहै ऋद्धसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं गंम्म चले ॥ इस चालमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत बाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर तन छवि दमकत, चमकत दामनी न्नास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु आनन अमृतरश धारा, झरी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कबाण इंद्रधनुषनकी, झिलमिल न्नमर उजास रे ॥ अपछर गान करत सुर वनिता, कोयल वचन उल्लाश रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अबिर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत न्नरी पिचकारी, पेलूं प्रभूसें कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गुलाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो छतियनपे, ऋद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषन्न गया क्युं वनमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरषणकी आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें न्नई उदासा, प्रभु रुषन्न गये वनवासा ॥ (दूहा—साखी) रुषन्न प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥ न्नरतादिक सो पूत्रकूं, बाट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी झिरमिर मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ न्नरतादिक जी सो पूत्रनके घरसें, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ (दूहा—साखी) नगर अयोध्या युं फुरे, गये कहां महाराज ॥ दे उलंन्ना न्नरतकूं, मेरा पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी छिनमें ॥ मे० २ ॥ न्नादू महिना जी तज धन दोलत माया, वो गया इकेली काया ॥ न्नरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये विना कमाये पाया ॥ (दूहा—साखी) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै भोगविलाश ॥ सब माया या ऋषभकी, छोड गया वन-वास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ श्रासू महीने जी सूरतकी छिब लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके सब लोभी जो पूत्र भये नीरागी, कभी खबर न लो वडभागी ॥ (दूहा–साखी) भरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद्र पद लेवे जी नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो ऋषभ घर आवै, मोहे नेणा आण बतावे ॥ नहीं कागद जी मुझकूं पूत्र पठावै, मेरा जीव बहोत्त दुख पावै ॥ (दूहा–साखी) झुरती निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उडकर मिलती ऋषभसें, जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥ मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी भरत बाहुबल भाई, आपसमें करे लडाई ॥ भरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-कर आई ॥ (दूहा–साखी) बारा बरस लडते भये, इंद्र दिये सम झाय ॥ चक्रवर्ति बनता गये, भये चंदयश राय ॥ हे जी तो तप कारण जी खडे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी पडे ठंडका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा जी ऋषभ जगत प्रतिपाला, में रटुं ऋषभकी माला ॥ (दूहा–साखी) कोइ परवतकी कंदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंड तापकी विपतमें, सहै बहोत दुख धंद ॥ भरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें ॥ मे० ७॥ माहका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे ऋषभका बेरा ॥ (दूहा–साखी) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥ राज रमणकी संपदा, वो गया छिनकमें छोड ॥ एसा निरमोही जी पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

भ्ररतो, सूने मन घरमें फिरती ॥ भरत यूं केता जी सोच फिकर क्यू करती, रहे निशदिन मुझसें लरती॥ (दूहा–साखी) भरत विविध तर भ्रातसों, कहता वात वनाय ॥ वनपालक उद्यानेक, दीवी वधाइ भ्राय ॥ प्रभू पधारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतऊ महीना जी हय गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥ भ्ररत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥ (दोहा–साखी) इंद्रध्वज आगे चले, भामंमल हे लार ॥ चोसठ चमर सुरपति करै, दुंदुभी गगन मझार ॥ एसो सुत तेरो जी विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश - वैशाखां जी मरुदेवा मन हरखै, जब रुषभप्रभू मुख निरखै॥ नैणपट उघम्या जी वीत राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा–साखी) गज ऊपर सुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी हई, एसें रु-षभ सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभु मगनमें ॥ मे० ११ ॥ जेवका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रुषभ चरण लई लाई, दरस नित तेरो जी मुझकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम सदा मन भाई ॥ (दूहा–साखी) धरम शील आधारसें, कुशल सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे दुरित दुख धंद ॥ हे सी तो मन सुध कर जी राखो जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूवरी वो मथुरावाली एचाल) ॥ सावण महीने नेम पिया मोहे व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर वढत वधाई सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण भाई, तोरणसें रथ फेर सि-धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी–मोह लियो शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ भादू महीने गगन बीच पीया इंदर चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपें जोवन

गरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी, मदन सदन आयो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि०२॥ श्रासू महीने श्राश पीयाकी मिलणेको लागी, तेल चढी मोकू लि- टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने तकशीर कंत मोहे, केसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी भारी गले फासी— मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खवर नहीं लीनी, उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी॥ पशुनकी दयापें चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग भीनी॥स्याम तोकुं मति ये क्या नासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत त्यारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग भोगी सो काम- या, लगी तुमें प्यारी॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि०५॥ पोश पीया उलंभा देती हिये नहीं धारो, नहीं ओरूंगी संग नाथ अब चाहे सो कर मारो॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक वेर घर अंगण आवो फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समझासी—मो० ६ ॥ माह महीने रुत सरदीकी ठंड वहोत वाजै, सेज लगे नागण सी मु- झकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण भांजै, नहीं वमन कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह छाजै ॥ पिया विन करुं में गति काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणे, में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानें ॥ कौन संग में खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥ कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई कोयल सोर करे, एसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद परे ॥ प्रीत जिन नव भवकी तोरी, राजुल तज सिणगार हार कूं मदन मान मोरी ॥ नेम विन हो रही उदासी—मो० ९ ॥ माश

पदे पराया, निर्वेश्न वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष न्नूवर्षित दान वारि, येन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गण्युत्तम दानवारी, प्रोच्चारितोदाम यशाः सदेवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव, सुज्ञान सुज्ञानन्निबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांग वितीर्णन्नूयः, कल्याण कल्याण कंदं गन्नाजां ॥ ५ ॥ येरर्च्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोन्निरामैः सुमनोन्निरामै ॥ कर्मोन्निधे रुझित न्नूधनास्ते, विसारि लोकेशो विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य न्नगवन् प्रोद्दाम धामान्वितं, पादाब्जं परन्नाग न्नृत् त्रिन्नुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं कर्म विपक्ष पक्ष दलने न्नव्या न्नवंतु क्षमाः, कल्याणाश्रय मुक्तिमाप्तु मखिलतीर्त्वा न्नवान्नोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी छंद ॥ गौमीग्रामे स्तंन्नने चारु तीर्थे, जीरावल्ल्या पत्तने लोद्रवाख्ये ॥ वाणारस्या चापि विख्यात कीर्तिं, श्रीपार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे न्नूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्री पा० ॥ २ ॥ न्नित्वा न्नेयं कर्म जाल विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण सौख्यं ॥ श्रीपार्श्वे० ३ ॥ विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ श्रंन्नोजार्कं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्वे० ४ ॥ वर्षे रम्यं खग दोन्नाग चंद्र, संख्ये मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा० ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन स्तोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजित, घनवना घननाद विन्नाजितं ॥ न्नजत न्नक्ति न्नरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं ॥ १ ॥ विविध वर्ण विन्नूषित विग्रहाः, विदित उर्दम दर्पक निग्रहाः ॥

षसु युगार्क मिता सुकृताकराः, जिनवरा प्रनवंतु शिवंकरा ॥२॥ रुचरवर्णं निबद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रभिवंदितं ॥ निखिल साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल भव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिनवरानन पद्म गतोन्मुदा, भवतु वाग्जिनलोज शुभार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्र. ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृताम्भोनिधेः, सद्भावेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सद्भूत प्रतिबिंब तस्तु सुतरां गोमीपुरोद्भासिनः, सोल्लासंप्रणिपत्य सत्यमनसा तत्रैवनित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो भव्याव्रजतोध्वनि, स्पृश्यंतेनहि क्षुद्रजंतुनिवहै र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो, सःश्रीपार्श्वविभुर्व्यचिन्त्यमहिमा हृद्योभकेपांभवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणभुतं कुटिलता मोहादिनोद्भाविता, धृत्वानिर्मलभावनाचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लभ्यन्ते नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा संसेव्यतांविश्वया. ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीऋषभस्ततोजितजिनः, श्रीशंभवस्तीर्थकृत् ॥ सुश्रीमानभिनंदनश्चसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रभः ॥ पृथ्वीकुक्षिभवसुपार्श्वे, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रभः ॥ सर्वज्ञः सुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्रीशीतलसौम्यदृक् ॥ १॥ श्रेयांशप्रभुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः, शांति.कुंथुररस्ततोजितरिपुर्मल्लिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्हंतोनमिनेमिशुद्ध मुनिपौविश्वत्रयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिन.प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान प्रभुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्चिद्रूपाश्चतुर्विंशति, र्निःशेषोत्तमभव्यजंतुहृदयाम्भोजप्रबोधोद्यताः ॥ वयन्तेसुरवृंदवद्यविशदश्लो

कच्छानिर्न्नय, श्रीतंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ २ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा, भास्वत्पादनखेंदव-प्रवचनांभोधीदवस्थायिन ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरव.कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावन, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-र्गापवर्गप्रद. ॥ धर्म्मं सूक्तिसुधाश्चचैत्यमखिलं जैनालयंश्चालयं प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमंगलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिना धिपा स्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशति, श्रीमन्तोभरतेश्वरप्रभृतयोयेच क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधरा. सप्ताधिकाविंशती, त्रैलोक्येभयदा त्रिषष्टिपुरुषा. कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभस्य निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपाया वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशे लेर्हतां ॥ शेषाणामपिचोर्ज्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा वनय प्रसिद्धविभवा कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावनाम रगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता, जम्बुशाल्मलिचैत्यशाखिषुतथावक्षाररूप्या-दिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचकुंडलनगेद्वीपेचनंदीश्वरे, शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगर्भावतरोजयत्यर्हताजन्माभि-षेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचभवो य केवलज्ञानभाक् ॥ य.कै-वल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्भावित स्वर्गिभिः, कल्याणानिचतानिपंच सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥६ ॥ येपंचोषधिऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिगतापंचये, येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि बलिनोयेबुद्धीऋद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमंगलं ॥७॥ देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणितानिद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थंकरमातृका-भजनकायक्षाश्चयक्षीश्वरा द्वात्रिंशत्रिदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यका श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणा कुर्वंतुमेमंङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकल्याणकालेर्हतां, पूर्वाएहेपिमहोत्सवेपिस- ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येशृण्वंतिपठंतितैश्चमनुजै र्द्धमार्थकामा न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वतुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति मंगलाष्टक संपूर्ण ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबंधु नेकर्म नकर्ता ॥ न श्रंगं नसंगं नइछा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नभोगं नव्याधि नेशोकं ॥ नक्रोधं नमान नमाया नलोभ ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्रं ननिद्र, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्ण नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोहं नाचिंता, नक्षुतट् नभीतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्यो, चि०४॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्यापं, हृषीकेश विध्वंस कर्म्मारिजालं ॥ नपुण्यं नपापं नअक्षानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्ध नविदि नमूढा, नभेधं नभेद्यं नमूर्तिर्नमीहा॥नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नद्रव्यं नक्षेत्र नदृष्टो नभव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्ववेदी, नपूर्णा नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो न्निभिन्नं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनि धिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वेभूतगतागते सुख दुख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥ त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वरा., वंदेतं हरिवं- श हर्ष हृदयं श्रीमानभूदच्युत. ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्र ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणा, साधूना वंदनेनच ॥

प्रतिष्टति चिरंपापं, छिद्र हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य्य स्य, संसार ध्वातनाशन ॥ बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्म्मामृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि- नाशाय, वृद्दणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति२, जिनेभक्ति दिने२ ॥ सदामेस्तु२, सदामेस्तु भवे२ ॥ ५ ॥ नह्रित्राता२, नह्रित्रा ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नभूतो नभविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरण मम ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन, रक्ष२ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रभ ॥ नैकजन्म कृत पाप, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि- त्यं, सिद्धा जगति मंगल ॥ मंगलं साधवो सुर्वे, धर्म्मः सर्वत्र मंगल ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा ह्यर्हतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो कोत्तमो यतीशाना, धर्मोलोकोत्तमोर्हता ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्ह तः, सिद्धा शरण मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म्मं शरण मर्ह तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपुर्ण ॥

॥ अथ तपगछ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोयण वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स द्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रि सलातणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान महावीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनदनें, चरणें करी परिणाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पूछे गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा रग आराधिये, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तब वचन रस, भाखे श्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोइयें, व्रत धरीये गु रु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिसुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अढार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुन्न करणी अनुमोदियै, न्ना व न्नलो मन आणि ॥ अणशण अवसर आदरो, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुन्नगति आराधनतणा, ए छे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जिम पामो न्नव पार ॥ ८ ॥ (ढाल ॥ १ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ इस चालमें) ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह न्नव पर न्नवना, आलोइये अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान न्नणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु उलवियै नहीगुरु विनयें, काले घरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तदुन्नय करी सूधा, न्नणिये वही उपधान रे ॥ प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥एह तणी कीधी आशातना, ज्ञान न्नक्ति न संन्नाली रे ॥ प्रा० ज्ञा०॥ ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ न्नव पर न्नव वलिय न्नवोन्नव, मिच्छादुक्कम तेहरे ॥ प्रा० समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत अन्निलाप ॥ साधुतणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥ प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं छंडो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ साहमीने धर्मे करि थिरता, न्नगति प्रन्नावना करिये रे ॥ प्रा० स० ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसंता उवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंड्युं जेह ॥ आ न्नव प०, मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे धरमे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ९ ॥ श्रावकने धर्मे सामायक, पोसहमा मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक [illegible] ी, चारित्र डहोल्युं

जेद ॥ आनव०, मिछा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ बारे जेदे तप नवि कीधो, उते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर, विविध विराध्या जेद ॥ आनव०, मिछामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥ वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर व चन सुणीनें, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२) पृथ्वी पाणी तेउ, वाउ वनस्पती, ए पांचे थावर कह्या ए ॥ करी करसण आरंज, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥१॥ घर आरंज अनेक, टांका जोयरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥ लींपण गूपण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, फीलण अप्पकाय, ब्रोती धोती कर दू हव्या ए ॥ जाठीगर कुंजार, लोद सोवनगरा, जामनूंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण राधण रसवती ए॥ इ णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेउ वाउ विराधियाए ॥ ४ ॥ वामी वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूंटीया ए ॥ पौंहक पापमि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेद्या बूंद्या आथिया ए ॥ ५ ॥ अल शीने एरंम, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलू माहि, पीली सेलमी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें- ड्री जीव, हण्या हणाविया, हणता जे अनुमोदीया ए ॥ आनव परजव जेद, वलिय जवोजव, ते मुऊ मिछामिडुकम ए ॥ ७ ॥ क्रमी सरमिया कीमा, गामर गमोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥ वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥ ८ ॥ इम बेइंड्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ उद्देही जूं लीख, मांकम मंकोमा, चाचम कीमी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहिया घीमेल, कानखजुरमा, गींगोला धनेरीया ए ॥ इम तेइंड्री जीव,

जे में दूहव्या, ते मुज मिछा० ॥ १० ॥ माखी मच्छर डांस, मसा पतंगिया, कंसारी कोलियावडा ए ॥ ढींकण विछु तीड, जमरा जमरीय, कौंता बग खडमांकडी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुज० ॥ जलमा नांखी जाल, जलचर दूहव्या; वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीडया पंखी जीव, पाडी पासमां, पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंद्री जीव, जे में दू०, ते मुज० ॥ १३ ॥ (ढाल ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए चाल) क्रोध लोज जय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारका जी, लीधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी मिछामि डुक्कड आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥ देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥१॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जव२ मेली आथि ॥ जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोइय न आवे साथ रे ॥ जि० ३ ॥ रयणी जोजन जे कर्यां जी, कीधा जक्ष अजक्ष ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्यां परतक्ष रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई वीसारीयां जी, वलि जांग्यां पच्चरकाण ॥ कपट हेतें किरिया करी जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी, आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अधिकार रे ॥ जि० ६ ॥ (ढाल ४ ॥ साहेलडीनी देशी ॥) पंच महाव्रत आदरो, साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १॥ व्रत लियां संजारीयें, सा० ॥ हीयडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावियें सा० ॥ योनि चोरासी ॥ मनशुद्धे करो खामणा, सा०॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो, सा० ॥ कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सादमी संघ खमाविये, सा० ॥ जें उप नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमाविये, सा० ॥ एहीज धर्म नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्छा मैथुन तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥७॥ निंदा कलह न कीजीयें, सा० ॥ कूडा न दीजे आल तो ॥ रती अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-विध२ वोसराविये, सा० ॥ पाप स्थान अढार तो ॥ शिवगति आ राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ५ मी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥) जनम जरा मर-णे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्धभगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पाचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदिये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत वर्त्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वसे ए, वलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५॥ घडया घडाव्या जे घणा ए, घरटी हल हथियार तो ॥ भवर मेली मूकीया ए, करता जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनम२ परिवार तो ॥ जन-मातर पोहता पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव

परजव जे कस्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध२ वोसिं रावियें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम करी ए, पाप कस्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए उंठो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ७ मी ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए चाल ॥) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ जुगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥ ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर जिन चैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पमिक्कमणा सुपेरे कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवज्झायनें, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीयें, चित्त आणी ठाम ॥ समता जावें जावियें, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचस्यां, जोगवियें सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य काम ॥ गरि ऊपर ते लीपणुं, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जाव जली परें जावियें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ए ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपरें ॥ ए चाल) हवे अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण आदरियें पच्चरकी च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूंकी गंमी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यार कीधा आहार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीउ रंक ॥ ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजे शिवपद सुरधाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिजद्र खंधो जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्यें

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारे महा मंत्र नवकार, मनथी नवि मूंको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मातरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अवतार॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख संपति दातार॥५॥ जुउ जील जीलणी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहु पाम्या छे सुर जोग, इक जवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली मंत्र फल्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि जिणे चित्तमा राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली जवजय दूरे नाख्यो, जिन विनय करता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ (ढाल ७ मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल) सिद्धारथराय कुल तिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनी तले तुमे अवतस्या ए, करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आव्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम रहस्ये लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूजण आकरा ए, जनम मरण जंजाल तो ॥ हु हु एहथी उजग्यो ए, छोडव देवदयाल ॥ ज० ४ ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठा दुःख दंदोल तो, तूठो जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ जव२ विनय तुम्हारडो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि दीजीये ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ (

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिणवर चरण थुणता, अधिकमन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगच्छपति श्रीविजयप्र नसूरि, सूरि तेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरी शिष्य वा चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय वि· जयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे, रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण अन्यास ए ॥ ४ ॥ नरनव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि लास ए ॥ निर्झरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिझाय लिख्यते ॥

नरहेसर बाहुबली, अनयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिन अणियानत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जथूलिन्नद्दो, वरय रिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंमरिओ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिन्न होअ ॥ नद्दोअ दसन्नन्नद्दो, पसन्नचंदोअ जसन्नद्दो ॥ ३ ॥ जंबूपहू वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चि- लाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थी उदाय गेमणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥ पनवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढपहारोअ ॥ सिज्जंस कूरगडुअ, सिज्जंनव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुण- गणेहिं संयुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरि सीया, नंदा नद्दा सुनद्दाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पनमावई अंजणा सिरीदेवी ॥ जिह सुजिह मिगावई, पन्नावई चिल्लणादेवी

॥ ९ ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी, गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चभामा, रुप्पिणी कन्हट्ट महिसीओ ॥ ११ ॥ जक्खाय जक्खदिन्ना, भूआतह चेव भूअ दिन्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाई महासईओ, जयंती अकलंक शील कलिआउ ॥ अज्ज विवज्जई जासि, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तालतीठनो सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणआणं, मिच्छपरिहरदधरसम्मत्त ॥ छविहआवस्सयंमि, नुज्जुत्तोहोइपयदिवस ॥ १ ॥ पर्वेसुपोसहवय, दाणशीलं तवोभ्रावोअ ॥ सज्झायनमुकारो, परोवयारोअजयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआजिणथुणिणं, गुरुथुअसाहम्मिआणवच्छलं ॥ ववहारस्सयसुद्धी, रहयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर, भासासमिईवजीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोचरणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिबहुमाणो, पुत्थयलिहणपभावणा तित्थे ॥ सड्डाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमु निशदीश ॥१॥ बीजे लाख अठावीश कह्या, त्रीजे बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अड लख धार, पाचमें वांदू लाखज च्यार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमें चालीस सहस प्राशाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसें सार, नव ग्रैवेयके त्रणसें अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवरभुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास ऊंचा बहोंतर धार ॥ ५॥ एकसो असो बिंब परिमाण, सभा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम्ह बावन कोम्ह संभाल, लाख चोराणुं सहस चोंआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर साठ विसाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहोंतर लाख, भुवनपतीमां देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण, इक२ चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि, साठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशें ने ओगणसाठ, तिर्छा-लोकमा चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर वंदू तेह ॥ रुषभा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-शेण ॥ १०॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमलाचल ने गढगिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-काणो पाश, जीरावलो ने थंभणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-गार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नित२ ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे भव-सायर तरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानशिवश्रियः ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयी-शान, मार्हन्त्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिज-गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-मंपृथ्वीनाथ, [illegible] दिमतीर्थनाथंच, [illegible]

मिनंस्तुम. ॥ ३॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरजास्करं ॥ अम्लान-
केवलादर्श, संक्रातजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वजव्यजनाराम, कुल्या-
तुल्याजयंतुता· ॥ देशनासमयेवाच·, श्रीशंजवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
अनेकांतमतांजोधि, समुल्लाशनचंद्रमाः ॥ दद्यादमदमानंद, जगवान
जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, त्तेजिताङ्गिनखावलिः ॥
जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वजिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रजप्रजोर्देह,
जास.पुष्णंतुव. श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः॥८॥
श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहिताङ्घये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-
जोगजास्वते ॥ ए ॥ चंद्रप्रजप्रजोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-
र्मुर्त्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १०॥करामलकवद्विश्वं, कल-
यन्केवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधि , सुविधिर्बोधयेस्तुव·॥११॥
सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुद· ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः
पातुवोजिन ॥ १२ ॥ जवरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शन. ॥ नि -
श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांस. श्रेयसेस्तुव ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीजूत,
तीर्थकृत्कर्मनिर्मिति. ॥सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्य.पुनातुव ॥१४॥
विमलस्वामिनोवाच., कतकक्षोदसोदरा. ॥ जयंति त्रिजगच्चेतो,
जलनैर्मल्यहेतव· ॥ १५ ॥ स्वयंजूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंताव, प्रयच्चतुसुखश्रिया ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,
मिष्टप्राप्तौशरीरिणां॥चातुर्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥
सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिग्मुख. ॥ मृगलक्ष्मातम शांतये
शांतिनाथजिनोस्तुव ॥१८॥श्रीकुंथुनाथोजगवान्, सनाथोतिशयर्द्धि-
जि.॥सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥१९॥ अरनाथस्तुज
गवां, श्चतुर्थारनजोरवि ॥चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः॥ २०॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं॥कर्म्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमजि
.॥२१॥जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं॥मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥२२॥ लुठंतोनमतांमूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणं ॥ वारिप्लवाइवनमे., पांतुपादनखाशव. ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्रेंदुः, कर्मकक्षहुताशन. ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ ॥ २४ ॥ कमठेधरणेंद्रेच, स्वोचितंकर्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथःश्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायार्हतेनमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्र, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितःश्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥ वीर. सर्वसुरासुरेंद्रमहितो, वीरंबुधाःसंश्रिता ॥ वीरेणाभिहतःस्वकर्मनिचयो, वीरायनित्यंनमः ॥ वीरात्तीर्थमिदंप्रवृत्तमतुलं, वीरस्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्ति कांतिनिचय., श्रीवीरभद्रंदिशः ॥ ॥ २९ ॥ अवनितलगतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानांदिव्यवैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानादेवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानांभावतोहंनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिभत्तपालग, निव्वाणीगरुडकयसेव ॥ १ ॥ ॐसनमो विप्पोसहिपत्ताणं, संतिसामि पायाणं ॥ झौंस्वाहा मंतेणं, सव्वाशिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणं ॥ सोंह्रींनमो सव्वोसहि, पत्ताणंचदेइसिरि ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरक्खंतुजिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिंखलासया ॥ वज्जंकुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगंधारी, माणवीअ वइरुट्टा ॥ सिआ, माहा-

माणसिआन्न देवीउ ॥ ६ ॥ जरकागोमुहमहाजरका, तिमुहजरके सतुंबरूकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिन्न, बन्नोमाणुन्नेसुरकुमारो ॥७॥ उम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधवतहयजरिकदो ॥ कुबेरवरुणोनिउमी गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउचक्केसरी, अजिआउरिआरि कालीमहाकाली ॥ अच्चुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवच्छा ॥९॥ चम्माविजयंकुसिपन्नइत्ति, निब्बाणिअच्चुआधरणी ॥ वइरुट्टछु- त्तगंधारी, अंबपउमावईसिध्धा ॥ १० ॥ इयतित्थरक्कणरया, अन्नेविसुरासुरीचउहावि ॥ व्यंतरजोइणिपमुहा, कुणंतुरक्कसयाअ म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिट्ठिसुरगण, सहिओसघस्सलंतिजिणचंदो ॥ मज्झविकरेउरक्कं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना हसम्मदिठी, रक्कंसरइतिकालंजो ॥ सव्वोवद्दवरहिओ, सलहइसुह संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरू ण ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंभणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥ पुरकलवई विज यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगणी, नयरी यें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, भवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ चनद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रनु जनमिया, वली योवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावे ॥ ४ ॥ नोगवी सुख संसारना, सजम मन लावे, मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्रनु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नाण ॥ वृषन लंछने शोनता, सर्व नावना जाण॥६॥चौराशी जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण नुवनमां जोअतां, नहि कोई एहनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रनुजीनो

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ ईहुं पेढाल जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ९॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः ॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणी ए, जो होवे अम नाथ ॥ भवोभव हूं छूं ताहरो, नहीं मेलूं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने, शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजनें घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहांथकी हूं वीनवूं, अवधारो मुज सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमें अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगे, नमो० ॥ ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक माही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योतिनेपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ ॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धर [illegible] तेने भव पा[illegible]

ऊतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणू ऋषन्नदेव, ज्या ठविया प्रन्नु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुन्म सोहामणो, कवम्यक्त अन्निराम ॥ नान्निराया कुलमंम्णो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, नि.कारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनत प्रन्नु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रन्नु जिन ध्यानथी, चिदानद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमधर जिन स्तवन ॥

सुणो चदाजी, सीमधर परमातम पासे जावजो ॥ मुज वीनतम्, प्रेम धरीनें इण पर तुमे सन्नलावजो ॥ जे त्राण्य न्नुवन ना नायक ठे, जस चोसठ इदर पायक ठे, नाण दरशण जेहना क्षायक ठे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया ठे, जश धोरी लंठन पाया ठे, पुंम्रीगणी नारीनो राया ठे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा माहि विराजे ठे, जश चोत्रीश अतिशय ठाजे ठे, गुण पेंत्रीस वाणीये गाजे ठे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ न्नविजनने ते पमिबोहे ठे, तुम अधिक शीतलगुण सोहे ठे, रूप देखी न्नविजन मोहे ठे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो हूं, पण न्नरतमां दूरे वसिओ हूं, महा मोहराय कर फसियो हूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमा धरियो ठे, तुम आणा खम्ग कर ग्रहियो ठे, तब काइक मुजथी मरियो ठे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहे पद्म विजय थाऊ शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आखडियें रे में आज सेत्रुंजो दीठो रे, सवालाख टकानो दिहाडो रे, लागे मुंनें मीठो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो उमा हो, वालामारा, भवनो संशय भाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवभवनो लाहो लीधो, वाला० देहडी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपानें फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे जोता, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वा० वीरजिनद इम बोले रे ॥ त्रण भुवनमा तीरथ मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रु० ४ ॥ इड सरीखा ए तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरजकुंडमां नाहे रे ॥ शेत्रु० ५ ॥ काकरे७ श्रीसिद्धक्षेत्रे, वा० साधु अनता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोता, वा० मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुन. ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उजल जिन गृहमंडली, तिहा दीपै उत्तंगा, मानु हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि० २ ॥ कोइ अनेरु जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या, जात्राफल लहिये, तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिये ॥ वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीपचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलक श्रीनाभिराजांगजं, वंदेरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथंयथा ॥ तारंगेअजितजिन भृगु पुरे श्रीसुव्रतंस्थंभने, श्रीपार्श्वंप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धमानंत्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प भुवनेग्रैवेयकेव्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा द्रिसतो स्तीर्थंकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे कुण्डले, येचान्येपिजिनानमामिसतत तान्कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥२॥ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्मह्रदतो निर्गम्यतेगौतम, गगावर्त्तनमेत्यथाप्रवि-प्लवे मिथ्यात्ववैताढ्यक ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहृति त्रिपथगा ज्ञानां बुराशृंदिगा, सामेकर्ममलहरत्व वरुल श्रीद्वादशागीनदी ॥ ३ ॥ शक्र श्चंद्ररविग्रहाश्चचरण ब्रह्मेंद्रशात्यविका, दिग्पाला. सकपर्द्दिगो मुख गण श्चक्रेश्वरीभारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविधि श्रीतीर्थयात्रा दिषु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसततुभद्रंकरा ॥ इति श्रीपंच तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिझाय ॥

(नदी यमुनाके तीर उडे दोय पखोया ॥ ए देशी) पिउजी पिउजी रे नाम जपुं दिन रातिया, पिउजी चल्या परदेश तपे मो री छातिया, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कब मिले, नीर विछो ह्या मीन के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नवि गमे, जिहा रे वालेसर नेम तिहा मारू मन भमे ॥ जो होव सज्जन दूर तोही पासे वसे, किहा सायर किहा चंद देखी मन उ ल्लसे ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावे देह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहने, साले रे साल समान हियामा तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड जोवनवय अति दहे, जेहनो पिउ परदेश ते माणस दुख सहे ॥

फुरी२ पंजर कीय काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मिली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहमु रग टाव्यो ते नवि टलै, चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिले ॥ आवा केरो स्वाद निबूते नवि करै, जे नाह्या गगा नीर ते छीलर किम तरे ॥५॥ जे रम्या मालतीफुल घतुरे किम रमे, जेहने घीसु प्रेम ते तेले किम जमे ॥ जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करे, नवजोवन तजी नेम वैरागी थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वांद्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनें ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती मनरली, रूपविजय प्रभु नेम भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिझाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने साघो को नही रे, तिण कारण म करो जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा छोड़ाने दया पाल रे ॥ आ० १ ॥ कुटंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख संच्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे छमी फूरसे रे, सहीसे इह लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ ऊंचा चिणाव्या मंदिर मालिया रे, दे दे धरतीमें ऊंडी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्यु ऊठी चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जीव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्रवर्त्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो बली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥ करणीश्ने उवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसरया रे, करता मुनि नवला तेह विहार रे ॥ भारंडपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे ममता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पाले रूडी रीतसुं रे, देवे मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोक्षने रे, जश लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरो रे, म करो मुनि नाणनुं अभिमान रे, ऋषी चोथमल सूत्र

देखीने रे, जोम करी जालोर मझार रे ॥ आउ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पचतीर्थी चैत्यवदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमू, समरू तारू नाम ॥ ज्या ज्या प्रतिमा जिनतणी, त्या त्या करू प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमू गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू ऋषभ जूहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरे, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानसुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वमू, ज्या वीशे जिन पाय ॥ वैभारकगिरि ऊपरे, श्रीवीर जिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ माम्डवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ ऋषभ कहे जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवदन ॥

दु विध धर्म जिन उपदिस्यो, चोथा अभिनंदन ॥ वीजै जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दु विध ध्यान तुम्हे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया वीज दिन ॥ २ ॥ दोय बधन राग द्वेष, तेहने भवि तजिये ॥ मुझ परें शीतल जिन कहै, वीज दिन शिव भजिये ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनु, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परें, लह्यो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहियें ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहियें ॥ ॥ ५ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिनकल्याण ॥ बीज दिने केइ पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनत चोवीशीयें, हुआ बहुत कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगडै बैठा वीरजिन, भाखै भविजन आगै ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो भवि भावसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहालो ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरसा लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच माशनी, पचमी करो शुभ द्रष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, कानसग्ग लोगस्स केरो, ऊजमणूं करो भावशुं ए, टाले भव फेरो ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणो भाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी वरे, रगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण वदि आठमें, संभव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमे, जनम्या ऋषभजिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करया दूर ॥ अभिनंदन चोथा प्रभू, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-रावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥ नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमीगति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदिनी आठमें, नमि जन्म्या ज [illegible] म श्रावण [illegible] तेम पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥

स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें, सेवतांथी शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीनु चैत्यवंदन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभु केवल पायो, संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमलद्विज यज्ञ ॥ इंद्रभूति आदे मिल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशनें चउ गुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदियें, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलाशी ॥ रुषभ अजित सुमती नमी, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिव वास पास, भवभवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सगली जोडी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रें त्रिहु कालना, देहसे कल्याण ॥ वरश इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखावियें, एकादश पाठा ॥ पूंजणी ठवणी वींटणी ॥ मसी कागल काठा ॥८॥ अग्यार अव्रत छांडवा ए, वहो पडिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिब देव, अरिहंत सकलनी भाव धरी करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर भाषित वाणी, जयवंती आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (यह थुई च्यार वखते पण कहवाय छे)

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतर मा प्रभु, जासे शिववहु पासे जी ॥ १ ॥ बत्रीस चउसठि

चउसठि मलिया, इगसय सठि उक्किठा जी॥ चउ अम अम मिली मध्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चउ च्यार जघन्य दश जंबू, धायई पुरकर मझारे जो ॥ पूजो प्रणमो आचारागे, प्रवचनसार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरव श्रुत रचिया, गणधर लब्धि विकसिया जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगी, विविध जंग व्रतधारी जी ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश ऋद्धी जी ॥ श्रीशुभ वीर कहे शिवसाधन, कार्य सकलमा सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्रणमें चंद्रतणी जिहा रेख ॥ तिहा चइ विमानें शाश्वत जिनवर जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें दिन प्रणमु ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजे द्विविध धर्म भगवंत, जेम विमला कमला विपुल नयण विकसंत ॥ आगम अति अनुपम जिहा निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कीजे पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्केसरी केसरी सरस सुगध सरीर ॥ करजोडीबीजे हुं प्रणमुं तस पाय, इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पचमी ए, जनम्या नेमजिनंद तो ॥ स्यामव-

रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आउखो ए, ब्रह्मचारी भगवत तो ॥ अष्ट करम देले हणी ए, पोहता मुक्ति मझार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या मुक्ति मझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमा वलीए, श्रीवीरतणु निर्वाण तो ॥ समेत-शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, भाखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलमी ए, कीजै तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनत तीर्थंकर इम कहे ए, परहरियै परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष भलो ए, देवी श्रीअंबिका नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥ तपगच्छ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिषभदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराजाजी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, करता शिवसुख साधे जी ॥ आठमनु तप करता अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुता जिनवर, फरस आठ नहि अग जी ॥ आठमनुं तप करता अम घर, नित्य२ वाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजे, समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठ सो आगम भाखी, भवि मन संशय भाजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरतीचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा करीने, मानवभव फल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजैजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजै, निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, तपथी, कोड कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व मोटुं, कहो मुजसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणा, एकशो ने पचास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कही ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौवीश जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखावियें, अगियार पाठा सार ॥ अगियार कवली विंटणा, ठवणी पूंजणी सार ॥ चाबखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी इम ऊजमो, जेम पामिये भव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ भुजदंड चंड अखंड जेहनें, समरता सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शीश, शासनदेवी विघन निवारो, संघतणा निश दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्याविभो शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मया, हृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रभा धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्त्रंयस्यपुन.पुन.सजयति, श्रीवर्द्धमानोजिन. ॥ १ ॥ हंसासाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांभोभृतै· ॥ कुंभैरप्सरसांपयोधरभर, प्रस्पर्धिभि· ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्माभिषेकैःकृतः ॥ सर्वै. सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोहं क्रमात् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशाल ॥ चित्रंबह्वर्थयुक्तंमुनिगणवृषभै, र्धारितंबुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं,व्रतचरणफलं, ज्ञेयभावप्रदीपं ॥ भक्त्यानित्यंप्रपद्ये श्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचंद्राभदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-दिव्यनागविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्ष सर्वानुभूति र्दिशतुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धि ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकद सर्वज्ञि स्तुति ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतिंतउ नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयास सुगणिक्कठाण, भत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं, पत्ताशिव दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुरविंद विंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाण कप्प, पणासियासेस कुवाइदप्प ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदु गोखीर तुसारवन्ना, सरोज हत्था कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्ग हत्था ॥ सुहा यसा अम्ह सयापसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणुं, तारामांहे जिम चंद्र वखाणुं, जलधर मांहे जल जाणुं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम हंश, कुलमांहे जिम रुषभनो वंश, नाभितणो जे अंश ॥ क्षमावंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्मप्रभ सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी, शीतल

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शाती, कुंथु अर मल्लि नमु एकाती, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथी ॥ नमी पास ने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ १ ॥ भरतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषभ कहे सुणो भर तराय, छहरी पालंता जे नर जाय, पातिक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इण गिरि आवै,, भवत्रीजे ते सिद्ध ज थावै, अजरामर पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमाहे आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवनतणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरति ठावै, नाभिराय मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुख नें चक्केसरीदेवी, शेत्रुजय सार करै नित्यमेवी, तपगछ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, रुपभदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुति ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी, रूपाना कोशीसा विराजै रत्नना दीवा दीपे जी ॥ कुंकुंमवर्णी गहुंली विराजै मोतीना अक्षत सार जी, त्या वैठा सीमधरस्वामी बोले मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचदन भरी रे कचोली कस्तूरी बराश जी, पहलो रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमतें परभात जी॥

॥ अथ पचिंदिय संवरणो ॥

॥ पंचेंदिय संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इय अठारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुत्तो, छत्तीस गुणेहि गुरूमझ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

- ॥ सामाइयवयजुत्तो, जावमणेहोऽनियमसजुत्तो ॥ छिन्नइअ सुहंकम्मं, सामाइयजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाइअंमिउकए, समणो इवसावहहवइजह्मा ॥ एएणकारणेण, बहुसोसामाइयंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधें लीधु विधे पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सवे हु मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कड ॥ दश मनना दश वचनना बारे कायाना एवं बत्तीस दूषणामाहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कड॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चदवर्डिसोसुदसणोधन्नो ॥ जेसिपोसह पडिमा, अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा, सुलसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिपसंसइभयव, दढवयतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधुं विधे पारियुं विधि करता जो कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवदन ॥

॥ इच्छाकारेण सदिस्सह भगवन् चैत्यवदन करू, इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगभाव वियक्खण ॥ अठावय सठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीस पि जिणवर जयंतु, अप्पडिहय शासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहि२ पढम सघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लब्भई ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ सपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोडिहिं चरनाण ॥ समणहकोडी सहस दोअ, थुणि अ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंत्तुंजि उज्जित पहू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंडण, भरुअच्छहि मुणिसुव्वय ॥ महुरिपसा

इह तुरिय खंमए, अवर विदेहि तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंदु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छपन्न अठ कोमीउ, बत्तीसय बासीआइ, तिय लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लक्ख अम्वन्ना ॥ छत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंबाइ पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुजय, अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निवि त्तिगिछा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वछल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिसमईहिं तिहिं गुत्तीहि ॥ एस चरित्ता यारो, अठविहो होइनायबो ॥४॥ बारसविहंमिवि तवे, अभिंतर बाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायबा सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ काय किलेसो संली ण याय, बज्जो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायछित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सझाउ ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अभिंतर उ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायबो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंताशुकेशर ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मपुनातुव ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनद्रोः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं॥

अपूर्वचंद्र जिनचंद्रजापितं, दिनागमे नौमिगुवैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवताना स्तुति ॥

सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं० सुअ देवया जगवई, ना णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सयय, जेसिं सुअसायरे जत्ती १

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहि चरण सहिएहिं ॥ साहं ति मुरकमग्गं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने श्रा वक श्राविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहेरी ज ग्या पूजी कटासण ऊपर बेशी मुहपत्ती मावा हाथमा मुख पासे राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी अन्नछसिएणं कहे, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो काउ सग्ग करे (पारी) प्रगट लोगस्स कहे, खमासमण देई इच्छाका रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुंहपत्ती पडिलेहु इच्छं । इम कही मुंहपत्ती तथा अंगनी पडिलेहणना पचास बोल कही मुहपत्ती प डिलेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामा यक संदिस्साउं इच्छं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठाउं इच्छं । एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी इच्छाकार जग वन् पसाय करी सामायकदंडक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख व डेल करेमिजंते कहे, पठी खमासमण देई इच्छा० बेसणो संदिसा उं । खमा० इच्छा० बेसणोठाउं, खमा० इच्छा० सिझाय, संदिस्साउं खमा० इच्छा० सिझाय करु इच्छं, एम कही त्रण नवकार गणवा । पठी बे घडी सझाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ इरियावही पमिकम्याथी (यावत्) लो गस्स सूधी कही खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पमिलेहुं एम कही मुंह पत्ती पमिलेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति, वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपार्युं तहत्ती कही पछी ज मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव कार गणी सामाइयवयजुत्तो० कहिए, पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार वानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजे, पछी पाणी वावर्युं होय तो मुहपत्ती पमिलेहवी अने आहार वावर्यो होय तो वांदणा बे देवा, तिहां बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहिवो, पछी यथाशक्ति पच्चरकाण करवु, पछी खमासमण देई इच्छा० कही वमेरायें अथवा पोते चैत्यवंदन कहवुं, पछी जंकिंचि० नमोत्थुण० कही ऊना थईने अरिहंतचेइयाण० कही एक नवकारनो काउसग्ग करी नमोर्हत्० क हीनें प्रथम थुई कहवी, पछी लोगस्स० सवलोए अरिहंतचेइयाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीनें बीजी थुई कहवी, पछी पुरकरवरदी० कही सुअस्सजगवन करेमिकाउसग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थुई कहवी पछी सिद्धाणंबुद्धाणं० कही वेयावच्चगराण० करेमि काउसग्ग अनत्थ० कही एक नवका रनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही चोथी थुई कहवी पछी बेसीनें नमोत्थुणं कहै, पछी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुन्न प्रते थोजवंदन करीयै. पछी इच्छाका दैवसिक प्रतिक्रमणगवान एम कही ‥ चवला ‥

समा ऊपर थापीने इच्छं सवस्सवि देवसिय० कहेवुं, पछी ऊजा थई करेमिजंते इच्छामिठामिकाउसग्ग जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कहीने अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो, आठ गाथा न आवमे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो. ते काउसग्ग पारीनें लोगस्स कहेवुं, पछी बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेहीने वांदणा बे देवा, पछी ऊजा थईने इच्छाकारेण० देवसियं आलोउ इच्छं आलोएमि जोमेदेवसिउ० कहीने सातलाख कहवा पछी अढार पाप स्थानक आलोइये, सवस्सविदेवसिअ कहीने बेसवु, बेसीनें एक नवकार गणी करेमिजंते इच्छामिठामिपमिक्कमिउं कहीने वंदित्तु कहेवु पछी वादणा बे देवा, पछी अप्नुठ्ठिउमिअप्निंतर देवसिअं खामीनें वादणा बे देवा, पछी ऊजा थई आयरियउवज्राए कहीने करेमिजंते० इच्छामिठामि० जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कही बे लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने लोगस्स कही सघलोए अरिहंतचेइयाण वंदणवत्ति० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने पुरकरवरदी० सुअस्सज्ञगवउ करेमिकाउसग्गं० वदण० कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने सिद्दाणंबुद्दाण० कही सुयदेवयाए करेमिकाउसग्गं अनत्तु० कही एक नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहेली थुई कहवी अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी पछी खेत्रदेवतानी बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी पछी १ नवकार प्रगट गुणी बेसीने छठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेहीनें बे वादणा दीजें, पछी सामायक चउवीसत्थो वंदनक पमिक्कमणुं काउसग्ग अने पच्चरकाण करूछुजी एम ए छए आवश्यक संजारवा. पछी इच्छामो अणुसठि नमोखमासमणाणं० कही नमोर्हत् कही पुरुष

नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण थुई कहे पछी नमोत्थुणं कही स्तवन कहवुं, पछी वरकनक कही नगवान आदे वांदवा, पछे जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं, पछी देवसिअपायछित्तनो काउसग्ग च्यार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो करवो, काउसग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही बेसीने खमासमण देई इच्छा० सिज्झायसदिस्साउं, बीजुं खमासमण देई इच्छा० सिज्झायकरूं एम सिज्झायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी सिज्झाय कहवी, पछी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःखक्खयकम्मक्खयनो काउसग्ग च्यार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो, ते एक बचेरे अथवा पोत पारीने नमोऽर्हत्कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे, पछी इरियावही० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी चउक्कसाय० नमोत्थुणं० कही जावंति बे कहीने उवसग्गहरं० जयवीयराय कही मुहपत्ती पडिलेहवी पछी इच्छामि० इच्छाका० सामायकपारुं यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका० सामायकपार्युं तहत्ति कही पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी एक नवकार गणीने सामाइयवयजुत्तो० कहेवु, पछी थापेली थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी प्रतिक्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम पूर्वली रीते सामायक लेवुं पछी इच्छामि० इच्छाका० कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहवो, पछी खमासमण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सूधी कहेवु, पछी

च्यार खमासमणपूर्वक जगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधु प्रत्येके वांदवा, पठी खमासमण बे देई सद्यायनो आदेश मांगी एक नवकार जणीने जरदेसरनी सद्याय कहीने फरी १ नवकार गणवो, पठी इच्छकारसुहराईनो पाठ कहवो, पठी इच्छाका० राईपडिक्कमणोठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर थापीने पठी इच्छं सव्वस्सविराईय डुच्चितिय० कही नमोत्थुण तथा करेमिजंते कही इच्छामिठामिकाउसग्गं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सवलोएअरिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, पठी पुक्खरवरदी० सुअस्स० वदणव० कही अतीचारनी आठ गाथानो अथवा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग पारी सिद्धाणंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा तिहांथी लेने अप्रुठ्ठिओमिखामी वादणा बे दीजे तिहां सूधी देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवे ते ठिकाणे राईयं कहेवु, पठी आयरियउवझाए० करेमिजंते० इच्छामिठामि० तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी करता न आवडे तो च्यार लोगस्स अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स कही ठठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वादणा बे देवा, पठी सकल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पच्चरकाण करवु, पठी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् सामायकचउवीसत्थो वंदनक पडिक्कमण काउसग्ग पच्चरकाण करयु ठेजी, एम ठ आवश्यक संजारवा, पठी पच्चरकाण करवुं होयतो करवुं ठेजी अने धारवु होयतो धारवु ठेजी, एम कहवुं, पठी इच्छामोअणुसठि० नमोखमासमणाण० नमोर्हत्० कहीने विशाललोचन० नमोत्थुणं० अरिहंतचेइयाण० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही कल्याणकंदनी प्रथम थोय

कहवी, पछी लोगस्स० पुक्खरवरदी० सिद्धाणबुद्धाणं कही अनुक्रमे च्यार थोयो कहवी, पछी नमोत्थुणं कही जगवान् आदि चारने च्यार खमासणे वांदवा, पछी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अढाइज्जेसु कहेवु पछी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवीराय० काउसग्ग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पछी खमासणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय काउसग्ग० अने थोय कहवी, पछी सामायक पारवानी विधिये सामायक पारवुं इति ॥

॥ अथ पख्की प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमा वंदित्तु कही रहिये तिहांसूधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हत्नुं कहेवुं अने थोयो स्नातस्यानी कहेवी, पछी खमासमण देईने इछाकारेण संदिस्सह जगवान् देवसिय आलोइयपमिक्कंता इछा० पक्खियमुहपत्ती पमिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पमिलेहीये, पछी वांदणा वे दीजे, पछी इछाकारेण० संबुद्धाखामणेणं अप्नुठिओह अप्रितर पक्खियंखामेउं इछं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाण पन्नरसराइयाण जंकिंचिअप्पत्तियं० कही इछाकारेणसं० पक्खिअंआलोएमि इछं आलोएमि जोमेपक्खिउअइयारोकउ कही इछा० पक्खी अतीचार आलोउं. एम कही वृद्ध अतीचार कहीये, पछी एवंकारे श्रावकतणें धर्मे श्रीसमकितमूलबारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमाहे जे कोई अतीचार पक्षदिवसमाहे सूक्ष्म बादर जाणता अजाणतां हुउ होय ते सवे हुं मनकर वचनकर कायायेंकरी मिछामिछुक्कमं ॥ सवस्सविपक्खिअ छुच्चिंतिअ छुप्नासिय छुच्चिठिय इछाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स मिछामिछुक्कमं ॥ इछाकारिजगवन् पसाउ करी पक्खी तपप्रशाद कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पवाश बेआंबिल त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठबेआसणा बेदआर सझाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करचो होयतो पछी कहीए, करवो होयतो तहत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोल्या रहीये पछी वांदणा बे दीजे, पछी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अप्पुठिहं अप्भिन्तर पक्खिअं खामेउ इच्छं खामेमिपक्खिय पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पछी वांदणा बे दीजे पछी देव-सियआलोइयपडिक्कता इच्छाका० जगवन् पक्खियंपडिक्कमुं सम्मपडि क्कमामि इच्छ एम कही करेमिजंतेसामाइय० कही इच्छामिपडिक्क मिउं जोमेपक्खित्त० कहवो पछी खमासमण देई इच्छाका० प क्खीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण नवकार गणीने श्रावक वदित्तु कहे, पछी सुयदेवयानी थोय कहवी पछी हेठा बेसी जमणोढींचण ऊजो राखी एक नवकार गणी क रेमिजंते० इच्छामिपडि० कही वंदित्तु कहेवुं०, पछी करेमिजंते इ च्छामिठामिकाउस्सग्ग जोमेपक्खित्त० तस्सउत्तरी० अन्नत्थू० कहीने (१२) बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल यरा सूधी कहवा अथवा अमतालीस नवकारनो काउस्सग्ग करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंहपत्ती पडिलेहीने वांदणा बे-दीजे, पछी इच्छाका० समाप्तिखामणेणं अप्पुठिहं अप्भिंतर० पक्खिअखामेउ इच्छ खामेमिपक्खिअं पन्नरसदि० कही पछी खमा समण देई इच्छाका० कही पक्खीखामणाखामू एम कही खामणां च्यार खामवा पछी देवसीप्रतिक्रमणामा वंदित्तु कह्या पछी बे वां दणा देईने तिहाथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व देवसीनी पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी स्तवन अजितशांतिनुं कहवु, सझायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा ससारदावानी थुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोटी

शांति कहेवी ॥ इति पक्खी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कह्या प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो विशेष, बार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउसग्ग करवो अने पक्खीना आगारने ठिकाणे चउमासीना कहवा, यथातपने ठेकाणे छठ्ठणं बे उपवास च्यार आंबिल छनीवी आठ एकाशणा शोल बेआसणा च्यारहज्जारसझाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण पक्खीना बार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एक शो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अठ्ठमभत्त एटले त्रणउपवाश छआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश बेआसणा अने छहज्जार सिझाय ए रीते कहवुं अने पक्खीना आगारने ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधो ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पडिक्कमवी थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पछी उस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही उभे पगे बेसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउ कंदोरो आदिनुं पडिलेहण करवु, पछी काजो काढी जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उभो रही इरियावही पडिक्कमे पछी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार अणुजाणहजस्सुग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण चार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुज्नक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, ज्नक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

(॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥) सुत सिद्धारथ ज्नूपनो रे, सिद्धारथ ज्नगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, ज्नाखे श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ ज्नवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान ज्नक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतमतणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमा पण ज्ञानज वडु रे, जिणथी दंसण होय रे ॥ ज्न० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिवरपणुं लहे रे, आचारज उवज्झाय रे ॥ ज्न० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वह्नि जेम इंधन दहे रे, क्षणमा ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज्न० ४ ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणाग पगथालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासोरे ॥ ज्न० ५ ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज्न० ६ ॥ तेहना साधन जे कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवेरे, धर्मी धरी अप्रमादो रे, ॥ ज्न० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज्नणता करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबमा रे, मुंगा पांगुल थाय रे ॥ ज्न० ८ ॥ ज्नणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लज्न चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज्न० ९ ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, कहो अधिकार पसायो रे ॥ ज्न० १० ॥ इति ॥

(॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥)

जंबुद्वीपना भरतमा रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें भणवा मूंकिओ रे, आठ वरस जव हुतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, छात्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढें व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमा रे, सिंहदास धनवत रे ॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल वरसनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ डुर्जग पण परणे नही रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे, विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक जूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्मदेशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ए ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे, मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसै डुःखीया दीन रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥ श्रेष्टी पूछे मुणिंदने रे, जाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

(ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमा)

... मां, खेटक नयर सुगाम

जिनदेव वै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच, सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासे सीखवा, तातें मुंक्या कुमार ॥२॥ बालस्वभावें रामतें, करतां दहाका जाय ॥ पंमित मारे जादरे, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवे, भणवानुं नही काम ॥ पांच्यो आवे तेमवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने डाख ॥ ५ ॥ पाम्या परे मोहोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुऊ करणी जोय ॥ ६ ॥ झटकी भाखे भामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छे सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे तादरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुऊ बेटी उपनी, ज्ञान विराधन हेव ॥ ए ॥ मुर्छागत गुणमजरी, जातीसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्वल पंचमी सेवो, पच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरब उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादि उदार ॥१३॥ दीवो पंच दीवटतणो, साथियो मंगल गेह ॥ पोसहमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौभाग्यपंचमी, उज्वल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेविये, उजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

(॥ ढाल चोथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥)

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे, पाटी-पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, काबी खमिया लेखणी॥

कवली काबली रे, चंद्रुआ ऊरमा पुंजणी ॥ १ ॥ (त्रूटक) प्रासाद प्रतिमा तास जूषण, केसर चदन काबली ॥ वासकूंपी वाला कूंची, अंगजूहणा गवमी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरती नें धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती सादमी वच्छल, नोकरवाली थापना ॥ ॥ २ ॥ (ढाल) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप संयुत रे, गुणमंजरीयें सद्दह्या ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग रे ॥ रोग ऊपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ (त्रूटक) मुनिराज जासे जंबुद्वीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु मव्या ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म धामी संवरया ॥ ४ ॥ (ढाल) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे, अशुन्न उदय थयो अन्यदा, संथारे रे, पोरसी जणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ (त्रूटक) सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मागे वायणा ॥ ऊंघमां अंतराय थाता, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या जूतमो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जरयो पापतणो घमो ॥६ (ढाल) मन चिंतवे रे, का मुऊ लाग्युं पाप रे ॥ श्रुत अन्यासे रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुऊ बांधव रे, जोयण खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ (त्रूटक) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुन्न ध्याने आयु पूरी, जूप तुऊ नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जम पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्द बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुन्न मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दीवमो ॥ गुण अवगुण रे, जासन जे जग परवमो ॥ ए ॥ (त्रूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवशे ॥ गुरु कं
तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावशे ॥ नृप पभणें पुत्रने प्र
तपनी शक्ति न एवशो ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संप
व्यो वेवशो ॥ १० ॥ इति ॥

(ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥)

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, भेदी साते धात ॥ तपसुं रंग लागो, गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसरयो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नृपें कीधो पाट वी रे, आप थयो मुनि भूप ॥ त० ॥ भोग कांत गुणें करी रे, वर दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, भोगवै भोग अखंम ॥ त० ॥ वरसें२ ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंम ॥ त० ॥ ४ ॥ भुक्तभोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥ गुणमजरी जिनचद्रने रे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे, गुणवत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो भेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या भ रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहा पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित भूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु भापुरी रे, जंबुविदेह मझार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयत थकी चवो रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धरयुं सु ग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३॥ पंचमी तप महिमा विषे रे, न्नाषे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४॥ इति ॥

(ढाल छठी ॥ करकडुने करुं वंदना ॥ ए देशी)

चोवीश दंरूक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे, हूं वारी लाल ॥ प्रगव्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसला उर सुखकंद रे ॥ हु० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आं-कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे, हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धातमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे, हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधरयो, हुं० ॥ चंरूकोसियो साप रे, हुं० ॥ यज्ञ करंता बांह्मणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हु० मा० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषन्नदत्त वली विप्ररे, हुं० ॥ न्यासी दिवश संबधथी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं० मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हु० ॥ सवि ओषधनो जाण रे, हुं० ॥ आदरयो में आसा धरी, हुं० ॥ मुफ ऊपर हित आणि रे, ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीतनो, हु०, सत्यविजय पन्यास रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हु० ॥ चंद किरण जस जास रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पञ्चासरा सान्निध्धे, हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुफ हजो, हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ (कलश) इय वीर लायक विश्व नायक सिध्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर त्राणुं संवत्सरे, श्रीपार्श्व जन्मकल्याण दिवसें सकल न्नवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे गाम धरमना साढापचवीश देश जो, दीपे रे त्यां देस मगध सहुमा शिरे रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चउद सहस मुनिवरना साथे साथ जो, सूधा रे तप संयम शियले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूल्या रसन्नर फूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हसि रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतुर्विध आवे कोमाकोम जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनु ते रचे रे लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोम जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जड्या रे लो ॥ हां० सुणतां डुंडुभि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे घन जेम लूंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी हरखी आवे जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पडे धोखे नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० दइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे न्नायगे रे लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननायक लायक तव भगवत जो, आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो॥ ८ ॥ इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥ मोहनी नींदमां का पमो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, (ए आंकणी) परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापमा पंच परमादथी, कां पमो कुगतमा धाय रे ॥ वि० २ ॥ करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परन्नवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह न्नणी एह आराधतां, प्राणिङ सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतमस्वामि रे ॥ न्नविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीरप्रन्नु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लान्न होय आठ पमिहारनो, अठ पवयण फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संन्नवतणो एह तिथें, अन्निनंदन निर्वाण रे ॥ ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे ॥ पासजिन एह तिथें सिद्धा, सातमा जिन च्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिऊ, दंमवीरज लह्यो मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा न्नणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अन्न्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

भांखियो वीरे आठमतणो, भविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें भव्यरी प्राणिया, पामसे भवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोड़ रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोड़ रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) एम त्रिजग भासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी संथुण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे भण्यो रंगे स्तवन ए आठमतणो, जे भविक भावे सुणे गावे कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरया ॥ जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोड़िसुं परिवरया ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, भक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंभ परिग्रहे ॥ जगपति मुझ आतम उद्धार, कारण तुम विन कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुझ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताय, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पचाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥ ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥ नरपती वर्त्तमान चोवीशी, मांहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धा- ं, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

न्निधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रवती तास, चन्द्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्टी शुर विख्यात, शोयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नूषण चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करे ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति (ढाल बीजी) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ विनयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाधे जिम वम्वीज, शुन्न अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि न्नाषे महान्नाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, नजवी तप शुनगे री ॥ ४ ॥ सान्नलि सकुठ वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी न्नजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांन्नल केशवराय, आगलि जेह थसे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमा सेठ, समृद्दत्त वसे री ॥ प्रीतिमती प्रिया तास, पुण्यें जोग जम्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित शुन्न स्वप्ने री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नाल निक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्न्न दोहद अनुन्नाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक न्नण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥ ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चस्काण धरे री ॥ अगियार कंचन कोम्, नायक पुण्य न्नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अधिकार कहे री ॥ सान्नलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, न्नक्तें तप उच्चरे री ॥ एका-

जांखियो वीरे आगमतणो, जविक हित एह अविकार रे ॥ जिन मुखें नच्चरी प्राणिया, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोम रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोम रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) एम त्रिजग जासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी संथुण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे जएयो रगे स्तवन ए आगमतणो, जे जविक जावे सुणे गावे कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृह स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरचा ॥ जगपति वदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरचा ॥ १ ॥ जगपति वीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछै कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विन कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय वताय, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पचाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥ ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥ नरपती वर्त्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

निधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार भूषण चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करे ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति (ढाल बीजी) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ विनयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुझ दिन एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाधे जिम वमबीज, शुभ अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि भाषे महाभाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शुभगे री ॥ ४ ॥ सांभलि सद्गुरु वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांभल केशवराय, आगलि जेह थसे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्दत्त वसे री ॥ प्रीतिमती प्रिया तास, पुण्यें जोग जच्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित शुभ स्वप्ने री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम मह शुकने री ॥ ८ ॥ नाल निक्षेप निधान, भूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्भ दोहद अनुभाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक भण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥ ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चख्काण धरे री ॥ अगियार कंचन कोम, नायक पुण्य भरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अधिकार कहे री ॥ सांभलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, भर्के तप उच्चरे री ॥ एका-

दशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ (ढाल त्रीजी) पत्नी सयुतें पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमा धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासनभक्त देवी शक्तें, थंभाणा ते बापमा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगल धरया राकमा जी ॥२॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ भेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूंकावी, शेठे कीधा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरमे आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे इठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, उगरी सहू प्रसंसा करे जी ॥ हरखे सेठजी तप उजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ॥ ५ ॥ पूत्रनें घरनो भार भलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउ नाणी विजय शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खटमासी च्यार चोमाशीं, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजा तप पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरें जी ॥ ७॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८॥ कर्मे नमियो पापे जमियो, सुर कहे जाउ औषधभणी जी॥ साधु न जाये रोष भराये, पाटु प्रहारें हणयो मुनि जी ॥९॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे श्यामनें जी ॥ १०॥ (ढाल चोथी) कान पयंपै नेमने ए, धन्य२ यादव वंश, जिहा प्रभु अवतरया ए ॥ मुझ मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥ ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हु नवमो वासुदेव ॥ जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गळ्यो ए, जाणु उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण हुं न करी सकुं ए, दुष्ट कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो वलियातणो ए, कीजे सीझे काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांभ ली ए, थाइ ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थाईस जिनवर बारमो ए, आवी चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य पुरंदर रेवताचल मंमणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे रा जनगरे संथुण्यो ॥ सवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि क्षमाविजय गणि, जिनविजय ज यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला फुलावे पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हाल रुवाना गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जम्यिुं पालणुं, रेसम दोरी घूघरी वागे घुमघुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रभुथी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली, साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज, बीता बारे चक्री नहि हुवे चक्रीराज ॥ जिनजी पास प्रभुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज, मारी कूखें आव्या त्रण भुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती ईंद्राणी थई आज ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुजनें दोहलो उपन्यो, जे बेसुं गजअंबाडीयें, सिंहासण-पर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुजने नंदन ताहरा ते-जना, ते दिन संभारूनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ छे, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जगें लंछन सिंह विराजतो, में पहेले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला चंचव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देवर छो सुकमाल, ह ससें जोजाइयो कही देवर माहरा लाडका, हसशे रमशे नें वली चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडाराजाना जाणेज छो, नंदन नवला पांचसें मामीना जाणेज छो, नंदन मामलिआना जाणेजा सुकमाल ॥ हशशे हाथै उछाली कहीने नाहना जाणेजा, आख्युं आंजीनें वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां, रतने जडिया झालर मोती कशबीकोर ॥ नीला पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे नंदन गजुवे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोईने लेशे मामी जामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥ ॥ ए ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंझे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लालटकानो घूघरो, वली शूडा मैंना पोपट नें गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मम्रले, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्याहि ॥ हा० १२॥ तमनें मेरुगिरिवर सुरपतिये नवराविआ, निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ॥ मुखडा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज ॥ पसली भरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखडली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूंने पधरावशुं, वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-रा बेउ पक्ष ऊजला, मादरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-हरे आंगण वूठा अमृत दुधे मेऊला ॥ मादरे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा नगरे वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिझाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करता न गणे मायबाप रे ॥ नि १ ॥ दुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगडां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, नींदानी मूको परी टेव रे, ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भरया रे, के-हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधु सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-जो आपणी रे, जेम छूटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-जो सहुको तणो रे, [illegible] देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख पामशो रे, [illegible] रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पमिक्कमवाथी मामीने यावत् लोगस्स कही पछी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्थुणं कही अरुधुं जयवी राय आजवमखंमा सूधी हाथ जोमी कहे, वली चैत्यवंदन कहीने नमोत्थुणं कही यावत् चार थोयो कहीये ठीये तिहा सूधी वधूं क हेवुं, पछी नमोत्थुण कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी वधूं कहेवु, पछी नमोत्थुणं तथा वे जावती कही स्तवन कही अरुधुं ज यवीअराय आजवमखमा सूधी कही पछी चैत्यवदन कही नमोत्थुणं कही आखो जयवीअराय कहेवो इहां सवारे देववाद्वा तेमा मन्ह जिणाणनी सझाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा साऊें देववादवामा सझाय न कहेवी ॥ इति देववादवानो विधि. ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधि. ॥

॥ प्रथम इरियावही पमिक्कमी काउसग्ग करी लोगस्स० क ही एक खमासमण देइ इछाका० श्रीऋषभजिन आराधनार्थं चैत्य वंदन करुं, एम कही चैत्यवदन करे ॥ (श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिख्यते) ॥ प्रथम जिनेसर ऋषभदेव, सवठ्यी चविया ॥ वदि चउथें आषाढनी, शक्रे सस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दि वसे प्रज्ञु जाया ॥ दीक्षा विण तिणहिज दिनें, चउ नाणी थाया ॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज्ञ ध्यान ॥ मह्रा वदि ते रशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहा नमोत्थुणं० अरिहंत चेइयाण० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी थुइ क्रमथी कहिये ते लखिये ठीये ॥ (॥ अथ थोय जोमो प्रारंज ॥) ऋषज्ञजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषज्ञ लछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु ठाया ते प्रज्ञु ध्यान ध्याया ॥ २ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया निरधार ॥ गिरि कंदरेँ आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिने ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगड सूत्र मझार, सिद्धाचले सीधा घोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार ॥ जिन भेटे आवे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्केसरी शासननी रखवाल, ए तीरथ केरी सानिध करे संभाल ॥ गिरुओ जस महिमा संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरी नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्थुणं जावंती बे कही नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उल्लगडी अवधार ललना ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीयें, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ० ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत भगवान ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें लहे, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जेहनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ भरतादिक थया केवली, अनुभव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाभिराय कुलमंडणो, मरुदेवी सर हंस ललना ॥ ऋषभदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषभजिन स्तवनं ॥ पछी जयवीयराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई इच्छा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी [illegible] चविया विजयंत ॥ माह [illegible]
छमें जनमिया, [illegible] ॥ माह शुदि नवमें [illegible]

पोदी इग्यारस ॥ उज्वल उज्वल केवली, थया अक्षय कृपारस ॥ वैशाख शुक्र पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल कविरायनो, नय प्रणमें धरी नेह ॥ ३ ॥ इति ॥ पठी नमोत्थुणं अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काउसग्ग करके थुईनी गाथा कहै इसी तरे सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कचन जरीनो ॥ जविक जन नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हु तुऊ पद लीनो, जेम जल माहे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति अजित थोय ॥ ॥ अथ श्री शंजवनाथ चैत्यवंदन ॥

सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री शंजव ॥ फागुण सुदि आठम दिनें, शुदि चवदशी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासें जनमीया, तणी पूनम संजम ॥ कार्त्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरूपम ॥ २ ॥ पचमी चैत्रनी ऊजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥ ज्ञानविमल प्रजु प्रणमता, सीऊै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथथोयप्रारज्यते ॥ जिन शंजव वारू, लंठने अश्व धारू ॥ जवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र वारू ॥ सुर तरुपरी वारू, उसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अजिनंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानथकी चव्या, अजिनंदनराया ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारशे अदिय दिरक, पोप सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥

॥ अथ स्तुति प्रारज्यते ॥ ॥ अजिनंदन वंदो, साम्यमाकंद कंदो ॥ नृप संवरनंदो, घर्षिताशेषफंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंठने

वानरिंदो ॥ जस आगल मदो, सौम्य गुण सारदिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ श्रावण सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं, पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संजम ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्यारश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें, नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोडि कापे ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापे ॥ अविचलपद थापे, जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावें, जो प्रभुध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रभु चैत्यवंदन ॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठदिवसें ॥ काती वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखे ॥ वदि तेरस संजम ग्रहे, पद्मप्रभस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, वलि शिवगति पामी ॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ पद्मप्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधू मनावे, रक्त तनु कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य पावे ॥ प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि थावे ॥१॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ छठा ग्रैवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥ भादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसो जण्या, तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंन ॥ ज्ञानविमल सूरि नि लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्य फले कामित आशे, नामथी दुःख नाशे ॥ म

हिम मदि प्रकाशो, सातमा श्रीसुपार्स ॥ सुरनर जस दास, संप दानो निवाश ॥ गाय ज्ञवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञ जिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आठमा, चंद्रप्रज्ञ शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रेह ॥ पोष वदि वारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण वदिनी सातमें, केवल निराबाध ॥ ज्ञाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अष्ट महासिद्धि संपजे, नय कहे जिनअज्ञिधान ॥ १ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॥ शुज्ञ नरगति पामी, उद्यमें धर्मे धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम स्वामी ॥ सुरु अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति [illegible], [illegible] पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥ गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्फदंत ॥ फागुण वदि नवमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस छठें दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शुदि नवमी ज्ञाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीर विमल सेवक कहे, ए नमता सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ सुविधि जिन ज्ञदंत, नाम वलि पुष्फदंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतश्री जेह संत ॥ कीयो कर्म डुरंत, लद्धि लीला वरंत ॥ ज्ञव जलधि तरंत, ते नमीजे महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतकल्पथकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी छठे, आणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि वारस जनम दिख्या, तस वारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ वदि बीजे वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिनराजथी, सीके सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय

प्रारभ्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तूंही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम छै नित्य मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठ, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह अमावशि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसुख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए जगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ सवि जिन अवतंस, जास इक्षागवंश ॥ विजित मदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतजय विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ नृपजन ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश ॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया, ज्येष्ट सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥ माह शुदि बीजे केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमता सुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीजयादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस गुण अवदात, शीत जाणें निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यावता दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माघव सुदि बारस ॥ शुदि मह त्रीजें जणया, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष छठें लह्या, वर निर्मल केवल ॥ व[illegible] आषाढनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वं[illegible] अमल करी चित्त ॥ जिन नितु दिये, [illegible] ॥ १ ॥ इति ॥

थोय प्रारभ्यते ॥ विमलश् जावे, वंदतां दुख जावे ॥ नव निधि घर आवे, विश्वमा मान पावे ॥ सुघर लंछन कावे, जोमि जरस्वेदथावे॥ मन विनति जणावे, स्वामिनु ध्यान ध्यावे ॥१ इति॥

॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥ वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चनदमाए, कीधा दु ष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते॥अनत जिन नमीजे, कर्मनी कोटि छीजे॥ शिवसुख फल लीजे, सिद्धि लीला वरीजे ॥ बोधिबीज मोह दाजे, एटलुं काज कीजे ॥ मुझ मन अति रीझे, स्वामिनु कार्य सीझ ॥ ॥ १॥

॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमाशनी, शुदि त्रीजें जनम ॥ तेरसमाही कजली, लिये सजमजार ॥ पोषिपूनमें के वली, गुणना भंडार ॥ जेठी पाचम कजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमता, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांइ भीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख कीनो, लंछने वज्र दीनो, नवि होय ने दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शातिनाथ चैत्यवंदन ॥ भाद्रवा वदि सातम दिने, सवथ्यी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जणया, दु-खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥ केवल वजलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम च क्री परवम्रा ए शोलमा श्री जिनराज॥जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, रास भय ईति वारी ॥ सहस चउसठि नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, माहे कर्पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें भाव लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद खट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्रा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुझ विलगो, पलक मात्र न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, झंम्यो पण तुम्हें नवि झंमाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशु नेह न लावो, वीतराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समझे, पण गैरु दीधाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्ति खाची मनमांहे आणयो, सहज स्वभावें पण में जाणयो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अके जाची ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ कनमें आव्या तो छूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजे ॥ सा० ॥ अभेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ ... निधी तुम पाश, आपी दा... पूरो आश ॥ ज्ञानि... प्रभुताई, दीधी साहब

झाई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंथुनाथ चैत्यवंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सर्वार्थथी चविया ॥ वदि चवदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी, लीये संजमभार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ पडिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ छठा चक्री जय करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥१७॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन कुंथु दयाला, लाग लगन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला, कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति भवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला ॥ त्रिभुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथथी आविया, फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जण्या, अरदेव नमीजे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल बारसें, केवलगुण वरियो ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रीने नमूं, नय कहे जोडी हाथ ॥१८॥ ॥ अथ थोय आरभ्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारुं, कर्मनो क्लेश वारू ॥ अहनिश संभारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत जयजयकारु, प्राप्त संसार तारुं ॥ नवि होय ते सारुं, आपणो आप तारुं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, जनम्या निर्ग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कल्याणक तीन ॥ फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर नीलडा ए, जगणीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणभूपपद, भव जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन मल्ली महिला, वान छै जेह नीला, ए अचरज ... पणें नाम पीला ॥ दुस्मन सवि पीड्या, स्वामि ज...

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लि स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपराजितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥ फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णे निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण ऊजला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनरनायक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ मुनिसुव्रतस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुज अंतरजामी कामदाता अकामी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्या सर्वदारामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचैत्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ श्रावण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढनी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अरकथ अनंता सुरक ॥ नय कहे श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःरक ॥१॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नदी विश्व ठानो ॥ सुत वप्रा मानो, पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंज वे जे कृपानो ॥ सवि भुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीनेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काती वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण सुदि छठे संजमी; आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी आठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमी अणपरणीया ए, राजीमतीना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥२२॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ , गया शस्त्रागारे, शंख निज हाथ धारे ॥ कियो नाद प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ हरि

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचारे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अम धातकीखंमे, सुरनर सारे सेव ॥ अम पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, भवजलनिधिने तारे ॥कोहादिक मोटा, मच्छतणा भय वारे ॥ जिहां जीव दयारस, सरस सुधारस दाख्यो॥ भवि भाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥३॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विमारे ॥ समकित दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो भव पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारम्भ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घमीया, दो घमीया दो चार घमीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज महिराण शिवादेवी जाया, तुमें हो आधार अमवमिया ॥ रहो० १ ॥ नाह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चमिया ॥ रहो० २॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, ठोम दीए पशु पंखी चिमिया ॥ रहो० ३ ॥ गोद बिठाउं में बली जाउं, करु वीनती चरणे पमिया ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवम, न गमे स्वपनमें सेजमिया ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन, वामी वन घर सेरमियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट भवातर नेह निभाव त, नवमें भव ते वीठमीया ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमाहे स्वामी सुणीने, राजुल रेवतगिर चमियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु करे निज शिरें हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलमिया ॥ रहो० ए ॥ जादव वंश विभुषण नेमजी, राजुल मीठी वेलमिया ॥ रहो० १० ज्ञान विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखमीया ॥रहो० ११ इति पद ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

कृष्ण चोथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदि दशमी ज-

नम, त्रिभुवन सुख पाया॥ पोष वदि इग्यारसें, लई मुनिवर पंथ॥ कमठासुर उपसर्गनो, टाळ्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथइ दिनें ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल सुख भरपूर ॥२३॥इति॥ ॥अथ थोय प्रारभ्यते॥ जलधर अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विसारे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनो कोडि वारे ॥ मुज आणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अनुभव जय लावे, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कल्याण, सप्रति जे प्रमाणे ॥ सवि जिनवर जाण, श्रीनिवासादि ठाण ॥ २ ॥ दशविधि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत्त प्रकार, पच्चक्खाणादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे भण्या जिहां उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला, जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयविमल विशाला, ज्ञान लच्छी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे माथे पंचरंगी पाग सोनानो छोगलो मारूजी ॥ प्रभु पास जिनेसर भुवन दिनेसर संकरो, साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो, सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुछवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥ तू अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमा, सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुम गुण भोगी ज्ञानमा ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी निजमतें, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० २ ॥ षट् दर्शन भासे युक्ति निरासें शासनें, सा० ॥ स्याद्वाद विशालें सहज समाजे भावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञाननें ज्ञानें आतमध्यानें आतमा, सा०॥ ...ी भेद अभेद नही त-

पर्वतायनम. ८ श्रीपर्वतेंद्रायनम. ए श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री शाश्वतायनम ११ श्रीदृढशक्तयेनम. १२ श्रीमुक्तिनिलायनम. १३ श्रीपुष्पदंतायनम १४ श्रीमहापद्मायनम. १५ श्रीपृथ्वीपीठाय नम. १६ श्रीसूरकांतगिरयेनम. १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री पातालमूलायनम १ए श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा यनम २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने पछे पाचतीर्थना पाच स्तवन कहवा ते लखिये छिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशी ॥

नीलमी रायणतरूतले, साहेलमिया ॥ पीलमा प्रभुजीना पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइये, सा० ॥ एहीज मुगति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतमी छायाये वेसीये, सा० ॥ रातमो करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल थई, सा० ॥ पहेरी व स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे, सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे भवे शिव लहे, सा० ॥ थाये निर्म ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे सार ॥ गु० ॥ अभंग प्रीति होए जेहनें, सा० ॥ भव२ तुम आ धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा थम्म ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाछे, सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें, सा० ॥ सेवो एहने उछाह ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु भाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम माहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाए कामे० ॥ ए चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करूं, हो लाल के ॥ सेव०॥

अहनिश ताहरु ध्यान के दिल माहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंख लंछन गुणखाण के अजन वान छे हो लाल के अं० ॥ राजिमतीना कंत के परण्या विणुअ छे हो० प० ॥ १ ॥ तूहीज जीवन, प्राण के आतमराम छे हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं नाम छे हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नदन नितु नितु वदता हो० नि० ॥ कीजोये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढ ऊपरै हो० र० ॥ पहरी शील सन्नाह उदास एली धरै हो० ऊ० ॥ सवि जिनवरमा स्वामि तुह्मे अधिकुं करयु हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी घोर महाव्रत आचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ भवातर नेह जे तेह उवेखीनें हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवा देखीने हो० पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमभार पहोचाड्यो पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते विरला सुण्या हो० ते वि० ॥ राजीमतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥ तुह्मे तो दीवा छेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जादवनाथ सनाथ करो मुझनें सदा हो० क० ॥ दिउ मुझ शिर हाथ होवे जेम सपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नही हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोडो दोडे सही हो० घो० ॥६॥ सबला साथे प्रीत निवाहने नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी जे थोडी किहा जाओ वही हो० कि० ॥ ले सज्जनसुं होय ते भीम न भंजीये हो० भी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मने मजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि गजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो० द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मलीनें कीजोये होलाल० म० ॥

॥ ८ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोंन राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥ ॥ आवो आवोनें राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइये ॥ श्रीजिनवरनी भक्ति करीनें, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चपक केतकी प्रमुख कुसमवर, कंठे टोडर ठवियें ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें -पासें लूणग वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखो, दुःख दो हग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २॥ सिद्धाचल श्रीऋषभ जिनेसर, रैवत नेम समरिये॥ ए दो वसीनी यात्रा करता, विहुं तीरथ चित्तधरिये ॥ आ० ३ ॥ मंडप मंडप विविधि कोरणी, निरखो हियडै ठरियै ॥ श्रीजिनवरना बिंब निहाली, नरभव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥ अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुभकरम सब हरिये ॥ पाश शा ति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो डुगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे चढता उजम वाधे, जेम धोमें पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के शर, पापपडल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकण ध्यानें प्रभुनें ध्या तां, मनमाहे नवि डरिये, ज्ञानविमल कहे प्रभु सुपशायें, सकल सय सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकु, रावण प्रतिहरी आया ॥ पु ष्पक नामें विमाने बेशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १॥ श्रीजिन पूजियें लाल, समकित निर्मल कीजें ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरभव सफलो कीजे ॥ हीयडै हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ (आंकणी) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन बेठा ॥ च उदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरब दिशि दोय जिठा ॥ श्री० २

॥ संभव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तरदिशि जाणो, एव जिन चउवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वेंग सिद्धतणे आकारें, जिनहर भरते कीधा ॥ रयणबिंब मूरत थापीनें, जग जशवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मदोदरी राणी नाटक, रावण तांत बजावे ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावे ॥ श्री० ५ ॥ भक्तिभावें एम नाटक करता, तूटी तंत विचालें ॥ साधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासु ततकालें ॥ श्री० ६ ॥ द्रव्य भावशु भक्ति न खमी, तो अक्षयपद साध्यु ॥ समकित सुरतरु फल पामीनें, तीर्थंकर पद लाध्यु ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें भविजन जे जिन आगे, बहुपरे भावनाभावें ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अहनिश, सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ८ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि भेटीये रे, मेटवा भवना पास ॥ आतमसुख वरवा भणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ भवियां सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ भवि० से० १ ॥ (आकणी) समेतसिखर कलपें कह्यो रे, वीश टुंक अधिकार ॥ वीश तीर्थंकर शिव वरया रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ भ० से० २ ॥ सिद्धक्षेत्र माहे वस्या रे, भाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूप-मांहे रे, दोय नय प्रभुजीना साररे ॥ भ० से० ३ ॥ आगमवचन विचारता रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्याद्वाद रे ॥ भ० से० ४ ॥ जयरअरायनणी परे, जात्रा करो मनरंग ॥ भवदु खने देइ अजली रे, थायें सिद्धवधूनो संग रे ॥ भ० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय ॥ भवहेतु किरिया त्यागथी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ भ० से० ६ ॥ जेह समें समकित थयो रे, तेह समये दोय नाण ॥ ज्ञान

विमल गुरु भाखियो रे, आवश्यकभाष्यनी वाण रे ॥ भ० से०
॥ ७ ॥ इति चौमासी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरभेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोछव कीजै जी ॥ ढोल दमामा भेरी नफेरी, झल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन आगल भावना भावी, मानवभव फल लीजै जी ॥ परव पजूसण पूरव पुन्यें, आव्या इम जाणीजे जी ॥ १ ॥ मास पास वली द-शम दुवालश, चत्तारी अठ कीजे जी ॥ ऊपर वलि दश दोय करीनें, जिन चौवीश पूजीजे जी ॥ वडाकल्पनो छठ करीनें, वीर-वखाण सुणीजे जी ॥ पडवाने दिन जन्म महोछव, धवल मंगल वरतीजे जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावो, अठमनुं तप कीजे जी ॥ नागकेतुनी परे केवल लहिये, जो शुभ भावे रहिये जी ॥ तेलाधर दिन त्रण्य कल्याणक, गणधरवाद वदीजै जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, रुषभ चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ बारसें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पडिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्र-वाडी विधिसु कीजे, सकल जंतुनें खामीजै जी ॥ पारणानें दिन सामीवछल, कीजे अधिक वडाई जी ॥ मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू भली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-णथी रथ फेरीयो रे लाल, नीठुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी अरदाश ॥ १ ॥ सहीवासु राजुल कहे हो लाल, मगसिर नायो पीव ॥ प्रीतम विन दिन माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥ हो० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो दुख देण ॥

नो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥ माहमहीने सी पड़े हो लाल, प्रीत संग पोढै नारी ॥ प्रीतम विण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हु किणसु खेलूं हिवे हो लाल, पाश नहीं भरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहीने चांदणी रे लाल, संजोगण सुख देण ॥ विरहणनें वालम विना रे लाल, रोवत जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमे रे लाल, मांजर रही महकाय ॥ अरज सुणो अबला तणी हो लाल, तपत मिटावो आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाझै कोमल गात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूछे मुझ वात ॥ हो० ॥ ८ ॥ आसाढे कालो घटा हो लाल, झलमि आयो मेह ॥ कंत मिल्या निज नारसु रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥ हो० ॥ ९ ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे झमला-इ ॥ इण रुत सूना एकली हो लाल, क्यू कर रैण विहाई ॥ हो० ॥ १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, भाद्रवमें वर खेत ॥ अरज सुणीनें साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खेत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजे आसू झरे हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न पूछो साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥ काती हढ ठाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयम ले पिउ संहथे हो लाल, पामे भवनो पार ॥ इण पर पाले प्रीतमी हो लाल, धन २ ते नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद भणी यो करे दया हो लाल, प्रभु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम राजुल बारेमासो सपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपछरा करती आरती जिन आगे, हारे जिन आगे रे जिन आगे, हारे ए तो अविचल सुखडा मागे, हारे नाभीनंदन पास ॥ ॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमके, हारे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हारे सोवनना घूघरी धमके, हारे लेती फूदडी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशली डफ वीणा, हारे रूडा गावती स्वर झीणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणा, हारे जोती मुखडु निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जाया, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे मे तो पूरव पून्यें पाया, हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे प्रभु सेवक हू छु तारो, हारे भवोभवना दुखडा वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हारे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हारे मुनि माणक सुखिडु करजो, हारे जाणी पोतानु बाल ॥ अ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिझाय ॥ देशी उमादे भटीयाणीरी ॥

पहली तो समरू हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागु गुरां रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्या हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुमत आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरीपुरहुती हो नेमीसर साहिब थे चढ्या, जान करी यादुराय ॥ हसती तो सिणगास्या हो नेम सर साहिब थे भला, घोडलारी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अधिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण वार ॥ महिल चढीने हो राजुल जोवे हरखसु, मनमाहे हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरुके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे छै भरतार ॥ वाडो तो भरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ कनो तो रथनें हो नेमीसर साहिब राखी-

यो, ए पशु बांध्या छे किश काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर साहिब तुमतणो, सारथी कहे छे महाराज ॥ ५ ॥ ओमा तो सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥ जीव बध्याने हो नेमीसर साहिब छोमिया, जीव सवे तिण वार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिब छोमने, जाय चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमासुं हो नेमीसर साहिब जीतवा, लीधो संजमभार ॥ ७ ॥ राजुल तो कूरे हो नेमीसर साहिब एकली जल विन मछली जेम ॥ नव भवारो हो नेमीसर साहिब छोमनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावे हो राजुल डुःख मत करो, एतो कालो छे भरतार ॥ पाछो तो राजुल भापे हो सहेली मारी थे सुणो, इण भव ए भरतार ॥ ए ॥ राजुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणु रे परिवार ॥ गिरनारे चढता हो सब आगे पाछे नीकल्या, एकली रही छे राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अतिघणा, भ.ज्या छे सवि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल नारी अति भली, चीर निचोवे राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुलनारीरे अगना, घूघरना कणकार ॥ कणका तो सुणिया हो रहनेमी बेठे ध्यानमें, खोलो छे पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी बेठो ध्यानमें, कहे सुंदर करो मोसुं प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढाकियो, मांनै छोमा छे नेमभरतार ॥ १३ ॥ भोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांम गो, उलटी करे नाखे तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पाछो नही भखे, भखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम थारे सारखी, भाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम मांहरे ... थे नरक मकार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपम तो पहरया हो राजुलनारी आपणा, पुहती छे प्रभु दरवार ॥ १६। राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीयो सं जमभार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहत छै मुगति मझार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आग लै, मिलिया छे मुगति मझार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहि गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिझाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूछा करे, विनय करी शीस नमाय प्रभूजी॥ अविचल थानक मैं सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रभूजी ॥ शिवपुरनगर सोहामणु ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया आतम काज प्रभूजी ॥ छूटा ससारना दुख थकी, रहवानो किहा ठाम प्रभूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द्ध लोकमा, सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने ऊपरे, तेहना बार नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस जोजना, लाम्बी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जाडी विचे, छेहे माखीपख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला हार मोतीतणा, गोदुग्ध सख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली अतिघणी, उलटो छत्र सठाण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजनस्वर्ण शम दीपती, गठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन थकी निरमली, सुआली अत्यंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥ सिद्धशिला उलघी गया, अधर रह्या सिद्धराज हो गोतम ॥ अलोकसुं जाई अड्या, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि० ॥ ७ ॥ जनम नहीं मरणो नही, नहीं जरा नही रोग हो गोतम॥ वैरी नही मित्रो नही, नहीं सजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ७ ॥ भूख नहीं तिरखा नही, दरख नहीं नहीं सोक हो गो-तम ॥ करम नहीं काया नही, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥ शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नही नही वेद हो गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥ ॥शि० १०॥गाम नगर ए को नही,वसती नही ऊजाड हो गोतम॥ काल तिहां वरते नही, नही रात दिवस तिथि वार हो गोतम॥ शि० ११ ॥ राजा नहीं परजा नही, नही ठाकुर नही दास हो गोतम ॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नही, नही लघु वडाई वास हो गोतम ॥ शि० १२ ॥ अनंता सुखमें झिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो गोतम ॥ सहुकोईनें सुख मारिखा, सगलानें अविचल राज हो गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय हो गोतम ॥ अवर जग्या रूंधे नही, जोतमा जोत समाय हो गोतम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित छै, केवलदर्शन खास हो गोतम, क्षायकसमकित दीपता, कदय न होवे उदास हो गोतम ॥ शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥ शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि० १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपत्ते राणी, विघन टालो थो अविरल वाणी ॥ कहु सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहे वडेरो॥१॥ नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धि समृद्धि अलकानें जीपे॥ राजा समुद्र विजै शिवादे राणी ॥ सीले रूपे कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥ तेहनोजी अंगज ने ... नाथो,मुगतरमणसुं घाले ठे बाथो ॥ आर्यांर घणें वसत आयो ... बतीसें फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजा सारु चलिया ... चंग बाजे रंग गुलालो ॥

राणी राधा सतभामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-
नाथजीरो व्याह मभायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥
राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई,
जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, भुगलने
भेरी सखरी सझाई ॥ ६ ॥ ताल कसाल कुद्दके करनाला, गोरी
जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजे घूघरमाला, मदझरता
मैंगल झाकझमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ता
मी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती माग भराई ॥ सीस
फूलारी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले भालै टीकोजी सोहै, अ
णियाली आंख्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जम्हावकेरा, नकवे-
सर मोती झलके भलेरा ॥९॥ दाडिमकुलिया दांत बत्तीसे, वदनी
बोलै सार बत्तीसै ॥ झलमीतिलमी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर
कसिया कुच रसाला ॥ १० ॥ चूडे नें गहणें जाइ न वखाणी, रू
पैकर गोरी जीपे इंद्राणी ॥ झाझरनें नेवर घूघर घमकती, हंसा तो जीपे
सुंदर हालती ॥११॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामें देही गर
काव कीधी ॥ फावते कपडै सखिया वणाई, राजूल राखी नार न
काई ॥ १२ ॥ मृगानेणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखिया ति
ण विचालो ॥ इण विधसु पदमण परणन आयो मदसिरी रूपे
मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोडिजी
रयानें जादव थाटो ॥ घणुं मछराला महा अभिमानी ॥ केसरिये वागे
भिलिया छै जानी ॥ १४ ॥ उरदत कुंवर हरिवस केरा, वीजाही
जानी भूपति भलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धुजावै, जातां कालनें
झाल पछाडै ॥ १५ ॥ तिहा माहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता
सुरपतिसु डर अनतो ॥ तारागणमाहे शोभे जु चदो, तिण विध
माहे नेमजिणदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखो पसुअ वृन्द

परणवा नेमजी पाछाजी आया ॥ धिग् २ संसार मायाजंजालो, जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम नाथजीरो सिलोको सपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥ प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित नमू ॥ धुरे तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणिये, आचारज रे उपाध्याय मन आणिये ॥ (उल्लालो) आणिये निज मन भाव सुद्धे, उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमभूमिमांहे, साधु प्रणमु ते वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नें शुक्ल पक्ष वलि शील पाल्यो ते सुणो, भरतारने स्त्री विन्हे तेहनो चरित भावेसुं भणो ॥ १ ॥ (ढाल) भरतक्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसे, कच्छदेसै रे विजयसेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालापणे रे एहवो निश्चै मन कियो ॥ (उल्लालो) मन कियो एहवो तेण निश्चै पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टालस्युं ॥ इकअवै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्मजोगे रे मांहोमाहे विहुतणो, शुभ दिवसे रे हुओ विवाह सुहामणो ॥ तब विजया रे सोले शृंगार भला करी, पिउ मंदर रे पोहती मन उल्लट धरी ॥ (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पहुती पिया पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो सम्भरी ॥ सुकृ शील निश्चो पखअधारे तेहना दिन तीन छै, ते नेम पाली शुक्ल पक्षे हु भोग भोगविस्यु पछै ॥ ३ ॥ (चाल) इ ॰ मा॰जल रे वि-

जया मन विलखी थई, पिउ पूछे रे किम चिंता तुझने नई ॥ तव विजया रे कहे शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोथ रे बालापण निश्चो कियो ॥ (उल्लालो) बालपणेमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत पालस्युं, तो उभय पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥ तुझे अवर नारी परणने हिव शुक्लपक्ष सुख भोगवो, कृष्णपक्ष निज नियम पाली अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तव बलतो रे तसु भरतार कहे इसो, विषधारस रे कालकुटविष छे तिसो ॥ ते उभी रे शीलव्रत दोनुं पालस्या, एह वार्त्तारे माता पिता न जणावस्या ॥ (उल्लालो) मातपिता जव जाणस्ये तव दिख्य लेस्या धर दया, इम अभिग्रह लेईनें ते भावचारित्रिया थया ॥ एकत्र सय्या सयन करता खड्गधारा व्रत धरे, मन वचन काया करी सूधो शील वेऊं आचरै ॥ ५ ॥ (ढाल २) विमल केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥ आणी अधिक विवेक, श्रावक जिणदास, कहै विनयगुण परिवरयो ए ॥६॥ सहस चोरासी साधु, मुझ घर पारणो, करै मनोरथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै श्रावक सुणो, एह बात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहा एतला अणगार, किहा वलि सूझतो, भातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो तुम्हे जिम तिम, फल अम्ह हुवे तेतलो ए ॥ ८ ॥ अछे हिवे कच्छदेश, सेठ विजय वली, विजया भार्या तसु घरै ए ॥ भावयती ग्रहवास, तेहनें भोजन, दीधा फल हुवे तेतलो ए ॥ ए ॥ जिणदास कहै भगवंत, ते माहे एतला, कुण गुण कुण व्रत छै घणा ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रततणा ए ॥१०॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हू वडो ए ॥ देशी ॥ केवलीनें मुख सांभली, श्रावक ते जिनदास रे ॥ कच्छदेसें हिव

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो, शील शमो नही कोय रे ॥ शीलें देव सानिध करै, शीलथी शिव सुख होई रे ॥ ध० ॥१२॥ सेठ विजय विजयाजणो, जगतसुं जो-जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥ ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूछे तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥ केवलीने मुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुने, पारणो दीये कोइ जाय रे ॥ कृष्ण शुक्लपक्ष दंपती, जोजननो फल थाय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूउ संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-या लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥ केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंकी, पालै निर-तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते मु गते पहुंता, दंपत्ती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै, जावै जे नर नार ॥ ते वंछित सुख लहै, पहुचै जवनें पार ॥१९॥ ॥ कलश ॥ इम कृष्णपक्ष नें शुक्लपक्षें शील पाल्यो निरमलो, ते दंपतीना जाव शुद्धे सदा शुजगुण साजलो ॥ जिम डुरिय दो-हग दूर जाये सुख्ख थाये बहु परे, वलि सकल मंगल मनह वंछत कुशल नित घर अवतरे ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलामे बैठी राणी कमलावती, झीणी तो उमै मारग खेह ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौतक उपनो मनमें एह ॥ सांजल रे दासी आज नगरमें वहदो किम घणो ॥ १ ॥ कांतो परधान सखी रूंमीया, कां केइ लूंट्या राजा गाव ॥ कां कोइ गा-म्यो धन नीसरयो, गामा रह्या छै ठामो ठाम ॥ सां० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी रूमिया, ना कोई राजा लूंट्या

सांभल रे प्रा० २४ ॥ गिरवपखो ज्यु भोग जाणज्यो, ए काम वधारै ससार ॥ साप ज्यु मोर थकी भरनो रहे, ज्यु पापसुं सक स्या इण वार ॥ सांभल रे प्रा० २५॥ शोक तजी संतोपसु, लेस्य संयमभार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार॥ सांभल रे प्रा० २६॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल वीज समान ॥ खिण खूटै भ्रानखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांभल रे प्रा० २७ हस्ती ज्यु बंधण तोभनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटे संयम लिया, सुणो कहु हु महाराय ॥ सांभल हो रा० स० २८ ॥ इम सुणनें इखुकारराजा चेतियो, ओभीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो ए तजता दोहिलो, विप्र सहित सारया काज ॥ सांभल हो राणी स० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ओभके, पायो जिनधरम सुजाण ॥ तपस्या सगलाही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम श्राण ॥ ॥ सा० प्रा० स० ॥ ३० ॥ सुध संयम पाले सदा, सुमति गुपति दयाल ॥ भमरानी परे करै गोचरी, रिषि टाले दोष बयाल ॥ सा० प्रा० स० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छे, भव्यजीवनें उतारै पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सा० प्रा० स० ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समभनें, निरमल भावना भाव ॥ छए जणा थोभा कालमें, मुगति विराज्या जाय ॥ सा० प्रा० स० ॥ ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगुपुरोहित जसा नार ॥ भृगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ मा० प्रा० स० ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा भृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥दुहा॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान शील तप भावना, बोलिस बहु सवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसरया राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा-श्रीवर्धमान ॥ २ ॥

बेठी बारे परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रज्ञु हुं वमो, मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमें, कुण छे मुऊ समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोइ नांम ॥ दीधांरी देवल चढे, सीधे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरनें पारणे, कुण करस्ये मुऊ होरु ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारे कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग सगलो वस करुं, मुऊ मोटी छे वात ॥ कुण२ दानथकी तिरया, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥ धनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थंकर पद में दियो, तिणें मुऊनें अज्ञिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हूं वमो, मुऊ सरिखु नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती, पमिलाज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहू सुख लहे, ते तो मुऊ उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पमिलाज्यों ऋषिराय ललना ॥ शालिज्ञद्र सुख ज्ञोगवे, दानतणें सुपसाय ल- लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पाचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण ललना ॥ ज्ञरत थयो चक्रवर्त्ति ज्ञलो, ते पण मुऊ फल जाण ल- लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उरुदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा०॥ ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलमी- रस वहराविये, पाम्यो ज्ञवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद- नबाला बाकुला, पमिलाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव ज्ञव पारेवडूं, शरणें राख्यू सूर ललना ॥ तीर्थंकर चक्रव- र्त्तिपणें, ... ललना ॥ दा० ९ ॥ गजज्ञव शिशलो

सांभल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपखी ज्यु भोग जाणज्यो, ए काम वधारै ससार ॥ साप ज्यु मोर थकी भरतो रहे, ज्यु पापसुं सकस्या इण वार ॥ साम्भल रे प्रा० २५॥ शोक तजी सतोपसु, लेस्यां संयमभार ॥ ममता तजी समता ग्रही, करस्या अप्र विहार॥ सांभल रे प्रा० २६॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल वीज समान ॥ खिण२ खूटै आवखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांभल रे प्रा० २७ ॥ हस्ती ज्यु वधण तोभनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबध तूटै सयम लिया, सुणो कहुं हु महाराय ॥ सांभल हो रा० स० २८ ॥ इम सुणनें इखुकारराजा चेतियो, छोभीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो ए तजता दोहिलो, विप्र सहित सास्या काज ॥ साम्भल हो राणी स० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोभके, पायो जिनधरम सुजाण ॥ तपस्या सगलाही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ ॥ सा० प्रा० स० ॥ ३० ॥ सुध संयम पाले सदा, सुमति गुपति दयाल ॥ भमरानी परे करै गोचरी, रिपि टाले दोप बयाल ॥ सा० प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छै, भव्यजीवनें उतारै पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सा० प्रा० सं० ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समभनें, निरमल भावना भाव ॥ छएजणा थोभा कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सा० प्रा० स० ॥ ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगुपुरोहित जसा नार ॥ भृगुप्रोहितना दोय टीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० स० ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा भृगुप्रोहित अधिकार सपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥दुहा॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान शील तप भावना, बोलिस बहु सवाद ॥ १ ॥ वीरजिनद समोसरया राजग्रही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बेठी बारे परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रज्जु हुं वडो, मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांज्जलजो सहुको तुमें, कुण छै मुऊ समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोइ नाम ॥ दीधांरी देवल चढै, सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ होरु ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारे कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग सगलो वस करूं, मुऊ मोटी छै वात ॥ कुण२ दानथकी तिरथा, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥ धनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थंकर पद में दियो, तिणें मुऊनें अज्जिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हूं वमो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती, पमिलाज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहू सुख लहे, ते तो मुऊ उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पमिलाज्यों ऋपिराय ललना ॥ शालिज्जद्र सुख ज्जोगवे, दानतणें सुपसाय ल-लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पाचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण ललना ॥ ज्जरत थयो चक्रवर्त्ति ज्जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उम्मदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलमी-रस वहरावियो, पाम्यो ज्जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-नबाला बाकुला, पमिलाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव ज्जव पारेवडूं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थंकर चक्रव-र्त्तिपणें, प्रगट्यो पुन्य पमूर ललना ॥ दा० ९ ॥ गजज्जव शिशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अवतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में ऊधरया, कहता नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुझ पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दान तु, किस्यो करै अहंकार ॥ आम्बर आठै पहुर, याचकसु विवहार ॥ १ ॥ अतराय वलि ताहरै, भोगकरम ससार ॥ जिनवर कर नीचो करे, तुझने पडो धिकार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान तू, मुझ पूठै सह कोय ॥ चाकर चाले आगले, तो स्यु राजा होय ॥३॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले सरट सह टले, शीले जश शोभाग ॥ शीले सुर सानिध करे, शील वडो वेराग ॥५॥ शीले सर्प न आभडै, शीले शीतल आग ॥ शीले अरि करी केसरी, भय जावे सब भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भय थकी, में छोड्या अनेक ॥ नाम कहू हिव तेहना, साभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहे जग हू वडो, मुझ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावे लो कनें, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वलि विरती नही पण काई रे ॥ ते नारद में सीझव्या, मुझ जुओ ए अधिकाई रे ॥ शी० २ ॥ बाहे पहिरया बैरखा, शखराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंदे घर आणी रे ॥ शीताने कलक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी० ४ ॥ चपाबार उघाडिया, वली चलणियें काढ्यु नीरो रे ॥ सतीय सुभद्रा जस थयो, में तसु कीर्यो भीरो रे ॥ शी० ५॥ राजा मारण मांडीयो, राणी अभयायें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासण

में कियो, में शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, आवता अरिदल थंभ्यो रे ॥ लिछा पिण सानिध में करी, वलो धरम काज आरंभ्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पदिरश चोर प्रगट किया, में अजतरसो वारो रे ॥ पाम्डवनारी द्रौपदी, में राखो माम अपारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, वलि शीलवती दवदंती रे ॥ चेमानी साते सुत, राजोमती सुंदर कुंती रे ॥ शी० ९ ॥ इत्यादिक में उधरया, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, पहिले मुझ आणंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥ तप बोल्यो अटको करी, दानने तूं अवहील, पिण मुझ आगल तुं किसुं, सांभल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा भोजन तें तज्या, जगमें मीठा नाद ॥ देहतणी शोभा तजी, तुझमा किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी डरतो रहे, कायर किस्युं वखाण, कूड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुझ आदरे, वली सहु संसार ॥ आप एक तू भाजतो, वाजा भाजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोडवा, भाजु भवभय भीम ॥ अरिहंत मुझने आदरे, वरस छम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरे, मुझ लबधे मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायकतणा, रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुझ कर फरसे उपशमें, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस ऊपजे, उत्तम तप संजोग ॥८॥ जे में तारया ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पामसो, देशो मुझ सावास ॥ ९ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलरी देशी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कोधी चार हो सुंदर ॥ ते पिण तिण भव ऊधरयो, मूक्यो मुगति मझार हो सुंदर ॥ १ ॥ तप स[illegible] नही, तप करे कर्मनूं सूड हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूम हो सुंदर ॥ त० २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन माली में ऊधरयो, ठेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नदिषे एनें में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अंतेउरी, सुख जोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करै, ते में कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लबधे कियुं, लाख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिबूऊव्या, तिण मुऊ अधिक जगीस हो सुदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधन्नो अणगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलें, दुक्करकारक एह हो सुंदर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिमा सवि तेह हो सुंदर ॥ त० ए ॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवनतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम् बलभद्र प्रमुख बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रनु वीरजी, पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहे तप तूं किसुं, ठेमथुं करै कषाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपे, क्षणमां खेरूं थाय ॥ १ ॥ खवक आचारज प्रतें, तें वाल्यो सवि देश ॥ अशुन्न नियाणो तूं करै, क्षमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन ऋषि दूहव्या; सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तव क्रोध करी तिहां, किधो द्वारिका दाह ॥३॥ दान शील तप सांजलो, म करो फूठ गुमान ॥ लोक सहूको साख दे, धर्मे जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपूंसक ठो त्रिएहे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सरै नहि कोइनुं, जाव जणे में

पारख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रसवति रस नहीं लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलै नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विध२कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो भाव न हुंतो, कोई सिद्दी नव हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले, तारया बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांभलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥

(ढाल चौथी ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे, एदेशी) ॥ काननमें काउसग्ग रह्यो रे, प्रश्नचंद ऋषिराय ॥ ते मे कीधो केवली रे, ततखिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर, भाव वडो संसार ॥ एतो वीजो मुझ परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहचाडूं भवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एलापूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ३ ॥ भूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाभथी लोभ वाधे घणो रे, आण्यो मन वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते मुझनें सोभाग ॥ सो० ५ ॥ अर्णिकासुत गच्छनो धणी रे, खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुण खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसे तापसभणी रे, दीधी गौतम दिस्क ॥ ततखिण कीधा केवली रे, जो मुझ मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥ पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी छोडव्या रे, आपे मुझ आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंडरुद्रने चालतां रे, दीधो दंड प्रहार ॥ नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पडिलाभ्यो उलास ॥ मृगलो भावना भावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूंक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें

मं दियुं रे, निर्मल केवलज्ञान॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरे रे, देखी पूत्रनी ऋद्धि ॥ मुजनें मनमाहे धरयो रे, ततखिण पामी सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वदन चाल्यो मारगे रे, चाप्यो चपल तुरग ॥ दर्दुर नामें देवता रे, तेह थयो मुज सग ॥ सो० ॥ १३॥ प्रज्ञु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमा करी रे, पोहती स्वर्ग मझार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोज्ञा कारमी रे, रूप किसुं अज्ञिमान ॥ ज्ञरत आरीसाज्ञुवनमां रे ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढज्ञूति कलानिलो रे, प्र गव्यो ज्ञरतसरूप ॥ नाटक करता पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग्ग रह्यो रे, गजसुकमाल म- साण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुज्ञ झाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, साज्ञल पृथवीचद ॥ पोते केवल पामियो रे, सेव करे सुर इद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक में उधरया रे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रज्ञु वीरजी रे, मुजने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर कहे तुमें साज्ञलो, दान शील तप ज्ञाव ॥ निंदा छे अति पापणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करता थका, पापे पिंम ज्ञरा- य ॥ वेढ़ राम्फ वाधे घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स- रिखो पापीयो, ज्ञूंमो कोइय न दिठ ॥ वलि चंमाल समो कह्यो, निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशसा आपणी, करतो इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहकार ॥ आप आपणें गमे रहो, सहुको ज्ञलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको ज्ञाव छे, एकाकी समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें ज्ञला, पण ज्ञाव विना अकयत्थ ॥ ६ ॥ अजन आंखे आंजता, अधिको आणो रेख ॥ रजमाहे

लज काढतां, अधिको भाव विशेष ॥ ७ ॥ भगवंत इंठ भंजण भणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चउ विध धर्म भणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम भणे रे, बैठी परखदा बार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम पामो भव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, भवियण सांभलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति पमतां प्राणिया रे, राखै श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति भूलो भवि भर्म रे ॥ ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे ते जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलेसे ठासठ समे रे, सांगानेर मफार, पद्मप्रभु सुपसाउले रे, एह भणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे, खरतर गच्छ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु- नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज- सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स- मयसुंदर वाचक भणे रे, सघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ दान शीयल तप भावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ भणतां गुणतां भावसुं रे, ऋद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील तप भाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधनें मन्नथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थाउ भाई ॥ ॥ १ ॥ पछ्या [illegible] जेह प्राणी, शुद्धतत्त्वनी [illegible] तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंडी भुला का भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी सुं रमो छो, नदीगंग मुकी गलीमां पमो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंडमाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेछे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मास भक्षी महा विकराला, केइ योगणी भोगिणी भोग मागे, केइ रुद्रणी छागनो भोग मागे ॥५॥ इसा देव देवी तणी आश रा खे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥६॥ जदा लोभना थोकनो पार आव्यो, तदा मधनो बिंडुउ मन भाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी आस राखे, तेह पिंमने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी भीम ते केम भाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता भजो मोक्षदाता, अलोभी प्रभुने भजो विश्वख्याता ॥ र त्नचितामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमसुं मत राचो ॥ ७ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेछे, सवि धर्म एकत्व भूलो भमेछै ॥ किहा सर्षवाने किहा मेरुधीर, किहा कायराने किहा शू रवीरं ॥ ९ ॥ किहा स्वर्णथालं किहा कुंभखंमं ॥ किहा कोद्रवान किहा क्षीरमंमं ॥ किहा क्षीरसिंधु किहा क्षारनीर, किहां कामधेनु किहा छागखीरं ॥ १० ॥ किहा सत्यवाचा किहा कूमवाणी, किहां रंकनारी किहा रायराणी ॥ किहा नारकीने किहा देवभोगी, किहा इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ किहा कर्म घाती किहा कर्म धारी, नमो वीरस्वामी भजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्न थी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, जना मूढमा श्रेएसुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंभ रोसो, सजो पुण्य पोसी भजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तूंही२ तुही प्रभु परमरागी, भवफेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी ठे एक अर्ज मेरी, दीजै दासकूं सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुओ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वंछित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥ निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अमसठ अक्षर अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सेंमुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरया संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकज मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु भाषित सार, साभवियां मन शुद्धमें, नित्त जपिये नवकार ॥ ४ ॥ (छंद हाटकी) नवकारे थकी श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कुमरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंतां नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भत्ते चोखे चित्ते नित जपिये नवकार ॥ ५ ॥ बाधी वमसाखा ठींके बैसी हेठल कुंमहुताश, तरकरने वधि मंत्र समप्यों श्रावक उड्यो तेह आकाश ॥ विधि रीतें जंप्या विषधर विष टाले ढाले अमृतधार ॥ सो० ६ ॥ बीजोरा कारण गय महाबल व्यतर दुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपता थाये जिनवर ऐहवो छे अधिकार ॥ सो० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन परभव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परघल रिद्ध ॥ ए अमरापुर पुहुतो चारुदत्त ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी तप साधतो पंचाग्नि ५ । श्रीपासकुमार

पाप

से टाले ॥ संभलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख ईश्भुवन अवतार ॥ सो० ए ॥ मनशुद्धे जपता मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण ध्याने कुष्ट टल्युं उबरनु रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नवनिधि थायै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमाहे कृष्णभुजगम घाल्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रभावे हारफूलनो, वसुधामाहि विख्यात ॥ कमलावतिये पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥ सो० ११ ॥ गयणागण जाती राखी गिहणी पामी बाण प्रहार, पद पच सुणंता पारुपतधर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख महिमा मदिर भवदुख भजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल कादव काढ्या सकट पाचर्से माल, दीधे नवकारे गया देवलोके विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामा लही विलसै जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार अनत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम भाखै भगवंत ॥ पूरवदिसि चारें आदि प्रपचे समरथा संपति सार ॥ सो० १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंडरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधियें समरंता सफल जनम ससार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहा सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी ऋद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवार्या सुरें करी मनुहार ॥ सो० १६ ॥ पच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच सिझाय महाव्रत पचहुं पंचसमति समकित, पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ छप्पय) नित्य जपियै नवकार सार सपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जपे जगनायक ॥ श्रीअरिहत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य भणीजै, श्रीउवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजै ॥ नवकार सार संसार

है कुशल लाभ वाचक कहै, एक चित्तै आराधता ऋद्धि सिद्धि वंछित लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥ जाकी छवि काति अनोपम उपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-ज्योति झिगामिग झिगमग२ पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप वखाणहि भूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोक सबे मिल, जाका जस्स गुणंदा है ॥ तेरी खिजमत्त करे इकचित्तसु तो सेवक धरणिंदा हे ॥ ते जलता आग निकाल्या नाग, किया वरुन्नाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणा आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पचागनि, ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी जुट्टाधारी, अल्प अहार लियंदा हे ॥ सब भेष सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा हे ॥ दिसि च्यारा दिठी बले अगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥ महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण वत्तां धरिय उकत्ता, पुत्ता पास जिनंदा हे ॥ वामादे अक्के कुंण तो पक्के, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहा चालो पुत्ता जिहां अवधुत्तो, जो गारंभ जगंदा हे ॥४॥ जननी मन आसा पूरण पासा, ऐरापत्ति सझदा हे ॥ गल घूघरमाला जाण हेमाला, दंताला उपदा हे ॥ वर वीर घटाला मद मतवाला, झोलालो झलकंदा हे ॥ ५ ॥ पंचरंगी परकर सझी लस्कर, ढालासु ढलकंदा हे ॥ धतरारे धत्ता मत्ता अकुस, मावत शीस दियदा हे ॥ गंगातट आये खम्हे रहाए, प्रभु ज्ञानी आखंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा हे ॥ तिहा फाम्ह कुफाम्ह दिखाले लक्कर, वम्ह फणधर नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जम घटंदा हे ॥

ते टाले ॥ संभलाव्यो श्रीनवकार स्वयमुख इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण ध्याने कुष्ट टल्यु उंबरनु रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपता नव निधि थाये धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णभुजगम घाल्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रभावे हारफूलनो, वसुधा मांहि विख्यात ॥ कमलावतिये पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥ सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पाम्ही बाण प्रहार, पद पच सुणतां पाण्डुपतघर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख महिमा मंदिर भवदुख भंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल कादव काढ्या सकट पाचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणे, इम भाखे भगवंत । पुरवदिसि चारे आदि प्रपंचे समरथा संपति सार ॥ सो० १४ । परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंडरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधि समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच सिझाय महाव्रत पचहुं पंचसमति समकित, पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ छप्पय) नित जपियें नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वत एम जपे जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुध आचार्य भणीजै श्रीउवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजै ॥ नवकार सार संसार

है कुशल लाभ वाचक कहै, एक चित्ते आराधता ऋद्धि सिद्धि वंछित लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥ जाकी छवि कांति अनोपम उपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-ज्योति झिगामिग झिगमग२ पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप वखाणाहि भूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोक सबे मिल, जाका जस्स गुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत्त करे इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ ते जलता आग निकाल्या नाग, किया बड़नाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणा आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचागनि, ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी जुद्धाधारी, अल्प अहार लियंदा हे ॥ सब भेष सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा हे ॥ दिसि च्यारा दिठी बले अगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥ महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकू आय नमंदा हे ॥ एती सुण वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्ता पास जिनंदा हे ॥ वामादे अंके कुण तो परखे, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहा चालो पुत्ता जिहा अवधुत्ता, जो गारत्र जगंदा हे ॥४॥ जननी मन आसा पूरण पासा, ऐरापत्ति सझंदा हे ॥ गल घूघरमाला जाण हेमाला, दत्ताला उपंदा हे ॥ वर वीर घंटाला मद मतवाला, झोलालो झलकंदा हे ॥ ५ ॥ पंचरंगी परकर सझी सरकर, ढालासु ढलकंदा हे ॥ धतझारे धत्ता मत्ता अकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खरे रहाए, प्रभु ज्ञानी आखंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा हे ॥ तिहा फाम्हे डफाम्ह दिखाले लक्कड़, वड़ फणधर नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जम घटंदा हे ॥

माना, पावां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फणनाग हजारां कर विस तारा छत्तर ज्यूं ठावदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरब प्रीत सुखंदा हे ॥ इंद्राणीनारी सब सिणगारी, जोबन अंग झिल कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सूंदर रूप सो हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल झलके विज्जल, खूब बणाव बणदा हे ॥ नकवेसर नत्थां लाल सुकत्था, विच मोती झलकंदा हे॥ उढण पाटंबर झीणी अंबर, आभूषण झलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु कसिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कड़िया सोने जड़िया, हीरा वीच दलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूघरियां पाए धरियां, पग नेवर रणकदा हे ॥ ले झाझर ताला ताल कलाला, पखावज वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला वीच रसाला, जगी ढोल घुरंदा हे ॥ वाजे सरणाई सखरी धाई, नगारा रोमंदा हे ॥ १८ ॥ पदमा वैरुट्टा आण वलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान तमंना, रस भेद रमदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पावस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिछाण्या, कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्ती आख्या रत्ती, किती रीस आवंदा हे ॥ रे मुढा धिठ चित्त विणठा, क्यू नाही समझंदा हे ॥ साहिब बलवता जोर अनता, तू तो नहि जाणदा हे ॥ २० ॥ एक्षमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमदा हे॥ असमान खमाईरीस भराई, हिकाड वजरदा हे ॥ किती बहु गल्ला पभै दहल्लां, धमहम देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र मराया तब ते आया, पावा आय लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोड़ि खमाया सीस नमाया, जगनायक जिनचंदा हे ॥ तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा हे ॥ तें रीस न धरिया क्षिणही विरिया, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर कित्ती बहु विनत्ती, निज अपराध खमंदा हे ॥ २२ ॥
सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं
जम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजदा हे ॥ सम्मेतशिखर पर
चढ़के ऊपर, सिद्धपुरी पोहचदा हे ॥ तेरी कीरत्ती जग ऊरत्ती, पार
न को पावदा हे ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रखके भेद परखके, गुमानी मो
ऋदा हे ॥ तू अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं
दीवाणा तू खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अल्ला पीर फकीर
मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुल्लां मरद अ
टल्लां, तूंही शेष फरीदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मु
लकंदा हे ॥ तूं बूढ़ा बाला मद मतवाला, तूं पक्का बाजंदा हे ॥ तूं
कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहदा हे ॥ २५ ॥ बाबागो-
सांई भेद न पाई, भीम पच्छां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-
यण, माधव तूंही मुकदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा
देवंदा हे ॥ तू एकां अप्पे एक उथप्पे, थिति निज सुध आपंदा हे
॥ २६ ॥ तो देवल मझा लोकति सझा, सीरणिया वाटंदा
हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत भासे, ऊणे सुर गावंदा हे
॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेमा धुखदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी
केसर पूरी, चंदनसु चरचदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला
हदा, टोमर कंठ ठवदा हे ॥ चंपा गुलाबां भरीया छाबां, परमल
तिहा वासंदा हे ॥ कसावोई चंगी रचिये अंगी, फूलां वीच फावं
दा हे ॥ आभूषण धरिया तन ऊपरिआ, कुंडल कान भिगंदा हे ॥
२८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हदी, दीठां नैण ठरदा हे ॥ तेरी बलि
जाउं मोजा पाउं, वीनती तूंहि सुणदा हे ॥ २९ ॥ क्या कहूं ग
ल्ला हुकम अदल्ला, समकित मन उलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिदा
रहासा, तुझ सेवक विलसदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास वखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीघग्घर नीसाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगे पुण्यदशा सफली ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग रली ॥१॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोछव राजेला॥ सुपसायैं गुरु चढती कला, सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थाये सबला, सद् वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ पायक बहुला, किल्लोल करे मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींजै चमर निसाण घुरै, नर वे दरबार खम्मा पुहरै ॥ जय२ करजोमी उचरै, सानिद्ध गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा, डुख रोग डुकाल न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु कूरम दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ घमघम माद्दल नाद घुमें, बत्तीसे नाटक रङ्गरमै ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप इमें, सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलाउल होयरनें ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जुंभक सुर मंदिर भरै धने ॥ ७ ॥ तत खरा घरा खंच्यो आवे, करि स्यामघटा मेह बरसावै ॥ तिसीयां तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरचा जल कल्लोल करै, प्रवहण भवसायर मझ फरै ॥ वूरुंता वाहण जे समरे, ते आपद निश्चेसुं उवरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै, सो दामनि जिम समसेल महै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खेमकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुभ सकल परचा पूरे, श्रीनागपुरे सकट चूरे ॥ मगलोर अधिके नूरे, देरावर भय टाले दूरे ॥११॥ वीरमपुर वाने सुधरै, खम्भायतपुर विक्रमनयरे ॥ जिणचद सूर पाटै पवरै, जसु कीरति महीमन्डल पसरै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षण आगे, उत्तर [illegible] पै शोभागे ॥ दहदिशि जन सेवा मागे,

श्रीखरतरगच्छनी महिमा जागे ॥१३॥ पुर पट्टरा जनपद गामे, गा ईजे कुशल नयर गामे ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पद वी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखे, सेवकजननें सुखिया राखे ॥ समरयां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक ज्ञाखै ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सद्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाछ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, शुतधार कृपालक शीलवंती ॥ जसु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमाहे अती ॥ २ ॥ शुन्न मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥ आराध्या आवे सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥ जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश बावन खेतलवीर कियां ॥ जसु नामे न पड़े वीजलिया, नूत प्रेत न कर सके छलवलियां ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पच पीर नदी जिण पुल बाधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक कीध सहू ॥ ६ ॥ वडनगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेप सहू गुरु पाय परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थम्भो दोय खंभ कियो, पोथी परगट परभाव थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सकियो, वर नयर उजेणी सुजश लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुवड वंसे जीवदया, मंत्री वाछग परसिद्ध थया ॥ वाहडदे कूखे जनम भणू, ते चवदे विद्या जाण घणू ॥ ९ ॥ इग्यार वत्तीसै जनम भणूं, इग्यार इगताले दिक्ष गुणु ॥

युगवर इग्यारै गुणहत्तरे, सरगें बारेसै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनचन्द्र सूरी पटोधरण, परजाव उद्देगर जयहरणं ॥ नवनिधि लछमी संपति करणं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंभ सकल श्रीअजमेरे, गढमनो वर बीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशलमेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा सागें, जावढ दालिड दूरे जागे ॥ मेरे असमालखानके सोजागे, गुरु पुर२में कीरति जागे ॥ १३ ॥ धन२ जे सद्गुरु ध्यान धरे, तेरनवन पूजा जेह करे ॥ गछ खरतरनी महिमा पसरे, कवि सूरि उदय जिनकीरति करे ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव वंदिय पायकमल, जग सहू पूरे आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंद कुलावर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल सुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरे तसु पूरे आस ॥ २ ॥ मरुमंडल सवियाणो गाम, धण कण कंचन अति अभिराम ॥ जिहां वसे जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसे जम्म, सेतालें सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरे जसु पाट, निश्चासिये तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि माने सोय, में नवि नयणें दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न, पुत्रहीण पामें बहु पुत्र ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करता गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संपति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते ढंकि नवि मंभै व्याप ॥ ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां ॥ सेवंता सुरतरुनी ०. [illegible] मिद्र मेटे वाहि ॥ ८ ॥

निसनर्ह विस नरनाह, भूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रभु नामें ते न करै पीड़, भाजै भावठ भवभय भीड़ ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नामें दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंडित थाय, प्रभु पसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन२ जिनसासन उद्योत, जिहांअवै भवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में भेव्यो आज, हलियरग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरआंगण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उदयो परमानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्ने गिणियो, जुगपवरागम जो में सुणियो, चंद्रगच्छ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो काइ मने ॥ १४॥ वार७ एक चित्त भणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसे, मुलक वाहण पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेसर पर भुवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत्त संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम७ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अभिनंदै, ऋद्धि समृद्धे सो चिरनंदै, मनवंछित फल मुझ हुवो ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुन ॥ आवो लइ श्रीसंघ आश धरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी विरियां आयवणी, केहवी करिये तुझ अरज घणी ॥ हिव अलगा थो तो वेगा आवो, हिव ढील धर्मीश्वर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद गुरु खरतर गच्छ साचो, कोइय न जाणे तुझने काचो ॥ इण संकटमें आलश म करो, वादा दुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक पर्मी सदगुरु हमसुं, तो ज्यूं कहसो तिण पर खमसु ॥ हिवणा हठ

थे मत ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया मघ, श्रीसंघ आगा लगे, पाछा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुशल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले नजवालो, परघल निज छोरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गम्माथे ए गायो, सुणता सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुय सगला रंगरली, जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सदगुरुजी थे साम्भलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सानिध करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संपति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत हो गुरु माहरा, थाहरा विरुद अनेक हो ॥ था समरचा संकट टले, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस किया बावन वीर हो ॥ सिंधमाहे तें साधीया. पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥ पडिकमणामाहे वीजली, वली२ ऊभराय हो ॥ थे मंत्री राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्छव करता उच्छमें, मूंओ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाडियो, सघ मांहे राख्यो दादे सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वडनगररे ब्राह्मणें, देहरे धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बले, पिशुन लगाया दादे पाय हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूर कीधा तें सहू दुःख हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुख हो ॥ दो० ७ ॥ अंबड हाथे अक्षरे, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग तूं जयो, आखे अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥८ ॥ थांभो वज्र विदारनें, पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअक्षरे, उज्जैणीमाहि लीध हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा छै ताहरा, कहतां नावे पार हो ॥ नागसंजोगे दादो भेटियो, अरूवरियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥१०॥ हुं वूं सेवक ताहरो, थे आपो वन रुद्द हो ॥ कनककीरत सुपसाउले, लालचंदय सुख सिद्ध हो ॥ दो० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देवो ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशाता, दादो जगबंधव जगगुरु त्राता ॥दा० ॥१॥ दादो परचा जग सगले पूरे, दादो सेवकनां संकट चूरे, दादो दुरित हरे सहूनी दूरे ॥ दा० ॥२॥ दादो अलगांथी जात्री आवे, दादो देखीने त सुख पावे, म्हारा दादाजीनी जोड़ कोइ नावे ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमाहे राजे, जिहा सुजशनगारा नित वाजे, दादो ढोगाला सेहर गाजे, दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकड़ घोली, हाथे लेइ सोवन क चोली, पूजो दादाजीनें मिलइ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतिया आरति टाले, दादो सेवगजनने प्रतिपाले, दादो जिन सासन नित उजवाले ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावत माहाराजा, दादो राजै खरतर गछ राजा, दादो समरथा सफल करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी, दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाउ दादाजीनी हूं वलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजे गुणियन ग हगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरथाटे ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुझ पर करियै, दादा आरति पीड़ा दुख हरियै, दादा जिम जग जयकमला वरिये ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध कर ज्यो, दादा दुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवछित फलज्यो ॥ दा० ॥ ११ ॥ इति पद ॥

पुनः गाजे जिनकुशल गच्छाले, सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरे, सेवकनी चिंता चूरे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ उतरीनितरी उवि गाजे, विचमें थिर थुन्न विराजे हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ फूलरे यात्री मिल

आवे, दादोजी दीठां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ४ ॥ केशर घस भरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख देवे, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥ ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावे, गुरु पूज्यां वंछित पावे हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसिया पाणी, तिण वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर जंजालै, पीडा हुवे आलेमाले हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ गाजे जग जशना वाजा, राजे खरतर गच्छ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वर माता, जिव्हा गरमंत्र विख्याता हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ सवत सतेरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥ गा० १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासैं हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनभक्ति जतीसर वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पद ॥ पुन० सदाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमांहे प्रगटयो, खरतर गच्छ वरू ॥ स० ॥ बावनोचंदन मृगमद मेली, पूजो प्रेम भरू ॥ स० १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विदारण, दालिद्र दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिनदिन साहिब चढते वानें, ध्यावो ध्यानधरू ॥ स० ॥ वाजे जेहना जशना वाजा, गवी गामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अढारसमें असैठे, मिगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ सघ सहित श्रीसदगुरु भेटे, श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गढाले चरण नमता, तूठो कल्पतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिने, उदयरत्न करू ॥ स० ॥५॥ इति ... आयो आयो जी, समरंता दादाजी

आयो ॥ संकट देख सेवककूं सदगुरु, देशान्तरतें ध्यायोजी ॥ स० ॥ १ ॥ दादा बरसे मेहनें रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो ॥ पंचनदी हम बैठे बेडी, दरीये चित्त डरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥ दादा भविजणो पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो ॥ समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ नाया नक्तिसूं पुर रह्यो रे, छुरिजन सब छुर हरो रे ॥ ना० ॥ मेरे मनमें नक्ति वैरागी, चित्त परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी जाग्यदशा अब जागी, जीया हो ना० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥ वलि अक्षत थाल वधावो, जीया हो ना० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया हो ना० ॥ ३ ॥ घस केसर नरके कचोली, माहे मृगमद कुंकुम घोली ॥ गुरु पूज रचो नर ओली, जीया हो ना० ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ष सूरीसरराजा, वाजे जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करे शुन्न काजा, जीया हो ना० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राग केरबो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो नवि हितसु, कु० ॥ केशर चंदन कपूर अरगजा, नाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु० १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुध माल करे नवि रुच-सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा पूरे गुरु घणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारे ज्ञान वधारे, रूप रंग देवे वित हित मतिसुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिधका री, परतिख परचा पूरे सतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा सुविलाशी, सत्यरत्न सुख एही ढतसुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग देवगन्धार ॥ आज करो रे उच्छाह, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आछी वेला नें ते आछो दाव, इण आछी वेला क्यूं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै वध सार, फुलवारीनो नहीं जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्रीफल ढोवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी ऊना करजोड, कोण करै म्हारा दादाजोनी होड आ० ॥ ४ श्रीखरतर गछपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार ॥ आ० ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु गरीबनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै उछरंग, सत्यरत्न मन ध्यान उमंग ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोघाटो ॥ मैं निरख्या गुरु माहाराज, उलिया हर्षजरी ॥ मैं० ॥ अमल अनंत गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमातमा रे, वं छित दायक स्वाम ॥ उ० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन प्रतिपाल ॥ भविजन भक्ते भावसुं रे, ध्यावै भरश थाल ॥ उ०२ ॥ केशर चंदन कुमकुमारे, भरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती रे, पूजै सहियर साथ ॥ उ० ३ ॥ कुसल सूरीसर साहिबारे, श्रीजिन चंद सूरी पाट ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥ उ० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन हर्ष सूरीसरू रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ उ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जाउं गुरुरा य चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु, सफल घडी सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम मगल गुरुरायकी सेवा, अशुभ करम सब हरणकी ॥ वा० २॥ दालिद्रभंजन अरि सब गंजण ॥ प- ग२ सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, सर ण ग्रही इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको श

शा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुन॰ ॥ अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी भ्रात करो मेरे सदगुरु, ज्यूं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अजलभर पीजे ॥ सुरतरु शम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीझै ॥ कु० ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजे ॥ परमभगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजे ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुन॰ कुशलगुरु कुशल करो भरपूर, सेवकजन मन वंछित पूरण, समरथां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा, वीनवे श्री जिनचद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल लूवरकी ॥ सद्गुरु पूजण जावस्या, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गावस्या हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल भेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी पूज रचावस्या हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोभता, नगरवीकाणे राजे हे माय ॥ गाम गफाले दीपता, ज्यांरी महियल महिमा गाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरथां सकट चूरता, कुशल करण अवतारो हे माय ॥ सुखदायक श्रीसघने, खरतर गच्छ अधिकारी हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशातरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे माय ॥ लुल२ शीस नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥ स० ४ ॥ सज सिणगार मनोहरू, ठम२ पाय ठमकावे हे माय ॥ तन मन प्राण लोभावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥५ ॥ विछड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनोरथ पूरवे, परघल लखमी द्यावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी वेला वाटमें, समरया सानिध आवे हे माय ॥ भूखां भोजन मेलवै, तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवे नित नवा,

थान आगल थिर थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामठी, गावै गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै, भवि मिल भावना भावे हे माय ॥ चंद फते गुनि नित नमें, परमानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ श्रीसदगुरुजीमें वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अरज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सुधकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजोये जी, चरणकमल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट दुख मेटो, सोमवार पूनम दिन भेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, बधती संपद सारी ॥ दादो० ॥ २ ॥ नर नारी अपवर मिल आवें, अतर गुलाब केवमो व्हावे ॥ पूजे मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरे, चिंता दोखी दुस्मन चूरे ॥ धन२ सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥ दा० ॥ ४ ॥ उगणीसे अठावन वरसै, कातीपूनम दिन भलसै ॥ गच्छपति कीर्त्ति सूरीसरू रे, वंदै वार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुझै समझीजै ॥ जगमें सुरतरु सारखो रे, कीरति वारही थारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणे व रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल सूरिंद धणी रे, कहे रामऋद्धिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पद ॥

॥ पुन ॥ ॥ चाल भरतरीकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गच्छपति दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, दुखतमहारण दिनमणी ॥ १ ॥ गढ सवियाणे जी देश, राजेन्द्र कुल उदयाचले ॥ जिल्हासाह पितेश, जैतसिरी अंबर भलै ॥ २ ॥ गच्छपति चंदमुणिंद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्रकाश मनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सब देश, झिगमिग ज्योती जी

झिगमिगे, पूनमनें सोमवार ॥ नर नारी गुरु उलगे ॥ ४ ॥ अरचे अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चपक वेल, गुं दर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुन्न थिर थुन्न वीकाण, वालूचर म हिमा घणी ॥ कीरतवाग प्रधान, डुखनंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥ पूरो वंछित आश, ढाया तुम सुनिझरतणी ॥ दाता सुख कैलाश, चरण शरण किंकर जणी ॥ ७ ॥ पूजें पद गोविंद, चडशिखर जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥ ॥ ८ ॥ उगणीसे अमृताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ए ॥ गुण्गुण शरिता नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, ऋद्धिसार जस वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी वेमिया पार उतारो, तू वण अब माझी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता न्नाइव नीर जलधि ज्यु, यों ससार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही जर मऊ धारो ॥ मैं बेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उठारो ॥ सु० ॥ २ ॥ नक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण वाल ग णपति करुणानिध, याविपतिलसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उल्कापात गगन ज्यूं विपयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्यथादिक निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु रटे कोइ ईसा, अल्ला उमया प्यारो ॥ मैं ध्यात जिनदेव कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सुण अरजी आय गढ लमद्दर, तुरतही विघन विमारो ॥ रामबाग पुर गंज अजीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ केइयक गुरुसे लखमी पावत, हुकम करै वसुधारो ॥ मैं इक सेवा चरणकमलकी, माङ्

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत नगणीसे अरतालीश, मेरुत्रयोदशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, हे ऋद्धसार तिहारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या मैं दरश तिहारा, द० ॥ श्रीसद गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुझ मन निरमल काज ॥ दे० २ ॥ गुण ऋद्धि संपत काजे, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ रुब सिद्धि लीला प्रगटी, दुख दोहग गये नाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु तुम परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुभ थान पुर२ सोहे, मुलक बीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गछ खरतर राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रानऋछ सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥ ताल ठुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटे, दिन२ वधे सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुभ परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधारणा, नितप्रति हरख उछाह जी ॥ स० २॥ राजा परजा पाय नमें सहु, गुरु समरण सुपसायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप भय पडिया, सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३॥ विखमी विरिया संकट पडिया, समरया आवे धायजी ॥ स० ॥ भूखां भोजन तिसिया पाणी, निरधनिया धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलने द्यो सुखसाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स० ॥ थानक थिरता परगल भोजन, पग२ कुशल सहाय [illegible] स० ५॥ अजय सदा सुखदाई सदगुरु, नवनिधि वंछित [illegible] ॥ सुमति सवाई नित घर [illegible]

दान विशाल सहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पद ॥ पुन· ॥ जिनकुश लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर, देश देशातर काइ ज्रमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि नाम मत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो ॥ जि० ४ ॥ अजय महा सुख संपति पामो, सुथिर थानक थित जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत थारी जग जागती जी, इनि थामे परतिख देव ॥ १ ॥ हुतो मोहि रह्यो जी, थारा राज दादेरे दरबार ॥ केसर अंबर केवड़ो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय चपेली, भक्ति करू भरपूर ॥ हुं० २ ॥ पांगुलियानें पाव समावै, आधलियाने आख ॥ रूपहीणाने रूप देवे दादा, पाखहीणाने पाख ॥ हु० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ आठ पहर थाने ओलगे जी, रंग घणे राजिंद ॥ हु० ४ ॥ इति पदं ॥ पुन ,सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल२ चूक परी सदगुरुजी, में मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहु न ध्यायो, पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूरया, आही थारी मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत दुख वेरी ॥ भक्त उधार कहावत जगमें, तादे करत हुं अरजी ॥ स० ३ ॥ और देवकूं में नही ध्यात, शरण ग्रही में तेरी, दूरथका में भेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका मै हु सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ क्रमारलकी वीनती सुणवै, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित्त लाय२, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बावन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या पुस्तक सोवनअक्षर, पाम्यो वज्र विहार पाय ॥ सद० १ ॥ मुलतानमें पच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित्त लाय ॥ इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरथां सब दुख जाय ॥स०२॥ गुरुके नामसें अष्टसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही थाय ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुन॰॥ होरी खेलो भविक सदगुरुके संग, नित आनंद उच्छव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत स्वर झीणा, अली कलीके संग जग ॥ हो० ॥ १ ॥ रुत वसत आनंद पिया संग, गोरी गावत बजत चग ॥ हो० ॥ एसें साज समाज भक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अभंग ॥ हो० ॥ २ ॥ निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, छिरको महकत सुरभिगंग ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन वरसणसे नैण, रामऋद्धीसार के चित उमंग ॥ हो० ४ इति पद ॥ पुनः ॥नेमस्यामसें कहियो मोरी॥ इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, भली हिये भक्ति भराणी ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरीसर साहिब, खरतरगछरा जानी ॥ देशदेशमें थानक गुरुका, सोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, चरणारी पूज रचानी ॥ धूप दीप वलि आगल ढोवी, बहु विध पुष्प चढानी, भला फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ बाट घाटमें परचा पूरक, हाजर होत सहानी ॥ [illegible] सूरिके साहिब, चं वन

काज करानी, सदा गुरु मंदिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुन. ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये बालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद यालकेसनमुख गावै, पढत मधुरधुन गुण गोरी ॥ स० ॥१॥ केशर घोली भरी रे कचोली, पूजत हे वारीभोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल मच्यो सदगुरुके, अवीर उड़ावत भरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धन२ भाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकरी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं जण दुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि तदाता जगके त्राता, अरजी इय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत रामऋद्धिसार सुपाठक, वदत हे दुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ राग प्रभाती ॥ केसे२ अवसरमें गुरु रखी लाज हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल भरोसा तेरा, चंद सूर पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम बिन अवर न कोई मेरे, या जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ के० २ ॥ आगे तो केई वेर हमारो, चिंता दूर निवारी ॥ अबकी विरिया भूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥ अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा, वमा भरोसा भारी ॥ के० ४ ॥ इति पद ॥ पुन ॥ श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिब, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥ खरतर गछ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री० १ ॥ सत उधारण सुजश वधारण, भीमभंजण अति भारी ॥ नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० २॥ जगवछल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन चंद मेरे हो सदगुरु, हम हें सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति पद ॥ पु ॥ श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलझर कंचनझारी ॥ देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एही भाति करूं नित पूजा, आणके चित इकतारी ॥ राज कहत मेरे परमगुरुकी, बेर२ वलिहारी ॥ श्री० २॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥ कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशन ॥ जगतमें या शमो कोई, न देख्या नयण भर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंडले गाजे, फरशतां पाप सब भाजै ॥ पूजता संपदा पावै, अचिंती लछ घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज सुण लीजै, चरणकी सेव मोहि दीजै ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजै हो ॥ कु० ॥ खरतर गछपति कुशल सुरिंद गुरु मुझ पर महिर धरीजै हो ॥ कु० १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो, इतनी अरज सुणीजै हो॥कु०२ ॥ आधि व्याधी अरु दोखी दुसमन, ए सब दूर हरीजै हो ॥कु० ३॥ खेमरतन सेवगकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥ इति पद ॥ ॥ पुन० ॥ पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर पुप्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो अरज करूं करजोडने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥ विरुद घणा छै राजरा जी काई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥ सुनिजर जोयजो स० [illegible] ॥ थारे रावल राणा राजवी जी, थारा पूनम पूजै पाय [illegible] [illegible] अगर नें कुमकुमा जी; काई मृगमद रही [illegible] सु० २ ॥ थारै घुमलां रे

घूमरा जी, कांइ ढूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम नी जी, काई निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थारी गावी गोमे थांपना जी, कांई उदयापूर आवेर ॥ स० महिमा भली गुरु मेमते जी, काइ सालूमेवाली सागानेर ॥ स० सु० ४॥ थारी ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी, कांइ त्रवती गढ वीकाण॥ स० ॥ आसा पूरण आवजो जी, थेलो देरावरा दीवाण ॥ स० ५ ॥ म्हारी वीनतमी भले मानज्यो जी, काई दादाजी दीनदयाल ॥ स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, काइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स० सु० ॥ ६ ॥ इति पद ॥ पुन. ॥ सागानेर विराजै, गुरु परतिख तिहा राजे रे ॥ म्हारा सद्गुरुजीनी वलिहारी ॥ मनवंछित पूरो म्हारा, म्हेतो चरण पखाला थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन भरिय कचोलो, माहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु पाया, पूज्या सव पाप पुलाया रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमनें सोमवारा, थारे जात्री आवे अपारा रे ॥ म्हा० । सुध मन पूजा कीजे, दुख दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमा हे तारी, कीरत चिहु दिशिमाहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अवर न कोई दीठो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवा लो सागानेरे, जिहा राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीसघ मिल तिहा आवे, जिहा लूणिया गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान सार गुरुराज, ज्यारा वाजे सदाइना वाजा रे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंदन गुण गावे, करजोमी शीस नमावे रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथ दादाजीको लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गछपति साहिवा ॥ ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विख्याता ॥ सद गुरु महर करीज्यो मुझपर, ज्यु मिंजनके माता हो ॥ स० ॥ १॥

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं कट काटे, सब सरूल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमाहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार ॥ जरदरियांमे ज्याज नगारी, जिन गु रुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणसेती, पा पतिमर दट जाय ॥ गुरु परमातम सुगुण शोज्ञागी, गुरुगुण केम कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर णणकाती, जिये अली घडु लार ॥ नृत्य न्नक्ति गुरु अग्र विचरुण, मृडु समीर रुणकार हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्तो हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरबा र ॥ इंद नरिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ रुद सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री आवे जात्र करणकूं, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन रु ख्रर, करे सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत सुखकर, नंद चंद शशि वार ॥ स्तैष माश प्रतिपत् दिन न्नव्या, शुक्ल पक्ष शुन्न वार हो ॥ स० ॥ ए ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहे, तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उ दार हो स० ॥१० ॥ सदगुरु धर्मशील परज्ञावे, कुशल होत नित साय ॥ ऋद्धिसारपें महिर करीनें, अविचल लील वताय हो ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुन. ॥ मोरी सखी सहेल्या आज चालोनी गुरु वदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजि नकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगछना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥ डुष्ट कष्ट ज्ञय दूर करीने, देवो सुरक विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥ पूनमश् न्नक्ति धरीनें, आवे संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, पूजे विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगले

भूमरा जी, काइ ढूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम नी जी, काई निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थारी गावी गोमे आपना जी, कांई उदयापुर आवेर ॥ स० महिमा ज्ञली गुरु मेम्हते जो, काइ सालूमेवाली सागानेर ॥ स० सु० ४॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी, काइ वधती गढ वीकाण॥ स० ॥ आसा पूरण आवजो जी, थेलो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥ म्हारी वीनतम्ही ज्ञले मानज्यो जी, काई दादाजी दीनदयाल ॥ स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, काइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स० सु० ॥ ६ ॥ इति पद ॥ पुन. ॥ सागानेर विराजै, गुरु परतिख तिहा राजे रे ॥ म्हारा सद्गुरुजीनी बलिहारी ॥ मनवंछित पूरो म्हारा, म्हेतो चरण पखाला थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन ज्ञरिय कचोलो, माहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सद्गुरु पाया, पूज्या सब पाप पुलाया रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमनें सोमवारा, थारे जात्री आवे अपारा रे ॥ म्हा० । सुध मन पूजा कीजे, दुख दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमा हे तारी, कीरत चिहु दिशिमाहे तारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अवर न कोई दीठो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवाली सागानेरे, जिहा राज करै नितमेव रे ॥ म्ह.० ॥ श्रीसंघ मिल तिहा आवै, जिहा लूणिया गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यानसार गुरुराजा, ज्यारा वाजे सदाइना वाजा रे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंदन गुण गावे, करजोमी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दादाजीको लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गछपति साहिबा ॥ ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विख्याता ॥ सद

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं कट काटै, सघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा अधिकाई, जाणे सब ससार ॥ ज्ञरदरियांमे ज्याज उगारी, जिन गुरुकी वलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणाबुज दरशणसेती, पा पतिमर हट जाय ॥ गुरु परमातम सुगुण शोज्ञागी, गुरुगुण केम कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर रणकाती, लिये अलो वहु लार ॥ नृत्य ज्ञक्ति गुरु अग्र विचक्षण, मृडु समीर रुणकार हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरबार ॥ इद नारिंद नमे पदपकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ रुद्ध सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावे ॥ जात्री आवे जात्र करणकू, केशर रंग मचावे हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन रु ल्लर, करे सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत सुखकर, नंद चंद्र शशि वार ॥ स्तैष माश प्रतिपत् दिन ज्ञव्या, शुक्ल पक्ष शुज्ञ वार हो ॥ स० ॥ ए ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहे, तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उदार हो स० ॥१० ॥ सदगुरु धर्मशील परज्ञावे, कुशल होत नित साय ॥ रुद्धिसारपें महिर करीनें, अविचल लील वताय हो ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुन ॥ मोरी सखी सहेल्यां आज चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगच्छना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥ डुष्ट कष्ट ज्ञय दूर करीने, देवो सुरक विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥ पूनम२ ज्ञक्ति धरीने, आवे सघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगले

सरे, सऊ शीले सिणगार ॥ नाटक करती वहु गुणवंती, पग नेऊर ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवे चित्त उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥ मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥ बलिहारी गुरुनामनीसरे, वारीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥ संवत्त उगण वत्तीसे कार्त्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम गंगालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगछ सुखकर सोभागी, कीरत्त जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत्त शशि अभिनव, हससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ ऋद्धसार गुरु गुणगण ऊपर, नित प्रति हु बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुन. ॥ कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंमल सम सूरी, दीपत वदन छवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंमल मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमाणिक्य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखतही हरखित भयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसोभाग्य सूरीसरू, गुरु गछपति हो, खरतर गछ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोठारी कुल दीपता, गुरु गछपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥ करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ सवत अठारे बासठे, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे सीतोत्तरे, गु० पच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें, गु० पद अभ्राकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षात्यादिक गुण सोभता, गु० करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपत गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ उगणीसे सतरे समें, गु० पायो देवविमान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्हि निधि ऋतुपती, गु० माघमास सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पक्ष तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणे हरखाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥ कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम ऋद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति सौभाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये छे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकाज ॥ पुखद धारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ भव्य मधुर तो भावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज रपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पानथी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणे मनमोहनी रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांभले भव्य लहे सही रे, जिन पर भाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप अभंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतभंगी अति चग ॥ वी० ५ ॥ शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी परवरसतारे, भवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाभ पसायथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश भणे कल्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुण नवि श्रीजिनचद सुणिदा, मुख सोहे पूनमचदा ॥ मोह्या सब सुरनर वृदा, सुगुरु म्हारा देशना दिव दीजै ॥

रीझै ॥ सु० ...नकर परकाश ...

...यो ॥ ५ ... मन भायो, सु०

सेरे, सजे शोले सिणगारे ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेउर झणकारे हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवे चित्त उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥ मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥ बलिहारी गुरुनामनीसरे, वारीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥ संवत उगण बत्तीसे कार्त्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गामे गम्भालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगछ सुखकर सोभागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत्त शशि अभिनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ इहसारं गुरु गुणगण ऊपर, नित प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुन० ॥ कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंडल सम सूरी, दीपत वदन छवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंडल माहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमाणिक्य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखतही हरखित भयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसौभाग्य सूरीसरू, गुरु गछपति हो, खरतर गछ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोठारी कुल दीपता, गुरु गछपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥ करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत अठारे बासठे, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे मीतोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें, गु० पद प्रभाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोभता, गु० करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० द्वीपत गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ उगणीसे सतरे समें, गु० पायो देवविमान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्हि निधि ऊडुपती, गु० माघमाश सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पक्ष तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणे दरखाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥ कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम रूद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति सौभाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये छे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकारज ॥ पर्खद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ भव्य मधुर तो भावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अजरपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पानथी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांभले भव्य लहे सही रे, जिन पर भाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप अभंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतभंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥ शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर वरसतारे, भवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाभ पसायथी रे, जिन आगम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश भणें कल्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुण नवि

श्रीजिनचंद मुणिंदा, मुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना दिव दीजे ॥ थांरी देशना सुण मन रीझै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, भूमन्डल ऊपर आयो ॥ कमलादि सकल मन भायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाउल देव-

गंधार, वलि भैरव राग मल्हार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥ पंच सबद गहिर ध्वनि गाजे, जिनवर घर झालर वाजे ॥ सहु सज्ज थया धर्म काजे, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो, श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरे स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥ सुण विनती वचनविशेष, गुरु आपे धर्म उपदेश ॥ टालो भव कोम कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सद्गुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो भविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रतपो ज्युं शशि सूर, दिन२प्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, भर मोतिया थाल वधावै॥ लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापुत्र गोखे रतन जड़ाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद सूरीसरू, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गछराय हो ॥ श्रीजिनलाभ पाटोधरू, सुगुरु म्हारा दिन२ सोभ सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सोभागी, म्हारा शुभ गुण रागी, म्हारा हितधरू ॥ १॥ सुगुरु म्हारा देशना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उछक थयो, सु० सुणवा अमृतवाण हो ॥ वहिला वंछित पूर हो ॥ सु० थे छो अवसर जाण हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण घर संचस्या, सु० विकस्या कमल कलाप हो ॥ राग विलास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद झालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार हो ॥ इम बहु विध भूमकलै, सु० वरत्या जय२कार हो ॥ म्हा० ४ ॥ संघ सकल भगते करी, सु० जोवै थारी वाट हो ॥ नीचे पधारो गछपती, सु० द्यो दरिशण गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै उलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरै स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धंत हो॥ म्हा० ६॥ बहु भवियण प्रति-

वूभवै, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशना, सु० टाले नवदुख नोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी, सु० गुण छत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निरख्या मन उल्लास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गछपती, सु० राज करो इक आण हो, इम बोले मुनि सुध सदा, सु० वाणी क्षमाकल्याण हो ॥ म्हा० ए ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा निनाणूं करिये ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदिये, नविकजन ॥ एहवा० ॥ आप तरे उरनकूं तारे, शरण तिहारी गहिये ॥ न० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशें वहिये ॥ न० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशें, उहे नविक सुख कहिये ॥ न० २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखे गोजन महिये ॥ न० ॥ वलि निर्यामिक उपमा धारे, जिम नाविक नौ तरिये ॥ न० ३ ॥ एक असंजम दोय विधि बंधन, त्रिविध दंम परिहरिये ॥ न० ॥ चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरिये ॥ न० ४ ॥ षट् काय रक्षक महानय जीपक, अशरण शरण कहीजिये ॥ न० ॥ एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरिये ॥ न० ५ ॥ गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरिये ॥ न० ॥ हिदयकमल नितप्रति राखीजे, आनंद शिवपद लहिये ॥ न० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः नवि तुह्म वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥ ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थंकरू रे, वरधमान जिनराज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोनत तेज समाज ॥ नविजन वंदो रे नावे गछपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुधर्म गणधरू रे, ज्ञाता द्वादश अग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहामणो रे, चवद पुरवधर चग ॥ न० २ ॥ प्रनव सज्यंनव जगमें परगमा रे, श्रीयशोनद्र मुणिंद ॥ श्रीसंनूतविजय नद्रबाहुजी रे,

श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ भ० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुवा वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो भूनले रे, सुरनर नामत शिस ॥ भ० ४ ॥ तास परपर चंद्रकुले भला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी साख मझार ॥ भ० ५ ॥ वरधमान प्रमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गच्छ चोराशी प्रगट्या तिहाथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ भ० ६ ॥ तास शील जिनेश्वर सूरिजी रे, दुर्लभराय समक्ष ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवमो रे, गच्छपति जीत प्रत्यक्ष ॥ भ० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता रे, श्रीअभयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गच्छपती रे, श्रीजिनकुशल अमाय ॥ भ० ८ ॥ परम प्रभावक इण गच्छमें थया रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि हरखंत होय संत ॥ भ० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री जिनलाभ सूरीश ॥ तास पटोधर जगमा परगमा रे, श्रीजिनचंद्र मुणीश ॥ भ० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे द्विजपत्ति ॥ गम्भीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥ भ० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥ भांगा पदारथ अति विस्तारसें रे, भाखे भवि हितकार ॥ भ० १२ ॥ ग्यान पूरब किया साधे भली रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने सेवो रे क्यूं भूला भमो रे, थाय सफल अवतार ॥ भ० १३ ॥ सुरतरु छंडी वांवल आदरे रे, कोइ नर मूढ गिमार ॥ ए उखाणो साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ भ० १४ ॥ नाम धारक आचारज छे घणा रे, पचम काल मझार ॥ पिण इण सरिखो जगमा को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ भ० १५ ॥ वाचक लाव ण्यकमल पसायथी रे, कमलसुदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख पामसः रे, प्रातिभनी करि हाण ॥ भ० १६ ॥ इति व रावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऊलस्यो ॥ ए चाल ॥ मोतियमे मेहं वरसीयो, सखि आज हुओ आणंद ॥ पूज पधारया विहरत्ता, नामें सौन्नाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सदगुरु सुरतरुनो कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ क्रांतिगुणे करी शोन्नता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर छत्तीस गुणे सदा, विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसियां जे पर उपगार रे, उपशमरशना न्नमार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता, सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रत्ननारी खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपे जिम न्नलहल न्नाण रे ॥ जेहनो अतिशय विन्नाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोन्नता, मुनिवर जिम मोतीमाल रे ॥ कोई थिवर ने कोई बाल रे, वंदीजे तेह त्रि काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गन्छ सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अपार रे ॥ स हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमतितणा न्नरतार रे ॥ जेहनें प्र णमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ विसतारत्ता, सखि दे ता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप न्नावना, वारे न्नावन सुविशेष रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश र ॥ सखि० ॥ ६ ॥ सुणता श्रीजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ क्षण में कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ थाय निज ज्ञान प्र काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करता निज रूप सुन्नास रे ॥ सखि० ७ ॥ इति वधावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी, जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहिया गुंहली करो ॥ गुंहली करो

गुरु संगे, भगतितणै उमरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराया राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी, नवविध, ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ च्यार कषायकुं टाळै, पंच महाव्रत सूधा पाळे रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच, सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती वलि छाजै, इम छत्रीश गुणें गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम अनुभव रंगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम भंग प्रवादी रे ॥ सही० ॥ ॥ मोक्षमारग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुभ लेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अभ्यासी, भविजन चितकमल विकासी रे ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुभ भावे रे ॥ सही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर भरमने चूरे रे ॥ सही० ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥ स० ॥ श्रुत सेवा ज करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

पुन देशना ॥ नणदलबाई चुरूले जोबन झिल रह्यो ॥ ए चाल ॥ सुणीये सदगुरु देशना ए सहिया, मधुर सुधारश वाण ॥ सदगुरु म्हारा, थो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिम उपदिस्या ए सहिया, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी निरमली ए सहिया, भ्यासे घटर चूंर ॥ सद० ॥ २ ॥ तखत विराजो साभता ए सहिया, उदयाचल ज्यु दिणद ॥ स० ॥ तेज झलामल सुरतरू ए सहिया, मुखछवि पूनमचद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरू सींचवा ए सहिया, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधरा ए सहिया, भाखो नव तत्व सार ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ भगति नित साचवै ए सहिया, पूरव पुन्यसुथान ॥ सद० ॥ तारण तरण जिहाज ज्यू ए सहिया, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगछ महिमा निलो ए सहियां, सद्गुरु कुशलनिधान ॥ सद० ॥ ऋद्धसारनी भावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदेशना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो, गुरु मनमो थे मोह्यो म्हारो ॥ सवाईगुरु ज्याजनी० ॥ अमृत उपम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारश खाणी, अति नय निक्षेप प्रमाणी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर भाखी, गणधर मुनि सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदयें राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु ज्ञानी गुणवंता, भवि हृदयकमल बोधंता, गुरु सहस किरण उलसंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ भविजीव श्रवण गुण रसिया, चात्रक ज्यूं जलधर हसिया, उपदेशे दुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुरु धर्म शील सोभागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, ऋद्धसार वचन धुन लागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥



॥ अथ श्रीखरतर बृहद्गच्छकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पच्चरकाण व्रत पिछली अमावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी कम होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, उर जो चउदस कम होय तो १४ का उपवास अमावस या पूनमको करे, इसका कारण यह हे की यह दोनों तिथि बराबर पर्व हे, चौदश पर्वदिन हें तेंसेंइ अमावस पूनम जी चिरतन पक्षीका दिन हे, यह दोनों दिन धर्मकृत्य करणेकें हें, पारणे उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनी पचागकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचाग परसे तिथियां गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोका क्षय वृद्धि नहि होता, जबूद्वीपपन्नत्तीमें पाच संवत्सर कहे हें, उसमें से अन्नि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रखा हे, लेकिन् सूर्यसंवत्सर तीनसें सवापेंसठ दिनका होता हे, इस वास्ते जैनागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकात नयवाद हेतुसें इस वास्ते जो चौदश कम हो तो उपवास तथा पक्की प्रतिक्रमण निस्सदेह पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस क्षय तिथिके वितल्थेको न करे, उर जो बेला करे तोहरीछोमेंतो दोनों दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत सवच्छरीकी चोथ कम हो तो पाचमके दिन संवच्छरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके दिन कदापि काले जी नहि करे, उर जो चोथ दो होय तो पहली चोथको सवत्सरी करे, और कोइ जी तिथि दो होयतो पहली तिथि माननीय हे, दूसरी लौकतिथि हे उसरा यह प्रमाण हे, साठ घडीकी तिथि छोडके उसरी घडी अधघडीकी तिथि मानणा

बुद्धिमानोका काम नही, इस पर कोई एसा कहे की अपणे तो उदयतिथि मान्य हे, सूर्य उदय होय जहां तक कोई भी तिथि होयतो उस दिन वोही तिथि मानते हे, इस वास्ते जो दुसरी तिथि अथघडी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष हे? इस प्रश्नका उत्तर—हे भव्य, जो पहले दिन तिज मानी हे, उर तीजके दिन चोथ बहुत घडी भुगतेगा, लेकिन् वह तिथि तीजही मानीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घडी अधघडी चोथ होएसें चोथ मानीजेगा, लेकिन् जो तिथी दो होगी उसमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहेगी, तवतो एसी संपूर्ण तिथिकों छोडके दुसरी थोडीसी तिथिकूं व्रत करणा लाजम नही. कार्त्तिक माश वंढ तो पहले कार्त्तिक चोमासो करे. फाल्गुण तो वढताही नही, अगर वढेतो दुसरे फाल्गुणमें चोमासा करे. असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे असाढ, चोमासेकी चौदससें पचास गुणपचासमे दिन चोथकूं संवत्सरी करे, चोथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण भादवा आसोज वढेतो पंचमासो चोमासा करे. श्रावणमास दो होयतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवछरी करे, चोमासेकी चौदससे पचास दिन लाघके संवछरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीकल्पसूत्रजीके पहिलो समाचारीमें पाठ हे, उर जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे वढ महीनाका शुक्लपक्ष एसें कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूंक जानना, इन ३० दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पचखाण नहि करे, यह तिथियोका प्रमाण श्रीहरिभद्रसूरजी कृत तत्वतरंगणी ग्रथमें प्रसिद्ध हे, सो तिनिका प्रमाण गाथा लिखते हे ॥ तिहिपडणेपुव्वतिही, कयवा

जनधम्मकज्जेय ॥ चाउद्दसीविलोवो, पुन्नमियपक्खिपडिक्कमणं ॥१॥ लवपोसहविही, कायवासव्वगेहिसुहहेउ ॥ नहुतेरसीइकीरइ, ज व्हानाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरोदयपडियायावी, तेरसीहुतिनप क्खियकुज्जा, चउम्मासियकरणे, एसविहीदेसिउसमणा ॥ ३ ॥ ति हिवुद्धीएपुवा, गहियापडिपुन्नजोगसंयुत्ता, इयराविमोणणिज्जा, परं ओवत्तितत्तुल्ला ॥ ४ ॥ (तेसेइ ज्योतिष्करंड पयन्नेमें जी एसाही लिखा हे) ॥ उद्दिसहियानअठमी, तेरसिसहियानपक्खियाहोई ॥ प डिवसहियानकयावि, इइजणियादीयरागेण ॥ १ ॥ अठमिदिनंमि पायं, कायव्वाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तममि, नवमीउहीनकाय यवा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे कायव्वपक्खियंतुपाएण ॥ चाउद्दसे विकइया, नहुतेरसिसोलसमेकइवि ॥३॥ तथा श्रावक सामायक करे तव पहली सामायकदंडक ३ वीर उच्चरके पीछे इरियावही पडिक्कमें, क्योंकी आत्मार्थी आचार्य श्रीजद्रबाहुस्वामी, श्रीहरिजद्रसूरजी, तथा श्राद्धविधिके कर्त्ता तपागछी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमला गछी नवपद प्रकरण कर्त्ता श्री सूरि प्रमुख आचार्योंके बनाये ग्रंथोंमें पहले करेमिजंते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥ तथा श्रीमहावीरस्वामीके छव कल्याणक मान्य हे, इस बातका कल्पसूत्रादिक अनेक ग्रंथोंमें पाठ हे, खरतरगछ, तपगछ के आचा र्योने ग्रंथोंमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध जा नके छठा कल्याणक न मानते हे उनोकों दिगंबरकी तरे मल्लि नाथस्वामीकों जी स्त्रीपणें मानना नहि चाहिये, क्यूंकी वो जी आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे उसरा अपणे मनकल्पितपणेसें न माननेसें अपणेही पूर्वाचार्य गुरुओंकी आज्ञा लोपन होती हे तैसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दशी कल्याणकादिक पर्वतिथिको करे, [illegible] पर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन [illegible]

सिद्धांतमें भी नही हे, पर्युसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही कारणी एसा बंधाण नही, अधकी भी करे। तथा आंबिलमें एक अन्नद्रव्य दुसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका कथन हे इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रहण करणा नहि चाहिये। तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योने मना किया हे, कारण इस कालमें प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट होना दीखरहा हे, तथा श्रावककूं पच्चरकाणमें पाणस्सलेणवाका पाठ कहणा युक्त नही, यह पाठ साधूका हे, तथा दिनप्रति एक उपवाश पचरकावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें धारणा रखे, लेकिन् पच्चरकाण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे। तथा जिस धान्यकी दो फाड होय सो सब विदलकी गिणतीमे हे, इस द्विदलधान्यकू गोरस दही छाछके साथ भक्षण नहि करे, तथा मरण जन्मका सूतक जिस घरमें होय उस घरका आहार पाणी साधु वर्जन करे, लेकिन् संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहा संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी हे. अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके हे जिसमे सरल शुद्धोपयोगी समयसुंदरोपाध्याय विरचित समाचारीशतक पचांगी प्रमाण सूत्रोंके पाठ संयुक्त हे सो उनेकांती बुद्धिवानोंने गुरुगमसें देखके धारणा॥ यह खरतरगछमेंसें चोरासी गछ भया हे, जिस वास्ते खरतरगछमें चोरासी नहि हे, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४ मे निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरि एवं ८४ को आचार्यपद दिया, वर्द्धमानसूरिके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० का शालमें अणहिलपुर [illegible] चैत्यवाशी उनकी यणराजाकू ज्ञान उर किया

करके जीता, तब दुर्लभराजाने खरतर बिरुद दिया, तबसें कोटिक गच्छ चंद्रकुल वज्रशाखावाले खरतरगच्छ कहलाणे लगे, लेकिन् अन्नी स्वमताभिमानी खरतरगच्छकूं संवत् बारेसे ४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसें भया एसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोमे लिखा हे, लेकिन् अपणे पूर्वाचार्योंके बणाये सम्यक्तसप्तति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिजीके दो शिष्य भये, बडे जिनचंद्रसूरि, जिनोने सवेगरगशालादि ग्रंथ बणाये और श्रीमाल गोत्र थापा, दुसरे श्रीअभयदेवसूरिः, जिनोने नवागकी वृत्ति शासनदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरि, जिनोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिनदत्तसूरजी एक लाख तीस हजार राजन्यवंसी माहेश्वरी तथा ब्राह्मनोकों श्रावक बणाये, राखेचा लूंणीया पारख, सावसुखा मालू कोठारी, बोथरा नाहटा, बगैर गोलछा कावक चम्म डुगड सेठिया ब्रह्मेचा, इत्यादिक तीनसें गोत्र स्थापक भणशाली प्रमुखगोत्रोंकू उसवशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोंके नाम लिखणेसें ग्रंथ बढ जायगा इस वास्ते इतने पर समझ लेणा एक अठारे जाति रत्न प्रभसूरिजीने उसियामे उसवाल बणाये हे, बाकी प्रायें सर्व उस वाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरि माहाराज तक खरतरगच्छके प्रतिबोधक हे, पीछे उसवालवशी हुये पीछे संवत १५ सें से लेकर आज दिन तक और२ गच्छियोने तथा मतावलंबियोने इनोपर अपणा सिक्का जमाया हे, मूल वशावली देखागे तो सब व दोलत खरतर वृहद्गच्छकी हे, यह बात हमने बहोतो की वंशावली तपासके लिखी हे, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्री जिनकुशलसूरजी भये, उनोके शिष्य उपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिने क्षेम शाखा सविशाणगढमे पाचसे राजन्यवशीयोकू दीक्षा देणे

से प्रसिद्ध हुई, उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसें विराजमान धर्मशीलगणिः परमगुरु हुये, जिनोंके शिष्य पंडित श्रीकुशलनिधानमुनिः हुये, उन परमपुरषसाधुजी माहाराजका चरणाब्जचंचरीक उ० श्रीरामलालगणि. ने शिष्यमंडली पं। क्षेमचंदमुनिः चि। पेमचंद अमरचन्द्रादि शिष्योंके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य अनेक विद्यार्थियोंके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्त्तव्य सर्व जीवोंके उपगारार्थ उपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर बड़ा उपासरा विद्याशाला उ। श्री। परमोपगारी युक्तिवारिधिः। रामलालजी गणि. ॥

